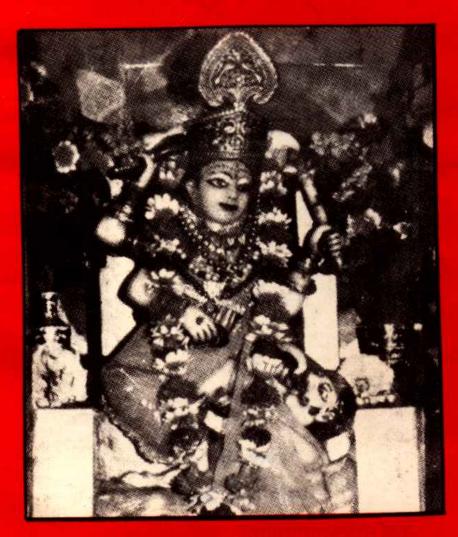
## श्री बगलामुखी रहस्यम्



प्रकाशक :

श्री पीताम्बरापीठ दतिया (म.प्र.)

### श्रीबगलामुखी रहस्यम्

\*

प्राथमानुसि – संबद् २०२१, सन् ५९७% विजीवानुसि – संबद् २०३१, सन् ५९७४

वृतीयावृत्ति – संवत् १०३८ सर्व १९८१

स्वाधित - संवत : ०४६ सन् १९८९ पंचयानीय - संवत २०५४, सन् १९९७

प्रणेतार:

श्री स्वामिनः

सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः निगमागमतन्त्रपारीणाः

परमहंसपरिव्राजकाचार्याः

श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वराः राष्ट्रगुरवः

#### प्रकाशका : श्रीपीताम्बरा पीठ दितया (म. प्र.)



प्रथमावृत्ति - संवत् २०२१, सन् १९६४ द्वितीयावृत्ति - संवत् २०३१, सन् १९७४ तृतीयावृत्ति - संवत् २०३८, सन् १९८१ चतुर्थावृत्ति - संवत् २०४६, सन् १९८९ पंचमावृत्ति - संवत् २०५४, सन् १९९७



मूल्य : 20.00 रुपये



मुद्रक : शिवशक्ति प्रेस प्रा.लि.

बैद्यनाथ भवन, ग्रेट नाग रोड, नागपुर-४४० ००९.

# श्रीबगलामुखी रहस्यम् विषयानुक्रमणिका

|     | विषया:  | पृष्ठ            |
|-----|---|------------------|
| 2   | प्रकाशकीयम्   | 9                |
|     | अभ्यर्थनम्  | 88               |
|     | निवेदनम्  | 85-88            |
|     | श्रीबगलामखीतन्त्र-संग्रहः                               | १५               |
|     | मार्गाम क्षेत्रकार र विस्तिति । र विस्तिति ।            | १६ .             |
|     | मङ्गलाचरणम् अस्ति । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | 8                |
|     | प्रास्तविकम्  | 8                |
|     | माहात्म्यम् (सांख्यायनतन्त्रोक्तम्)                     | 5-8              |
|     | माहात्म्यम् (वह्निपुराणोक्तम्) महात्म्यम्               | 18 8-4           |
|     |   | 909              |
| CA  | अथ मन्त्रयन्त्रविधानात्मकः प्रथमपरिच्छेदः ५-            | FR . E. 9        |
|     | (१ से २४ विधानः)  | 516              |
| ٧.  | बगलामुखीपट्लः   | 4-6              |
| ٦.  | षटकर्मदीपिकोक्तविधानम्                                  | ८-१६             |
| J.B | <ul> <li>माधनम् २ कर्मविशेषे कण्डलक्षणम्,</li> </ul>    | 100 700          |
|     | ३. अथाऽऽसनभेदाः, ४. कमिवशेषे यज्ञीयसामग्री              | ofen 3 9         |
| 3.  | मेरुतन्त्रोक्तविधानम्                                   | १६-२१            |
| 8.  | मन्त्रोद्धारभेदाः (रुद्रयामले)                          | 58               |
|     | लघुषोढान्यासः   | 55-38            |
| 7.  | १. गणेशन्यास २. ग्रहन्यासः, ३. नक्षत्रन्यासः,           | special contract |
|     | ४. योगिनीन्यासः ५. राशिन्यासः, ६. पीठन्यासः,            |                  |
|     | महावाढान्यासः   | 34-80            |
|     | अङ्गन्यास, प्रपञ्चन्यास, भुवनन्यास, मूर्तिन्यास,        | ASSE . 9-9       |
|     | मन्त्रन्यास, देवतान्यास, महाषोढान्यासफलम कुलार्णव       | VIQ-1, 2         |
|     | ६. ब्रह्मास्त्रकल्पविधानम्                              | 80-43            |
|     | १. कीलकस्तोत्रम्, २. बगलाहृदयम्                         |                  |
|     |   |                  |

| विषया:   | पृष्ठ    |
|--|----------|
| ७. सांख्यायनतन्त्रोक्तं विधानम्                              | 43-44    |
| ८. एकाक्षरीमन्त्रविधानम्                                     | 44-40    |
| ९. मन्त्रराजैकाक्षरयोर्निर्णयः                               | 410-49   |
| १०. मन्त्रसन्ध्याप्रकरणम्                                    | ५९-६२    |
| ११. गायत्रीविधानम्   | ६२-६४    |
| १२. अङ्गमन्त्रोंद्धाराः                                      | E8-00    |
| चतुरक्षरः, अष्टाक्षरः, हृदयम्                                |          |
| १. पञ्चास्त्रोद्धारः १. वडवामुखी, २. उल्कामुखी,              |          |
| ३. जातवेदमुखी, ४. ज्वालामुखी, ५. बृहद्भानुमुखी               | lagar.   |
| २. शताक्षरोद्धारः बगलापञ्चाक्षरः, त्र्यक्षरः, एकादशाक्षरः,   | नवाक्षर: |
| ३. श्रीबगलामालामन्त्रः नाजाः                                 |          |
| ४. श्री बगलातन्त्रे ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः                  | SIMIL    |
| ५. बगला शावरमन्त्रः  | 97.5     |
| १३. मन्त्रोत्कीलनम्  | 50-00    |
| अन्य प्रकारोत्कीलनादिः – उत्कीलनम्, संजीवनम् शापे            | द्धारः,  |
| सम्पूटीकरणम्   | more y   |
| १४. जपप्रकारवर्णनम् उक्तं च कुण्डिका तन्त्रे –               | 30-€0    |
| १५. कूर्मचक्रविधानम्   | 02-20    |
| १६. स्वप्नविज्ञानम्  | 60       |
| १७. मन्त्राणां दश संस्काराः                                  | 60-68    |
| १८. मृत्युञ्जयमन्त्रविधिः                                    | 22 Marie |
| १९. सिद्धमन्त्रप्रयोगः, बगला दीपदानविधिः                     | ८३-८६    |
| २०. यन्त्रसंस्कारविधिः । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | ८६-९१    |
|  | 88-63    |
| २२. बटुकादिबलिदानविधिः                                       | ९३-९६    |
|  | ९६-९८    |
| २४. यन्त्रराजोद्धारः   | 96-908   |
|  |          |

|   |                       |   | -                 | 75                      |
|---|-----------------------|---|-------------------|-------------------------|
| विषयाः<br>अथ द्वितीयपरिच्छेदः   | 000-                  | 0 1. 0                                  | पृष               | 8                       |
| दीक्षादिविधानात्मकः विधान   | (१ मे                 | १६ विध                                  | n <del>नः</del> ) |                         |
| 3. (2. 10 No. 1) 전략적으로 all (1) 다시 아니는 (1) Hi H H H H H H H H H H H H H H H H H H  | 11 11                 | (4 13-                                  | 11.7              |                         |
| दीक्षाविधिः –   | :1911                 | Pice Bill                               | 202-8             | 205                     |
| १. आणवी दीक्षा (राघवभट्ट) –<br>स्मार्ती, मानसी, यौगी, चाक्षुषी, स्पा  | र्णिकी                | ****                                    | 104-1             | , - 9                   |
| शिवहस्त लक्षणम - यथा सोमशम्भौ   | राफा                  | - Intylei                               | 7707              |                         |
| मान्त्री, हौत्री, शास्त्री अभिषेचिका  | ) पा। पपा             | FIR DIR                                 | 1000              |                         |
|   | PER ST                | Aller Res                               | १०६-१             | 019                     |
| २. वर्णमयी दीक्षा (शारदायाम)<br>३. मान्त्रीदीक्षा — प्रयोगपद्धतिः   | *** 2178              | 7270                                    | 200               | The same of             |
| ४. क्रमदीक्षा   |                       | PIP                                     | ११६-              | The same of the same of |
| ५. अभिषेक विधि  |                       |   | 886-8             |                         |
| ६. गुरुतत्वप्रकरणम्   | 100                   |   | 8 7 8 - 1         |                         |
| ७. श्री बगलामुख्या आचारादि कथनम्  | 10 1P                 | CEDIO)                                  | १२4-              |                         |
| ८. मालिकाकरणम्  |                       | stafe.                                  |                   |                         |
| ९. योगविधिवर्णनम्   |                       | THE PARTY OF                            | 232-              | Toleran St.             |
| १०. सहस्रार-निर्णय  |                       |   | 234-              | ALL CONTRACTOR          |
| ११. षट्चक्रनिरूपणम्   | WOL S                 |   | 2310-             | १३९                     |
| १२. नादाभ्यासवर्णनम्  |                       |   | THE P             | 980                     |
| १३. नादसाधनरीति   |                       | *************************************** | 888-              | 885                     |
| १४. कुण्डमण्डपविधिः   |                       | treffs.                                 | 885-              | १४५                     |
| १५. कुण्डविशेष प्रयोगः (स्थण्डिलम्)   | -131                  | er bru                                  | 884-              | 288                     |
| १६. माहेन्द्रवारुणादि निर्णयः   | STATE OF THE PARTY OF | MESSIE                                  | 1886-             | १५०                     |
| अथ तृतीयप्रिच्छेदः  | 949-                  | 883                                     | 70.5°             |                         |
| रुद्रयामलोक्त बृह   | त्पूजापन्द्र          | तिः                                     |                   | 0 =                     |
| प्रातःकृत्यम् व्यवस्त्रातः ।  | E Par                 |   |                   | 249                     |
|   | - STORY               | CANCEL POR                              | rec'is            | 244                     |
| 1 7 7 7 7 7 8 mm and and an annual and an an an annual and an |                       | 910 6                                   |                   | १५६                     |
| तर्पणादिकत्यम्  | Historia.             | P 10                                    |                   | १५६                     |
| भूतशुद्धिः  |                       |   | 1200              | १६०                     |
| प्राणप्रतिष्ठा  |                       |   |                   | 987                     |
| हृदयादि षडङ्गन्यास  |                       |   |                   | १६३                     |
| पीठन्यासः   |                       | PANER                                   |                   | १६३                     |
| बगलापञ्चाक्षरः  |                       |   |                   | १६४                     |
|   |                       |   |                   |                         |

| ्र विषयाः                              |                                 | पृष्ठ             |
|--|---------------------------------|-------------------|
| मालामन्त्रः                            | ANIDEL MIC                      | १६५               |
| न्यासक्रमः                             | (国)阿里里斯斯                        | १६५               |
| अन्तर्मातृकान्यासः                     |                                 | १६५               |
| बहिर्मातृकान्यासः                      | (इप्रकार) महोत्र                | १६६               |
| कलामातृकान्यासः                        | महासा, योगी, च                  | १६७               |
| योगपीठन्यासः 🕬 🗀 (विश्वपान)            | प्रकार - मानस्था ह              | १६८               |
| मूलमन्त्र न्यासः                       | मीह हिमाइ हिन                   | 200               |
| मूलमन्त्रवर्णन्यासः                    | विश्वात (कृतरहाजा               | ००१ वर्णम्        |
| अन्तर्यागः                             | विस 🚽 प्रयोगपुन्ह               | १७२               |
| पात्रासादनम्                           | THE PERSON NAMED IN             | 802               |
| बहिर्यागः                              | 1000年                           | १७२-१७५           |
| अथावाहनं पूजा च                        | THE PERSON                      | १७५               |
| आवरणपूजानम् 👚 🔛 🤛                      | लामाख्या आसारत                  | 229-826           |
| नित्यहोमविधिः                          | 11012012                        | 266-880           |
| <b>उत्तरकृ</b> त्यम्                   | preprint                        | 898-883           |
| अथ चतुर्थपरिच्छेदः<br>चक्रपूजारि       | 288-888                         | nobel . o s       |
| चक्रपूर्जा                             | विधि:                           | 1 6 65 a 4 2 Mail |
| १. चक्रपूजारंभः                        | A AIRDSHILL                     | 888-505           |
| २. पात्रवन्दनम्                        | 有用种                             | 202-204           |
| ३. शान्तिस्तोत्रम्                     | वेद्या सम्बाधामञ्जू             | २०५-२०६           |
| ४. सौभाग्यार्चनक्रमः                   | MAN MARK MARE                   | २०६-२०९           |
| <b>५. मुण्डसाधनम्</b> (वीरसाधनम्)      | think! pillagis                 | २०९-२१३           |
| . कवचम् असे सम्बद्धाः                  | प्रमान व्याप                    | 283-586           |
| अथ पञ्चमपरिच्छेदः                      | 299-248                         | 1000              |
| वैदिकप्रक                              | रणम                             | RIFFIX .          |
| ८. श्रीबगलामुख्या वैदिकं रूपम्         | THE REAL PROPERTY.              | 788-558           |
| २. बगलासूक्तम्                         | 103/198                         | 222-223           |
| . बगलामुखीति संज्ञार्थनिर्णयः          | jemaj)                          | 253-558           |
| ८. अथ पीताम्बरोपनिषत्                  |                                 | 228-224           |
| . कलशपूजनमन्त्राः (प्रथम कलशः -        | नवमः कलशः)                      | 224-282           |
| १. दिक्पाल-मन्त्रप्रयोगः, २. श्रीसूत्त | <sub>6</sub> म. ३. लक्ष्मीसक्तम | Page              |
| ४. पुरुषसूक्तम्, ५. नारायणानुवाकः      | , ६, पञ्चब्रह्म मन्त्रा         | ASIM SAL          |
|  | I PISTEN                        | 10)78             |

| विषया:                                 |             |        | पृष्ठ          |
|--|-------------|--------|----------------|
| ७. अम्भस्यपारेणानुवाकः, ८. ब्रह        | ग्रानन्द वल | ली, ९. | भृगुवल्ली      |
| १०. नव कलशपूजनमन्त्रः                  | THE PERSON  | 17     |                |
| ६. बगलामुखीस्तवराजः अर्चाक्रमी         | यः          |        | 585-58         |
| ७. पूर्णाभिषेकप्रयोगः                  |             |        | २४६-२५         |
| ८. ध्यानरहस्यम्                        |             |        | 248-24         |
| ९. इति वृत्तम्                         |             |        | २५५-२५         |
| इति प्रथम                              |             | 7      |                |
| अथ द्वितीयोभागः पंचाङ्ग                | प्रकरणम्    | 240-   | 288            |
| १. श्री ब्रह्मास्त्रमहाविद्यास्तोत्रम् | · · · (35/2 |        | २५७-२६२        |
| २. हृदयम्                              |             |        | २६२-२६६        |
| ३. बगला पञ्चरस्तोत्रम्, पञ्चरन्यास     | स्तोत्रम्   |        | २६६-२६९        |
| ४. अथ कवचम् (१ से ७ तक)                |             |        | 300-560        |
| १. कवचम्, २. कवचम्, ३. क               | वचम्, ४.    | कवचम्, | PART OF STREET |
| ५. कवचम्, ६. कवचम्, ७. क               | वचम्        |        |                |
| ५. शतनामस्तोत्रम्                      |             |        | 560-565        |
| सर्वसिद्धिप्रद बगलाऽष्टोत्तर शत        | नाम         | •••    | 563-568        |
| ६. सहस्रनाम-स्तोत्रम्                  |             |        | 568-306        |
| ७. ब्रह्मास्रविद्याक्रमबीज रत्नावली    | स्तोत्रम्   |        | ३०९-३१६        |
| रहस्य स्तोत्र                          |             |        | ३१६-३१७        |
| ८. श्रीपीताम्बराष्टकम्                 |             |        | 386-388        |
| ९. पीतोपनिषद                           |             |        | 320            |
| ०. श्रीबगलामुखी कल्पविधानम्            |             |        | 378-333        |
| १. श्रीबगलारहस्यम्                     |             |        | 328-333        |
| २. श्रीपीताम्बरा-बगलामुखी-खड्          | गमालामन     | त्र:   | 334-336        |
| इति द्विती                             |             |        |                |
|  | गृष्टम्     |        |                |
| नेत्रह-दारुणसप्तकम् (सभाष्यम्)         | " L'        |        | 339-349        |
| भीषीताम्बराऽर्चनपन्द्रतिः (निवेदनम्)   |             |        | 347-369        |
|  |             |        | 390            |
| गुद्ध बगला गुरुक्रमः                   | ***         | •••    | 399-397        |
| भारती                                  |             | •••    | 393-394        |
| रुस्तक सूची                            | ***         | ***    | 474-474        |

#### प्रकाशकीयम्

### (प्रथम संस्करणस्य)

विवधधर्मयुते हि भारतवर्षे आगमनाम्नेतिख्यातस्य शाक्तधर्मस्य मुख्यत्वं वैदिककालादेव स्वीकृतं तन्त्रपारज्ञैः विद्वद्वर्यैः। भक्तियोगज्ञानानां यादृशः समन्वयोऽस्मिन् मते उपलभ्यते नैतादृशोऽन्येषु। शाक्तधर्मप्रतिपादकानां ग्रन्थानां संख्या नाल्पीयसी वर्तते। परं गुह्यत्वादनेकानि ग्रन्थरत्नानि विलुप्तान्यभवन्। अधुनेदं प्रतिभाति यदेतादृशानां ग्रन्थरत्नानां रक्षणं प्रकाशनञ्च दुर्लभमेव वर्तते।

पराम्बायाः श्री बगलामुख्याः सर्वविषयप्रतिपादनपरिमदं ''श्रीबगलामुखी-रहस्यम्'' नामकं ग्रन्थरत्नं पूज्यपादैः गुरुवर्यैः बहुकाल-पूर्वमेव विरचितम्। साधकैः अस्मिन् ग्रन्थे मातुः श्री बगलामुख्याः सर्वे विषयाः एकत्रैव प्राप्तुं शक्यन्ते। इतः पूर्व सर्वविषयप्रतिपादकं एतादृशं ग्रन्थरत्नं समुपलब्धं नासीत् अनेन हि साधकानां काठिन्यं निश्चयमेव दुरीभविष्यति।

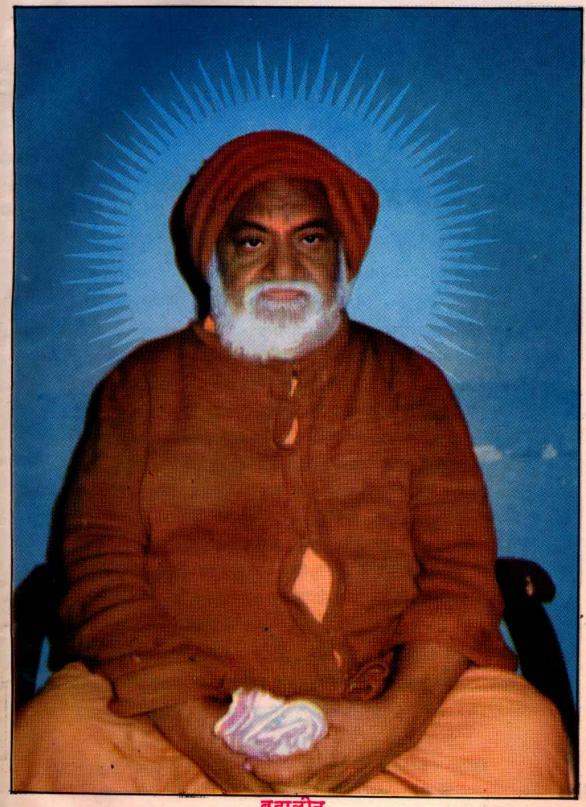
अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनार्थं सर्वोऽपि व्ययभारः श्री बैद्यनाथ आयुर्वेदभवनस्य संचालकेन वैद्यवर्येण श्री रामनारायणशर्मणा ऊढः तदर्थं तेभ्यः हार्दिकान् धन्यवादान् वितनुतेऽयं जनः। आचार्य श्रीसदाशिवदीक्षितैः अस्य ग्रन्थस्य सम्पादनमितपिरश्रमेण विहितं तदर्थं सर्वेऽपि साधकाः तेषामाभारमावहन्त्येव। आशास्यते यदिदं ग्रन्थरत्नं स्वकीयेभ्यः रश्मिजालेभ्यः अनन्तकालपर्यन्तं साधकानां कृते मार्गप्रदर्शकं भविष्यति।

निवेदकः

दिनांक : १७ मई १९६४

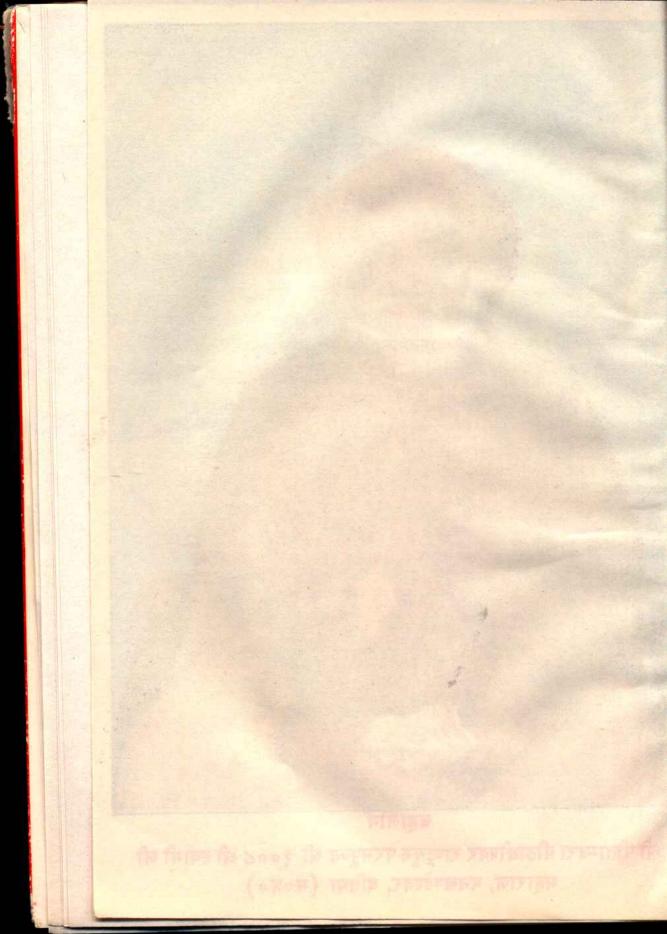
मन्त्री विशेष के

श्री पीताम्बरा संस्कृत परिषद् (दितया)



ब्रह्मलीन श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी

महाराज, वनखण्डेश्वर, दितया (म०प्र०)



#### द्वितीय संस्करणस्य प्रकाशकीयम्

भगवती श्री पीताम्बरा मातुः कृपातः श्रीस्वामिपादै सम्पादितस्य ''श्रीबगलामुखी रहस्यम्'' नामकस्य वृहत्तन्त्र ग्रन्थस्य द्वितीय संस्करणावसरे परं प्रमोदमनुभवत्येषा परिषत्।

भगवत्याः श्री बगलामुख्याः लघुषोढामहाषोढान्यासयोः सांख्यायनादि तन्त्रेषु केवलमुल्लेख मात्रं दृश्यते। तौ न्यासौ पूज्याचार्य चरणेन महता प्रयत्नेन संपाद्यात्र निवेशियतौ। तथा च श्री क्रमबीज रत्नावली स्तोत्रं, सर्वसिद्धप्रद श्रीबगलाशतनाम स्रोत्रं, पीतोपनिषत्, मालामन्त्रः, त्रैलोक्य विजयं कवचं, श्रीस्वामिपादैः विरचित रहस्यस्तोत्रं चात्र सित्रवेश्य परिविधतोऽयं तन्त्रराजः। पूज्याचार्ये विरचितायां श्रीपीताम्बरापूजन पद्धतौ च षडाम्नायानांपञ्चब्रह्म कलानां चार्चनमिष संवर्धन विषयः। अस्य संस्करणस्य सर्वोषि व्ययभारः श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवनस्य प्रबन्ध संचालकै श्री रामनारायण शर्मिभः सहर्षं स्वीकृतः। तथा च श्री शिवनाथ शर्मिभः स्वकीये शिवशिक्त मुद्रणालये मुद्रितोऽयं ग्रन्थः। एम.ए. उपाधिधारिणा श्री मोतीलाल अध्यापकेन परिविधित विषयानां मुद्रणार्हा शुद्धा प्रतिलिपः कृता।

एते महानुभावा यद्यपि परिषदः परिवारान्तर्गता तथापि शिष्टाचारानुरोधेन धन्यवादार्हा एव। आशास्ये अनेन द्वितीय संस्करणेन साधकाः स्वाभीष्टं समासादयन्तु। इत्येव नः समीहितम्।

निवेदक:

चैत्र शुक्ल १ रविवार १९७४ संवत् २०३१ वृजनन्दन शास्त्री मन्त्री श्री पीताम्बरा संस्कृत परिषद् दतिया (म.प्र.)

#### तृतीय संस्करणस्य प्रकाशकीयम्

पूज्यपादैः राष्ट्रगुरुभिः श्री स्वामिपादैः बहुकालपूर्वमेवास्य ग्रन्थरत्नस्य प्रणयनं विहितम्। भगवत्याः पराम्बायाः श्रीबगलामुख्याः विषयप्रतिपादकाः ग्रन्थाः अल्पसंख्यायामेवोपलभ्यन्ते। अप्रकाशित विषयः यत्रतत्र साधकानां समीपमुपलभ्यते। पूज्यपादैः अस्मिन् ग्रन्थे श्रीबगलामुख्याः साधनायाः समस्तोऽपि विषयः एकत्रीकृतः। प्रथमसंस्करणादेव विद्वत्सु साधकवर्येषु च अस्य ग्रन्थस्य महान् प्रचारोऽभूत्। तृतीय संस्करणस्य प्रकाशनं पूज्यपादानां कृपयैव समजिन। अस्मित्रवसरे पूज्य श्रीचरणानां स्मरणं भवत्येव। तेषामेव कृपा सम्प्रति ग्रन्थप्रकाशनस्य कार्यः सुष्ठु प्रचलति। अनेन संस्करणेन साधकानां पथप्रदर्शनं भविष्यति-इति आशास्महे।

9-97-68

प्रान्तिक है कि एक । कर्मान के कि स्थिति विनीत है कि विनाद गीता जयन्ती श्रीपीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्, दतिया (म. प्र.)

STATE LAND

### चतुर्थ संस्करणस्य प्रकाशकीयम्

भारतीय वाङ्मयस्य संस्कृतेश्च द्वौ आधारौ वर्तेते। निगमः आगमश्च। तत्र आगमीय धर्मः सरलत्वात् सहजत्वात् वोध गम्यत्वात् साधना सौकर्याच्च प्राथम्यं लभते। भगवता शंकरेणोपदिष्टोऽयं मार्गः मुख्यतया भगवत्याः पराम्बायाः रूपासु दशसु महाविद्यासु विभक्तः वर्तते।

तासु अन्यतमा सिद्धविद्या श्री बगलामुखी वर्तते तस्या वर्णनं सांख्यायनादि तन्त्रेषु वर्तते। परं तस्याः सर्वाङ्गीण तन्त्रग्रन्थाः नोपलभ्यन्ते। स्वनामधन्यस्य देशिक प्रवरस्य श्री गुरोः आज्ञायां स्थिताः श्री १००८ गुरुचरणाः श्री स्वामिपादाः महत्परिश्रमं कृत्वा तन्त्रराजस्य सर्वा सामग्री एकत्रीकृत्य तथा च क्रमानुसारं योजयित्वा साधकानां महद्धितं विहितम्। तस्येदं चतुर्थम् संस्करणं ब्रह्मलीनानां साक्षात् शंकरावताराणां श्रीस्वामिपादानां दशमपुण्यतिथौ तेषां संस्मरणार्थ प्रकाश्यते।

आशासे अनेन साधका जगतः मार्गदर्शनं साधनायां साफल्यञ्च लभेत इति प्रार्थयते।

गंगा दशहरा १३-६-८९ संवत् २०४६ निवेदकः मन्त्री श्री पीताम्बरापीठ संस्कृत परिषद्, दतिया (म.प्र.)

#### पञ्चम संस्करणस्य प्रकाशकीयम्

ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पराम्बायाः श्रीबगलामुख्याः सर्वविषय प्रतिपादन परिमदं "श्री बगलामुखी रहस्यम्" नामकं ग्रन्थरत्नं पूज्यपादैः गुरुवर्यैर्ब्रह्मलीनै: साक्षात् शंकरावतारै: श्रीस्वामिपादै: विरचितम्।

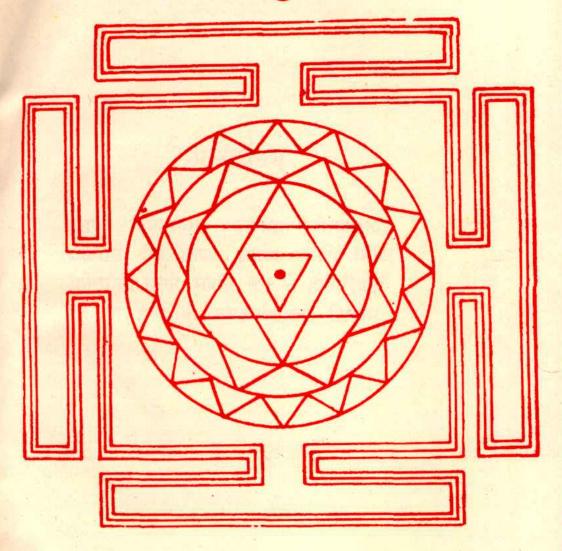
श्रीस्वामिपादाः महत्परिश्रमं कृत्वा तन्त्रराजस्य सर्वाःसामग्री एकत्रीकृत्य तथा च क्रमबद्धं योजियत्वा साधकानां महद्धितं विहितम्। साधकाः अस्मिन् ग्रन्थे मातुः श्रीबगलामुख्याः श्रीपीताम्बरायाः सर्वे विषयाः एकत्रैव प्राप्तुं शक्यन्ते। अस्य ग्रन्थस्य पंचमसंस्करणं मातुः वागीश्वर्यां जयन्त्यां श्रीपञ्चमी वसन्तोत्सवे प्रकाश्यते। श्रीपीताम्बरायाः ग्रन्थरत्नमिदं साधकानां हिताय मंगलाय च भूयात्। अस्ति हिताय मंगलाय च रहीत सन्वा संस्काणं ब्रह्मलीनासं साहाति राष्ट्रपावताराणां

अश्विन नवरात्रायां कार्य निष्ठाताम् कारण किलाम मन्त्री मारी संवत् २०५४ विक्रमाब्दः

श्री पीताम्बरापीस संप्रता परिवर

ओखिणादानां दश्वसुणेयातिशे तेवां सम्परणाणे रकार्यते। निवेदक: श्री पीताम्बरा-पीठ: दितया (म.प्र.)

### श्री बगलामुखी यन्त्रम्



### ners compared to the feet and all entering the second of

श्रीक नामीयः प्रतिदेव रहिपाययेव प्राथम्यान वार्त्वानात्वात्राम् सामानात्वा

अवशिक्षानि इत्तराणि परंत है पाणि आसापेच हर्षा ताराण जान अभावीन

मानिवासीयूर्च निवर्तिया के भी कि कि विविध्य प्रमानिवासी कि

च श्रीवाराम्ययपाराम्। असेन स्त्रं सम्बर्ध गांचा, प्राप्यक्षे च वाचान्य

### म्पान कर्मा अभ्यर्थनम् हार्मण विकास हिन्ताह

दृशा द्राघीयस्या दरदिलतनीलोत्पलरुचा, दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामिप शिवे। अनेनाऽयं धन्यो भवति नच ते हानिरियता वने वा हर्म्ये वा समकरिनपातो हिमकरः।।

#### निवेदनम्

अनादिकालात् प्रतिष्ठिता एकरूपाऽपि जगन्मातुरुपासना नामरूपाभ्यां वैविध्यमासाद्य साधकरुचिभेदाद् अनेकरूपतां, दशमहाविद्यारूपेण सरहस्यां प्रशस्ततां च भजते। काली तारा षोडशी-इति नामिभः प्रसिद्धं तद्रूपत्रयमेव प्राधान्येन शक्तितत्त्वपरिचायकम्, अविष्टानि इतराणि सप्त रूपाणि आसामेव रूपान्तराणि-इति आमनन्ति आगमविदो मनीषिणः। युगभेदात् प्रधानतामुपगतानि इमान्यपि सप्त रूपाणि मूलत्रयवत् परिणतानि। अधुना तु कालीतारादिरूपत्रयवद् इतरेषां सप्तानामिप मुख्यत्वेन व्यवहारः। एतत् सर्वं विस्तरेण प्रपञ्चितं शक्तिसङ्गमस्य ताराखण्डे। अतः १) काली २) तारा ३) षोडशी ४) भुवनेश्वरी ५) छित्रमस्ता ६) त्रिपुरभैरवी ७) धूमावती ८) बगलामुखी ९) मातङ्गी १०) कमला एताः दश महाविद्यापदेन अभिधीयन्ते।

उपदिश्य मां, श्रीमदाचार्यदेवा इत्थं समादिशन्-श्रीबगलामुखी महाविद्यामाश्रित्य विरचनीयः कोऽपि नवः सर्वाङ्गपूर्णो ग्रन्थः, स्थापनीयं च श्रीपीताम्बरापीठम्। अनेन त्वं लप्स्यसे शान्ति, प्राप्स्यसे च सर्वमन्यदे यद् यद् भवेत् तेऽभिलिषतम्। ततस्तेषां वचोऽनुसृत्य दितयामागतेन मया स्थापितं श्रीपीताम्बरापीठं विरचितश्चायं श्री 'बगलामुखीरहस्य' नामको ग्रन्थः।

काली तारा षोडशीस्वरूपाणां महाविद्यानाम् उपासका यथा सर्वत्रबाहुल्येनोपलभ्यन्ते, तत्तद्धिकृत्य विनिर्मितै: ग्रन्थै: यथा विषया विशदतां समानीयन्ते, तत्तद्विषयाणां ज्ञातारश्च यथाऽधिकतया दृश्यन्ते, न तथा श्री बगलामुख्या:, यत: इयं महाविद्या सर्वत्र सङ्कटसमये एव समाराध्यते। अत एवास्यास्तन्त्रयन्थाः स्वल्पा एव। तेषु षटत्रिंशत् पटलैर्विभक्तः सर्वाङ्गपूर्णः 'साङख्यायन' तन्त्राख्यो ग्रन्थः, यस्मिन् हि एतस्या विद्यायाः प्रायः सर्वाणि अङ्गानि प्रतिपादितानि, किन्तु पञ्चाङ्गादीनाम् अनेकोपयोगिविषयाणां तत्राऽदर्शनात् एवंविधस्याऽस्य ग्रन्थस्य आवश्यकताऽनुभूयते उपासकैः।

अत्र हि विविधागमपारदृश्वनां विदुषां कृपातः समुपलभ्य, अनेकानेकदुर्लभतन्त्रग्रन्थेभ्यश्च संगृह्य षडाम्नायोपदेश-गुरुक्रमदीक्षापद्धति-वैदिक रहस्यप्रभृतयः विषयाः यथास्थानं सिन्नविष्टाः इति नातितिरोहितं परिशीलयताम्। 'काली, तारा, षोडशी–एतास्तिस्र एव शक्तिरूपेण समुपास्याः अन्यासांतूपासना केवलं प्रयोगायेति' वदतां विदुषां धारणा भ्रामिका एव, यतः नासौ सिद्धान्तः सार्वदेशिकः स्वतन्त्ररूपेण आसां समुपासकानां साधनपद्धतीनां च समुपलब्धेः।

न कस्याप्याम्नायस्य नायिका श्री बगलाविद्येति वदद्धिः पण्डितैः प्रथमपरिच्छेदस्य २४ प्रकरणे पृ. ९३-९६ प्रदर्शितः सांख्यायनतन्त्रोक्तः यन्त्रराजोद्धारः विवेचनीयः। अयं हि उत्तराम्नायगतः। अत्र हि कालीतारा-षोडशीप्रभृतयः सर्वाः विद्याः श्रीबगलामुख्या अङ्गरूपत्वेन पूज्यन्ते। अर्ध्वाम्नाये चापि पूज्यते इदं यन्त्रम्। श्रीविद्योपासकैश्च अङ्गरूपत्वेनो-पदिश्यते श्रीबगलेयम्।

अधुना अस्या एव प्रथाया अधिकतरः प्रचारः दृश्यते श्रीभास्कराचार्यैः शक्तिसङ्गमकारैश्च इत्थमेव स्वीकृतम्।

स्वतन्त्रसत्तामापन्ने बगलाक्रमेऽपि अभिषेकपूर्णाभिषेकादिक्रियाणां सत्ता अव्याहतरूपेण सिध्यति। अतः क्रमदीक्षा प्रकरणे षडाम्नायोपदेशक्रमः सिन्नवेशितः। विवादास्पदोप्ययं विषयः पूर्वोक्तप्रमाणभूताधारस्य सिद्धात्वात् सुखेन निर्णेतुं शक्यते। आशासे यदयं ग्रन्थः समुपासनाकार्ये समुचितं साहाय्यं समर्प्य श्री बगलामुखीसाधकान् सन्तोषियष्यतीति।

किञ्च पुस्तकस्यास्य सम्पादनभारं वहताम् आचार्य श्रीसदाशिव दीक्षितानाम् इदं परिश्रमफलं, येनासौ ग्रन्थः परिष्कृतरूपेण पाठकानां सम्मुखे समानीत इति शम् – हिं विकित्त अपि विकित्त विकित्त सम्मुखे प्रभावताच्या अनेकोपयोगिवष्याणी त्यापद्रश्रमात् । गायभस्यात्रमा

प्राप्ता मध्य संस्थानिक स्थानिक स्थानि

प्रयोग विक्रीस्था व अध्यक्षित । प्रश्नित अधिक व विक्रा प्रयोग ।

विकासिक स्थानिक विकास मान्या है। विकास के विकास के विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास

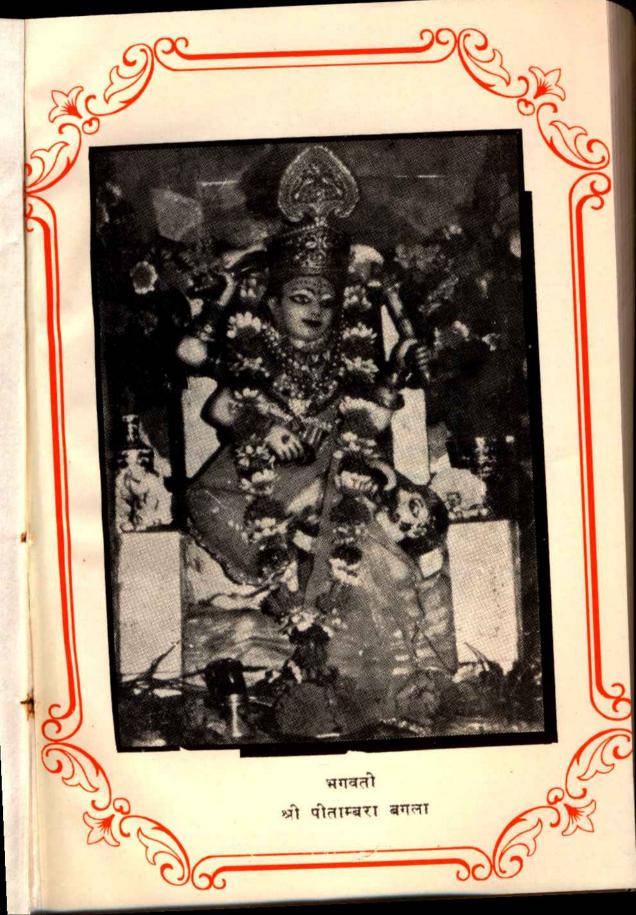
निवेदकाः

दतिया

श्री स्वामिनः

पत्ररावल सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः निगमागमतन्त्रपारीणाः चतुर्दश्याम् २०२१ परमन्त्रपारीन

श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वराः राष्ट्रगुरवः provide by Recommendate and





### श्रीबगलामुखी-तन्त्र-संग्रहः

संग्रेपम

यद्गेहे निवसेत् तन्त्रं, तत्र लक्ष्मीः स्थिरायते।
राजद्वारे श्मशाने च सभायां रणमध्यतः।।१।।
निर्जने च जले घोरे श्वापदैः परिवारिते।
माहात्म्यं तस्य देवेशि चमत्कारीयते प्रिये।।२।।
-बृहन्नीलतन्त्रम्
इयं या परमेष्ठिनो वाग् देवी ब्रह्मशंसिता।
ययैव समुजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु न।
- अथर्व. १९।१।३

#### समर्पणम्

यत्कारुण्यमवेक्ष्य भावभिततं सानन्दगीतं सतां, तिच्चन्तानिपुणैकशुद्धमतयो ये साधकाः सज्जनाः।। तेषां लब्धकृपालवेन जननीबोधोदयो मेऽभवत्, तद्वृत्तं विनिवेद्य साम्प्रतमहं तोषं परं प्राप्तवान्।।१।।

वाक्ये मातृचरित्रभेदप्रथने दोषो बुधैः कथ्यते, तत्क्षान्ति प्रसमीक्ष्य मोदभरितां यत्नः कृतोऽयं मया। वैगुण्यं गुणमादधद् यदि ममालेख्यं पराम्बाथवा, दृष्ट्वा मोदमवाएयतीति ममता स्वीयेषु कस्यास्ति नो।।२।।

> सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः परमहंसपरिव्राजकाचार्याः श्री अनन्त श्री स्वामीजी महाराजाः श्रीपीताम्बरापीठ दतिया (म.प्र.)

वर्षन समुखे थोरं सबैब आस्तिरान् म।

### श्री जनावासूड्यी क्रास्ट

कारणाविक्षातिकारणा व्यवस्थातिकारणाउँ विकास । प्राथमित वृक्षिप्रविद्यात्र साम्राज्याति से विक्षेत्र । वृक्षित्र विक्षित्र साम्राज्ये प्राप्त विक्रमा । वृक्षित्र वृक्षित्र वृक्षित्र साम्राज्ये प्राप्त विक्रमा ।

## श्री बगलामुखी रहस्यम्

व्यव व्यवस्था (व्यवस्था प्रणानिक विश्वस्था । वृत्त व्यवस्था वृत्ति व्यवस्था व्यवस्था । सम्बद्धा व क्ष्यू व्यवस्था व्यवस्था । स्थापमा व क्ष्यू व्यवस्था व्यवस्था । स्थापमा स्थापमा व्यवस्था व्यवस्था । स्थापमा स्थापमा

#### and the

The second of th

याच्ये सामग्रीमधीस्थाणीः सम्मा सुवेतः स्वयंति स्टार्वास प्रत्योगम् नीमग्रीस्थानसम्बद्धाः स्वयोगम् पर्वतः वैक्ताना जावतः स्वयं स्वर्ताः स्वयंतिक स्वयंति स्वयंतिक स्वयंति । सुन्द्रमा प्रतिप्रद्रमास्थानस्थानस्य स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक स्वयंतिक

> सर्वतिकारतात् । प्रमानकार्यः कात्रापीः स्था राज्यः श्री स्तुम्बली महाम्बलः स्तुश्रीविकारवारतिक शिवन्। स्थाः

### श्री बगलामुखी रहस्यम्

क्राज्य क्रियानाम क्रि

अन्तरायितिमिरौघशान्तये स्वेष्टशक्तिकरुणाऽरुणप्रभम्।
सन्तनोतु मुनिवृन्दसेवितम् भावगम्यमिनशं शिवं महः।।१।।
करुणापूरितिचत्तां सिच्चद्रूपां परां दिव्याम्।
ब्रह्मसहचरीं तुर्यां बगलाशक्तिं प्रणौमि सौभाग्याम्।।२।।

चतुर्विधपुरुषार्थप्रदत्त्वेन प्रसिद्धा श्री बगलामुखी देवी, तस्या उपासनाविधिप्रतिपादका ये ग्रन्थास्तन्त्रशास्त्रेषु प्रसिद्धास्तेभ्यः संगृह्य पञ्चाङ्गपटलादीन्, उपयोगिविषयांश्च सन्निवेश्य अत्र संग्रथ्यते।

एवं हि किलाऽऽख्यायते, तदुक्तं स्वतन्त्रे -

अथ वक्ष्यामि देवेशि बगलोत्पत्तिकारणम्।
पुरा कृतयुगे देवि वातक्षोभ उपस्थिते।।
चराचरिवनाशाय विष्णुश्चिन्तापरायणः।
तपस्यया च सन्तुष्टा महात्रिपुरसुन्दरी।।
हरिद्राख्यं सरो दृष्ट्वा जलक्रीडापरायणा।
महापीतहदस्यान्ते सौराष्ट्रे बगलाम्बिका।।
श्रीविद्यासम्भवं तेजः विजृम्भिति इतस्ततः।
चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता।।
कुलऋक्षसमायुक्ता वीररात्रिः प्रकीर्तिता।
तस्यामेवार्धरात्रौ तु पीतहदिनवासिनी।।
ब्रह्मास्त्रविद्या सञ्जाता त्रैलोक्यस्तम्भनी परा।
तत्तेजो विष्णुजं तेजो विद्याऽनुविद्ययोर्गतम्।।

"श्री विद्ये समये महेशि बगले" इति स्तोत्र प्रमाणाच्च।

नाइना उक्तवण होय विवयोख्याटने तथा।।

#### १. माहात्म्यम्

कैलासशिखरासीनम् गौरीवामाङ्गसंस्थितम्।
भारतीपतिवाल्मीकिः शिवासंयुतमीश्वरम्।।
अष्टदिक्पालसंयुक्तं वेवं मातृमण्डलवेष्टितम्।
महापाशुपताक्रान्तं प्रमथैरावृतं प्रभुम्।
नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च इदं वचनमब्रवीत्।।
श्री क्रौञ्चभेदन उवाच

चापचर्यासु निपुणैर्युद्धचर्याभयङ्करैः। नानामायाविनं चैव जेतुमिच्छामि राक्षसम्।। तस्योपायं च तद्विद्यां ब्रूहि मे करुणाकर। पुत्रोऽहं तव शिष्योऽहं कृपापात्रोऽहमेव च।।

#### श्री ईश्वर उवाच

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रौश्चभेदनकोविद।
ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रोः संहारो न भवेत् किल।।
तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम्।
पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित्।।
ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा।
प्रवृत्तिरोधिनी विद्या बगला च कुमारक।।
पन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्रज्ञाऽपहारिका।
पट्कर्माऽऽधारविद्या च रात्रेः पर्यायवाचकाः।।
पट्प्रयोगमयी विद्या षड्विद्याऽऽगमपूजिता।
तिरस्कृताऽखिला विद्या, त्रिशक्तिमयमेव च।।
स्तम्भनेन विना वश्यं शान्तिश्चैव तु तद्विना।
मोहनाऽऽकर्षणे चैव विद्वेषोच्चादने तथा।।

मारणम् भ्रान्तिरुद्वेगकरणं च कुमारक। विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्या सुपावनी।। विना वाक्स्तम्भिनीं विद्यां स्वविद्या न च भासते। तस्मादेतन्महाविद्यां कमलासनजीविनीम्।। पद्मजो नारदो विद्यां सांख्यायनमुनि प्रति। उपदेशक्रमेणैव दत्तवान् मेरुकन्दरे।। तेन देवीकटाक्षेण कृतवानागमं भुवि। मूलमन्त्रोपविद्याश्च अङ्गविद्या च विस्तरात्।। प्रयोगं चोपसंहारं तदाऽऽराधनमेव विस्तरेणोक्तवानस्मिन् वक्ष्ये तत्सर्वमादरात्।। स्वविद्यारक्षिणी विद्या स्वमन्त्रफलदायिका। स्वकीर्तिरक्षिणी विद्या शत्रुसंहारकारिका।। परविद्याछेदिनी च परमन्त्रविदारिणी। परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारिका।। परानुष्ठानहारिणी परकीर्तिविनाशिनी। पराऽऽपन्नाशकृद् विद्या परेषां भ्रमकारिणी।। ये वा विजयमिच्छन्ति ये वा जन्तुक्षयं कलौ। ये वा क्रूरमृगेभ्यश्च जयमिच्छन्ति मानवाः।। इच्छन्ति शान्तिकर्माणि वश्यं संमोहनाऽऽदिकम्। विद्वेषोच्चाटनं पुत्र तेनोपास्यस्त्वयं मनुः।। सत्सम्प्रदायविधिना सद्गुरोर्मुखतस्तथा। उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम्।। कुलाऽऽचारसमायुक्तः कुलमार्गेण पुत्रक। दीक्षाकाले गुरोर्योगो गृहीतव्यः सुबुद्धिमान्।। साधयेत् कुलमार्गेण तेन यन्त्रं प्रयोजयेत्। उपसंहरण तेन कर्त्तव्यं कुलयोगिना।। सौभाग्येन समायुक्तैः सदा तर्पणपूर्वकैः।
सदा पूजासमायुक्तैश्चिन्तितं भवति ध्रुवम्।।
ऋषिसिद्धाऽमरैश्चैव विद्याधरमहोरगैः।
यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचब्रह्मराक्षसैः।।
पञ्चेन्द्रियैश्च संचारं सद्यो हन्त्यनिशं मनुः।
पण्डितोऽपण्डितो जीवः किं पुनः क्रौञ्चभेदन।।

॥ इति सांख्यायनतन्त्रे प्रथमः पटलः॥

#### क्रिकार्टी तथा च नहार्मा

बगलेति महामन्त्रं सर्वेषां सर्वकामदम्। केवलेन जपेनैव लक्षेण कालि सिद्ध्यति।। वशीकरणकर्मादि दशसाहस्रतो भवेत्। अथ वक्ष्ये महेशानि बगलासाधनं तव।। बगलेति मनोः संख्या पुरश्चरणकर्मणि। लक्षेण मन्त्रसिद्धिः स्यात् नास्त्यत्र युगसंख्यकम्।। ततो वश्यादि कर्त्तव्यं दशसाहस्रसंख्यया। शरीराऽऽरोग्यतो वापि धनेच्छुश्चायुतं जपेत्।। कलावेतस्य तु मनोः प्रभावं किं ब्रवीमि ते। सहस्रमात्रहोमेन सर्वसिद्धिर्नचाऽन्यथा।। नास्त्यपेक्षा हि ऋष्यादेः स्तुतिपाठादिकस्य वा। स्तुतिर्वा कवचं वाऽपि ऋष्यादिन्यास एव च।। बगलेति स्वयं सर्वं सिद्धविद्या इति प्रिये। त्वयाऽऽद्यारूपया काल्या स्वयमुक्तं पुरैकदा।। शरीराऽऽरोग्यतो देवि वैरिनिग्रहतोऽपि वा। दिवा नक्तं च कर्तव्या सहस्रमानतो हुती:।।

केवलाऽऽहुतिमात्रेण रात्रावारोग्यतां लभेत्। बगले इति यो द्विश्चाप्युक्त् वोच्चैर्यत्र वा वदेत्।। पथिस्था विघ्नदाः सर्वे पलायन्ते तमीक्षिताः। भवेद्धि सफलं कर्म, बगलेति स्मरन् जनः।। बगलाजापिनं दृष्ट्वा सर्वे भीतिमवाप्नुयुः।

।। इति वह्निपुराणे पाशुपतदानाऽध्यायः।।

#### अथ मन्त्रयन्त्रविधानात्मकः प्रथमः परिच्छेदः

### २. अथ बगलामुखीपटलः

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनीं बगलामुखीम्।
प्रणवो गगनं पृथिवी शान्तिविन्दुर्युतं बग-॥१॥
ला मु साक्षो गदी सर्वदुष्टानां वा हलीन्दुयुक्।
मुखं पदं स्तम्भयान्ते जिह्नां कीलय वर्णकाः॥२॥
बुद्धिं विनाशयान्ते तु बीजं तारोऽग्निसुन्दरी।
षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः नारदो मुनिरस्य तु॥३॥
छन्दस्तु बृहती शेषं देवता बगलामुखी।
नेत्राक्षसायकनवपंचकाष्टाभिरङ्गकम् ॥४॥।

#### आवाय जनाति कि अथ ध्यानम् उर्देशकतिन प्रमानत

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्।
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।।
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां स्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।५।।
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षमयुतं चम्पकोद्भवैः।
कुसुमैर्जुहुयात् पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम्।।६।।

चन्दनागुरुचन्द्राद्यैः पूजार्थं यन्त्रमालिखेत्। त्रिकोणषड्दलाष्टास्रषोडशारधरापुरे 💎 🤭 ।।७।। मध्ये सम्पूजयेद् देवीं कोणे सत्त्वादिकान् गुणान्। षट्कोणेषु षडङ्गानि मातृभैरवसंयुताः।।८।। सम्पूज्याऽष्टदले पद्मे षोडशारे यजेदिमाः। मङ्गला स्तम्भिनी चैव जृम्भिणी मोहिनी तथा।।९।। वश्या बला बलाका च भूधरा कल्मषाऽभिधा। धात्री च कलना कालकर्षिणी भ्रामिकाऽपि च।।१०।। मन्दगमना भोगस्था भाविका षोडशी स्मृता। भूगृहस्य चतुर्दिक्षु पूर्वाऽऽदिषु यजेत् क्रमात्।।११।। गणेशं बटुकं चापि योगिनीं क्षेत्रपालकम्। इन्द्रादींश्च ततो बाह्ये निजाऽऽयुधसमन्वितान्।।१२।। इत्यं सिद्धमनुर्मन्त्री स्तम्भयेद् देवताऽऽदिकान्। पीतवस्त्रस्तदासीनः पीतमाल्याऽनुलेपनः।।१३।। पीतपुष्पैर्यजेद्देवीं हरिद्रोत्यस्रजा जपन्। पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्वयुतं जपेत्।।१४।। त्रिमध्वाऽऽज्यतिलैर्होमो नृणां वश्यकरो मतः। मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्वयम्।।१५।। तैलाभ्यक्तैर्निम्बपत्रैर्होमो विदेषकारकः। ताललवणहरिद्राभिर्द्धिषां संस्तम्भनं भवेत्।।१६॥ अङ्गारधूमं राजीश्च माहिषं गुग्गुलं निशि। श्मशानपावके हुत्वा नाशयेदचिरादरीन्।।१७।। गरुतो गृद्धकाकानां कटुतैलविभीतकम्। गृहधूमचितावह्रौ हुत्वा प्रोच्चाटयेद् रिपून्।।१८।। दूर्वागुडूचीलाजान् यो मधुरत्रितयाऽन्वितान्। जुहोतिसोऽखिलान् रोगान् शमयेद् दर्शनादिप।।१९।।

पर्वताग्रे महारण्ये नदीसङ्गे शिवालये। ब्रह्मचर्यरतो लक्षम् जपेदखिलसिद्धये।।२०।। एकवर्णगवीदुग्धं शर्करामधुसंयुतम्। त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद् विषपराभवम्।।२१।। श्वेतपालाशकाष्ठेन रचिते रम्यपादुके। असक्तरंजिते लक्षं मन्त्रयेन्मनुनाऽमुना।।२२।। तदारूढः पुमान् गच्छेत् क्षणेन शतयोजनम्। पारदं च शिला तालं पिष्टं मधुसमन्वितम्।।२३।। मनुना मन्त्रयेल्लक्षं लिंपेत्तेनाऽखिलां तनुम्। अदृश्यः स्यात्रृणामेष आश्चर्यं दृश्यतामिदम्।।२४।। षट्कोणे विलिखेद्वीजं साध्यनामान्वितं मनोः। हरितालनिशाचूर्णेरुन्मत्तरससंयुतैः ॥२५॥ शेषाऽक्षरैः समा बीजं धरागेहविराजितम्। तद् यन्त्रं स्थापितप्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत्।।२६।। भ्राम्यत्कुलालचक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिकां तथा। रचयेद् वृषभं रम्यं यन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत्।।२७।। हरितालेन संलिप्य वृषभं प्रत्यहमर्चयेत्। स्तम्भयेद् विद्विषां वाचं गर्तिं कार्यं परम्पराम्।।२८।। आदाय वामहस्तेन प्रेतभूमिस्थखर्परम्। अङ्गारेण चितास्थेन तत्र यन्त्रं समालिखेत्।।२९।। मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् गतिम्। प्रेतवस्रे लिखेद् यन्त्रमङ्गारेण च तत्पुनः।।३०।। मण्डूकवदने न्यस्येत् पीतसूत्रेण वेष्टयेत्। पूजितं पीतपुष्पैस्तद् वाचं संस्तम्भयेद् द्विषाम्।।३१।। यद्भूमौ भविता दिव्यं तत्र यन्त्रं समालिखेत्। मार्जितं तद् वृषापत्रैर्दिव्यस्तम्भनकृद् भवेत्।।३२।।

इन्द्रवारुणिकामूलं सप्तांशो मनुमन्त्रितम्। क्षिप्तं जले दिव्यकृतं जलस्तम्भनकारकम्।।३३।। किं भूरिणा साधकेन मन्त्रः सम्यगुपासितः। शत्रूणां गतिबुद्धचादेः स्तम्भनो नात्र संशयः।।३४।।

॥ इति मन्त्रमहोदधिसम्मतो बगलामुखीपटलः॥

#### ३. षट्कर्मदीपिकोक्तविधानम् कार्मा विकास विकास विकास

#### श्री देव्युवाच

प्रभो त्वं भैरवश्रेष्ठः सर्वमन्त्रार्थजीवकः।
नानारहस्यसारं च त्वदृते न शृणोम्यहम्।।
दिव्यतन्त्रं महातन्त्रं पूर्वपश्चिमसंज्ञकम्।
दिक्षणोत्तरमूर्ध्वं च उपायाः कर्थिताः प्रभो।।
वश्याऽऽकर्षणदिव्यं च मारणोच्चाटनाऽऽदिकम्।
विद्वेषं मोहनं चान्यद् विविधं कामनादिकम्।।
विस्तारं कथितं पूर्वं ज्ञातव्यं सर्वसंज्ञया।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि स्तम्भनं कथयस्व मे।।
अनुगृहाण देवेश यद्यहं तव बल्लभा।

#### श्री भैरव उवाच

साधु साधु त्वया प्राज्ञे सर्वमन्त्रार्थसाधिके।
न कस्यचिन्मयाऽऽख्यातं शृणु सुन्दिर यत्नतः।।
गुह्याद् गुह्यतरं देवि स्नेहात्ते प्रकटीकृतम्।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणु चैकाग्रमानसा।।
विद्या या परमा गुप्ता महास्तम्भनरूपिणी।
ॐकारं पूर्वमुच्चार्य स्थिरमायामथोच्चरेत्।।

सम्बोधनपदं चोक्त्या ततः श्रीबगलामुखि। तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्।। स्तम्भयेति पदं पश्चात् कीलयेति पदं पुनः। वुद्धिं विनाशय पश्चातु स्थिरमायां पुनर्वदेत्।। लिखेच्य पुनरोङ्कारं स्वाहेति पदमन्तिमम्। षट्त्रिंशदक्षरा विद्या देवानामपि दुर्लभा।। वह्निहीनेन्दुयुङ् माया स्थिरमाया प्रकीर्तिता। गजस्य च रथानां च द्विजानां शीघ्रचेतसाम्।। स्तम्भितां च महावाचां बृहस्पतिमुखोद्गताम्। महापर्वतवृक्षाणां सरितां सागरस्य च।। स्तम्भयेत्तानि दिव्यानि मानुषेषु च का कथा। त्रैलौक्यमोहिनी विद्या तस्माच्य बगलामुखी।। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि विविधं कामनागतम्। न्यासं ध्यानं जपं होमं मन्त्रमेव पृथक् पृथक्।। अङ्गन्यासं प्रवक्ष्यामि कराङ्गविधिपूर्वकम्। ॐ स्थिरमायां च हृदये मूर्ध्नि श्री बगलामुखी।। शिखायां सर्वदुष्टानां वाचे मुखं स्तम्भयेति। कवचे कीलयद्वन्द्वं नेत्रे बुद्धिं विनाशय।। ह्लीं ॐ स्वाहा तथा चास्त्रे षडङ्गविधिरीरितः। युग्मकालेषु सप्तर्तुदशाणैंश्च मनूद्भवैः।। करशाखासु तलयोः कराङ्गन्यासमाचरेत्। नारायण ऋषिर्मूर्धिन त्रिष्टुप् छन्दस्तु तन्मुखे।। श्री बगलामुखी देवी हृदये विन्यसेत्ततः। ह्लीं बीजं गुह्यदेशे तु स्वाहा शक्तिश्च पादयोः।। इष्टार्थे विनियोगस्तु ऋष्यादिन्यास एव च। मूर्ध्नि भाले दृशोः श्रुत्योर्गण्डयोर्नसयोः पुनः।। ओष्ठयोर्मुखगण्डे च दक्षिणां ऽशे च कूपरे।
तथैव मणिबन्धे च तथां चाङ्गिलमूलके।।
गलमूले दक्षस्तने वामस्तने तथा हृदि।
नाभौ कट्यां गुह्यदेशे वामांशे कूपरे तथा।।
मणिबन्धेऽङगुलीमूले विन्यसेतु समाहितः।
दक्षोरुमूले जानौ च गुल्फे चाङ्गुलिमूलके।।
मूलमन्त्राक्षरैर्विद्वान् विन्यसेत् क्रमयोगतः।
एवं न्यासविधि कृत्वा ततो ध्यानं शृणु प्रिये।।

## ा स्टान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड्रान्ड

गम्भीरां च मदोन्मतां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्नां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़पीनपयोधराम्।।
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।
पीतभूषणपीताङ्गी स्वर्णिसंहासने स्थिताम्।।
एवं ध्यात्वा जपेत्ततोत्रमेकाग्रकृतमानसः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति मन्त्रध्यानपुरः सरम्।।
आनन्दकारिणी देवी रिपुस्तम्भनकारिणी।
मदनोन्मादिनी चैव प्रीतिस्तम्भनकारिणी।।
महामाया महाविद्या साधकस्य फलप्रदा।
यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्।।
इति।।

## र । अथ साधनम् विकास साधिनम्

साधनं संप्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै। सर्वपीतोपचारेण पीताम्बरधरो नरः।। जपमालां च देवेशि हरिद्राग्रन्थिसम्भवाम्।
पीतासनसमारूढः पीतध्यानपरायणः।।
पीतपुष्पार्चनं नित्यमयुतं जपमाचरेत्।
दशांशैश्च कृतो होमः पीतद्रव्यैः सुशोभनैः।।
संज्ञामुच्चारयेत् साध्यं स्तम्भनं च महाद्भुतम्।
शृणु प्राज्ञे महागुद्धं प्रकटीकृतसाधनम्।।
एकान्ते निर्जने स्थान शुचौ देशे गृहे पुरे।

# २. अथ कर्मविशेषे कुण्डलक्षणम्

कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा मेखलात्रयशोभितम्। योनिवृत्तं त्रिमात्रैः स्यात्तत्र होमं तु साधयेत्।। वश्ये तु चतुरस्रं च आकर्षणे त्रिकोणकम्। तथैवोच्चाटने प्रोक्तं षट्कोणं मारणे स्मृतम्।।

# ३. अथाऽऽसनभेदाः

वश्ये मेषासनं प्रोक्तं कर्षणे व्याघ्रचर्मणि। शान्तौ मृगासनं प्रोक्तं गोचर्म स्तम्भने मतम्।। उष्ट्रासनं तथैवोच्चाटे विद्धेषे तुरगासनम्। मारणे महिषीचर्म मोक्षे चैव गजाजिनम्।। नानाविधानि ते देवि क्रमाद् द्रव्यं समाचरेत्।

# ४. कर्मविशेषे यज्ञीयसामग्री

मधुलाजितलाज्येन वश्यलाभानि साधयेत्। आकर्षणे तथा लोध्रं सितलं मधुरान्वितम्।। निम्बपत्रं च तैलाक्तं विद्वेषकरणं परम्। हरितालं हरिद्रां च लवणेन च संयुताम्।। स्तम्भयेच्यैव देवेशि प्रज्ञां चैव गर्ति मतिम्। वाजिनाथस्य सारेण रुधिरेणैव होमयेत्।। मारणे तु रिपोर्देवि श्मशानाग्नौ हुतेन्निशि। क्षुद्राणां काकपक्षाणां गृहधूमेन संयुताम्।। लाजां त्रिमधुरसंयुक्तां सर्वरोगप्रशान्तये। लक्षमेकं जपेन्मन्त्री ब्रह्मचारी दृढ़ब्रतः।। पर्वताग्रे महारण्ये सिद्धशैवालये गृहे। संगमे च महानद्याः साधकः साधयेत् स्वयम्।। श्वेतब्रह्मतरोर्मूले पादुकां चैव रञ्जयेत्। अलक्तकेन रागेण रञ्जिता नवमुद्रया।। षट्त्रिंशदक्षरा विद्या लक्षैकेन च मन्त्रिता। शतयोजनमात्रं तु मनश्चिन्तितमागता।। रसं मनःशिला तैलं माक्षिकेण समन्वितम्। इति मन्त्रं लक्षमेकं सर्वाङ्गे लेपनं कृतम्।। अदृश्यकारकं देवि लोके च महदद्भुतम्। एकवर्णगवीदुग्धं धारोष्णं चैवमाहरेत्।। शर्करामधुसंयुक्तं त्रिशतं मन्त्रितं प्रिये। पीत्वा च हरते शीघ्रं विषं स्थावरजंगमम्।। दारिक्र्यमोचनं देवि लक्षमेकं जपेन्नरः। दशांशेन कृतो होमो द्रव्यैरेभिर्घृतप्लुतै:।। लक्ष्मीयुक्तो भवेद्देवि दारिद्रचं नाशयेद् ध्रुवम्। न्।। तिह नवाचीन वश्यनामाने साययेन। अथाऽन्यं सम्प्रवक्ष्यामि कामनामान्त्रिकोपरि। पत्रैर्वाऽप्यथ पाषाणैः संज्ञानाम् च कारयेत्।। आद्यन्ते स्थिरमायाञ्च हरिद्रातालकैर्लिखेत्। गर्भस्तम्भनकरी देवी चमत्कारकरी परा।।

भूर्जपत्रे समालिख्य तालोन्मत्तरसैर्निशि। षट्कोणमध्यमालिख्य विद्यां बलयतो लिखेत्।। मध्यसंज्ञाम् च देवेशि पीतसूत्रेण वेष्टयेत्। चक्रं भ्राम्यत्कुलालस्य विपरीतं च मृत्तिकाम्।। तन्मध्ये विलिखेद् बीजं त्रिवलीकारतः प्रिये। षष्ठ्यन्तं साध्यनामार्ण मुखं स्तम्भय चोच्यते।। बाह्ये वेष्ट्यं महाबीजं चतुःसाध्याख्यमालिखेत्। साध्यनामाक्षरं देवि अभिमन्त्र्य च विद्यया।। षष्ठ्यन्तं चोच्चरेत् साध्यं सम्बोधनं च दैवतम्। मा सुप्तेति पदं पश्चाद्वदेदाम्रेडितान्तरम्।। पीतोपचारैः सम्पूज्य मुखस्तम्भनमीरितम्। एतन्मन्त्रं वरारोहे श्मशानाङ्गारके लिखेत्।। भेकस्य वदने क्षिप्चा पीतवस्त्रेण वेष्टयेत्। भूमिष्ठमण्डलं कृत्वा पीतपुष्पैः समर्चयेत्।। उच्चारयेत् सर्वमन्त्रपदमुच्चार्य चालय। वामपादेन \*सम्पूर्णां कुलालस्य च मृत्तिकाम्।। पूरकस्य च योगेन प्रयोगं प्रतिपद्यते। अन्योन्यं लिखितत्वेन कृत्वोत्रद्धं समन्ततः।। वामदक्षिणसम्बन्धात् द्वौ द्वौ पादौ प्रकल्पयेत्। नाम साध्यस्य च शतं गतिं स्तम्भयेति च।। पूर्ववत्पदमालिख्य पाषाणस्य च पट्टिके। पूर्ववत् संमुखीकृत्य पीतसूत्रेण वेष्टयेत्।। शय्यां पातालसंस्थां च खनेत खातं प्रयत्नतः। वामहस्ते न्यसेत् खातं पीतपुष्पेण पूजयेत्।। महदाश्चर्यजनकं गतिस्तम्भनमुत्तमम्। श्मशानेऽथ परिग्राह्यं श्मशानाङ्गारमाहरेत्।।

मायाबीजं त्रिधा लिख्य साध्यसंज्ञा च मध्यतः। अपि मध्ये च ललना (क्रीं स्त्रीं) सा च त्रियलयात्मिका।। वामहस्ते खनेत् खातं खर्परं च अधोमुखम्। पूरयेद् वामपादेन स पुरुषस्तथोपरि।। स्तम्भनं चैव देवेशि रिपूणां मुखबन्धनम्। ताटङ्कपत्रमादाय लिखेत् साध्यं स्वनामतः।। आद्यन्ते विलिखेद् बीजं त्रिविधोच्चाटकं लिखेत्। वामहस्ते पुटं कृत्वा करपीडितकण्टकान्।। सप्तसंख्यकण्टकानि भित्वा चैकं पुटीकृतम्। पृथग्विधं समुच्चार्य नाम साध्यं च साधकः।। भाण्डमध्ये क्षिपेत्तं च सौवीरेण च पूजयेत्। गतिमतिस्तम्भकरं प्रयोगं प्रत्ययावहम्।। दिव्यस्तम्भनकरी देवी नानागुणमुदीरितम्। त्वत्प्रीत्या कथयिष्यामि शुणु तत् प्रियमुत्तमम्।। यत्र स्थाने भवेद्दिव्यं देवालयगृहेऽपि वा। तत्रस्थां विलिखेद् विद्यां साधकात् साध्यनामतः।। अटरुषस्य पत्रेण परिमार्ज्यं तथोपरि। स्तम्भयेत् सप्त दिव्यानि कृत्वा दोषविशुद्धये।। उत्तरावारुणीमूलं सप्तविद्याऽभिमन्त्रितम्। महाकृत्यादिदोषस्य कृतदिव्यो विशुद्धये।। अथवा दीपमार्गे च रात्रौ कृत्वा तु मण्डलम्। भूर्जपत्रे समालिख्यं पूर्वोक्तं द्रव्यमेव च।। दीपं प्रज्यालयेद् यत्नत् कपिलाऽऽज्येन पूरितम्। तावद् दीपो दोषं दग्ध्वा तप्तदीपः प्रशाम्यति।। समयाय साधकाय पुत्रिकां कुशिकां घटम्। कन्याभियोंगिनीनां तु यथाशक्ति समर्चयेत्।।

एवं तु कथितं भद्रे कामनाप्रत्ययावहम्। इयं तु परमा विद्या किमन्यत्परिपृच्छसि।।

# श्री देव्युवाच

साधनं कथितं देव महाऽऽश्चर्यप्रदायकम्। अधुना श्रोतुमिच्छामि अर्चनां विधिपृर्विकाम्।।

## श्री भैरव उवाच

पूजनं श्रुणु देवेशि साधके सिद्धिदायकम्। नित्ये नैमित्तिके काम्ये त्रिविधं पूजनं स्मृतम्।। भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदप्रपूरिते। गोमयेनाथ संलिप्य पुष्पप्रकरशोभितम्।। कामपेक्षावधिर्यत्र आसनं च समाचरेत्। सौवर्णं राजतं ताम्रं पैत्तलं भूर्जपत्रकम्।। कर्पुराऽगुरुकस्तूरीश्रीखण्डं कुंकुमेन च। लिखेत्तत्र प्रयत्नेन लेखिन्या हैमया ततः।। मध्ये योनि च तद्बाह्ये षडस्रकमतः परम्।
तद्बाह्ये षोडशदलं चतुर्द्वारोपशोभितम्।।
पूर्वद्वारे गणेशं च दक्षिणे बटुकं तथा।
पश्चिमे योगिनी पूज्या क्षेत्रपालं तथोत्तरे।।
ईशानादिषु सोमान्ते रुद्रपीठं प्रपूजयेत्। बगला पूर्वपत्रे च स्तम्भिन्याद्यास्ततः परम्।। स्तम्भिनी मोहनी वश्या अवनी कलिका तथा। अधरा कम्पिता धीरा कम्पना कामदर्शिनी।। भ्रामिका मन्दगमना भोगिन्या चैव भोगिका। भोगाः षोडश पत्रेषु गन्धपुष्पाक्षतैर्यजेत्।।

षोडशस्वरसंयुक्ता सम्प्रदायकुलागमे।
लिखेन्मध्येषु पीठेषु कल्पयेत् क्षेत्रपद्मकम्।।
ब्राह्म याद्याश्चैव पूर्वादौ भैरवाष्ट्कसंयुताः।
स्थरमायादिकाः सर्वाः परिपूज्याः कुलोद्भवे।।
आदिक्षान्ताः षडस्रेषु सप्तधातुषु मातृकाः।
योनिमध्ये मूलविद्यां त्रिभिरञ्जलिभिर्यजेत्।।
पुष्पधूपादिनैवेद्यैर्गन्धताम्बूलदीपकैः ।
नीराज्य विधिना पश्चात् जपसंख्यां निवेदयेत्।।
पवित्रारोपणं देवि वदनेषु यथाविधि।
बिलत्रयं ततो दद्यात् पूजनादिमहोत्सवैः।।
एवं तु कथित देवि गुरोराज्ञां च पालयेत्।
संसिद्धिलौंकिकी तस्य तथा निगममार्गतः।।
अपरा चैव शाक्तेयी सा चाऽभयप्रदा भवेत्।

## ॥ इति षट्कर्मदीपिकोक्तविधान्।

# ४. अथ मेरुतन्त्रोक्तविधानम् विकारम् विकारम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि स्तम्भिनीं बगलामुखीम्।
तारं मायां समुच्चार्य वदेच्य बगलमुखि।।
तदग्ने सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्।
स्तम्भयेति पदं जिह्नां कीलयेति ततः परम्।।
बुद्धिं विनाशय हीं ॐ स्वाहा वेदाग्निवर्णकः।
नारायणो मुनिस्त्रिष्टुप् छन्दश्च बगलामुखि।।
देवीबीजं तु हल्लेखा स्वाहा शक्तिः समीरिता।
विनियोगश्च विख्यातः पुरुषार्थचतुष्ट्ये।।
हल्लेखा हदयं प्रोक्तं शिरश्च बगलामुखी।
शिखा तु सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्।।

स्तम्भयेति च वर्मोक्तां जिह्नां कीलय नेत्रकम्। बुद्धिं विनाशयास्त्रं स्यात् षडङ्गन्यास ईरितः।। मूर्धिन भाले भ्रुवोर्मध्ये नेत्रयोः श्रोत्रयोर्नसोः। गण्डद्वये तथा चोष्ठेऽधराऽऽस्यचिबुकेषु च।। गले च दक्षदोर्मूले तन्मध्ये मणिबन्धके। अङ्गुलीनां तथा मूले हस्ताग्रे चैवमेव हि।। न्यसेद् वामभुजादौ च दक्षोरुमूलके ततः। दक्षजानुनि गुल्फे चाङ्गुलिमूले पदाग्रतः।। गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाश्चनसन्निभाम्। चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।। मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्नां च वज्रकम्। पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़पीनपयोधराम्।। हेमकुण्डलसंभूषां पीतचन्द्रार्धशेखराम्। पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासनस्थिताम्।। एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्। भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदसुधूपिते।। गोमयेनाऽथ संलिप्य मण्डले त्वासनं चरेत। सौवर्णे बाऽथ रौप्ये वा पैत्तले भूर्जपत्रके।। कर्पूराऽगुरुकस्तूरीश्रीखण्डकुडकुमैरपि लिखेद् यन्त्रं प्रयत्नेन लेखिन्या हेमतारयोः।। मध्ये योनिं समालिख्य तद्बाह्ये तु षडस्रकम्। तद्बाह्येऽष्टदलं पद्मं तद्बाह्ये षोडशच्छदम्।। चतुरस्रत्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम्। यत्र नोक्तं देवतायाः पीठं वा पीठदेवताः (शक्तयः)।। तत्र मायोदितं पीठं ज्ञेयास्ता एव शक्तयः। तद्बीजेन यजेत् पीठं यद्वा मायाऽणुनाऽथवा।।

तत्राऽऽबाह्य यजेद्देवीं सुपीतैरुपचारकैः। यजेदङ्गानि षट्कोणे पूर्वद्वारादिषु क्रमात्।। गणेशं वटुकं चापि योगिनीः क्षेत्रपालकम्। ईशानादिनिर्ऋत्यन्तगुरुपङक्ति समर्चयेत्।। बगलां पूर्वपत्रे तु स्तम्भिनीं च ततः परम्। जृम्भिनीं मोहनीं चैव प्रगल्भामचलां जयाम्।। दुर्धषा कल्मषा धीरा कल्याणा कालकर्षिणी। भ्रामिका मन्दगमना भोग्याख्या चैव योगिकाः।। एताः षोडशपत्रेषु गन्धपुष्पाक्षतैर्यजेत्। षोडशस्वरसंयुक्ताः सम्प्रदायात् कुलागमे।। यजेतु पत्रमध्येषु कल्पिते चाऽष्टपत्रके। पूर्वाद् ब्राह्म्यादिका अष्टौ वाहनायुधसंयुताः।। लोकेशांश्च तदस्राणि पूजयेद् बाह्यतस्तथा। योनिमध्ये मूलदेवीं त्रिरञ्जलिभिरर्चयेत्।। धूपदीपसुनैवैद्यैर्गन्धताम्बूलदीपकैः नीराज्य विधिवत् पश्चाद् यथासंख्यं निवेदयेत्।। पवित्राऽऽरोपणं कार्यं दमनेन तु पूजयेत्। देयं चापि सितान्नेन प्रत्यहं बलिपञ्चकम्।। हरिद्राग्रन्थिजामालापीताम्बरधरः स्वयम्। पीतासनः स्मरेत् पीतां चाऽयुतं जपमाचरेत्।। दशांशेन कृते होमे पीतद्रव्यैः प्रतर्पयेत्। सर्वपीतोपचारेण मन्त्रः सिद्ध्यति मन्त्रिणः।। साध्यसंज्ञां समुच्चार्य स्तम्भयेति ततः परम्। गतिस्तम्भनकरी विद्या अरिस्तम्भनकारिणी।। मेधां प्रज्ञां च शास्त्रादीन् देवदानवपत्रगान्। स्तम्भयेच्य महाविद्या सत्यं सत्यं न संशयः।।

एकान्ते परमे रम्ये शुचौ देशेऽथवा गृहे। कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा मेखलात्रयशोभितम्।। योनिर्वितस्तिमात्रा तु षट्कर्माण्यत्र साधयेत्। तथा कर्षणकामस्तु लवणं त्रिमधुरान्वितम्।। निम्बपत्रं तैलयुक्तं विद्वेषकरणं परम्। हरिद्रां हरितालं च लवणेन च संयुतम्।। स्तम्भने होमयेद्देवीं प्रज्ञायाश्च गतेर्मतेः। आसुर्याश्चापि तैलेन महिषीरुधिरेण च।। रिपूणां मारणार्थं तु श्मशानाग्नौ हुतेन्निशि। गृध्राणामपि काकानां गृहधूमयुतेन च।। पक्षेण जुहुयाद् देवीं शत्रोरुच्चाटनाय तु। दूर्वा कुलालमृत्तावत्यैरण्डश्चतुरङगुलः।। लाजास्त्रिमधुयुक्ताश्च सर्वरोगोपशान्तये। लक्षमेकं यजेद् देवीं ब्रह्मचारी दृढ़व्रतः।। पर्वताग्रे महारण्ये सिद्धे शैवालये गृहे। संगमे च महानद्योः निशायामपि साधयेत्।। श्वेतब्रह्मतरोर्मूले पादुकां चैव कारयेत्। अलक्तस्य च रागेण रिज्ञतां च हरिद्रया।। अनया विद्यया चापि लक्षैकेन च मन्त्रिता। शतयोजनमात्रं तु स गच्छेच्चिन्तिते पथि।। रसं मनः शिला तालं मक्षिकेण समन्वितम्। पिष्ट्वाऽभिमन्त्र्य लक्षैक सर्वाङ्गे लेपने कृत।। अदृश्यकारकं तत् स्याल्लोके च महदद्धतम्। सुरभेरेकवर्णाया धारोष्णं क्षीरमाहरेत्।। शर्करामधुसंयुक्तं त्रिशतं मन्त्रितं प्रिये। पायायित्वा हि हरते विषं स्थावरजङ्गमम्।।

दारिद्रचमोचनं चैव लक्षमेकम् जपेत्ततः। दशांशेन कृते होमे एभिर्द्रव्यैः पृथक् पृथक्।। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बगलायन्त्रमुत्तमम्। भूर्जपत्रे समालेख्यं हरितालनिशारसैः।। षट्कोणं तस्य मध्ये तु बलयाऽऽकारतो लिखेत्। षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं बगलायाः स उच्यते।। तारं लज्जां च बगलामुखि सर्व पदं वदेत्। दुष्टानामिति चोच्चार्य वाचं मुखमथो पदम्।। स्तम्भयेति समुच्चार्य जिह्नां कीलय चेत्यपि। बुद्धिं विनाशयान्ते तु तारबीजाग्निसुन्दरी।। अयं मन्त्रः समुद्दिष्टः साध्यनाम्नस्तु वेष्टकः। वेष्टयेत् पीतसूत्रेण कुलालस्य मृदं ब्रजेत्।। चक्रे मृदं समारोप्य भ्रामयेद वृषभं तथा। कारयेच्य मृदा तत्र हरितालेन लेपयेत्।। तन्मध्ये निक्षिपेद् यन्त्रं नासायामथवा ततः। अर्चयेच्य चतुष्कालं 'साध्यनाम्नात्र साधकः।। दुष्टानां स्तम्भयेद् वाचं साक्षाद् वाचस्पतेरि। अथान्यद् बगलायाश्च वक्ष्यते यन्त्रमुत्तमम्।। पट्टे वाऽप्यथ पाषाणे हींकारपुटितेन वै। साध्यनामोन्मत्तरसहरिद्रातालकैस्ततः ।। पूर्वमन्त्रेण संवेष्ट्य चोर्ध्वं त्रिवलयं लिखेत्। गर्भस्तम्भं गतिस्तम्भं कुर्यादेतन्न संशयः।। अथान्यद् वक्ष्यते यन्त्रं श्मशानस्थमधोमुखम्। घटखर्परमानीय गृहीत्वा वामहस्तके।। लिखेद् दक्षिणहस्तेन श्मशानाङ्गारकेण च। मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् गतिम्।। प्रेतवस्रे लिखेद् यन्त्रमङ्गारेण च तत्पुनः।

मण्डूकवदने न्यस्येत्पीतवस्रेण वेष्टितम्।।

पूजितं पीतपुष्पैस्तद् वाचं संस्तम्भयेद् द्विषाम्।

॥ इति मेरुतन्त्रोक्तं विधानम्॥

# ५. मन्त्रोद्धारभेदः उक्तं च रुद्रयामले

प्रणवं पूर्वमुद्धत्य मायां च बगलामुखि। तदन्ते सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम्।। स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पदद्वयम्। बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत्।। लिखेच्य पुनरोङ्कारं स्वाहेति पदमुत्तमम्। षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः सर्वसम्पत्करो मतः।।

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्नां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।" क्वचित् मुखमित्यस्याग्रे पदिमत्यिधकं नाशयेति स्थाने 'वि' उपसर्गसिहतं च प्रायेण इदमेव सर्वत्र दृश्यते मेरुतन्त्रे, स्थिरमायाबीजस्थाने मायाबीजं स्त्रीकृतम् आगमलहर्याम्।

तारं चैव च मृद्धीजं द्वयक्षरं समुदाहतम्।
मन्त्रं च द्विशिरो ज्ञेयं ततः पल्लवमुद्धरेत्।।
भगवति च बगला च मुखि देवी ततः पुनः।
तथापि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं तथा।।
स्तम्भय द्विस्तथा जिह्वां कीलय द्विर्बुद्धं तथा।
विनाशय द्विवारं च मृत्तिकाबीजकं तथा।।
त्र्यक्षमन्ते पयो ज्ञेयं द्विपंचाशदक्षरो मनुः।
क्वचिन्माया स्थिरमाया बीजसम्पुट उपलभ्यते।।

THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

्य वर्षिक्षात्रिक्षेत्रकः व्यक्तिकार्यका

# श्रीगणेशाय नमः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः (शिरिस), गायत्र्ये छन्दसे नमः (मुखे), गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशि पीठरूपिण्यै श्रीब्रह्मास्त्रविद्याबगलामुखी देवतायै नमः (हृदये), श्रीबगलाङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं कं खं गं घं डं. आं ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं एं तं थं दं घं नं ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवमेव हृदयादि न्यासः

### ध्यानम्

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
पीतमाल्याम्बरधरां पीतभूषणभूषिताम्।।
गदामुद्गरहस्ताञ्च पीतगन्धानुलेपनाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्।।
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीं राशिक्षपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां बगलां पराम्।।

सांख्यायनतन्त्रस्य द्वित्रिंशे पटले लघुषोढा, महाषोढान्यासस्य विधानं प्रदर्शितं। तद् विवरणामित्यं भवति –

# लघुषोढान्यासः

**对研究和特殊的观众。** 

गणेशैः प्रथमोन्यासो द्वितीयस्तु ग्रहैर्मतः। नक्षत्रैस्तु तृतीयः स्याद्योगिनीभिश्चतुर्थकः।। राशिभिः पञ्चमो ज्ञेयः षष्ठः पीठैर्निगद्यते। षोढान्यासस्त्वयं प्रोक्तः सर्वत्रैवापराजितः।।

# (१) गणेशन्यासः

बृहत् पद्धतौ मातृकान्यास स्थान सदृशः कार्यः विघ्नेशो विघ्नराजश्च विनायक शिवोत्तमौ। विघ्नकृद्धिघ्नहर्ता च विघ्नराड्गणनायकः।। एकदन्तो द्विदन्तश्च गजवक्त्रो निरञ्जनः। कपर्दभृद्दीर्घमुखः शङ्कुकर्णो वृषध्वजः।। गणनाथो गजेन्द्रश्च शूर्पकर्णस्त्रिलोचनः। लम्बोदरो महानादश्चतुर्मूर्तिः सदाशिवः।। आमोदो दुर्मदश्चैव सुमुखश्च प्रमोदनः। एकपादो द्विजिह्वश्च शूरोवीरश्चषणमुखः।। वरदोवामदेवश्च वक्रतुण्डो द्वितुण्डकः। सेनानीग्र्यमणीर्मत्तो विमत्तोमत्त वाहनः।। जटी मुण्डी तथा खड्गी वरेण्योवृषकेतनः। भक्ष्यप्रियो गणेशश्च मेघनादो गणेश्वरः।।

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं श्रींयुक्ताय विघ्नेशाय नम: शिरसि ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं आं ह्लींयुक्ताय विघ्नराजाय नम: मुखवृत्ते ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नम: दक्षनेत्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ईं शांतियुक्ताय शिवोत्तमाय नम: वामनेत्रे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहते नम: दक्षकर्णे 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्ने नमः वामकर्णे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऋं रितयुक्ताय विघ्नराजे नमः दक्षनासापुटे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऋं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः वामनासापुटे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं लृं कांतियुक्ताय एकदन्ताय नम: दक्षगण्डे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं लृं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नम: वामगण्डे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ए मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः ऊर्ध्वींछे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऐं जटायुक्ताय निरञ्जनाय नम: अधरोष्ठे 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः अधोदन्तपंक्ती ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं नन्दायुक्ताय शङकुकर्णाय नमः जिह्नाग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अ: सुरसायुक्तायवृषध्वजाय नम: कण्ठे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः दक्षबाहुमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः दक्षकूपीर 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं गं जियनीयुक्ताय शूर्पकर्णीय नमः दक्षमणिबन्धे 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं घं सत्यायुक्तायित्रलोचनाय नमः दक्षकरांगुलिमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं डं. विघ्नेशोयुक्ताय लम्बोदराय नमः दक्षकरांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः वामबाहुमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः वामकूर्परे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं जं मदविह्नलायुक्ताय सदाशिवाय नमः वाममणिबन्धे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं झं विकटायुक्ताय आमोदाय नमः वामकरांगुलिमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ञं पूर्णायुक्तायदुर्मुखाय नमः वामकरांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः दक्षोरुमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः दक्षजानुनि ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं डं शक्तियुक्ताय एकपदाय नमः दक्षगुल्फे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ढं रमायुक्तायद्विजिह्वाय नमः दक्षपादांगुलिमूले

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं णं मानुषीयुक्तायशूराय नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं तं मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः वामोरुमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं थं वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः वामजानुनि ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं दं. भ्रकुटीयुक्ताय वरदाय नमः वामगुल्फे ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः वामपादांगुलिमूले 🕉 ह्ही क्लीं श्रीं ऐं नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः वामपादांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं पं धनुर्धरायुक्तायद्वितुण्डाय नमः दक्षपाश्वें ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः वामपार्श्वें ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः पृष्ठे, ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं भं चिन्द्रकायुक्तायमत्ताय नमः नाभौ, 3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः जठरे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यं लोलायुक्तायमत्तवाहनाय नमः हृदये 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं रं चपलायुक्ताय जटिने नम: दक्षस्कन्धे 🕉 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं लं ऋद्भियुक्ताय मुण्डिने नमः गलपृष्ठे (कर्कुदिं) 3 हीं क्लीं श्रीं ऐं वं दुर्भगायुक्तायखिड्गने नमः वामस्कन्धे, 🕉 ह्हीं क्लीं श्रीं ऐं शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः हृदयादि दक्षकरांगुल्यन्तम् ह्यां क्लीं श्री ऐं षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः हृदयादि वामकरांगुल्यन्तम्, ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं सं दुर्गायुक्तायभक्ष्यप्रियाय नमः हृदयादि दक्षपादांगुल्यन्तम् ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः हृदयादि वामपादांगुल्यन्तम् 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ळं कालकुञ्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः हृदयादि गुह्यान्तम् ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः हृदयादिमूर्धान्तम्।।

## (२) ग्रहन्यासः

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम्। कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद्रविपूर्वकान्।। कामरूप धरान्देवान् दिव्याभरणभूषितान्। वामोरुन्यस्त हस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान्।। शक्तयोऽपि तथाध्येया वराभय कराम्बुजाः। स्वस्वप्रियाकंनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः।।

इति ध्यात्वा —
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं एं ओं
औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः हृदयाधः हृज्जठरसन्धौ।
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः भूमध्ये
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं खं गं घं डं. धर्मायुक्ताय भौमाय नमः नेत्रयो
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः श्रोत्रकूपाधः
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं टं ठं ड ढ णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः कण्ठे
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः हिद
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः नाभौ
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः मुखे
ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः गुदे॥

# (३) नक्षत्रन्यासः

ज्वलतकालानल प्रख्या वरदाभयपाणयः। नतिपाण्योऽश्विनी पूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः।।

| डात | ध्यात्वा  | - Line of the Control |             |            |     |              |
|-----|-----------|--|-------------|------------|-----|--------------|
|     |           | श्रीं ऐं अं आं   | <b>Meli</b> | अश्वन्यै   | नमः | ललाटे        |
| 30  | हीं क्लीं | श्रीं ऐं इं  | type sur    | भरण्यै     | नमः | दक्षनेत्रे   |
| 30  | हीं कर्जी | श्रीं ऐं ईं उं   | ऊं          | कृत्तिकायै | नमः | वामनेत्रे    |
| 30  | हा परा।   | श्रीं ऐं ऋं ऋं   | लं लं       | रोहिण्यै   | नम: | दक्षकर्णे    |
|     |           |  |             | मृगशिरसे   | नमः | वामकर्णे     |
| 32  | है। क्ला  | श्रीं ऐं एं  |             | आर्द्रायै  | नम: | दक्षनासापुटे |
| 37  | हा क्ला   | श्रीं ऐं ऐं  |             | Olixia     |     | . 3          |

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ओं औं पुनर्वसवे नमः वामनासापुटे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं पुष्याय नमः कण्ठे 🕉 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं खं गं आश्लेषायै नम: दक्षस्कन्धे 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं घं डं. मघायै नमः वामस्कन्धे ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं चं पूर्वफाल्गुन्यै नमः पृष्ठे ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं छं जं उत्तरफाल्गुन्यै नमः दक्षकूपीर ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं झं अं हस्तायै नमः वामकूपीर 35 हीं क्लीं श्रीं ऐं टं ठं चित्रायै नमः दक्षमणिबन्धे 35 हीं क्लीं श्रीं ऐं डं स्वात्यै नमः वाममणिबन्धे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ढं णं विशाखायै नमः दक्षहस्ते ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं त थं दं अनुराधायै नमः वामहस्ते ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं धं ज्येष्ठायै नमः नाभौ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं नं पं फं मूलाय नमः किटबन्धे ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं वं पूर्वाषाढाये नमः दक्षोरौ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं मं श्रवणाय नमः दक्षजानुनि 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यं रं धनिष्ठाये नमः वामजानुनि 3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं लं शततारकायै नमः दक्षजंघायाम् 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं वं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः वामजंघायाम् 3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ष सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः दक्षपादे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ळं क्ष अं अ: रेवत्यै नम: वामपादे।।

# (४) योगिनीन्यासः

## AF WHILE PERFECT OF STREET 世生为世界是一大学 5 章 ध्यानम् 日本 12 12 12

कण्ठस्थानेविशुद्धौ नृपदलकमलेश्वेतवर्णां त्रिनेत्राम्। हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्म सन्धारयन्तीम्।। वक्त्रेणैकेनयुक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्ताम्। शवस्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्याम्।।

### इति ध्यात्वा -

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं डां डीं डमलवरयूं डाकिन्यै नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अ: मां रक्ष रक्ष त्वगात्मानं नमः इति मन्त्रेण कण्ठस्थ षोडशदल विशुद्धिकमल कर्णिकायां डाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पुरोभागादि प्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीः न्यसेत्।

### यथा

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं अमृतायै नम:, आं आकर्षिण्यै नम:, इं इन्द्राण्ये नम:, ईं ईशान्यै नम:, उं उमायै नम:, ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नम:, ऋं ऋद्धिदायै नम:, ऋं ऋकारायै नम:, लृं लृकाएयै नम: लृं लृंकारायै नम:, एं एकपदायै नम:, ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नम:, ओं ओंकारायै नम:, औं औषध्यै नम:, अं अम्बिकायै नम:, अ: अक्षरायै नम: इति।

### ततो ध्यानम् -

हत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलिसतां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णाम्। अक्षं शूलं, कपालं डमरुमिप भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।। रक्तस्थां कालरात्रि प्रभृति परिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्ताम्। श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामिमतफलदां राकिणीं भावयामः।।

### इति ध्यात्वा -

ध्यात्वा – ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं रां रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं खं गं घं डं. चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगात्मानं नमः इति हृदयस्थित द्वादशदलानाहतनिलन कर्णिकायां राकिणीं न्यस्य तद्दलेषु प्राग्वत् तदावृतिशक्तीर्न्यसेत्।

मास्मान किस्ति के किसी के किसी मार्गिक किसी 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं कं कालरात्र्यै नम:, खं खण्डितायै नम:, गं गायत्र्यै नमः, घं घण्टाकार्षिण्यै नमः, डं. ङाणीयै नमः, चं चण्डायै नम:, छं छायायै नम:, जं जयायै नम:, झं झंकारिण्यै नम:, ञं ज्ञानरूपायै नम:, टं टंकहस्तायै नम:, ठं ठंकारिण्यै नमः इति।

### their same the love of the

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलिसतां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णाम्। शक्ति दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।। डामर्याद्यैः परीता पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठाम्। गौडान्नासक्तचितां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः।।

### इति ध्यात्वा -

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः इति नाभिगतं दशदलमणिपूरक सरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तत्परिवारशक्तीर्न्यसेत्। माम्बाह्म किला कि किर्मान

🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं डं डामर्ये नमः, ढं ढंकारिण्ये नमः, णं णार्णायै नमः, तं तामस्यै नमः, थं स्थाण्व्यै नमः, दं दाक्षायण्यै नमः, धं धात्र्यै नमः, नं नार्यै नमः, पं पार्वत्यै नमः, फं फट्कारिण्यै नमः।

### तदनु -

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललिसते वेदवक्त्रां त्रिनेत्राम्। हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालां कुशानात्तगर्वाम्।। मेदोधातु प्रतिष्ठामिलमदमुदितां बन्धिनीं मुख्ययुक्ताम। पीतां दध्योदनेष्टामिभमतफलदां काकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा -

ॐ ह्लीं क्लीं श्री ऐं कां कीं क म ल व र यूं काकिन्यै नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं बं भं मं यं रं ल मां रक्ष रक्ष मेद आत्मानं नमः गुह्यस्थानगतषड्दल स्वाधि अन सरसिजकर्णिकायां काकिनीं न्यस्य तद्दलेषु तदावरण शक्तीः प्राग्वन्न्यसेत्।

# क्षिणकर्म क्षित्र किसीयथा है। क्रिश्चान क्षेत्रकृति

3ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं बं बन्धिन्यै नमः, भं भद्रकाल्यै नमः, मं महामायायै नमः, यं यशस्विन्यै नमः, रं रक्तायै नमः, लं लम्बोष्ठ्यै नमः।

ततः -

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदल लिसते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्राम्। धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।। विभ्राणां बाहुदण्डैः सुलिलत वरदा पूर्व शक्त्यावृतां ताम्। मुद्गात्रासक्तिचत्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा -

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं वं शं षं सं मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः इति पायूपस्थमध्यगत चतुर्दल मूलाधार कमलकर्णिकायां साकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तदावृत्ति शक्तीर्न्यसेत्।

### यथा

3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं वं वरदायै नमः शं श्रियै नमः, षं षण्डायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः।

### अथ

भूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै। विभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम्।। षड्वक्त्रांमज्जसंस्थां त्रिनयनलिसतां हंसवत्यादियुक्ताम्। हारिद्रात्रैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः।।

इति ध्यात्वा -

35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हां हीं ह म ल व ल यूं हाकिन्यै नमः 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हं क्षं मां रक्ष रक्ष मज्जात्मानं नमः इति भूमध्यगतद्विदलाज्ञा कमलकर्णिकायां हाकिनीं न्यस्य तद्दक्षवामदलयोः क्रमेण –

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हं हंसवत्यै नमः, क्षं क्षमावत्यै नमः इति तच्छक्तिद्वयं न्यसेत्। तदनु –

मुण्डव्योमस्थपग्ने दशशतदलके कर्णिका चन्द्रसंस्थाम्। रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतोवक्त्र पद्माम्।। आदिक्षान्तार्ण शक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीम्। सर्वात्रासक्तचित्तां परिशवरिसकां याकिनीं भावयामः।।

### इति ध्यात्वा -

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यां यीं य म ल व र यूं याकिन्यै नमः ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः

कं खं गं घं डं. चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं (५१) मां रक्ष रक्ष शुक्रात्मानं नमः इति ब्रह्मरन्ध्रगत सहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्दलेषु प्रतिविंशतिदलं तदावरण शक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्वन्न्यसेत्।

## (५) राशिन्यासः

रक्तश्वेतहरित्पाण्डुचित्र कृष्ण पिशङ्गकान्। कपिशवभुकिर्मीरकृष्णधूम्रान क्रमात्मरेत्।।

राशीनिति शेष। इति ध्यात्वा -

35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं आं इं ईं मेषाय नमः दक्षिणपादे, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं उं ऊं वृषाय नमः लिङ्ग दक्षभागे, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऋं ऋं लृं लृं मिथुनाय नमः दक्षकुक्षौ, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं एं ऐं कर्काय नमः हदयदक्ष भागे, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ओं औं सिंहाय नमः दक्षबाहुमूले, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः दक्षशिरोभागे।

35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं खं गं घं डं. तुलायै नमः वामिशरोभागे 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः वामबाहुमूले 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं टं ठं डं ढं एां धनुषे नमः हृदय वामभागे, 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं तं थं दं धं नं मकराय नमः वामकुक्षौ 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः लिङ्गवामभागे 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः वामपादे॥

## (६) पीठन्यासः

पीठांस्तु विन्यसेद्देवि मातृकास्थानके प्रिये सितासितारुण श्यामें हरित्पीतान्यनुक्रमात्। पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत् पीठसञ्चयः।।

इति भावयित्वा मातृकाभिसमं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत्।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ऋं ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं लृं ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं एं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऐं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ओं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं औं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अ: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं कं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं खं ॐ ह्हीं क्लीं श्रीं ऐं गं ॐ ह्हीं क्लीं श्रीं ऐं घं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं डं. ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं चं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं छं ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं जं

राष्ट्रागारकातात ना यथा ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं अं कामरूपाय नमः शिरसि, ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं आं वाराणस्यै नमः मुखवृत्ते ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं इं नेपालाय नमः दक्षनेत्रे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः वामनेत्रे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं उं पुरस्थित काश्मीराय नम: दक्षकर्णे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऊं कान्यकुब्जाय नमः वामकर्णे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ऋं पूर्णशैत्याय नमः दक्षनासापुटे अर्बुदाचलाय नमः वामनासापुटे आम्रातकेश्वराय नमः दक्षगण्डे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं लृं एकाम्राय नमः वामगण्डे त्रिस्स्रोतसे नम: उध्वीं छे कामकोटये नमः अधरोष्ठे कैलासाय नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ भृगुनगराय नमः अधो दंतपंक्तौ केदाराय नमः जिह्नाग्रे चन्द्रपुष्करिण्यै नमः कण्ठे श्रीपुराय नमः दक्षबाहुमूले ओंकाराय नमः दक्षकूपरि जालन्धराय नमः दक्षमणिबन्धे मालवाय नमः दक्षकरांगुलिमूले कुलान्तकाय नमः दक्षकरांगुल्यग्रे देवीकोटाय नमः वामबाहुमूले गोकर्णाय नमः वामकूपरि मारुतेश्वराय नमः वाममणिबन्धे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं झं अट्टहासाय नमः वामकरांगुलिमूले

3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं जं वैराजायै नमः वामकरांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं टं राजगेहाय नमः दक्षोरुमूले 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ठं महापथाय नमः दक्षजानुनि ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं डं कोलापुराय नमः दक्षगुल्फे 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ढं एलापुराय नमः दक्षपादांगुलिमूले 🥛 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं णं कालेश्वराय नमः दक्षपादांगुल्यग्रे 🎏 ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं तं जयन्तिकायै नमः वामोरुमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं थं उज्जयिन्यै नमः वाम जानुनि ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं दं चित्रायै नमः वामगुल्फे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं धं क्षीरिकायै नमः वामपादांगुलिमूले ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं नं हस्तिनापुराय नमः वामपादांगुल्यग्रे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं पं उड्डीशाय नमः दक्षपार्श्वे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं फं प्रयागाय नमः वामपार्श्वे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं बं षष्ठीशाय नम: पृष्ठे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं भं मायापुर्यें नम: नाभौ 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं मं जलेशाय नम: जठरे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं यं मलयाय नम: हृदये 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं रं श्रीशैलाय नमः दक्षस्कन्धे 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं लं मेरवे नमः गलपृष्ठे 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं वं गिरिवराय नमः वामस्कन्धे 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं शं महेन्द्राय नमः हृदयादि दक्षकरांगुल्यन्तम् 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं षं वामनाय नमः हृदयादि वामकरांगुल्यंतम् 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं सं हिरण्यपुराय नमः हृदयादि दक्षपादांगुल्यन्तम् ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं हं महालक्ष्मीपुराय नमः हृदयादि वामपादांगुल्यन्तम् ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ळं ओड्पाणाय नम: हृदयादि गुह्यान्तम् ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं क्षं छायाच्छत्राय नमः हृदयादिमूर्धान्तम् (इति लघुषोढान्यासस्समाप्तः)

# अथमहाषोढान्यासः

मूलाधारे - ॐ ह्लीं क्लीं श्री ऐं हसौ: स्हौ: कं खं गं घं डं. अनन्तकोटि भूचरी कुलसहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि भूचरादि कुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्ग भैरवनाथाय नमः।

स्वाधिष्ठाने – ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: चं छं जं झं अं अनन्तकोटि खेचरीकुलसहितायै ईं लां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं लां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि वेताल कुलसहिताय इं लं चर्चिकनाथाय इं लं भैरवनाथाय नम:।

मणिपूरके - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटि पातालचरी कुलसहितायै ऊं हा योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं हां कौमार्याम्बादेव्यै अनन्तकोटि पिशाचकुलसहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्ड भैरवनाथाय नमः।

अनाहते – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हसी: स्हौ: तं थं दं धं नं अनन्तकोटि दिक्चरी कुलसिहतायै ॠं सां हरिसद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बा दैव्यै अनन्तकोट्यपस्पार कुलसिहताय ऋं सं हरिसद्धनाथाय ऋं सं क्रोध भैरवनाथाय नम:।

विशुद्धौ – ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: पं फं बं भं मं अनन्तकोटि सहचरी कुलसहितायै लृं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै लृं षां वाराह्याम्बादेव्यै अनन्तकोटि ब्रह्मराक्षस कुल सहिताय लृं षं भट्टिनाथाय लृं षं उन्मत भैरवनाथाय नम:।

आज्ञायां – ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: यं रं लं वं अनन्तकोटि गुरुचरी कुलसिहतायै ऐं शां किलिकिल्यम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटि चेटक कुलसिहताय एं शं किलिकिलिनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नम:।

भाले - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: शं षं सं हं अनन्तकोटि वनचरी कुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डादेव्यै अनन्तकोटि प्रेतकुलसहिताय ओं वं कालरात्रि नाथाय ओं वं भीषण भैरवनाथाय नम:।

ब्रह्मरन्ध्रे – ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: ळं क्षं अनन्तकोटि जलचरी कुलसिहतायै अ: लां भीषणाम्बादेव्यै अ: लां महालक्ष्म्याबादेव्यै अनन्तकोटि कूष्माण्ड कुलसिहताय अं लं भीषणनाथाय अं लं संहार भैरवनाथाय नम:।

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं हसौ: स्हौ: समस्तमातृका उच्चार्य समस्त मातृकाभैरवाधिदेवतायै श्री बगलाम्बादैव्यै नम: स्हौ: हसौं: ऐं श्रीं क्लीं ह्लीं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्।

## महाषोढान्यासः

अस्य श्री महाषोढान्यासस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीच्छन्दः श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, श्रीबगलाविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोग इति ऋष्यादिस्मृत्वा मूर्धादिषु विन्यस्याङ्गन्यासं कुर्यात्।

# अङ्गन्यासस्तु अंगुलीदेहवक्त्रात्मकः। यथा

35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हौं ईशानाय नम: अंगुष्ठयो: 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हैं तत्पुरुषाय नम: तर्जन्यो: 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हुं अघोराय नम: मध्यमयो: 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हिं वामदेवाय नम: अनामिकयो: 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हं सद्योजाताय नम: किनिष्ठिकयो: 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौं: हौं ईशानाय नम: मूर्ध्न 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौं: हैं तत्पुरुषाय नम: मुखे 35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौं: हैं उघोराय नम: हृदये

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हिं वामदेवाय नम: गुह्ये ॐ ह्लीं क्लीं श्री ऐं ह सौ: स्हौ: हें सद्योजाताय नम: पादयो: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हैं ईशानायोध्विवक्त्राय नम: मूर्ध्नि ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नम: मुखे ॐ ह्लीं क्लीं श्री ऐं ह सौ: स्हौ: हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नम: दक्षकर्णे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नम: वामकर्णे ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: हें सद्योजातायपश्चिमवक्त्राय नम: चोरकूपे

अयं पञ्चवक्त्रन्यासः क्रमेणांगुष्ठादि पञ्चागुलीभिरेकैकाङ्गुलिनैकैक-वक्त्रे न्यस्तव्यः। एवमङ्गन्यासं विधाय ततो ह् सां ह् सीं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा वक्ष्यमाणरूपं देवं हृदयेध्यात्वा न्यसेत्।

# ओघ प्रकारान्तरेण ध्यानम्

# पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्। चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे।।

# प्रपञ्चन्यासः। स यथा -

श्रियै ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: अं प्रपञ्चरूपायै ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: आं द्वीपरूपायै नम: मायायै 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: इं जलधिरूपायै कमलायै नम: 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नम: 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नम: 3% हीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नम: ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नम: 3% हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: ऋं वनरूपायै कमलवासिन्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: लृं आश्मरूपाये इन्दिरायै नम: 3% ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सी: स्हौ: लृं गुहारूपायै मायायै नम:

🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: एं नदीरूपायै रमायै नम: 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: ऐं चत्वाररूपायै पद्मायै नम: 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: ओं उद्भिज्जरूपायै नारायण प्रियायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: औं स्वदेशरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: अ: जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: कं लवरूपायै आर्यायै नमः 🕉 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: खं त्रुटिरूपायै उमायै नम: 35 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: गं कलारूपायै चण्डिकायै नम: दुर्गायै 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: घं काष्ठारूपायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: ङं निमेषरूपायै शिवायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: चं श्वासरूपायै अर्पणायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: जं मुहुर्तरूपायै सत्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौं जं दिवसरूपायै शाम्भव्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्री ऐं ह सौ: स्हौ: टं सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः 🕉 हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ डं तिथीरूपायै सर्वमङ्गलायै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौं ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: तं योगरूपायै महामायायै नमः 🕉 ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: थं करणरूपायै महेश्वर्यै नम: 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: दं पक्षरूपायै मृडान्यै नम: 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ धं मासरूपायै इन्द्राण्यै नम: ॐ ह्लीं क्ली श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: नं शशिरूपायै सर्वाण्यै नेम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: फं अयनरूपायै काल्यै नम: ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: भं युगरूपायै गौर्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: मं प्रलयरूपायै भवान्यै नम: 35 हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: यं पञ्चचभूतरूपायै ब्राहम्यै ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: रं पञ्चतन्मात्ररूपायै बागीश्वर्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: लं पञ्चकमेंन्द्रियरूपायै वाण्यै नम: 35 हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: वं पञ्चज्ञानेंद्रियरूपायै सावित्रयै नम: 🕉 ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: शं पञ्च प्राणरूपायै सरस्वत्यै नम: 3ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नम: ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: सं अंत:करण चतुष्टयरूपायै

ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ हं अवस्था चतुष्टयरूपायै शारदायै नम: 3% हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ ळं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नम: 35 हीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नम:

# इत्येकपञ्चाशच्छिक्त मातृका स्थानेषु विन्यस्य ततः -

ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: अकारादिक्षकारान्तां मातृकामुच्चार्य सकल प्रपञ्चाधिदेवतायै श्री बगलाम्बा देव्यै नमः स्हौः ह सौः ऐं श्रीं क्लीं ह्लीं ओं इति सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात्। इति प्रपञ्चन्यासः

साकिनी चौरिक्की पूल देशका ल

भूवनन्यासः तत्र पादयो - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: अं आं इं अतललोकनिलयशतकोटिगुह्याद्ययोगिनी मूलदेवतायुताधार शक्त्यम्बादेव्यै कारपानी मूल देवता क्याना है जिल्ला है जो नेम ।

गुल्फयो – ७ ईं उं ऊं वितललोक निलय शतकोटि गुह्यतरानन्त-योगिनी मूलदेवता युताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जङ्घयो – ७ ऋं ऋं लृं सुतललोकनिलयशत कोट्यतिगुह्या चिन्त्य-योगिनी मूल देवतायुता।

जान्वो – ७ लृं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटि महागुह्येच्छा-योगिनी मूलदेवता युता।

जर्वो - ७ ओं औं तलातल लोक निलय शतकोटि परमगुह्येच्छा योगिनी मूलदेवतायुता।

स्फियो – ७ अं अ: रसातल लोक निलय शतकोटि रहस्य ज्ञान योगिनी मूल देवता युता।

मूलाधारे - ७ कं खं गं घं डं. चं छं जं झं अं पाताल लोक, भूलोंक निलय शतकोटि रहस्यतर क्रिया (डाकिनी) योगिनी मूल देवता युता।

स्वाधिष्ठाने – ७ टं ठं डं ढं णं भुवर्लोक निलय शतकोट्यतिरहस्य राकिनी योगिनी मूलदेवता युता।

मणिपूरके - ७ तं थं दं धं नं स्व लोक निलय शतकोटि परम रहस्य लाकिनी योगिनी मूलदेवता युता।

अनाहते – ७ पं फं बं भं मं महलोंक निलय शतकोटि गुप्त काकिनी योगिनी मूल देवता युता।

विशुद्धौ - ७ यं रं लं वं जनः लोक निलय शत कोटि गुप्ततर साकिनी योगिनी मूल देवता युता।

आज्ञायां - ७ शं षं सं हं तपो लोक निलय शतकोटि अतिगुप्त हाकिनीयोगिनी मूल देवता युता।

ब्रह्मरन्ध्रे – ७ ळं क्षं सत्य लोक निलय शतकोटि महागुप्त याकिनी योगिनी मूल देवता युताधार शक्त्यम्बा देव्यै नमः।

इति विन्यस्य ७ समस्त मातृकामुच्चार्यसकलभुवनाधिपायै श्रीबगलाम्बा देव्यै नम:।

स्हौ: ह सौ: ऐं श्रीं क्लीं ह्लीं ओं इति व्यापकं कुर्यात्। इति भुवनन्यासः

# अथ मूर्त्तिन्यासः

तत्र शिरिस - ॐ ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: अं केशवायाक्षर शक्त्यै नमः।

७ आं नारायणायाद्यशक्त्यै नमः मुखे

७ इं माधवायेष्टदायै नमः दक्षिणांसे ७ ईं गोविन्दायेशान्यै नमः वामांसे

७ उं विष्णवे उग्रायै नमः दक्षपार्श्वे

वामपार्श्वे - ७ ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः दक्षकट्यां - ७ ऋं त्रिविक्रमाय ऋध्यै नमः

वामकट्यां - ७ ॠं वामनाय रूपिण्यै नमः

- ७ लृं श्रीधराय लुप्तायै नमः दक्षोरौ

- ७ लृं हषीकेशाय लूनदोषायै नमः वामोरौ

 ७ एं पद्मनाभायैकनायिकायै नमः दक्षजानुनि

वामजानुनि - ७ ऐं दामोदराय कारिण्यै नमः

दक्षजंघायां - ७ ओं वासुदेवायोघवत्यै नमः

वामजंघायां - ७ औं सङ्कर्षणायौर्वकामायै नमः

दक्षपादे - ७ अं प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नमः

वामपादे - ७ अं अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः

दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम् - ७ कं भं भवाय कराभायै नमः वामपादात्रादूरुमूलपर्यन्तम् - ७ खं बं शर्वाय खगबलायै नमः

दक्षपार्श्वे - ७ गं फं हराय गरिमफलप्रदायै नमः

पशुपतये घोर पादायै नमः वामपार्श्वे - ७ घं पं उग्राय पंक्तिवासायै नमः दक्षदोर्मूले - ७ इं मं महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नमः वामदोर्मूले - ७ चं धं भीमाय छन्दोमय्यै नमः - ७ छं दं कण्ठे ईशानाय जगत्स्थानायै नमः - ७ जं थं वदने तत्पुरुषाय झंकृत्यै नमः दक्षकर्णे - ७ इं तं अघोराय ज्ञानदायै नमः ७ ञं नं वामकर्णे सद्योजाताय टंकढक्कधरायै नमः ७ टं ढं भाले वामदेवाय टं कृतिडामर्ये नमः ७ ठं डं शिरसि ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः ७ यं मूलाधारे प्रजापतये रञ्जिण्यै नमः ७ रं स्वाधिष्ठाने वेधसे लक्ष्म्यै नमः मणिपूरके - ७ लं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः ७ वं अनाहते पितामहाय शशिधरायै नमः – ৩ স্থা विशुद्धौ विधात्रे षडाधारालयायै नमः - ७ षं आज्ञायां - ७ सं विरञ्जये सर्वनायिकायै नमः अर्धेन्दौ रोधिन्यां स्रष्ट्रे हसिताननायै नमः - ७ हं चतुराननाय ललितायै नमः – ७ ਲਂ नादे हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः नादान्ते – ७ क्षं

# इति विन्यस्य

35 ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: सकल मातृका उच्चार्य सकलित्रमूतर्त्यात्मिकायै श्रीबगलाम्बादेव्यै नम: स्हौ: ह् सौ: ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ओं इति व्यापकं कुर्यात्।

मन विकास प्रतिस्था है। इति मूर्तिन्यासः मन विकास प्रतिस्था है।

नेताक मह विद्यानमानीत व्यक्तिक है के मा विद्यानहाँ विद्यानहाँ

### अथ मन्त्रन्यासः

मूलाधारे - ॐ ह्लीं क्लीं ऐं ह सौ: स्हौ: अं आं ई एक लक्षकोटिभेद प्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नम:।

स्वाधिष्ठाने - ७ ईं उ ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्वयक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः

मणिपूरके - ७ ऋं ऋं लृं त्रिलक्षकोटि भेदवह्नयादित्र्यक्षरात्म-काखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बा देव्यै नमः।

अनाहते - ७ लृं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्म-काखिल ..... चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

विशुद्धे - ७ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादि पञ्चाक्षरात्मिकाखिल ..... पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

आज्ञायां - ७ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेद सूर्यादि पञ्चाक्षरात्मकाखिल ..... षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

बिन्दौ - ७ घं ङं चं सप्तलक्षकोटि भेदगणपत्यादि सप्ताक्षरात्मकाखिल ..... सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

अर्धेन्दौ – ७ छं जं झं अष्टलक्षकोटि भेद बटुकाद्यष्टाक्षरात्म-काखिल ..... अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

रोधिन्यां - ७ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेद ब्रह्मादि नवाक्षरात्म-काखिल ..... नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नम:।

नादे - ७ इं ढं णं दशलक्षकोटिभेद विष्णवादिदशा-क्षरात्मकाखिल ..... दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

नादान्ते – ७ तं थं दं एकादशलक्षकोटि भेद रुद्राद्यकादशा-क्षरात्मकाखिल ..... एकादश कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः। शक्तौ – ७ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादि द्वादशा-क्षरात्मकाखिल ..... द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

व्यापिकायां – ७ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेद लक्ष्यादि त्रयोदशाक्षरात्मकाखिल ..... त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

समनास्थाने - ७ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटि भेद गौर्यादि चतुर्दशाक्षरात्मकाखिल ..... चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः

उन्मन्यां – ७ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटि भेद दुर्गादि पञ्चदशाक्षरात्मकाखिल ..... पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः

ध्रुवमण्डले – ७ षं सं हं ळं क्षं षोडशलक्षकोटि भेद त्रिपुरादि षोडशाक्षरात्मक ..... षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः

ॐ ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: सकल मातृकामुच्चार्य सकलमन्त्राधिदेवतायै श्री बगलाम्बादेव्यै नम: स्हौ: ह् सौ: ऐं श्रीं क्लीं ह्वीं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्।

इति मन्त्रन्यासः

# ज्ञानकार जिल्ला अथ देवतान्यासः

दक्षपादे – ह्लीं क्लीं श्रीं ऐं ह सौ: स्हौ: अं आं सहस्रकोटि ऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नम:।

वामपादे – ७ इं ईं सहस्रकोटि योगिनीकुल सेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः।

दक्षगुल्फे - ७ उं ऊं सहस्रकोटि तपस्विकुल सेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः

वामगुल्फे - ७ ऋं ऋं सहस्रकोटि शान्तकुल सेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः।

दक्षजंघायां - ७ लृं लृं सहस्रकोटि मुनिकुल सेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः।

- वामजंघायां ७ एं ऐं सहस्रकोटि दैवतकुल सेवितायै हल्लेखाम्बादेव्यै नमः।
- दक्षजानुनि ७ ओं औं सहस्रकोटि राक्षसकुल सेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः।
- वामजानुनि ७ अं अ: सहस्रकोटि विद्याधरकुल सेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नम:।
- दक्षोरौ ७ कं खं सहस्रकोटि सिद्धकुल सेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यैं नमः।
- वामोरौ ७ गं घं सहस्रकोटि साध्यकुल सेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः।
- दक्षोरुमूले ७ ङ चं सहस्रकोट्यप्सरः कुल सेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः।
- वामोरुमूले ७ छं जं सहस्रकोटि गन्धर्व कुल सेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः।
- पक्षपाश्वें ७ इं ञं सहस्रकोटि गुह्यककुल सेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः।
- वामपार्श्वे ७ टं ठं सहस्रकोटि यक्षकुल सेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः।
  - दक्षस्तने ७ डं ढं सहस्रकोटि कित्ररकुल सेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः।
  - वामस्तने ७ णं तं सहस्रकोटि पत्रगकुल सेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः।
  - दक्षदोर्मूले ७ थं दं सहस्रकोटि पितृकुल सेवितायै रौद्रम्बादेव्यै नमः।
  - वामदोर्मूले ७ धं नं सहस्रकोटि गणेश्वरकुल सेवितायै छायाम्बादेव्यै नमः।

दक्षभुजे - ७ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुल सेविताये कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः।

वामभुजे - ७ बं भं सहस्रकोटि वटुककुल सेवितायैं काल्यम्बादेव्यैं नमः।

दक्षांसे - ७ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेश कुल सेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः।

वामांसे - ७ रं लं सहस्रकोटि प्रथमकुल सेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः।

दक्षकर्णे - ७ वं शं सहस्रकोटि ब्रह्मकुल सेवितायै सर्वैश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

वामकर्णे – ७ षं सं सहस्रकोटि विष्णुकुल सेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै नमः।

भाले – ७ हं ळं सहस्रकोटि रुद्रकुल सेवितायैं सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यैं नम:।

**ब्रह्मरन्ध्रे** – ७ क्षं सहस्रकोटि चराचरकुल सेवितायैं कुलशक्त्याम्बा देव्यैं नम:।

3% ह्वीं क्लीं श्रीं ऐं ह् सौ: स्हौ: सकलमातृकामुच्चार्य समस्त देवताधिपायै श्रीबगलाम्बादेव्यै नम: स्हौ: ह् सौ: ऐं श्रीं क्लीं ह्वीं ओं इति व्यापकं कुर्यात्।

ा इति देवतान्यासः॥

### अथ महाषोढान्यासफलं कुलार्णवे

एवं न्यासे कृते देवि साक्षात्परिशवो भवेत्। मन्त्री न चात्र सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः।। महाषोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने। देवास्सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः।। महाषोढाह्वयं न्यासं यत्र मन्त्री न्यसेत्ततः। दिव्यक्षेत्रम् समुद्दिष्टम् समन्तादृशयोजनम्।। कृत्वा न्यासिममं देवि यत्रगच्छति मानवः। तत्र श्रीर्विजयो लाभः समान्यः पुरुषः प्रिये।। महाषोढाकृतन्यासः त्वदीक्षायाभिवन्दिते। स मासान्मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम्।। वज्रपञ्जरनामानमेवं न्यासं करोति यः। दिव्यान्तरिक्षभूशैलजलारण्य निर्वासेनः।। उद्दण्डभूतवेताल देवरक्षोग्रहादयः। भयग्रस्तेन मनसा नेक्षन्ते साधकं प्रिये।। महाषोढाह्वयं न्यासं ब्रह्मविष्णुशिवादयः। देवास्सर्वेः प्रकुर्वन्ति ऋषयश्च मुंनीश्वराः।। बहुनोक्तेन किं देवि सुशिष्याय प्रकाशयेत्। अक्षयां लभते सिद्धिं रहिस न्याससमाचरेत्।। अस्मात्परतरस्साक्षाद्देवताभावसिद्धिदः । लोके नास्ति न सन्देहः सत्यं सत्यं न संशयः।। ऊर्ध्वाम्नाय प्रवेशश्च पराप्रासादचिन्तनम्। महाषोढापरिज्ञानं नाल्पस्य तपसः फलम्।।

॥ इति महाषोढान्यास फलम्॥

# ६. ब्रह्मास्त्रकल्पविधानम्

श्रीमान् साधको ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्वशिरसि सहस्रदलकमलकर्णिकायां सशक्तिकं गुरुं संचिन्त्य मानसोपचारै: सम्पूज्य जपं समर्प्य गुरुपादुकां जप्त्वा निवेद्य स्वेष्टदेवतां पीताम्बरां ध्यात्वा मानसैरुपचारै: सम्पूज्य ऋष्यादिषडङ्गन्यासध्यानपूर्वकं मूलं जप्त्वा निवेद्य जलाशयं गत्वा वैदिकविधिना स्नात्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य बालात्रिबीजै: (ऐं क्लीं सौ:) करषडङ्गन्यासौ विधाय जले त्रिकोणं विभाव्य तिस्मन्नङकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य देवीं ध्यायेद्। यथा -

#### नवयौवनसम्पन्नां सर्वाऽऽभरणभूषिताम्। पीतमाल्यानुवसनां स्मरेत्तां बगलामुखीम्।।

इति ध्यात्वा ''गङ्गे च यमुने चेति'' धेनुमुद्रया तीर्थानि प्रार्थ्य मूलेन त्रिर्निर्मज्य त्रि:सन्तर्प्य मूलेन श्रीसूर्याय त्रिरर्घ्यं दत्त्वा जलान्निष्क्रम्य धौते वाससी परिधाय वैदिकीं सन्ध्यां निर्वर्त्य तान्त्रिकीं सन्ध्यां कुर्यात्। यथा - मूलेन बालया त्रिराचम्य मूलेन त्रि:प्राणानायम्य मूलेन शिरोहृदयादिषु त्रि:सम्मार्ज्य 'ॐ ह्लीं हुं फट् स्वाहा' इत्यघमर्षणं कृत्वा ततः सूर्यमन्त्रेण श्रीसूर्याय अर्घ्यं दत्त्वा त्रिवारं सूर्यमण्डले ध्यात्वा "हीं ब्रह्मास्त्रविद्यायै - विद्महे, पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात् ''सूर्यमण्डलस्थायै श्री बगलामुख्यै' इदमध्यं समर्पयामीति त्रिर्दत्वा गायत्रीं दशधा जप्त्वा ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, श्री बगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्वीं बीजाय नमो गुह्ये स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, नमः इति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे न्यासे विनियोगाय नमः करसम्पुटे, ह्लामित्यादि षट्दीर्घैः करषडङ्गकम्। 'ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, 'बगलामुखि' तर्जनीभ्यां नमः, 'सर्वदुष्टानां' मध्यमाभ्यां नमः, 'वाचं मुखपदं स्तम्भय' अनामिकाभ्यां नमः, 'जिह्नां कीलय' कनिष्ठिकाभ्यां नमः, 'बुद्धिविनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि। 'ॐ ह्लीं' शिरिस, 'बगला' ललाटे, 'मुखि' कर्णयोः, 'सर्वं' भ्रुवोः, 'दुष्टानां' नेत्रयोः, 'वाचं' नासिकयो:, 'मुखं' मुखं, 'पदं' कण्ठे, 'स्तम्भय' हृदि, 'जिह्नां' जठरे, 'कीलय' नाभौ, 'बुद्धि' गुह्ये, 'विनाशय' ऊर्वोः, 'ह्लीं' पादयोः, 'बगला' गुल्फयो:, 'मुखि' ऊवों: 'सर्व' लिङ्गे, 'दुष्टानां' नाभौ, 'वाचम्' उदरे, 'मुखं हृदि, 'पदं' कण्ठे 'स्तम्भय' मुखे 'जिह्नां' नासिकयोः, 'कीलय' कर्णयोः 'बुद्धि' नेत्रयोः, 'विनाशय' भ्रुवोः, 'ह्लीं' ललाटे, 'ॐ स्वाहा' शिरिस, 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं' मूलाधारे, 'जिह्नां कीलय' हृदि, 'बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' ब्रह्मरन्ध्रे, 'ॐ ह्हीं बगलायै नमः – पूर्वे न्यसामि, ॐ ह्लीं गदाधारिण्यै नमः आग्नेये, ॐ पीताम्बरायै नमः - दक्षिणे, ॐ स्तम्भिन्यै नमः नैऋत्ये, ॐ जिह्नाकीलिन्यै नमः पश्चिमे, ॐ मदोन्मत्तायै नमः वायव्ये, ॐ त्रिशूलधारिण्यै नमः कौबेर्याम् 🕉 ब्रह्मास्त्रदेवतायै नमः ईशान्यै, 🕉 स्तब्धमातृभ्य नमः पाताले, 3ॐ महादेव्यै नम: ऊर्ध्वम्। एवं दश दिक्षु।

एवं न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृकां न्यसेत्। तारं च मातृकावर्णान् बगलाबीजमेव च।। नमोन्तेन च विन्यस्य मातृकास्थानतो न्यसेत्।

िम्प्रायम् अथ ध्यानम् अग्रहाति कि कि चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्। त्रिशूलं पानपात्रंच गदां जिह्नां च बिभ्रतीम्।। बिम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम्। पीताम्बरां मदाघूणां ध्यायेद् ब्रह्मास्रदेवताम्।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारै: सम्पूज्य ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं आत्मतत्त्वव्यापिनीबगलामुख्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि। जिह्नां कीलय क्लीं विद्यातत्त्वव्यापिनीबगलाम्बायै नमः बुद्धि विनाशय ह्वीं ॐ स्वाहा सौ: शिवतत्वव्यापिनीश्रीबगलाम्बायै नम:। ततो मूले जप्त्वा अन्ते 'गुह्यातिगुह्येति' जपं निवेद्येत्।

#### (१) कीलक स्तोत्रम्

ह्नीं ह्नींकारवाणे रिपुदलदलने घोरगम्भीरनादे। हीं हींकाररूपे मुनिगणनिमते सिद्धिंदे शुभ्रदेहे।। भ्रों भ्रों भ्रोंकारनादे निखिलरिपुघटात्रोटने लग्निचते। मातर्मातर्नमस्ते सकलभयहरे नौमि पीताम्बरे त्याम्।।१।। क्रौं क्रौं क्रौंमीशरूपे अरिकुलहनने देहकीले कपाले। हस्रौं हस्रौं स्वरूपे समरसनिरते दिव्यरूपे स्वरूपे।। त्रौं त्रौं जातरूपे जिह जिह दुरितं जम्भरूपे प्रभावे। कालि कङ्कालरूपे अरिजनदलने देहि सिद्धिं परां मे।।२।। हस्रां हस्रीं च हस्रें त्रिभुवनाविदिते चण्डमार्तण्डचण्डे। ऐं क्लीं सौं कौलविद्ये सततशमपरे नौमि पीतस्वरूपे।। द्रौं द्रौं द्रौं दुष्टिचताऽऽदलनपरिणतबाहुयुग्मत्वदीये। ब्रह्मास्त्रे ब्रह्मरूपे रिपुदलहनने ख्यातदिव्यप्रभावे।।३।। ठं ठं ठंकारवेशे ज्वलनप्रतिकृतिज्वालमालास्वरूपे। धां धां धां धारयन्तीं रिपुकुलरसनां मुद्गरं वज्रपाशम्।। मातर्मातर्नमस्ते प्रवलखलजनं पीडयन्तीं भजामि। डां डां डां डाकिन्याद्यैर्डिमकडिमडिमं डमरुकं वादयन्तीम्।।४।। वाणीं व्याख्यानदात्रीं रिपुमुखखनने वेदशास्त्रार्थपूताम्। मातः श्रीबगले परात्परतरे वादे विवादे जयम्।। देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले देवि प्रचण्डोद्धृते। माङ्गल्यं वसुधासु देहि सततं सर्वस्वरूपे शिवे।।५।। निखिलमुनिनिषेव्यं स्तम्भनं सर्वशत्रों:। शमपरिमह नित्यं ज्ञानिनां हार्दरूपम्।। अहरहरनिशायां यः पठेद्देवि कीलम्। स भवति परमेशो वादिनामग्रगण्यः।।६।।

# (२) अथ बगलाहृदयम्

#### क्रांत्रकी स्थान श्रीदेव्युवाच प्रमास प्रिम्

इदानीं खलु में देव बगलाहृदयं प्रभो। कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा।।

## भू का इंश्वर उवाच का निर्माणिक

साधु साधु महाप्राज्ञे सर्वतन्त्रार्थसाधिके। ब्रह्मास्त्रदेवतायाश्च हृदयं वच्मि तत्त्वतः।। प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्थिरमायां ततो वदेत्। सम्बोधनपदेनैव बगलामुखि उद्धरेत्।। तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं पदं मुखम्। स्तम्भयेति ततो जिह्नां कीलयेति पदं ततः।। बुद्धिं विनाशय इति स्थिरमायां ततोऽग्रतः। वदेच्य पुनरोङ्कारं स्वाहेति च पदं ततः।। षट्त्रिंशदक्षरी विद्या सद्यःस्तम्भनकारिणी। अङ्गन्यासं ततः कुर्यात् स्थिरमायां हदि न्यसेत्।। बगलामुखि तु शिरिस सर्वदुष्टानां शिखासु च। वाचं मुखं पदं चैव कवचे विन्यसेत्ततः।। जिह्नां कीलय नेत्रयुग्मे आस्ये बुद्ध्यादिकं तथा। गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।। चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्। ऊध्विकशजटाजूटां करालवदनाम्बुजाम्।। मुद्गरं दक्षिणे हस्ते पाशं वामेन धारिणीम्। रिपोर्जिह्वां त्रिशूलं च पीतगन्धानुलेपनाम्।। पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़पीनपयोधराम्। पीतचन्द्रार्धशेखराम्।। हेमकुण्डलभूषां च पीतभूषणभूषाद्यां स्वर्णसिंहासने स्थिताम्। स्वानन्दानुमयीं देवीं रिपुस्तम्भनकारिणीम्।। मदनस्य रतेश्चापि प्रीतिस्तम्भनकारिणी। महाविद्या महामाया महामेधा महाशिवा।। महासूक्ष्मा साधकस्य वरप्रदा। महामोहा राजसी सात्त्विकी सत्या तामसी तैजसी स्मृता।। तस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्। गणेशो बटुकश्चैव योगिन्यः क्षेत्रपालकः।। गुरवश्च गुणास्तिस्रो बगला स्तम्भिनी तथा। जृम्भिणी मोदिनी चाम्बा बालिका भूधरा तथा।। कलुषा करुणा धात्री कालकर्षिणिका परा। भ्रामरी मन्दगमना भगस्था चैव भासिका।। ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी रमा। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा भैरवाऽष्टकम्।। सुभगा प्रथमा प्रोक्ता द्वितीया भगमालिनी। भगवाहा तृतीया तु भगसिद्धाऽब्धिमध्यगा।। भगस्य पातिनी पश्चात् भगमालिनी षष्टिका। उड्डीयानपीठनिलया जालन्धरपीठसंस्थिता।। कामरूपे तथा संख्या देवीत्रितयमेव च। सिद्धौघा मानवौघाश्च दिव्यौघा गुरवः क्रमात्।। क्रोधिनी जृम्भिणी चैव देव्याश्चोभयपार्श्वयोः। पूज्यस्त्रिपुरनाथश्च योनिमध्येऽम्बिकायुतः।। स्तम्भिनी या महाविद्या सत्यं सत्यं वरानने। एषा सा वैष्णवी माया विद्यां यत्नेन गोपयेत्।।

ब्रह्मास्त्रदेवतायाश्च हृदयं परिकीर्तितम्। ब्रह्मास्त्रं त्रिषु लोकेषु दुष्प्राप्यं त्रिदशैरि।। गोपनीयं प्रयत्नेन, न देयं यस्य कस्यचित्। गुरुभक्ताय दातव्यं वत्सरं दुःखिताय वै।। मातृपितृरतो यस्तु सर्वज्ञानपरायणः। तस्मै देयमिदं देवि बगलाहृदयं परम्।। सर्वार्थसाधकं दिव्यं पठनाद् भोगमोक्षदम्। इति श्रीशिवपार्वतीसंवादे बगलाहृदयं समाप्तम्।।

क्रांक्रिकिति ॥ इति ब्रह्मास्रकल्पः॥ अपि वर्गामा

# ७. सांख्यायनतन्त्रोक्तं विधानम्

#### मिन्द्राह्मिल कि क्रौञ्चभेदन उवाच कि कि विविध के विविध के

महापाशुपताऽऽक्रान्त नमः पन्नगभूषण। षट्त्रिंशदक्षरीं विद्यां बगलायाश्च मे वद।। ईश्वर उवाच

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम्। प्रयोगञ्चोपसंहारं साङ्गञ्च शृणु पुत्रक।। तारं च बगलाबीजं बगलापद्मुद्धरेत्। मुखीति पदमुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत्।। स्तम्भयेति पदं चोक्त्वा जिह्नांकीलय उच्चरेत्। बुद्धिशब्दं तथोच्चार्य विनाशय पदं वदेत्।। स्तब्धमायां समुच्चार्य प्रणवं च ततो वदेत्। वह्निजायां समुच्चार्य मन्त्रोद्धारं विभावय।। षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं मन्त्रराजिममं भुवि। न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि सद्यः सिद्धिकरीं पराम्।।

बगलामातृकां चादौ कामतात्तीयवाग्भवम्। श्रीमायां मातृकां चैव बगलापअरं न्यसेत्।। लघुषोढां च विन्यस्य सर्वतन्त्रेष्वयं क्रमः। ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम्।। आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं कुर्यात्समाहितः। चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।। त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्नां च बिभ्रतीम्। विम्बोष्ठी कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम्।। पीताम्बरां मदाधूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम्। नारद ऋषिरेवाऽत्र बृहती छन्द उदाहृतम्।। देवता बगलानाम्नी स्तम्भनास्त्रं च चिन्मयी। लं बीजं चैव हीं शक्तिः रं कीलकमुदाहतम्।। शत्रूणां स्तम्भनार्थाय जपेऽहं विधिपूर्वकम्। सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कौलाचारक्रमेण च।। पृथिवीलक्षं जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम्। तर्पयेत्तद्दशांशेन हेतुसम्मिश्रवारिणा।। जुहुयाद् बिल्वपत्रेण (कुसुमैः) तद्दशांशेन बुद्धिमान्। ब्राह्मणान् भोजयेत्पुत्र तद्दशांशं घृतप्लुतम्।। तर्पणं तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत्। पूजा त्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च।। होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते। पुरश्चर्यां बिना मन्त्रो न प्रसिद्ध्यति भूतले।। एवं साधितमन्त्रेण षट् प्रयोगान् समाचरेत्। शान्तौ च जुहुयात शालिसक्तुमाज्यसमन्वितम्।। गुणायुतं चामलकप्रमाणं क्रौञ्चभेदन। वशीकरणकार्येषु बिल्वपत्रं घृतप्लुतम्।।

गुणायुतं हुनेद्धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात्।
स्तम्भनेषु हुनेद्धीमान् तालकं घृतसंयुतम्।।
बदरीफलमात्रं तु गुणायुतमनन्यधीः।
विद्वेषणे च जुहुयात् पत्रैर्निम्बार्कसम्भवैः।।
रात्रौ वेदायुतैर्धीमान् सद्यो विद्वेषणं भवेत्।
राजीलवणसंयुक्तं बाणायुतमनन्यधीः।।
सद्यः उच्चाटनं शीघ्रं ध्रुवं कूर्मादयोरिप।
तिलतैलेन संमिश्रं माषहोमं गुणान्वितम्।।
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठे च जुहुयात् प्रेतकानने।
प्रेतोन्मुखे च जुहुयात् नग्नः सन्निशि मण्डले।
सद्योमरणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च।।

॥ इति सांख्यायनतन्त्रे सप्तमः पटलः॥

#### ८. अथ एकाक्षरमन्त्रविधानम्

## क्रौञ्चभेदन उवाच

नमस्ते जगतां नाथ भस्मोद्धृलितविग्रह। एकाक्षरं महामन्त्रवैभवं वद मे प्रभो।।

### इस्वर उवाच गर्म का विश्वर अवाच गर्म

यत्तदेकाक्षरीमन्त्रं तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम्। उत्तमं बीजसंयुक्तं मन्त्रं सर्वार्थसाधनम्।। नानामन्त्रेषु मन्त्रे वा बीजाद्यं सर्वसिद्धिदम्। निर्बीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा।। तद्बीजोद्धारमनघ सर्वसिद्धिप्रदायकम्। एकाक्षरमहामन्त्रं बगलायाः सुसिद्धिदम्।। पूजनं च प्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक।
सोऽन्तरान्तसमायुक्तं चतुर्थस्वरसंयुतम्।।
रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्तं ब्रह्मास्त्रैकाक्षरो मनुः।
ह्लीं ब्रह्मा ऋषिश्छन्दोऽस्य गायत्री समुदाहतम्।।
देवता बगला नाम्नी शक्तिश्चिन्मयरूपिणी।
लं बीजं हूं च शक्तिश्च ईं कीलकमुदाहतम्।।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि मन्त्रसिद्धिकरीं नृणाम्।
भूतसिद्धि भुवः सिद्धि मातृकाद्वितयं न्यसेत्।।
मन्त्राक्षरेण विन्यस्य तद्विधि शृणु पुत्रक।
नेत्रवाणचतुः पञ्चनवपंचदशाऽक्षरम्।।
ॐ ह्लीं बगलामुखि इत्यादि विन्यसेद्।
अङ्गुलीभिश्च षडङ्गेषु तथैव च।।

## अथ पञ्चरन्यासः

वश्येऽहं पञ्चरन्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम्। बगला पूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधरी। पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनो चैव नैर्ऋते।। जिह्नाकीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा मम। वायव्ये च मदोन्मता कौबेर्या च त्रिशूलिनी।। ब्रह्मास्रदेवता पातु ऐशान्यां सततं मम। संरक्षेन्मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका।। कर्ध्व रक्षेन्महादेवी जिह्नास्तम्भनकारिणी। एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा।। एवं न्यासविधि कृत्या यत्किञ्चजपमाचरेत्। तस्याः स्मरणमात्रेण शत्रुणां स्तम्भनं भवेत्।। सर्वन्यास विधि कृत्या बगलामातृकां न्यसेत्। तन्मातृकाविधि वक्ष्ये सारात् सारतरं परम्।।

तारं च मातृकाणं च बगलाबीजमेव च। नमोन्तेन च विन्यस्य मातृकान्यासतोऽनघ।। ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्यात् ध्यानं सर्वार्थसाधकम्। ध्यानं बिना भवेन्मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि साधकः।।

### ध्यानम्

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीति। क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनित क्षिप्रानुगः खअति।। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः। श्री नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः।। एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं तत्त्वलक्षं सुबुद्धिमान्।
गुडोदकेन सन्तर्प्य तद्दशांशेन पुत्रक।।
त्रिकोणकुण्डे जुहुयात् हस्तनिम्नोन्नते शुभे।
हयारिकुसुमेनैव सुरक्तेनाऽऽज्यसंयुतम्।। ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तत्वसंख्याञ्च युग्मकम्। मन्त्रसिद्धिभीवत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम्।। वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्य पुष्पिणीम्। मन्त्रसिद्धिकरं चैव सर्वदा रिपुनाशनम्।। परमन्त्रप्रयोगेषु नानाचेटककृत्रिमैः। सद्यः स्तम्भनविद्या च बगला नात्र संशयः।। ॥ इति सांख्यायने पञ्चमः पटलः॥

# ९. अथ मन्त्रराजैकाक्षरयोर्निर्णयः

ईश्वर उवाच

the purpose of

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बगलामन्त्रनिर्णयम्। षट्त्रिंशदक्षरीं विद्या विधातृपरिनिष्ठिता।। सांख्यायनमते देव्या नारायण ऋषिर्मतः। अनुष्ट्प् छन्द आख्यातं देवता बगलामुखी।। सांख्यायनमते देव्या वामाचारविधिर्मतः। ब्रह्मयामलसम्मत्या ब्रह्मा चास्य ऋषिर्मतः।। गायत्री छन्द उद्दिष्टं देवता सैव कीर्तिता। जयप्रथाख्ययामले ऋषिर्नारद एव हि।। छन्द आदि पूर्ववद् ज्ञेयमिति संक्षेपतः सुत। हरिद्रासंहितायां तु ऋषिर्नारायणो मतः।। त्रिष्टुप् छन्दः समाख्यातं देवता बगलामुखी। सांख्यायनमतं देव्याः कलौ जागर्ति केवलम्।। मृत्यु अयजपं कृत्वा ततो विद्यां जपेत्सुधीः। मृत्यु अयं बिना देवि बगला नहि सिध्यति।। ऋषिश्छन्दस्त्रितयकं मन्त्रभेदात् प्रकाशितम्। बीजसंज्ञां प्रवक्ष्यामि सांख्यायनमुखोद्भवाम्।। शिवबीजं वह्नियुक्तं रतिबिन्दुसमन्वितम्। बह्निशैवान्तराले तु भूबीजं योजयेत् सुत।। स्थिरमाया त्वियं प्रोक्ता विद्या त्वेकाक्षरी शुभा। अनया विद्यया देवि किं न सिध्यति भूतले।। पीतवासोमते पुत्र स्थिरमायां शृणु प्रिये। स्थिररूपा तु या माया स्थिरमायां तु सा मता।। तदुद्धारं श्रृणु प्राज्ञ गगनार्णं समुद्धरेत्। स्थिरबीजं समद्धत्य रितिबिंदुविभूषितम्।। स्थिरमाया त्वियं पुत्र विन्द्वर्धचन्द्रभूषिता। इयं शप्ता महाविद्या कीलिता स्तम्भिता सुत।। रेफयोगान्महाशैव निःशप्ता फलदायिनी। रेफयुक्तां जपेद् विद्यां फलहीनां न संजपेत्।।

रेफहीनां जपन् विद्यां कोटिजापात्र सिध्यति। तस्माद् रेफस्तु संयोज्यः स्थिराधः परमेश्वरि।। संजपेत् प्रयतः पुत्र तस्य सिद्धिर्भविष्यति। लघुषोढा महाषोढा पञ्जरन्यासमेव हि।। बगलामातृकां न्यस्य कुल्लुकां च विचिन्तयेत। सेत्वादिकामराजान्तं न्यस्य मृत्युअयं जपेत्।। ततो वै प्रजपेद्विद्यां सदा जाग्रत्स्वरूपिणीम्। पीतवासोमते पुत्र पञ्चप्रेतगतां स्मरेत्।। चतुर्भुजां व द्विभुजां पीतार्णवनिवासिनीम्। सुधार्णवसमासीनां मिणामण्डपमध्यगाम्।। सांख्यायनमतेनैव संस्मरेद् यत्नतः सुत। सुन्दर्याः पश्चिमाम्नाये बगला परिनिष्ठिता।। श्रीकाल्या उत्तराम्नाये बगला पूज्यतां सुत।।

॥ इति सांख्यायने द्वित्रिंशः पटलः॥

# १०. अथ मन्त्रसन्ध्याप्रकरणम्

क्रौञ्चभेदन उवाच गङ्गाधर नमस्तेऽस्तु गौरीप्रिय नमो नमः। ब्रह्मास्त्रमन्त्रसंध्यां च वद मे करुणाकर।। ईश्वर उवाच

मन्त्रमध्यापयेत् सम्यक् शिष्यस्य गुरुरादरात्। तदारभ्य तु तन्मन्त्रैः मन्त्रसंध्यां समाचरेत्।। तन्मन्त्रसंध्यां वक्ष्यामि शरजन्मन् समासतः। मन्त्रसंध्याविहीनस्य सर्वं तन्निष्फलं भवेत्।।

पञ्चाङ्गविधिना स्नात्वा मन्त्रस्नानमनन्तरम्। तत्र स्नायादङ्गमन्त्रैर्मूलेनैव तु मार्जयेत्।। धौतवस्त्रं परीधाय स्वगृह्योक्तविधानतः। नित्यकर्म समाप्यान्ते मन्त्रसन्ध्यां समाचरेत्।। मुद्रया अङ्कुशेनैव सूर्यमण्डलगं जलम्। आनयेत्तोयमध्ये तु ध्यानयोगेन बुद्धिमान्।। आवाहनस्थापनानि संनिधापनमेव च। सन्निवेशनमुद्रा च सम्मुखी प्रार्थनी तथा।। एता मुद्राश्च तत्तोये दर्शयत् साधकोत्तमः। मूलेनैव त्रिराचम्य अष्टपत्राम्बुजं लिखेत्।। मध्ये चैकाक्षरीयन्त्रं बगलानाम पुत्रक। वेदसंख्यामन्त्रवर्णानष्टपत्राम्बुजे लिखेत्।। अष्टपत्रे अष्टवर्णान् लिखेन्मूलमनुं तथा। पुनरेकाक्षरीमन्त्रं त्रिःसप्त अभिमन्त्रयेत्।। तेन मूलेन सम्मार्ज्य मार्जनं क्रमशोऽर्भक। तन्मार्जनविधिं वक्ष्ये ऐहिकाऽऽमुष्मिकप्रदम्॥ त्रिधा मूर्ध्नि द्विधा बाहौ त्रिधा हन्नाभिदेशयोः। त्रिधा सम्मार्ज्यदंघ्योः सम्यक् कर्म स्वयं क्रमः।। पादादिमूर्ध्नपर्यन्तं क्रूरकर्म सुमार्जयेत्। एवं च मार्जनं कृत्वा गायत्रीं बगलाह्वयाम्।। अर्घत्रयं च निःक्षिप्य हृदि सम्भाव्य देवताम्। मूलेन मन्त्रितं तोयं त्रिवारं च त्रिधा पिबेत्।। त्रिकालं च मन्त्रसन्ध्यां समाचरेत्। एवमेव उपस्थानं त्रिकालस्य वक्ष्येऽहं क्रोञ्चभेदन।। उपस्थानं बिना सन्ध्या निष्फला नात्र संशय:। गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।।

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्। मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्नां च वज्रकम्। पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़पीनपयोधराम्।। पीतभूषणभूषाङ्गीं धृतचन्द्राऽर्धशेखराम्। रत्नसिंहासनासीनामम्बां त्रैलोक्यसुन्दरीम्।। एवं ध्यात्वा तु देवेशीं प्रातःसन्ध्यां समाचरेत्। उपस्थानं प्रवक्ष्यामि मध्याह्रस्य कुमारक।। दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्रचविद्रावणम्। भूभृद्भीशमनं सदा मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।। सौभाग्यैकनिकेतनं ममदृशः कारुण्यपूर्णेक्षणम्। मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।। एवं सान्ध्यमुपस्थानं क्रूरकर्मसु पुत्रक। उपस्थानं प्रवक्ष्यामि सायांह्रस्य कुमारक।। मातर्भञ्जय मे विपक्षवदनं जिह्नां च संकीलय। ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाऽऽशु धिषणामङ्घ्रचोर्गतिं स्तम्भय।। शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाऽऽशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे। विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणम्।। सायमौपास्तिकं कुयदिवमेव कुमारक। विघ्नग्रहविनाशे च एवं ध्यायेज्जगन्मयीम्।। मन्त्रसन्ध्यां बिना मन्त्रः कोटिकोटिजपेन च। न भवत्येव सिद्धाद्यैर्मन्त्रासिद्धिः कुमारक।। त्रिकालमाचरेत् सन्ध्यामुपस्थानं तथैव च। सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं सिद्धिः षण्मासतो भवेत्।। पूर्वीक्तविधिवत्सन्ध्यां कृत्वा चाष्टोत्तरं शतम्। यं यं वाऽपि स्मरेत्पुत्र तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

सन्ध्यामन्त्रेषु अङ्गमेव कुमारक। न प्रसीदत्यङ्गहीना, तस्मात्सन्ध्यां समाचरेत्।।

# ११. अथ गायत्रीविधानम्

#### क्रौञ्चभेदन उवाच

नमस्ते सर्वसर्वेश गर्विताऽसुरभञ्जन। गायत्रीं बगलाख्यां च वद मे करुणाकर।। ईश्वर उवाच

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि मन्त्रमाहात्म्यमेव च। पुरश्चर्याप्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक।। ब्रह्मास्त्राय पदं चोक्त्वा विद्यहे इति पदं तथा। स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा तन्नः शब्दं तेतो बदेत्।। बगलापदमुच्चार्यमुद्धरेच्य प्रचोदयात्। गायत्री बगलानाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि।। ब्रह्मा ऋषिश्छन्दश्च गायत्र्यं समुदाहृतम्। देवता बगलानाम्नी चिन्मयी शक्तिरूपिणी।। 🕉 बीजं ह्लीं शक्तिः कीलकं विद्यहे पदम्। चतुर्लक्षं पुरश्चर्या तद्दशांशं च तर्पणम्।। तद्दशांशं हुनेदाज्यं तावद् ब्राह्मणभोजनम्। न्यासं ध्यानादिकं सर्व कुर्यात्तन्मन्त्रराजवत्।। प्रयोगानथ वक्ष्यामि गायत्र्या बगलाह्नयाम्। तारादि प्रजपेन्मन्त्रं मोक्षार्थी च कुमारक।। कामार्थी प्रजपेन्मन्त्रं तारवाराहपूर्वकम्। सम्मोहनार्थं प्रजपेद् कामराजपुरः सरम्।। स्तम्भनार्थी जपेत् पुत्र बगलाबीजपूर्वकम्। विद्वेषणादौ प्रजपेद् हुंकारद्वयपूर्वकम्।। उच्चाटनार्थ प्रजपेत् शक्तिवाराहपूर्वकम्। वाराहशक्ति वाराहं तच्च मायापुरःसरम्।। प्रजपेन्मन्त्रमेताद्धि मारणं भवति ध्रुवम्। वाग्भवादि जपेन्मन्त्रं विद्या सिद्धिर्भविष्यति।। बालादि प्रजपेन्मन्त्रं कन्यकां क्षितिमाप्नुयात्। बाराहबीजमध्यस्थगायत्रीलक्षजापतः ।। मूलाभो जायते तस्य अनायासेन पुत्रक। श्रीबीजादिं जपेत्पुत्र गायत्रीं बगलाह्रयाम्।। कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः। तार्ध्यबीजादिकं मन्त्रं प्रजपेद् ध्यानपूर्वकम्।।
नानाविषप्रयोगांश्च गररोगाऽऽदिनाशनम्।
भैरवं बीजमादाय प्रजपेच्य कुमारक।।
भूतप्रेतपिशाचद्यास्तत्प्रयोगाद् जपेदमृतबीजादिं गायत्रीं बगलाह्वयाम्।। तापज्यरमहातापाच्छान्तिमाप्नोति पुत्रक। जपेच्य वायुबीजादिं गायत्रीं बगलाह्वयाम्।। शिप्रमुच्चाटनं तस्य भवेच्छङ्करभाषितम्। अग्निबीजादि गायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम्।। अग्निबीजादि गायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम्।। तापेन महताऽऽविष्टः पश्चाच्छत्रुर्मृतो भवेत्। मायादि प्रजपेन्मन्त्रं गायत्रीं बगलाह्वयाम्।। राजा वा राजपुत्रो व मरणान्तवशो भवेत्। महामायादिगायत्रीं प्रजपेद् बगलाह्वयाम्।। इष्टसिद्धिभवित्तस्य शिवस्य वचनं यथा। मन्त्रराजस्य गायत्रीं प्रजपेद मन्त्रराजस्य गायत्रीं पादाद्यवयवां तथा।।

गायत्रीं च बिना मन्त्रो न सिध्यति कलौ युगे। पुरश्चरणकाले तु गायत्रीं प्रजपेन्नरः।। मूलविद्यादशांशं च मन्त्रसिद्धिभविद् ध्रुवम्। त्यक्त्वा तां मन्त्रगायत्रीं यो जपेन्मन्त्रमादरात्।। कोटिकोटिजपेनाऽपि तस्य सिद्धिर्न जायते। जपसंख्या यत्र नोक्ता लक्षमेकं कुमारक।। दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेकं न संशयः। गायत्री बगलानाम्नी बगलायाश्च जीवनम्।। मन्त्रादौ चाथ मन्त्रान्ते जपेद् ध्यानपुरःसरम्। ॥ इति सांख्यायने द्वादशः पटलः॥

#### १२. अङ्गमन्त्रोद्धाराः वास्त्रा विश्व विश्व क्षाप्तिकार्याः

# के मिन्द्रीतीक होत्रहामाँ के चतुरक्षरों मन्त्रः चतुरक्षरों मन्त्रः

वेदादि विलिखेत्पूर्वं पाशबीजमतः परम्। स्थिरमायां समुच्चार्य अङ्कुशं बीजमेव च।। तुर्याक्षरी च बगला सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः।

#### िमार्काताका व अष्टाक्षरः वार्वाक्ष

वेदादिशक्तिमादौ च पाशबीजमनन्तरम्।। स्तब्धमायां समुच्चार्य अङ्कुशं बीजमेव च समायुक्तो मन्त्रस्याष्टाक्षरो मतः।। बगला पाशबीजं समुच्चार्य स्तब्धमायां समुच्चरेत्। अङ्कुशं बीजमुच्चार्य भूवाराहं तथोच्चरेत्।। वाराहीं वाग्भवं चैव कामराजमतः परम्। श्रीबीजं भुवनेशीं च बगलामुखि चोच्चरेत्।।

आवेशद्वयं चोक्त्वा पाशबीजं तथोच्चरेत्। स्तब्धमायां तथोच्चार्य अङ्कुशं बीजमुच्चरेत्।। ब्रह्मास्त्ररूपिणीत्युक्त्वा एहि युग्मं समुच्चरेत्। पाशबीजं समुच्चार्य स्तब्धमायां ततो वदेत्।। अङ्कुशं बीजमुच्चार्य मम शब्दं ततो वदेत्। हृदये पदमुच्चार्य चिरं तिष्ठद्वयं भवेत्। हुं फट् स्वाहा समायुक्तो बगलाहृदयं मनुः।।
(१) पञ्चास्त्रोद्धारः

#### ्रिकृत के प्रथमास्त्रम—वडवामुखी विकास

तारं च विलिखेत्पूर्वं स्तब्धमायां ततः परम्। वाराहीं शक्तिवाराहीं बगलामुखि चोच्चरेत्।। ह्नां ह्लीं हूं च तथोच्चार्य सर्वदुष्टा पदं वदेत्। नकारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुना भूषितं तथा।। हैं ह्रौं ह्रः तथोच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत्। स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा ह्नः ह्नौं ह्नैं च तथोच्चरेत्।। जिह्नां कीलय चोच्चार्य हूं ह्वीं ह्वां च ततः परम्। बुद्धि विनाशयोच्चार्य शक्तिवाराहमुच्चरेत्।। वाराहं बगलाबीजं तारवर्मास्त्रसंयुतम्। ा हात प्रथमास्त्रम्।।

#### क्रितीयास्त्रम-उल्कामुखी विक्रिति विक्रि

तारं च स्थिरमायां च शक्तिवाराहमेव च। बगलामुखि पदं चोक्त्वा सर्वशब्दं समुच्चरेत्।। दुष्टानां पदमुच्चार्य पूर्वबीजत्रयं वदेत्। वाचं मुखं पदं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं वदेत्।।

स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा पूर्वबीजत्रयं वदेत्। जिह्वां कीलययुग्मं च पुनर्बीजत्रयं वदेत्।। बुद्धिं नाशययुग्मं च पुनर्बीजत्रयं वदेत्। वह्निजायासमायुक्तः उल्कामुख्या अयं मनुः।। इति द्वितीयास्त्रम्।।

#### तृतीयास्त्र—जातवेदमुखी

तारं च स्तब्धमायां च प्रसादं च ततः परम्।
पुनर्लिखेत् स्तब्धमायां प्रणवं च ततः परम्।।
बगलामुखि शब्दान्ते सर्वदुष्टा पदं वदेत्।
नकारं दीर्घसंयुक्तं बिन्दुना भूषितं तथा।।
बीजपञ्चकमुच्चार्य पञ्चबीजं तथोच्चरेत्।
बुद्धिं नाशययुग्मञ्च पञ्चबीजं तथोत्तरम्।।
जातवेदमुखीमन्त्रो जगदाश्चर्यकारकः।।
इति तृतीयास्त्रम्।।

#### चित्रकात्र चतुर्थास्त्र-ज्वालामुखी हा हा हिन्सान

तारं च स्तब्धमायां च विद्वबीजं च पश्चकम्।
प्रस्फुरद्द्वितयं चैव तद्बीजं च त्रयोदशम्।।
बगलामुखि शब्दान्ते वदेत् बीजं त्रयोदशम्।
सर्वशब्दं तथोच्चार्य दुष्टानां पद्मुच्चरेत्।।
बीजं त्रयोदशं चोक्त्वा वाचं मुख पदं वदेत्।
स्तम्भयद्वितयं चोक्त्वा पुनर्बीजं त्रयोदश।।
जिह्वां कीलययुग्मं च पुनर्बीजं तथैव च।
विह्वजायासमायुक्तो ज्वालामुख्या मनुस्त्वयम्।।
इति चतुर्थास्त्रम्।।

#### पञ्चमास्त्र-बृहद्भानुमुखी

मायास्तम्भनवाणं च आश्चर्यं च कलौ युगे।
तारं ह्लां ह्लीं तथोच्चार्य हूं है ह्लीं च ततः परम्।।
ह्लः इत्युच्चरेत्पुत्र हां हीं हूं च ततः परम्।
हैं हीं हश्च तथोच्चार्य तदग्रे बगलामुखि।।
आद्यबीजं मनोः संख्या उद्धरेत्पुनरादरात्।
सर्वशब्दं तथोच्चार्य दुष्टानां पदमुच्चरेत्।।
वाचं मुखं पदं चोक्त्वा स्तम्भयद्वयमुच्चरेत्।
जिह्लां कीलय उच्चार्य पूर्ववद् बीजमुच्चरेत्।
बुद्धि नाशय उच्चार्य पूर्ववद् बीजमुच्चरेत्।
बहुजायासमायुक्तो बृहद्भानुमुखीमनुः।।
इत पञ्चमास्रम्।।

## (२) अथ शताक्षरोद्धारः

स्तब्धमायां च वाग्बीजमायामन्मथमेव च।
श्रीबीजं शक्तिवाराहं शक्तिबीजं स्वमेव च।।
बगलामुखि चोच्चार्य सर्वशब्दं ततो वदेत्।
दुष्टानां पद्मुच्चार्य वाचं मुखं पदं वदेत्।।
स्तम्भयद्वयमुच्चार्य प्रस्फुरद्द्वयमुच्चरेत्।
विकटाङ्गी पदं चोक्त्वा घोररूपी पदं वदेत्।।
जिह्वां कीलय उच्चार्य महच्छब्दं ततो वदेत्।
पश्चात् भ्रमकरी चैव बुद्धिं नाशय उच्चरेत्।।
विराडिप पदं चोक्त्वा सर्वप्रज्ञामयोच्चरेत्।
प्रज्ञां नाशय उच्चार्य उन्मादं कुरुयुग्मकम्।।
मनोपहारिणी चोक्त्बा स्तब्धमायां समुच्चरेत्।
शक्तिवाराहबीजं च रमाबीजं ततः परम्।।

कामराजं च हल्लेखां वाग्भवं तदनन्तरम्। स्तब्धमायां तथोच्चार्य वह्निजायासमन्वितम्।। शताक्षरमहामन्त्रं बगलायाः सुपावनम्।

#### 🖽 🦰 🥽 🕒 वगलापंचाक्षरः

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां वधूं ततः। हुं फट् संयोजयेत् पश्चात् पंचार्णबगलामनुः।। (बृहत्पद्धतौ माययुक्तं चेति विशेषः।)

#### त्र्यक्षरः

तारेण सम्पुटं कृत्वा स्थिरमायां जपेत्सुधीः। सर्वशास्त्रेषु पाण्डित्यं जायते अचिरात्प्रिये।।

### (म्हामक्म हिं एकादशाक्षरः

प्रणवं स्थिरमायां च कामशक्तियुतां क्रमात्। बगलामुखि संयोज्य ठद्धयेन युतां स्मरेत्।। ॐ कारैकठरहितो वा नवाक्षरः।

#### (३) श्री बगलामालामन्त्रः

ॐ नमो भगवित ॐ नमो वीरप्रतापिवजयभगवित बगलामुिख मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रय, बुद्धि विनाशय विनाशय, अपरबुद्धि कुरु कुरु, आत्माविरोधिनां शत्रुणां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिकोरु-पद-अणुरेणु-दन्तोष्ठ-जिह्मा-तालु-गुह्य-गुद-किम्जानु-सर्वाङ्गेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेश-पर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, खें खीं मारय मारय, परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्राणि स्थ रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधि विनाशय विनाशय, दुःखं हर हर, दारिद्रयं निवारय निवारय,

सर्वमन्त्रस्वरूपिण, सर्वतन्त्रस्वरूपिण, सर्वशिल्पप्रयोगस्वरूपिण सर्वतत्त्वस्वरूपिण, दुष्टग्रह-भूतग्रह-आकाशग्रह-पाषाणग्रह सर्वचाण्डाल-ग्रह-यक्षिकत्ररिकम्पुरुषग्रह-भूतप्रेतिपशाचानां शािकनी-डािकनीग्रहाणां पूर्विदशां बन्धय बन्धय, वातिलि मां रक्ष रक्ष, दिक्षणिदशां बन्धय बन्धय, किरातवातिलि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमिदशां बन्धय बन्धय, स्वप्नवातिलि मां रक्ष रक्ष, उत्तरिशां बन्धय बन्धय, कािल मां रक्ष, रक्ष ऊर्ध्विदशं बन्धय बन्धय, उग्रकािल मां रक्ष रक्ष, पातालिदशं बन्धय बन्धय, बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रुपलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजजनस्त्रीवशतां कुरु कुरु, शत्रून् दह दह, पच पच, स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय मम शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

।। इति बगलामालामन्त्र।। कि अभिक्षा समिति

#### (४) श्री बगलातन्त्रे ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः

#### श्री गणेशाय नमः

अथ ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः॥ ॐ नमो भगवित चामुण्डे नरकंक गृधोलूक परिवार सिहते श्मशानित्रये नररुधिर मांसचरु भोजन प्रिये सिद्धविद्याधर वृन्द विन्दित चरणे ब्रह्मेश विष्णुवरुण कुबेर भैरवी भैरविप्रये इन्द्रक्रोध विनिर्गत शरीरे द्वादशादित्य चण्ड प्रभे अस्थि मुण्डकपाल मालाभरणे शीघ्रं दक्षिणदिशि आगच्छागच्छ मानय २ नुद २ अमुकं मारय २ चूर्णय २ आवेशयावेशय त्रुट २ त्रोटय २ स्फुट २ स्फोटय २ महाभूतान् जृम्भय २ ब्रह्मराक्षसानुच्चाटयोच्चाटय भूतप्रेत पिशाचान्मूच्छ्य २ मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शत्रून् चूर्णय २ सत्यं कथय २ वृक्षेभ्यः संत्राशय २ अर्क स्तम्भय २ गरुड पक्षपातेन विषं निर्विषं कुरु २ लीलांगालय वृक्षेभ्यः परिपातय २ शैलकाननमहीं मर्दय २ मुख उत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय २ भूत भविष्यं यत्सर्वं कथय २ कृन्त २ दह

र पच २ मथ २ प्रमथ २ घर्घर २ ग्रासय २ विद्रावय २ उच्चाटयोच्चाटय विष्णुचक्रेण वरुणपाशेन इन्द्रवज्रेण ज्वरं नाशय २ प्रविदं स्फोटय २ सर्वशत्रून् मम वशं कुरु २ पातालं प्रत्यंतिरक्षं आकाशग्रहं आनयानय करालि विकरालि महाकालि रुद्रशक्ते पूर्विदशं निरोधय २ पश्चिमिदशं स्तम्भय २ दक्षिणिदशं निधय २ उत्तरिदशं बंधय २ हां हीं ॐ बंधय २ ज्वालामालिन स्तम्भिन मोहिन मुकुट विचित्र कुण्डल नागादि वासुकी कृतहार भूषणेमेखला चन्द्रार्कहास प्रभंजने विद्युत्स्पुरित सकाश साट्टहासे निलय २ हुं फट् २ विजृंभितशरीरे सप्तद्वीपकृते ब्रह्माण्ड विस्तारितस्तनयुगले असिमुसल परशुतोमरक्षुरिपाशहलेषु वीग्रन् शमय २ सहस्रबाहु परापरादि शक्ति विष्णु शरीरे शंकर हृदयेश्वरि बगलामुखि सर्वदुष्टान् विनाशय २ हुं फट् स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि ये केचनापकारिणः सन्ति तेषां वाचं मुखं स्तम्भय २ जिह्नां कीलय २ बुद्धि विनाशय २ हीं ॐ स्वाहा ॐ हीं हीं हिली हिली अमुकस्य वाचं मुखं पदं स्तम्भय शत्रूं जिह्नां कीलय शत्रूणां दृष्टिमुष्टि गतिमित दंत तालु जिह्नां बन्धय २ मारय २ शोषय २ हुं फट् स्वाहा।

।। इति बगलातन्त्रे ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः सम्पूर्णः।

## (५) बगलाशावर मन्त्रः

ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखब्धनं ग्राममुखबन्धनं ग्रामपुरुषबन्धनं कालमुखबन्धनं चौरमुखबन्धनं ब्याघ्रमुखबन्धनं सर्वदुष्टग्रहबन्धनं सर्वजनबन्धनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा।

विकास का हात । इति अङ्गमन्त्रोद्धारः॥ इ विकास हात्राक्ष

PINE LEIK BRIMBING AND AND A

#### १३. मन्त्रोत्कीलनम्

ॐ अस्य श्री बगलामुखी – उत्कीलनमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः तस्मै नमः शिरसि, जगत्सृष्टिसाधनीभूतबृहद्गायत्रीठछन्दसे नमो मुखे, श्रीब्रह्मास्नोत्कीलनायै क्लीं ब्लूं ग्लीं ह्लीं ग्लीं ब्लूं क्लीं सं सं सं सूच्यग्रेणोत्कीलनसूचीमुख्यै देवतायै नमो हृदये, ॐ ऐं क्लीं ह्लीं हीं हीं ऐं अं बीजाय नमो गृह्ये, ॐ ह्लीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं अं अ: त्रीन् मूलमुच्चार्य ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं हीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्माग्रन्थीनुत्कीलय ॐ अं ह्लीं आं इं ब ईं ग उं ला ऊं मु ऋं खि ऋं स लृं वं लृं दु एं ष्टा ऐं नां ओं वा औं चं अं मु अं खं अ: प अं दं औं स्त ओं म्भ ऐं य एं जि लृं ह्लां लृं की ऋं ल ऋं य ऊं बु उं द्धि ईं वि इं ना आं श अं य ह्लीं ॐ क्षं ॐ स्वाहा।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्वीं क्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्म ग्रन्थिम् उत्कीलय उत्कीलय, ॐ ब्लूं ह्वौं ह्वं ह्वीं ह्वां ॐ इति कीलकाय नमो, नाभौ हस्तं दत्वा उच्चरेत्। ॐ हीं हीं हसौं ॐ बगलामुखीमहामन्त्रे उत्कीलनार्थे जपे विनियोगाय नमः, इति सर्वाङ्गे व्यापकं कृत्वा शिरसि प्रणमेत्।

अथकरादिन्यासः। ॐ इं लं हंसः ह्वां सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्ये नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, इं लं हंसः ह्वां सोहं लं ईं ॐ महोत्कीलिन्ये नमः तर्जनीभ्यां नमः, ॐ इं लं हंसः ह्वं सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्ये नमः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ इं लं हंसः ह्वें सोहं लं ईं ॐ ब्रह्मग्रन्थि उत्कीलिन्ये नमः अनामिकाभ्यां नमः, ॐ इं लं हंसः ह्वों सोहं लं ईं ॐ योगिन्ये उत्कीलिन्ये नमः किनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ इं लं हंसः सोहं लं ईं ॐ सर्वोत्कीलिन्ये नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

PREMIO PROGREÇA हृदयादिन्यास: के कि कि कि कि

ध्यानम्

"रुद्रसूचीमुखीं ध्याये सर्वाभरणभूषिताम्। वरदाऽभयसूच्यग्रनखदंष्ट्राभयानकाम्।। चतुर्भुजां त्रिनयनां वरदाऽभयकुण्डिकाम्।
शूलाग्रान् खरतीक्ष्णग्रान् कुर्वतीं ग्रथिताक्षरान्।।
वर्णमालाविभूषाङ्गी सर्ववर्णात्मिकां शिवाम्।
प्रोद्यश्वतां मनून् सर्वान् नानावर्णविजृम्भितान्।।
विविच्य वरदे मन्त्रान् मालायां कुसुमानिव।
प्रवेशय मनुं देहि प्रकटीकुरु सर्वदा।।
अभयं टङ्कवरदं पाशं पुस्तकमङ्कुशम्।
शूलं सूच्यग्रमादाय देहि मे, प्रणमामि त्वाम्।।"
इति ध्यात्वा जगद्धात्रीं जगदानन्दरूपिणीम्।
ग्रन्थित्रयविशेषज्ञं शिवं ध्यात्वा जपेन्मनुम्।।

ॐ इं लं हंस: ह्वीं उत्कीलिन्यै नम:, ॐ ईं लं हंस: ॐ वः ॐ ह्वीं बगलामुखि इत्यादि मूलं ह्वीं लं ईं वः उत्कीलिन्यै स्वाहा इत्येकवारं न जपेत्। ॐ ईं हंस: रं सं रं ह्वः ॐ ह्वीं बगलामुखि इत्यादि मूलं ॐ ईं लं हंस: हं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा इति सकृज्जपेत्। एवं वारत्रयं जप्त्वा पुनः अकारादि क्षकारान्तं उच्चार्य ॐ ईं हंसः ॐ वः मूलं ॐ वः सः हं लं इं लं क्षं लं हं क्षकारमारभ्य अकारान्तमुच्चार्य ॐ वः ह्वां इं लं हंसः मूलं सोहं लं ईं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा सकृदुच्चार्य—अथ जागरणम् ॐ ईं लं हंसः सोहं ॐ वः वः वः ॐ हंसः सोहं लं ईं ॐ मम हदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा हदये हस्तं दत्वा त्रिवारं जपेत्। पुनः ॐ ह्वीं हंसः मूलं ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः हंस ह्वीं ॐ इति सकृज्जपेत् जीवनम्।

#### अथ मन्त्रशुद्धिः

अकारादि क्षकारान्तं ॐ ह्लीं हंस: सोहं ह्लीं स: सोहं मूलं क्षकारादि अकारान्तं मम विद्याशुद्धि कुरु स्वाहा। (इति विद्या शुद्धिः) ॐ हूं हूं हूं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ऐं हीं हीं हीं क्रीं क्रीं क्रीं रुद्रसूच्यग्रेण उत्कीलय उत्कीलय अं १५ बगलाशापोद्धारं कुरु कुरु मूलं अं १५ क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हीं ऐं ऐं क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं हूं ॐ रुद्रसूच्यग्रेण बगलाशापविमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा। (इति शापमोचनम्) पुनः मूलं अष्टवारं जप्त्वा ब्राह्मी: मुद्राः प्रदर्श्य पंच मुद्राभिः प्रणमेत्।

### अथ अन्य प्रकारोत्कीलनादि

U PENGETE | उत्कीलनम् | क्रुप्राम्य क्रिप्राम्य

मृद्धीजं च मनोरादौ वनान्ते प्रणवं जपेत्। मन्त्रोऽयं बगलामुख्या मन्त्रोत्कीलनसिद्धिदः।।

मिस्स्मार्गाम समिति संजीवनम् विकास क्रान्साम्

मृत्तनाबीजं जपेद्देवि प्रणवं च वनाञ्चले। बगलामन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं परम्।।

क्षित्रकार्वात्राक्ष्म हो हात् । शापोद्धारः हेशांस्ट विद्वारीका

तारं मृत्तनां च बगले रुद्रशापं विमोचय। तारं मृद्धनं देवि विद्येयं शापहारिणी।।

सम्पुटीकरणम्

रसनां मृत्तिकावीजं मनोरन्ते पठेत्सुधीः। श्रीदेव्या बगलामुख्या मन्त्रः सम्पुटिकाभिधः।।

।। इति देवीरहस्योक्तप्रकारः ॥

## १४. जपप्रकारवर्णनम्। उक्तं च कुण्डिकातन्त्रे

| क्रांकिक राजिसकार श्री पार्वत्युवाच-मानम् । विशेष

भगवन् सर्वदेवेश लोकानां हितकारक। चतुर्वर्गप्रदं देव चैतन्यं मे प्रकाशय।।

#### ि कि कि कि कि कि अपने श्री शंकर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि चैतन्यं परमाद्भुतम्। रहस्यं परमं पुण्यं गोपनीयं त्वया पुनः।। चिच्छक्त्या ध्वनितं देवि परिणामक्रमेण तु। वर्णभावं समात्यज्य निर्मलं विमलात्मकम्।। षट्चक्रं च तथा भित्वा शब्दरूपं सनातनम्। नादविन्दुसमायुक्तं चैतन्यं परिकीर्तितम्।। अथवाऽन्यप्रकारेण श्रूयतां पद्मलोचने। बिना येन न सिध्येतु जपपूजादि किञ्चन।। अनाहतस्य मध्ये तु ग्रथितं वर्णमुत्तमम्। सुषुम्णावर्त्मना देवि कण्ठदेशं विनिर्गतम्।। चैतन्यं च महादेवि योगिनां योगरूपकम्। सहस्रारे वर्णरूपं परिणामक्रमेण तु।। कर्णिकामध्यसंख्ये तु नादविन्दुसमन्वितम्। एवं संचिन्तयेद्देवीं चैतन्यं च पुनः पुनः।। मन्त्राक्षराणि चिच्छक्तौ ग्रथितानि महेश्वरि। तानि संचिन्तयेद्देवि सहस्रारदले तथा।। चैतन्यमन्त्ररूपा च चैतन्यानन्ददायिनी। चैतन्यनादशक्तिश्च चैतन्यवर्णरूपकम्।। मणिपूरे सदा चिन्त्यं मन्त्राणां प्राणरूपकम्। अथवाऽन्यप्रकारेण श्रूयतां वरवर्णिनि।। कामबीजं रमाबीजं शक्तिबीजं सुरेश्वरि। एतानि पूर्वमुच्चार्य मातृकास्तदनन्तरम्।। पुटितं मुलमन्त्रं च शतमष्टोत्तरं जपेत्। कोटिकोटिगुणं चैव लभते नात्र संशयः।।

Things a tree of motors

मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं योनिमुद्रां न वेति यः। न सिध्यति वरारोहे कल्पकोटिशतैरपि।। ई बीजेनैव पुटितं मूलमन्त्रं जपेद्यदि। तदेव मन्त्रचैतन्यं भवत्येव सुनिश्चितम्।।

### सरस्वतीतन्त्रे प्रथमपटले।

# श्री ईश्वर उवाच

मन्त्रार्थं परमेशानि सावधानाऽवधारय। मूलाधारे मूलविद्यां भावयेदिष्टदेवताम्।। शुद्धस्फटिकसंकाशां भावयेतपरमेश्वरीम्। धारयेदक्षरश्रेणीमिष्टविद्यां सनातनीम्।। मुहूर्तार्धं विभाव्यैतां पश्चाद् ध्यानपरो भवेत्। ध्यानं कृत्वा महेशानि मनसा कमलेक्षणे।। स्वाधिष्ठानं ततो गत्वा भावयेदिष्टदेवताम्। बन्धूकारुणसंकाशां जवसिन्धुरसन्निभाम्।। विभाव्य अक्षरश्रेणीपद्ममध्यगतां पराम्। शुद्धस्फटिकसंकाशां शिरः पद्मोपरि स्थिताम्।। ततो जीवो महेशानि पक्षिणा सह पार्वति। हत्पद्मं प्रययौ शीघ्रं नीरजाऽऽयतलोचने।। इष्टविद्यां महेशानि भावयेत्कमलोपिर। विभाव्य अक्षरश्रेणीं महामरकतप्रभाम्।। ततो जीवो वरारोहे विशुद्धं प्रययो प्रिये। हत्पद्मगहनं गत्वा पक्षिणा सह पार्वति।। इष्टविद्यां महेशानि आज्ञांशे परिचिन्तयेत्। पक्षिणा सह देवेशि खञ्जनाक्षि शुचिस्मिते।। इष्टविद्यां महेशानि साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणी। विभाव्य अक्षरश्रेणीं हरिद्धणां वरानने।। आज्ञाचक्रे महेशानि षट्चक्रे ध्यानमाचरेत्। षट्चक्रे परमेशानि ध्यानं कृत्वा शुचिरिमते।। ध्यानेन परमेशानि यद् रूपं समुपस्थितम्। तदेव परमेशानि मन्त्रार्थ विद्धि पार्वति।।

'अनेन क्रमेण मन्त्रार्थं विद्यात्' श्री बगलायाः कुल्लुकामन्त्रस्तु मन्त्रराज एव।

#### मिक्किक के कुल्लुकाविषये उक्तम्

मातङ्गी बगला लक्ष्मी धूमोच्छिष्टा क्रमे शुणु। तारकूर्चनारसिंहैः पञ्चानां कुल्लुका मता (ॐ हूं क्षौं)।।

#### शक्ति संगमे

अज्ञात्वा कुल्लुकामेतां यो जपेदधमः प्रिये। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन धारयेन्मूर्ध्नि कुल्लुकाम्।।

### । भारति जिल्लाम् सेतुः गाराकानकर्शतमञ्जू

विप्राणां प्रणवः सेतु: क्षित्रयाणां तथैव च। वैश्यानां चैव फट्कारो माया शूद्रस्य कथ्यते।। अजप्त्वा हृदि देविशि यो वै मन्त्रं समुच्चरेत्। सर्वेषामेव यन्त्राणामधिकारो न तस्य हि।।

#### बगलामहासेतुः 'स्त्रीं'

आदौ जप्बा महासेतुं जपेन्मन्त्रमनन्यधी। धने धनेशतुल्योऽसौ वाण्यां वाणीश्वरो भवेत्।। अथ वक्ष्यामि निर्वाणं शृणुष्वाऽविहताऽनघे।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मातृकाद्यं समुद्धरेत्।।
ततो मूलं महेशानि ततो वाग्भवमुद्धरेत्।
मातृकास्तु समस्तास्तु पुनः प्रणवमुच्चरेत्।।
एवं पुटितमूलं तु प्रजपेन्मणिपूरके।
एवं निर्वाणं महेशानि यो न जानाति पामरः।।
कल्पकोटिसहस्रेण तस्य सिद्धिर्न जायते।

# मुखशोधनम्

अपरैकं प्रवक्ष्यामि बगलामुखशोधनम्। वाग्भवं भुवनेशीं च वाग्बीजं सुरवन्दिते।। मुखशोधनमात्रेण जिह्वाऽमृतमयी भवेत्। अन्यथा मुखविड्युक्ता जिह्ना भवति सर्वदा।। भक्षणैर्दूषिता जिह्ना मिथ्यावाक्येन दूषिता। कलहे दूषिता जिह्वा तत्कथं प्रजपेन्मनुम्।। देवो यदि जपेन्मन्त्रमकृत्वा मुखशोधनम्। पतनं तस्य देवेशि किं पुनर्मर्त्यवासिनाम्।। मायया पुटितो मन्त्रो जपतः सप्तधा पुनः। स प्राणो जायतेऽदेवि सर्वत्रायं विधिः स्मृतः।। तथैवं दीपनं वक्ष्ये सर्वमन्त्रे च पार्वति। वेदादिपुटितं कृत्वा सप्तवारं जपेन्मनुम्।। दीपनीयं समाख्याता सर्वत्र परमेश्वरि। वेदादिपुटितं कृत्वा प्रयत्नेन सुरेश्वरि।। दशधा प्रजपेन्मन्त्रं सूततद्वयमुच्यते। अथोच्यते जपस्यात्र क्रमश्च परमाद्भुतः।।

HERITARIA INTERNATIONAL STREET

यं कृत्वा सिद्धसंघानामधिपो जायते नरः। नतिगुर्वादिनामादौ ततो मन्त्रशिखां भजेत्।। ततोऽपि मन्त्रचैतन्यं मन्त्रार्थभावना ततः। गुरुध्यानं शिरःपद्मे हृदीष्टथ्यानमाहरन्।। कुल्लुकां च ततः सेतुं महासेतोरनन्तरम्। निर्वाणं च ततो देवीयोनिमुद्राविभावना।। अङ्गन्यासं प्राणायामं जिह्नाशोधनमेव च। प्राणयोगं दीपिनीं च अशौचभङ्गमेव च।। भूमध्ये वा नसोरग्रे दृष्टिसेतुं जपं पुनः। सेतुमशौचभङ्गं च प्राणायाममिति क्रमः।। कुल्लुकां मूर्धिंन संजप्य हदि सेतुं विचिन्तयेत्। महासेतुं विशुद्धौ च कण्ठदेशे समुद्धरेत्।। मणिपुरे तु निर्वाणं महाकुण्डलिनीमधः। स्वाधिष्ठाने कामबीजं राकिणीमूर्धिंन संस्थितम्।। विचिन्त्य विधिवद् देवीं मूलाधारान्तिकां शिवे। विशुद्धान्तं स्मरेद्देवीं विसतन्तुतनीयसीम्।। वेदिस्थानं हि जीवान्तं मूलमन्त्रावृतं मुहुः।

ा इति जपविधिः॥ निकास अग्रिका ।। इति जपविधिः॥

#### १५. कूर्मचक्रविधानम्

कूर्मस्थितिमविज्ञाय यो जपादिविधौ स्थितः।
स नाप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च।।
तस्मात्कूर्मविभागं तु विज्ञायाखिलमाचरेत्।
स चतुर्धा ततो लोके तत्प्रकारान् शृणु प्रिये।।
प्रथमस्तु परः कूर्मस्ततो देशगतस्तथा।
ग्रामगो गृहगश्चेति चतुर्धा तद्व्यवस्थितिः।।

देशं ग्रामं गृहं वस्तु नवधा विभजेत्ततः।

प्रागादि पश्चिमान्तं तु कादिमान्तानि विन्यसेत्।।

अक्षराणि समान्येव चत्वारि परयोर्न्यसेत्।

ईशे द्वयमथो मध्ये स्वरात् प्रागादि विन्यसेत्।।

ईशान्ते द्विद्विशः पश्चात् नामाद्यणं यतो भवेत्।

तन्मुखे पार्श्वयोः पाणी कुक्षी पादौ ततस्ततः।।

पुच्छमेकमथो मध्ये पृष्ठमेवं षडङ्गकम्।

मुखे सर्वार्थसिद्धिः स्यात् करयोरल्पसिद्धिकृत्।।

कुक्षोक्ष नित्यनैष्फल्यं पादयोः सर्वदुःखकृत्।

पुच्छे मृत्युस्तु नियतः पृष्ठे सर्वार्थदायकम्।

तस्मात् तत्साधु विज्ञाय कुर्यात् सर्व समीरितम्।

व्यञ्जनं देशकूर्मे स्याद् गृहकूर्मे स्वरास्तथा।।

ग्रामादिकूर्मे द्वितयं परकूर्मे न तत् त्रयम्।

नित्यं पूर्वमुखो यस्मात् तेन तिसद्धिमीरिताः।।

एवं कूर्मविभागस्ते कथितोऽयं चतुर्विधः।। इति

पुरश्चरणं कुर्वता साधकेन सिद्धिमपश्यता कूर्मचक्रसहायेन सिद्धिः कर्तव्या । मन्त्रग्रहणराशिनक्षत्रादिचक्रमकडमादिविभागमृणिधनादि-शोधनमपि गुरुमुखाज्जानीयात्। यद्यापि बगलामन्त्रे एष विचारो नास्ति सर्वदोषमुक्तत्वात्। उक्तं हि –

''बगलामन्त्रराजस्य सिद्ध्यादीन्नैव चिन्तयेत्''

### उक्तं च मुण्डमालायम् —

काली, तारा महाविद्या, षोडशी, भुवनेश्वरी। भैरवी, छिन्नमस्ता च विद्या, धूमावती तथा।। बगलामुखी, सिद्धविद्या मातङ्गी च तथा रमा। नात्र सिद्धचाद्यपेक्षाऽस्ति नक्षत्रादिविचारणा।। कालदिशोधनं नास्ति नच मित्रादिशोधनम्। सिद्धिविद्यान्तरा नात्र चाङ्गसेवापरिश्रमः।। इति

क्रिक्ति तथाप्यत्र नियमसामान्यादलेखि। व क्रिक्ति

# १६. अथ स्वप्नविज्ञानम् कार्य किम निमान

सिद्धिचिद्वानि प्रोक्तानि वासनाकथने मम। आनुकूल्यस्य चिद्वानि शृणु साधयतस्तदा।। स्वप्ने पोतेषु वनितावृन्दैः सम्मेलनं निशि। गजादिसौधशृङ्गेषु विहारो राजदर्शनम्।। गजानामङ्गनानां च दर्शनं नृत्यगीतयोः। उत्सवं च सुरामांसदर्शनं स्पर्शनं तथा।। निन्धानि शृणु देवेशि विघ्नानर्थकराणि च। कृष्णवर्णेभटैः स्वप्ने प्रहारस्तैललेपनम्।। मैथुनं परनारीभिरिन्द्रियच्यवनं तथा। राष्ट्रक्षोभो विद्वर्वायुर्जलभी बन्धुनाशनम्।। गुरावुपेक्षा सम्पत्तिवसूनां व्याधिनाशनम्। अन्यमन्त्रार्चनश्रद्धा विघ्नो नित्यार्चनेऽनिशम्।। नराणां यच्च दुष्पुण्यैः कृतैर्बहुषु जन्मसु। श्रद्धा स्थैर्य सम्प्रदायसिद्धिनित्यार्चनं भवेत्।। सम्प्रदायार्थः ही क्राप्ट क्रिक्निक्रम्थाईकेन

समः सम्यक्त्वमुदितं प्राणोत्कर्षश्च दायतः। वस्तु तेनोत्तमा विद्या साऽस्तु नः सम्प्रदायतः।। १७. मन्त्राणां दश संस्काराः

विवयः राष्ट्रमध्याः विवय अप्रबुद्धमन्त्रः संस्कारेण प्रबुद्धः क्रियते, अतः संस्का-राणामुपयोगः। यथा हि ताकाप्रकारी होता असीट किया कराने हिंदी

मन्त्राणां दशं संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धिदायिनः। निर्दोषतां प्रयान्त्याशु ते मन्त्राः साधु संस्कृताः।। जननं जीवनं चैव ताडनं वोधनं तथा। अभिषेकोऽथ विमलीकरणाऽऽप्यायने पुनः।। तर्पणं दीपनं गुप्तिः दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः। प्रणवान्तरितं कृत्वा मन्त्रवर्ण जपेत् सुधीः।। प्रणवान्तारत कृत्वा मन्त्रवण जयत् पुवाः।।
मन्त्राणंसंख्यया तद्धि जीवनं सम्प्रचक्षते।
मन्त्रवर्णान् समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसि।।
प्रत्येकं वायुबीजेन ताडनं तदुदाहृतम्।
विलिख्य मन्त्रवर्णास्तु प्रसूनैः करवीरजैः।।
मन्त्राक्षरेण संख्यातैर्हन्यात् तद् बोधनं मतम्।
स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्री मन मन्त्रार्णसंख्यया।।
अश्वत्थपल्लवैर्मन्त्रमभिषिश्चेद् विशुद्धये। संचिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिमन्त्रेण निर्दहित्।। मन्त्रे मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं हि तत्। कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्ण प्रोक्षणं मनोः।। वारिबीजेन विधिवत् एतदाप्यायनं मतम्। तारव्योमाग्नियुक् ज्योतिमन्त्र एष उदाहृतः।। मन्त्रेण वारिणा मन्त्रे तर्पणं तर्पणं मतम्। तारमायरमायोगो मनोदींपनमुच्यते।। जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशनम्। संस्काराः दश मन्त्राणां सर्वतन्त्रेषु गोपिताः।। यत् कृत्वा सम्प्रदायेन मन्त्री वाञ्छितमश्नुते। रुद्धकीलितविच्छित्रसुप्तशप्तादयोऽपि मन्त्रदोषाः प्रणश्यन्ति संस्कारैरेभिरुत्तमैः। इति।

mont fifts

## १८. मृत्युञ्जय-मन्त्रविधिः अस्तर्भात्राम् ।

तारः स्थिरा सकर्णेन्दुः भृगुः सर्गसमन्वितः। अक्षरात्मा निगदितः मन्त्रो मृत्युञ्जयाभिधः।।

ॐ जूं सः क्विचिद् 'हौं जुं सः तथा हौं जुं सः' इत्यादि गुरुपरम्परया ज्ञातव्यम्। अस्य मृत्युञ्जयमहामन्त्रस्य कहोल ऋषिः दैवीगायत्री छन्दः मृत्युञ्जयो महादेवो देवता – इत्यादि विनियोगः सां सीमितत्यादि षडङ्गन्यासः।

# 

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तं स्थितम्।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणि हिमांशुप्रभम्।।
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्वलम्।
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये।।
इति तान्त्रिकमृत्युञ्जयः।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। हौं ॐ जूं सः।। इति वैदिकः।

हों ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकामित्यादि हों ॐ जुं सः इति द्वितीयः प्रत्येकेन बीजेन साधं प्रणवं संयोज्य चतुर्दश प्रणवात्मकं मृत्युञ्जयाख्यं महामन्त्रं दक्षिणात्या आमनन्ति, तद् यथा –

ॐ हों ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकमित्यादि ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हों ॐ। इति॥

# १९. सिद्धमन्त्रप्रयोगः किन्ति कार्यान्यक्रीली क्य

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि सुलभं क्रौञ्चभेदन। महोत्पाते, महाघोरे सङ्कटे वैरिसङ्कले।। केवलं मूलमन्त्रेण प्रयोगं च समाचरेत्। स्वगृहे शुभनक्षत्रे घटिकां संग्रहेच्छुचिः।। साध्यनामायुतं चैव षट्त्रिंशद्वर्णके मनुम्। पक्तित्रयं लिखेद् भित्तौ अर्कसंख्या पृथक् पृथक्।। तस्योपरि लिखेद् रेखा ऊर्ध्वाधः शूलसंयुताः। लिखित्वा साधकश्रेष्ठः प्राणान् संस्थाप्य यत्नतः।। पूजयेद् परया भक्त्या पीतद्रव्येण पुत्रक। सन्ध्याकाले वाऽर्धरात्रौ तत्र स्थित्वा जपेन्मनुम्।। स्तम्भयेत्सकलान् लोकान् कि पुनः क्षुद्रमानुषान्। अथान्यत्मम्प्रवक्ष्यामि मण्डूकाख्यं प्रयोगकम्।। यस्य श्रवणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्। भृगौ प्रभातसमये स्नात्वा सम्यग् विधानतः।। पीतद्रव्याणि संगृह्य नदीतीरे च साधकः। मण्डूकं च गृहीत्वा तु तत्रैव च प्रपूजयेत्।। तन्त्रोक्तविधिना बत्स पीतद्रव्येण भूजिके। षट्कोणं च लिखेत्स्पष्टं मध्ये साध्यं च योजयेत्।। कोणषट्के लिखेन्मन्त्रं षट्त्रिशदक्षरात्मकम्। तस्योपरि लिखेन्मन्त्रं गायत्रीं बगलाऽऽह्नयाम्।। ॐ बगलामुख्यै च विद्यहे स्तम्भिन्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्। शताक्षरमहामन्त्रं तस्योपरि च वेष्टयेत्।। वारणा । । । प्राचेद्र हे जिलाद्वप्रमार्थकात्रिके।।

एवं लिखितमन्त्रस्य गुटिका कारयेच्छुभाम्।
पीतसूत्रेण संवेष्ट्य मण्डूकस्यानने क्षिपेत्।।
पीतोपचारैः सम्पूज्य कलशे निःक्षिपेत्ततः।
आच्छाद्य पूर्णपात्रेण स्थापयेद्देवतालये।।
प्रत्यहं पूजयेत् मन्त्रं शतं वाथ सहस्रकम्।
जप्त्या मनोरथान् सर्वान् पूरयेद् बगलामुखी।।

क्षा इति सांख्यायने षट्त्रिंशः पटलः॥ किल्ला

पाण्डवी चेटिकाऽपि बगलावत्साध्यते, तदुक्तं मेरुतन्त्रेऽष्टादशे प्रकाशे – ॐ पाण्डवीबगले ततश्च बगलामुखि शत्रोः पदं स्तम्भय द्विः क्लीं ह्रीं भुवंचरे वदेत्। स्फ्रीं स्वाहेति त्रिंशाणीं मन्त्रः।

# े विकास स्थाप के कियानम् स्थाप्त होता होता है।

पीताम्बरां पीतवर्णा पीतगन्धानुलेपनाम्। प्रेतासनां पीतवर्णां विचित्रां पाण्डवीं भजे।।

अयुतित्रतयं जप्त्वा कुसुम्भकुसुमैर्हुनेत्।
एवं कृत्वा पुरश्चर्या पश्चात्साधनमाचरेत्।।
वत्सरादौ प्रतिपदि शुक्रवारे जपिन्निशि।
अयुतं, तद्दशांशेन कुसुम्भकुसुमैर्हुनेत्।।
प्रसन्ना जपतो देवीं वस्त्रमेकं ददाति च।
वैरिणोद्वेगतो बद्धं गतिस्तम्भः प्रजायते।। इति

# अथ वल्लीसिद्धिः

अथवा मुक्तकेशस्तु चितायां परमेश्वरि। बगलां पूजयेद् यत्नादुपचारैर्यथोचितैः।।

ां विकास विकास मन्त्रः भागाः विकास वितस विकास वि 'ॐ नमो बगले हीं स्वाहा।' अष्टोत्तरसहस्रं तु जपेदनन्यमानसः।। ततो देवि समानीय गोधिकां गृहसम्भवाम्। पूजयेत्तां प्रयत्नेन पुनर्जापं समाचरेत्।। ततः प्रभृति देवेशि वल्लिकाशब्दविद् भवेत्। अतीतानागतां वार्तां लीलया वक्ति सर्वदा।।

# अथ वश्यम् क्रिका

कृष्णवर्णीया वेश्याया आगारं प्रज्ज्वलितं दृष्ट्वा ततोऽग्निमानीय अर्धरात्रौ कज्जलं कुर्वित्रमं मन्त्रं पठेत् अष्टोत्तरशतं जपेत्। तेनोक्ते नयने दृष्ट्वा तत्कार्यसिद्धिद्धः - अन्तर्भावस्य विकास

"ॐ बगलामुखि सर्वस्त्रीहृदयं मम वश्यं कुरु ऐं हीं स्वाहा।।" अथ स्वप्नविद्या

शनौ भौमे वा पीताचारेण सौभाग्यार्चनं विधाय अष्टोत्तरशतं विद्याजपं कुर्यात् तेन शुभाऽशुभं रात्रौ वदित -

"35 हैं हुं वाग्वादिनि सत्यं सत्यं ब्रूहि वद वद बगलामुखि हैं हूं नमः स्वाहा।"

# बगलादीपदानविधिः

्राहीलर्न प्राणित मेरुतन्त्रे प्राप्ता निर्व प्राप्त अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बगलादीपमुत्तमम्। कृतेन येन विघ्नौधो विलयं याति मन्त्रिणः।। शुद्धानि खलु बीजानि पक्षर्तुमुद्गरेण वा। एकीकृत्य विधातव्यो दीपः सुस्निग्धशोभनः।।

षट्त्रिंशत्तन्तुभिः कार्या दृढा वर्तिः सुरिञ्जता।
गव्यमाज्यं च कौसुम्भं तैलं वा दीपकर्मणि।।
एतान्यानीय पूर्वं तु ततो दीपं प्रदापयेत्।
हरिद्रया रक्तवस्त्रं परिधाय शुचिः क्षमी।।
पीतासनोपविष्टश्च पीतमाल्यानुलेपनः।
उत्तराभिमुखो भूत्वा हरिद्रालिप्तभूतले।।
त्रिकोणं कारियत्वा तु दीपं संस्थाप्य यत्नतः।
धृतमापूर्य वर्ति च दीपं प्रज्ज्वालयेत्सुधीः।।
मूलमन्त्रं समुच्चार्य चेति दीपं ततो वदेत्।
संकल्पन्यासपूर्वं तु जपेदद्योत्तरं शतम्।।
एव रात्रोपकुर्वाणो मासेनैकेन साधकः।
असाध्यान् साधयेत् कामान् वशयेदात्मनो रिपून्।।
क्षोभयेत् स्तम्भयेच्चापि द्वेषयेत् प्रक्षिपेदिप।

### २०. यन्त्रसंस्कारविधिः क्षात्रीहरू हार

# यामी भीने वा पीताचारेण सीयाग्यानी विद्याय अहोता प्रतिस्था

# भैरव्युवाच क्रिक्टिक्टिक्ट कि की है

चक्रं चेदं महादेव त्वत्प्रसादान् मया श्रुतम्। इदानीं श्रोतुमिच्छामि प्रतिष्ठाकर्मनिर्णयम्।।

## ईश्वर उवाच

शृणु देवि महाभोगे जगत्कारिणि केलनि। तस्योद्यापनकर्मांङ्ग सर्वकर्मविनिर्णयम्।। स्नात्वा संकल्पयेत् मन्त्री गुरोर्वचनमाचरेत्। पञ्चगव्यं ततः कृत्वा शिवमन्त्रेण मन्त्रितम्।। (पंचाक्षरेण, हौं वा) तत्र चक्रं क्षिपेत् मन्त्री प्रणवेन समाकुलम्।
तदुद्धत्य ततश्चक्रं स्थापयेत् स्वर्णपात्रके।।
पञ्चामृतेन दुग्धेन शीतलेन जलेन वा।
चन्दनेन सुगन्धेन कस्तूरीकुङ्कमेन च।।
पयोदधिघृतक्षौद्रशर्कराद्यैरनुक्रमात्।
ततो धूपान्तरैः कुर्यात् पञ्चामृतविधि ततः।
हाटकैः कलशैर्देवीमधिभविरिपूरितैः।।
कषायजलसम्पत्रैः कारयेत् स्नानमुत्तमम्।
स्नानं समाप्य तां देवीं स्थापयेत् स्वर्णपात्रके।।
"यन्त्रराजाय विद्यहे महायन्त्राय धीमहि।
तत्रो यन्त्रं प्रचोदयात्।।"
स्पृष्ट्वा यन्त्रं कुशाग्रेण गायत्र्या चाभिमन्त्रितम्।
अष्टोत्तरशतं देवि देवताभावसिद्धये।।
आत्मशुद्धि ततः कृत्वा षडङ्गैर्देवतां यजेत्।
तत्रावाद्य महादेवीं जीवन्यासं च कारयेत्।।

# जीवन्यासमन्त्रः शारदायाम्

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य विधानमभिधीयते।
येन प्रजिपता मन्त्राः प्राणवन्तो भवन्ति ते।।
पाशाङ्कशयुता शक्तिर्वाणिबन्दुविभूषिता।
याद्याः सप्त सकारान्ताः व्योमसद्येन्दुसंयुतम्।।
तदन्ते हंसमन्त्रः स्यात् ततोऽमुष्याः पदं वदेत्।
'प्राणा इह' वदेत् पश्चात् 'इह प्राणास्ततः' परम्।।
'अमुष्या जीव इह' स्थितिस्ततोऽमुष्याः पदं वदेत्।
सर्वेन्द्रियाणि अमुष्या वाङ मनश्चक्षुरन्ततः।।

श्रोत्रघ्राणपदे प्राणा इहाऽऽगत्य सुखं चिरम्। तिष्ठन्त्वग्निवधूरन्ते प्राणमन्त्रोऽयमीरितः।।

(अमुष्याः स्थाने मन्त्रदेवतानाम् लिखेत्।) ततः प्राणशक्तिध्यात्वा उपचारैः षोडशभिः महामुद्राभिः सदाफलताम्बूलैः नैवद्यनिकरैः दैवीं तत्र समर्चयेत्।

पट्टसूत्रादिकं दद्यात् वस्त्राऽलङ्कारमेव च।
मुकुटं चामरं घण्टां यथायोग्यं महेश्वरि।।
सर्वमेतत् प्रयत्नेन दद्यादात्महिते रतः।
ततो जपेत् सहस्रं च सकलेप्सितसिद्धये।।
बिलदानं ततः कुर्यात् प्रणमेच्चक्रराजकम्।

# बलिदानक्रमः समयाचारतन्त्रे

सर्वासां देवतानां च बिलदानं शृणुष्य मे।
येन कृत्वाऽऽशु लभते यथोक्तं फलमुत्तमम्।।
नित्यं तु भोजने काले मूलमन्त्रेण साधकः।
कारयेद् बिलदानं च भोजनात् प्रथमं प्रिये।।
ततश्चानन्तरं कुर्याद् भोजनं स्थिरमानसः।
बिलं समुद्धरेद् यत्नादेकान्ते स्थापयेत्तदा।।
स्थापयित्वा बिलं तत्र विहरेच्च यथासुखम्।

(इति नित्यवलिः, एवमेव रात्रौ कार्यम् तदनन्तरं किंचिज्-जपादिकमनुष्ठेयम्।)

बिलश्च द्विविधो ज्ञेयः सात्विको राजस्तथा। सात्विको बिलराख्यातो मांसरक्तविवर्जितः।। राजसो मांसरक्तादियुक्तः कार्यो विधानतः। साधकास्त्रिविधाः प्रोक्ताः सात्त्विका राजसास्तथा।।

तामसाश्च तथा देवि, तेषां वक्ष्यामि लक्षणम्। सात्त्विक: सात्त्विको युक्तो लक्षणैश्चैव सुन्दरि।। सात्त्विकं बलिदानादि नित्यं कुर्यात् प्रयत्नतः। राजसो राजसगुणैर्युक्तः सत्यं वरानने।। बिलदानं राजसं तेषां तामसानां तु न किंचन।

श्रद्धादिविरहितं नाममात्रमेव भवति। पशुबलिदानं यथाधिकारं कार्यम्। क्वचिद् ब्राह्मणानां पशुबलिदानं, क्वचिच्च निषेध:।

''क्षौद्रं वृषलजातीनां सर्वेषां पशवो यथा''

वैकल्पिकत्वाद् ब्राह्मणवर्जमेवाऽवगन्तव्यम्। एतद्विशेषविवरणं ताराकर्पूरप्रकाशिकायाम्। विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य श्रीबगलामुख्या बलिमन्त्र –

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हूं ह्रीं बगलामुखि सर्वशत्रुस्तिम्भिनि सर्वराजवशङ्करि एष ते बलि:, गृह्ण गृह्ण ममाभीष्टं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।"

पुनश्च वटुकयोगिनीक्षेत्रपालगणेशानां च बलि समर्पयेत्, शक्तश्चेद् दिग्पालबलि च कुर्यात् तत्तन्मन्त्रैरिति संक्षेप:। तदनन्तरमष्टोत्तरशतं हुत्वा सम्पाताज्यं विनिःक्षिपेत्।

होमकर्मण्यशक्तश्चेद् द्विगुणं जपमाचरेत्। धेनुमेकां समानीय स्वर्णशृङ्गाद्यलङ्कृताम्। गुरवे दक्षिणां दद्यात् ततो देव्या विसर्जनम्।

अथ प्रयोगः - कृतनित्यक्रियः स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं कुर्यात्। 🕉 अद्येत्यादि अमुकेत्यादि अमुकदेव्याः पूजनार्थम् अमुकमन्त्रसंस्कारमहं करिष्ये इति संकल्प्य पंचगव्यमानीय ''हौं'' मन्त्रेणाऽष्टोत्तरशतमभिमन्त्रयेत्। पूर्ववत् शोधन्ं कृत्वा स्नापयेत्। तत्र क्रमः प्रथमं क्षीरेण ततो जलेन स्नापियत्वा धूपं दद्यात्, एवं दध्ना घृतेन मधुना शर्करया च। ततोऽष्टभिः कलशैः कुङकुमरोचनामितैस्तोयैः स्नापयेत्, सर्वत्र स्नानं मूलमन्त्रेण। ततो यन्त्रमुत्तोल्य कुशाग्रेण यन्त्रं स्पृष्ट्वा 'यन्त्रराजायेति' गायत्र्या अष्टोत्तरशतमिमन्त्र्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि चैतन्यं देवता प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः। प्राणशक्तिं ध्यायेत्।

### अक्ष्मी प्रस्तिक के **ध्यानम्** अन्तिकाता के लिखा । प्राप्तिक

## रक्ताब्धिपीतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कशाविक्षुधनुश्च बाणान्। शूलं कृपाणं दधतीं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।।

इति ध्यात्वा – आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं हंस:, अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः – एवं आमित्यादि पूर्वोक्तत्रयोदशवर्णान् पिठत्वा अमुकदेवताया जीव इह स्थितः, पुनरिप आमित्यादि पूर्वोक्तत्रयोदश वर्णान् पिठत्वा अमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहेति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य प्रकृतदेवतामावाह्य षोडशोपचारादिना सम्पूज्य षडङ्गेन सम्पूजयेत्। ततः पट्टसूत्रादिकं दत्त्वा अष्टोत्तरसहस्रं जपेत्। शक्तश्चेद् बिलं दद्यात्। ततोऽष्टोत्तरशतं होमं कृत्वा प्रत्याहुतिसम्पातं दद्यात्। होमार्थेऽसमर्थो द्विगुणं जपं कुर्यात्। इति यन्त्रसंस्कारिविधः।

### मानस्य उक्तं सांख्यायने

पूजायन्त्रक्रमश्चैव एवमेव कुमारक। शालग्रामशिलायां च वहिमण्डलमध्यगे।। कन्यायां वाऽथवा पुत्र पूजयेद् वगलामुखीम्। उत्तमा युवतीपूजा मध्यमा वहिमण्डले।। अधमा च शिलापूजा क्रम एवं कुमारक।

# पीठस्थापने विशेषः – रुद्रयामले

पीठस्य स्थापने देवि यतीनामधिकारिता। सर्वज्ञोऽपि गृही देवि नाचरेत् पीठस्थापनम्।। कार्याम् निव्य विकास पुरश्चर्याणीवे निवास विकास

दक्षसंस्थापितं यन्त्रं तथा पुण्यात्मनां मतम्। सान्निध्यं सर्वदेवानामवश्यं मन्त्रतो भवेत्।। दक्षो यतिः शुचिर्दक्ष इति प्रमाणात्। (इति)

# २१. षोडशोपचारमन्त्राः

प्रसीद जगता मातः संसाराऽर्णवतारिणि। मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु।।१।।

आसनपरिमाणम् चतुरङ्गुलविस्तारं रौप्यनिर्माणपीठकम्। अलङ्कार यथायोग्यं पुरुषस्तु निवेदयेत्।।२।।
मूलप्रकृतिरूपेण सूयते सचराचरम्।
पूजामहं विधास्यामि स्वागतं ते महेश्वरि।।३।।
सुगन्धि परमामोदं परं वागीश्वरेश्वरि।
पाद्यमेतन् मया दत्तं प्रसीद भुवनेश्वरि।।४।।
दुर्वातण्डुलमिश्रं च कर्पूराऽगुरुपूरितम्।
अर्ध्यं दत्तमिदं गृष्टण मत्तस्त्रिभुवनाऽर्चिते।।४।। आपो नारायणः साक्षात् अप्सु सर्वं चराचरम्। निवेदयामि ते देवि अद्भिराचमनीयकम्।।६।। वाजिमेधफलाऽवाप्त्यै मया दत्तं वरानने। मधुपर्कं प्रतीच्छस्व मातर्मे भुवनेश्वरि।।७।। (पुनराचमनीयकमाचमनमन्त्रेण दद्यात्।) शंखस्थमुदकं पुण्यं सुगन्धि सुमनोहरम्। निवेदितं महादेवि स्नानीयं प्रतिगृह्यताम्।।८।। त्वं देवि परमेशानि परब्रह्मस्वरूपिणि। गृहण वस्त्रमिदं देवि यज्ञसूत्रमिदं शुभे।।९।। ज्योतिषां ज्योतिरेका त्वम् अनादिनिधनेऽनधे। मया दत्तमलङ्कारमलङ्करु नमोऽस्तु ते।।१०।। सुगन्धि दुर्गमं नान्यं कुमुदोत्पलमालिनम्। सितपीताऽरुणादानं गृहण पुष्पं वरानने।।११।। धूपं गुग्गुलसंयुक्तं चन्दनाऽगुरुचर्चितम्। दशाष्टाङ्गसमुद्भृतं गृहाण परमेश्वरि।।१२।। परं ज्योतिः परं ब्रह्म जगदेकं सनातिन। भूतये मम देवेशि दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।१३।। यद् दत्तं परया भक्त्या फलमूलादिकं मया। गृहाण परमेशानि नैवेद्यं सुमनोहरम्।।१४।। नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाफलसमन्वितम्। शर्करासंयुतं कृत्वा पायसं च निवेदयेत्।।१५।। अशेषजगदाधारभूते त्रैलोक्यवन्दिते। प्रदक्षिणमहं वन्दे विद्वत्सु पादपङ्कजम्।।१६।। धान्यं मुद्गकलायं च रजोवस्य तिलस्य च। प्रकटाऽनेकफलयुक् रचनां विनिवेदयेत्।।१७।। ।। अ।। विक्री हाम प्रार्थनात प्रार्थनात क्षीतर कर्मक

प्राणान् रक्ष यशो रक्ष पुत्रदाराधनानि च। सर्वरक्षाकरी यस्मात् त्वं देवि भुवनेश्वरि।।१८।।

इति मन्त्रैः श्रीसूक्तैर्वा यन्त्रं सम्पूजयेत्। ततः पश्चाद् दक्षिणां दद्यात्। इति यन्त्रसंस्कारविधिः।

यन्त्रसंस्कारसामग्री - (१) यन्त्रम् (२) पञ्चगव्यम् (३) पात्रम् (४) शीतलजलम् (५) कुङकुमकस्तूरी (६) पञ्चाऽमृतम् (७) दुग्धम् (८) जलम् (९) धूपम् (१०) दिध (११) घृतम् (१२) मधु (१३) शर्करा (१४) कलशम् (१५) रोचना (१६) कुशाः (१७) षोडशोपचाराणि (१८) पट्टसूत्राणि (वस्नम्) (१९) अष्टोत्तर-

शताहुतिदानम् (२०) दक्षिणा। इति यन्त्रसंस्कारसामग्री।

# २२. बटुकादिबलिदानविधि

श्रीभगवत्याः पूजन्सय साङ्गतायै गणपत्यादिदेवताभ्यो माषदिधभक्तद्रव्यै: पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये, इति संकल्प्य भूमौ सिन्दूरेण बिन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यन्त्रं विलिख्य बलिपात्रा-धारमण्डलाय नमः इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य अन्नव्यञ्जनयुतमाधारं बलि च निधाय 'ॐ बलिद्रव्याय नमः' इत्यनेन गन्धपुष्यैः सम्पूज्य पूर्वे 'गं गणपतये नमः' इति सम्पूज्य बलिमुपनीय गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलि गुह्ण गह्ण स्वाहा इति वामाङगुष्ठमध्यमाभ्यां बलिमुत्सृजेत्।

### प्रार्थना

सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयेन्मम। शान्ति करोतु सततं विघ्नराजः स्वशक्तिततः।।

दक्षिणे पूर्वरीत्या यन्त्रं विलिख्य सम्पूज्य च क्षं क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य 'क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षों क्षः क्षेत्रपालाय नमः' बलिमुपनीय 'भो क्षेत्रपाल इमं बलि गृह्ण गृह्ण सर्वकामान् पूरय पूरय स्वाहा', वामाङगुष्ठतर्जनीभ्यां बलिमुपनीय उत्सृजेत्, दक्षहस्तेन जलं त्यजेत्। गर्म करें कि कि कि कि प्रार्थना के स्व कार कर कि कि

योऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सिकङ्करः। प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे।।

पश्चिमे पूर्वविधिना यन्त्रं विलिख्य बटुकबिलपात्राऽऽधारमण्डलाय नमः इति सम्पूज्य 'बं बटुकाय नमः' इति सम्पूज्य बिलमुपनीय बल्यत्रं च तत्र निधाय 'ॐ एहि एहि देवीपुत्र, बटुकनाथ, किपलजटाभारभास्वर, त्रिनेत्र, ज्वालामुख, सर्वविध्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बिल गृह्ण गृह्ण स्वाहा'। उत्सर्जनं जलदानं च पूर्ववत्।

# मया । विस्तित महर्गाम प्रार्थना । विस्तित (०५) वर्गामानाह

करकितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः। तरुणितिमिरनील – व्यालयज्ञोपवीती।। क्रतुसमयसपर्यां – विघ्नविच्छेदहेतुः। जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

उत्तरे पूर्ववद् यन्त्रं विलिख्य 'योगिनीबिलपात्राधारमण्डलाय नमः' इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य तदुपिर अन्नव्यञ्जनयुतमाधारं बिलं च निधाय 'ॐ बिलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य उत्तरे 'यां योगिनीभ्यो नमः' इति सम्पूज्य बिलमुपनीय 'यां सर्ववर्णयोगिनीभ्य इमं बिलं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा' वामाङ्ग्छाऽनामिकाभ्यां बिलमुत्सृजेत् दक्षहस्तेन जलमुत्सृजेत्।

### प्रार्थना

द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाऽऽभरणभूषिताः। योगिन्यः सर्वदा पान्तु गृहेऽरण्ये सदा मम।। ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा। पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।। क्षेत्रे पीठोपपीठे दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः। प्रीता देव्यः सदा नः शुभविधिबलिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः।।

स्ववामे चतुष्कोणं यन्त्रं विलिख्य 'हीं सर्वभूतेभ्यो नमः' इति पूर्ववत् सम्पूज्य बलिमुपनीय 'ॐ हीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्य इमं बलि गृह्ण गृह्ण हुं फट स्वाहा।' उत्सर्जनं जलदानं च पुर्ववत्।

# इए कि किएके मार्थन कालाक किएक मार्थक मार्थक विद्या पड

भूता ये विघ्नकर्तारो दिवि भूम्यन्तरिक्षगाः। पातालतलसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः।। क्रूराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः। ध्रुवाद्याः शतसंख्याकाः इन्द्राद्याशाव्यवस्थिताः।। वृष्यन्तु प्रीतमनसो भूता गृहणन्त्यमं बलिम्। नगरे वाऽथ संग्रामे, अटब्यां वा सरित्तटे। वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे।। नानारूपधरा ये च बहुरूपधराश्च ये। ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृहणन्तु मे सदा।।

इति पञ्च बलिदानं कृत्वा दिग्पालबलिमपि कुर्यात्। बृहत् पद्धतौ - मन्त्रानुसन्धानं कर्तव्य दिग्पालानाम्। प्रधानबलिः बिन्दुं त्रिकोणं च निर्माय गन्धादिभिः सम्पूज्य बलिमुपनीय तं च सम्पूज्य श्रीबगलामन्त्रेण (मन्त्रो यन्त्रसंस्कारप्रकरणे कथित:) 'भो बगलामुखि, सर्वेश्वरि, इमं बलि गृहीत्वा मामनुगृहाण' इति सम्प्रार्थ्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य स्तोत्रं पठेत्।

। इति बलिदानविधि:। अनुष्ठानं पुरश्चरणं वा कर्तव्यं भवेत् तदा औदुम्बरप्लक्षादि-काष्ठनिर्मितान् दशाङ्गुलपरिमितान् कीलान् दश दिक्षु बलिदानात् पूर्वं 'ॐ नमः सुदर्शनायाऽस्त्राय हुं फट्' इत्यनेन अष्टोत्तरशतमभिमन्त्रितं निखनेत्। सामार्यो कर्म हर्निहरू क्या कि विस्

ॐ ये चाऽत्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चाऽन्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।। मयैतत् कीलितं क्षेत्रं परित्यज्याऽविदूरतः। अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे।। इति मन्त्रद्वयेन कीलारोपणं कार्यम्। सर्वेभ्यो बलि दत्त्वा पञ्च महाभूतबलि दद्यात् – इति।

# २३. यन्त्रतर्पणप्रयोगः विकास विकास विकास विकास

### क्षायाः शतरांच्याकाः पाखण्डाया ज्ययांच्यताः । इश्वर उवाच धुवादाः शतसंख्याकाः इत्याधावाव्यवास्थताः ।

पूजयेद् यन्त्रराजं च षोडशाद्यपचारकैः। तद्यन्त्रोपरि सन्तर्प्य तत्तर्पणविधि शृणु।। गुडोदकैस्तर्पणेन प्रकुर्यात् तर्पणाविधिम्। कृत्याशान्तिभवित् तस्य पञ्चाऽयुतेन सर्वशः।। हेतुना तर्पणं कुर्यात् पूर्वसंख्य सुबुद्धिमान्। वश्यं संमोहनं चैव भवेत् तर्पणम्मादरात। मोहिनीद्रव्यसम्मिश्रजलेनैव तु तर्पणम्। नेत्राऽयुते कृते सम्यग् जिह्वास्तम्भनकृद् भवेत्।। गतेर्भङ्ग च वाङ्ग मौनं गात्रश्रोत्रे तथाक्षिकम्। क्षुधा तृष्णा च निद्रा च स्तम्भनं भवति ध्रुवम्।। कूपवारिणा। निम्बार्कपत्रजद्रावैमिश्रितं पञ्चाऽयुतं तर्पणेन सद्यो विद्वेषणं भवेत्।। वज्रार्कक्षीरमिश्रं च करकाम्भस्तर्पणेन च। उच्चाटनं भवेच्छीघ्रमयुतत्रयमादरात्।। प्रेताञ्चं प्रेतभूमिं च प्रेताङ्गारं च पुत्रक। समं समं रवौ ग्राह्मं जलेनैव तु मिश्रणम्।। निशायुतं तर्पणेन पक्षाद् रिपुविनाशनम्। ह्यारिपत्रजद्रावैर्मिश्रितं मारणं भवेत्।। कस्तूरीमिश्रितं तोयं राज्यलाभाय वै ध्रुवम्। चन्दनाम्भस्तर्पणेन तापं कृत्रिमजं हरेत्।।

कर्पूरमिश्रितं तोयं पञ्चाशत् शतमादरात। नित्यं च तर्पयेद् धीमान् मासमेकमतन्द्रितः।। पुराणज्वरमत्युग्रं पित्तरोगं विनश्यति। पैष्ट्या तर्पणमात्रेण अयुतं मुनिसंख्यया।। कुबेरसदृशः श्रीमान् जायते नात्र संशयः। माध्वीद्रव्येण संमिश्रं पूजितं शुद्धवारिणा।। तत्राऽयुतं तर्पणेन लक्ष्मीवान् जायते ध्रुवम्। गोक्षीरतर्पणेनैव ईप्सितां निधिमाप्नुयात्।। तक्रेण तर्पणेनैव पित्तरोगविनाशनम्। हरिद्राम्भरतर्पणेन स्त्रीणामाकर्षणं भवेत्।। आरनालेन संतर्प्य जलदोषः प्रशाम्यति। स्यमन्तकुसुमेनैव वासितं जलतर्पणम्।। पुत्रवान् जायते मर्त्योऽयुतं चात्र न संशयः। कदलीफलगोक्षीरं शर्करा च समं समम्।। पलाष्टकं च प्रत्येकं मिश्रितं जलतर्पणम्। मूकत्वं कुरुते वक्तृन् रिपून् सर्वाननेकशः।। जलेन मिश्रितं पुत्र शोणितं खरवाजिनाम्। वेदाऽयुतं तर्पणेन उन्मादी जायते नरः।। काकरक्तेन संमिश्रं वारिणा तर्पणेन च। श्वानवच्च वदेच्छत्रुर्म्रियते नाऽत्र संशयः।। मार्जाररक्तमिश्रेण वारिणा तर्पणं चरेत्। क्षयरोगी भवेच्छत्रुर्मियते मासषट्कके।। उरगशोणितेनैव मिश्रितं तर्पयेज्जलम्। निशासहस्रमानेन शीघ्रं रिपुविनाशनम्। जपसंख्या यत्र नोक्ता भवेत् पञ्चाऽयुतं सुत। दिनसंख्या यत्र नोक्ता पक्षमेकं न संशयः।।

### मार्जनम् -

मार्जयामीति पदमन्ते प्रयोज्यम् जलेन दुग्धेन वाऽन्यस्य कस्यचिद् द्रव्यस्य भवति। विधानानुसारं ज्ञातव्यम्।

॥ इति सांख्यायने एकादशः पटलः॥

# यन्त्रराजोब्हारः

# क्रींचभेदन उवाच कि हाउसक

नीलकण्ठाय नित्याय निराभास्याय शाश्वते। निर्विकल्पाय देवाय पशूनां पतये नमः।। सर्वाऽऽश्चर्यकरं यन्त्रं बगलाया वद प्रभो।। ईश्वर उवाच

शृणु स्कन्द महाबुद्धे जगतां हितकारक। अधुना कथयिष्यामि यन्त्रराजस्य विस्तरम्।। यस्य स्मरणमात्रेण सर्वाघौघविनाशनम्। यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि लयाङ्गसहितं तव।। शून्यं त्रिकोणवलयं रसकोणसमन्वितम्। वलयं वसुपत्रं च वलयं द्वादशारकम्।। षोडशारं च वृत्तं च द्वात्रिंशद्दलपङ्कजम्। तस्योपरि लिखेत् पुत्र वृत्तत्रयसुशोभितम्।। चतुर्द्वारसमायुक्तं भूगृहत्रयशोभितम्। धारणाऽऽख्यामिदं यन्त्रं देवानामपि दुर्लभम्।। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं धारणात् सुखकारकम्। लयाङ्ग तस्य यन्त्रस्य विस्तराद् विच्न साम्प्रतम्।। इन्द्रादिलोकपालांश्च दिशि कोणे प्रपूजयेत्। आयुधानि च तत्रैव वामावर्तेन पूजयेत्।।

गणेशं पूर्वदिग्भागे क्षेत्रपालं च दक्षिणे। पश्चिमे बटुकं चैव उत्तरे योगिनीं तथा।। नैऋत्यवरुणयोर्मध्ये पूजयेद् ब्रह्मभारतीम्। ईशाने पूर्वदिग्मध्ये पूजयेद् अनन्तकं ततः।। वृत्तत्रये स्तब्धमायाम् अन्तराले च वाग्भवम्। द्वात्रिंशत्पत्रके वत्स पूजयेद्दलदेवताम्।। विश्वा च मोहिनी विद्या विरागा रागिणी तथा। विद्यावती वेगवती वामती वरवर्णिनी।। विशिष्टा विमला विद्या विश्वेशी विश्वरक्षिणी। विमला विजया वाणी वाग्देवी वसुरूपिणी।। विश्वम्भरप्रिया विद्या वरदाऽऽद्या वशंकरी। विश्वाधारा विश्वकर्त्री विरूपाक्षा महोदरी।। वासुकी वागुरा वामा वरेण्या वाक्प्रदायिनी। वज्रहस्ता विशालाक्षी पूजयेद् अन्तपत्रके।। गन्धपुष्पाक्षतैः सम्यग् अन्तराले च मन्मथम्। पूजयेद् भक्तियोगेन सर्वकामार्थसिद्धये।। षोडशारे यजेद् वत्स राज्ञी रामा मनोरमा। रक्ता च रागिणी रम्या रिजता रिजनी रमा।। रेवती रुक्मिणी रक्ता रक्ताक्षी रणमर्दिनी। रम्भा रौद्री रतिश्चैव पूजयेत् स्वरपत्रके।। शक्ति तस्याऽन्तराले तु गन्धपुष्पादिनाऽर्चयेद्। द्वादशारे यजेत् पुत्र कालीं तारां सुकोमलाम्।। छित्रशीर्षां शिवां शान्तां धूमां त्रिपुरसुन्दरीम्। भैरवीं भवहन्त्रीं च मङ्गलां मधुमालिनीम्।। वाग्भवं चैव वाराहमन्तरालेषु पूजयेत्। तस्योपरि यजेद् वत्स ब्राह्मादि मातृकाऽष्टकम्।। लज्जावीजान्तराले हि पूजयेच्य यथाविधि। षडङ्गं पूजयेत् पुत्र द्वादशारेषु बुद्धिमान्।। षट्कोणस्याऽन्तरालेषु अस्त्रमन्त्रं प्रपूजयेत्। त्रिकोणे पूजयेत् पुत्र रति वाणीं रमां तथा।। तस्यान्तराले भुवनां दुर्गां त्रिपुरसुन्दरीम्। बिन्दौ यजेत् स्तम्भिनीं हि मूलमन्त्रेण साधकः।। पीतद्रव्यैलिखेद् यन्त्रं भूर्जत्वचि सुबुद्धिमान्। भृगुवारे चाऽर्धरात्रौ सौभाग्यार्चनपूर्वकम्।। पीतोपचारैः सम्पूज्य पीतद्रव्येण होमयेत्। तर्पणं मार्जनं कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः।। सुवासिनीं कुमारीं च तोषयित्वा विधानतः। एवं यः कुरुते मन्त्री यन्त्रपूजनमुत्तमम्।। स्वदेहरक्षणार्थं तत् स्वर्णस्थं धारयेद् बुधः। मूर्ध्नि कण्ठे बाहुदेशे धारयेत् साधकोत्तमः।। ब्रह्मास्त्रं यन्त्रराजं च धृत्वा च विचरेद् भुवि। तस्य दर्शनमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्।। खलाः पापरताः क्रूरा दृष्ट्वा साधकमुत्तमम्। दूरादेव पलायन्ते भयविह्नलचेतसः।। वादिनां चैव राज्ञां च अमात्यांश्चैव सेवकान्। चमूनां चाश्वपादानां सभाविद्याविवादिनाम्।। स्तम्भयेत् सकलान् लोकान् किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि।

॥ इति सांख्यायने षट्त्रिंशत्पटलः॥

भिवादित नेवाहित हम्मा महार विकास विकास

। नर्गान्यक्तिका जिल्लाक स्वतंत्रक विविधन

इदं यन्त्रमुत्तराम्नायकं साधकैलिख्यते, अस्मिन् यन्त्रे सर्वाः स्वरव्यञ्जनशक्तयः पूज्यन्ते, कालीतारादिमहाविद्याश्च बगलाविद्याया अङ्गत्वेन पूज्यन्ते। केचित् सर्वाम्नायेषु बगलाया अङ्गत्वमेव नाङ्गीकुर्वन्ति, परं तेषां भ्रान्तिमेवेदं साधयति।

॥ इति श्रीबगलारहस्ये मन्त्रयन्त्रविधानात्मकः॥

। प्रथम: परिच्छेद:।

नाम अवस्य भावतं क्रांग्रहास्त्राम् । स्वतं वार्

। मध्येक विविद्यास्य सामान्यास्य व्यवस्थाना

I THE RE IN THE PRESENT PRESENT OF THE PARTY OF THE PARTY

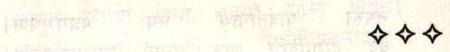
।। वहीं की कि जिल्हा की जो कि जिल्हा कि विकास

। अधिकारिक होती अधिकारमहीती जारे कर वी महे।

DESCRIPTION OF THE PROPERTY.

HERMODERAND STATES TO CHARLE TO CHARLE THE

Hemphelenge same disposition



# अथ द्वितीयः परिच्छेदः

# १. दीक्षाविधिः

उक्तं सांख्यायने

# क्रौञ्चभेदन उवाच

नमस्ते पार्वतीनाथ नमः पन्नगभूषण। वद दीक्षाविधिं तात तत्सर्वं स्तम्भनास्त्रकम्।। ईश्वर उवाच

पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् अवलोक्य जपित यः।

स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चैव जायते।।

दीक्षामार्ग बिना मन्त्रं यो जपेत् स नराधमः।

दीक्षाविधि बिना पुत्र शैवं शाक्तं च वैष्णवम्।।

यो जपेत् तं दहत्याशु देवता च जुगुप्सित।

दीक्षाविधि बिना मन्त्रं यो जपेत् कोटिकोटिशः।।

न स सिद्धिमवाप्नोति सिन्धुसैकतवर्षवत्।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन दीक्षां कुलगुरोर्मुखात्।।

उपदेशक्रमेणैव मन्त्रग्रहणमादरात्।

वेदवेदाङ्गपारीणं वेदान्तार्थविशारदम्।।

वैदिकाऽऽचारसंयुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः।

गर्भकौलाऽऽगमासक्तं नानाकौलपरायणम्।।

अष्टपाशविनिर्मुक्तं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः। पुरश्चरणकृत् मन्त्री मन्त्राऽऽगमविशारदम्।। उद्धर्तुं चैव संहर्तुं समर्थं सत्यवादिनम्। प्रधानज्ञं पराऽज्ञानहारिणं नीतिकोविदम्।। श्री विद्यामन्त्रयन्त्रज्ञं कुर्याद् गुरुमतन्द्रितः। चक्रपूजासमायुक्तं व्यासपूजाविशारदम्।। गुरुं यत्नात् प्रकुर्वीत सततं सिद्धिवाञ्ख्या। गुरोः शुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।। अथवा विद्यया विद्या चतुर्थो नास्ति कश्चन। शुश्रुषया गुरुं सम्यक् तोषयेच्छिष्यमन्यहम्।। प्रसन्नचेतसा दत्तं मन्त्रमुत्तममर्भक। स्वल्पं वा बहुलं वाऽथ शिष्यद्रव्यं गुरुः स्वयम्।। गृहीत्वा मन्त्रमादत्ते विक्रीतं तदुदाहृतम्। राजसं चैव तद् विद्याद् रोगदं भुवि पुत्रक।। विद्याप्रतिनिधिं विद्यां यद् दत्तं तामसं समृतम्। मोक्षार्थी च गुरुं यत्नाच्छुश्रूषणेन तोषयेत्।। शुश्रुषणेन यल्लब्धं तद् विद्या सर्वसिद्धिदम्। न देया विद्यया विद्या वित्तकांक्षी तथैव च।। सच्छिष्याय प्रदातव्या धनदेहाद्यवश्चिते। दुरालस्यसमायुक्तं दुर्गुणेन समन्वितम्।। सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाऽभिमानिनम्। अष्टपाशसमायुक्तं भ्रष्टाऽऽचार समन्वितम्।। सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाऽभिमानिनम्। कामुकं काञ्चनासक्तं करुणालेशवर्जितम्।। सर्वदा वर्जयेच्छिष्यं गुरुसेवाऽभिमानिनम्। निर्मत्सरं निरालम्बं नीतिशास्त्रविशारदम्।।

नित्याऽनित्यविवेकं च शिष्यत्वेनैव कल्पयेत्। शुद्धभक्तिसमायुक्तं धनदेहाद्यवञ्चकम्।। अष्टपाशविनिर्मुक्तं शिष्यत्वेनैव कल्पयेत्। गुरुशिष्यौ उभौ मोहादपरीक्ष्य परस्परम्। उपदेशं ददन् गृहणन् प्राप्नुयातां पिशाचताम्। इति

आणवी दीक्षा तु दशविधा, तद् यथा आणवी बहुधा दीक्षा नादेयी शाम्भवी पुनः। एकधैव तु विद्वद्भिः पठ्यते शास्त्रकोविदैः।।

# । इडिन्मका जीवान राघवभट्ट का अधिकार समाध

"आणवी बहुधेत्युक्ता तद्भेदमधुनोच्यते। स्मार्ती च मानसी, हौत्री, चाक्षुषी, स्पार्शिकी तथा।। वाचिकी, मन्त्रिकी, यौगी, शास्त्री, चेदभिषेचिका।

# (१) स्मार्ती है है है

विदेशस्थं गुरुं स्मृत्वा शिष्यं पापत्रयं क्रमात्। विश्लेष्य लयभागाऽङ्गविधानेन परे शिवे।। सम्यग् योजनरूपैर्या स्मार्ती दीक्षेति कथ्यते।

# (२) मानसी

स्वसन्निधौ समासीनमालोक्य मनसा शुचिः। मलत्रयादुपायैर्या, विज्ञेया सा तु मानसी।।

## (३) योगी अस्माननाम्बर्ध

योगोक्तक्रमतो योगी शिष्यदेहं प्रविश्य तु।
गृहीत्वा तस्य चात्मानं स्वदेहयोजनात्मिका।।
योगदीक्षेति सा प्रोक्ता मलत्रयविनाशिनी।

(४) चाक्षुषी शिवोऽहमिति निश्चित्य वीक्षणं करुणाऽर्द्रया। दृशा, सा चाक्षुषी दीक्षा सर्वपापप्रणाशिनी।। (५) स्पार्शिकी

स्वयं परिशवो भूत्वा निःसन्दिग्धमना गुरुः। शिवहस्तेन शिष्यस्य स्वमन्त्रं मूर्ध्नि संस्पृशेत्।। स्पर्शदीक्षेति सा प्रोक्ता शिवाऽभिव्यक्तिकारिणी।

# शिवहस्तलक्षणम्-यथा सोमशम्भौ

गन्धैर्मण्डलकं स्वीयैर्विदध्याद् दक्षिणे करे। विधिना त्वर्चयेद् देवमित्थं स्याच्छिवहस्तकम्।।

(स्वीयैर्गन्धै: स्वस्वगन्धाष्टकैरित्यर्थ:।)

# क्षिप्र (६) वाचिकी

गुरुवक्त्रं निजवक्त्रं विभाव्य गुरुमादरात्। गुरुवक्त्रप्रयोगेण दिव्यमन्त्रादिकं शिशोः।। मन्त्रन्यासादिभिः सार्धं दद्यात् सेयं च वाचिकी।

## (७) मान्त्री

दीपवातो यथा मन्त्रन्यासे संयुक्तविग्रहः। स्वयं मन्त्रतनुर्भूत्वा संक्रमं मन्त्रमादरात्।। दद्यात् शिष्याय, सा दीक्षा मान्त्री मलविघातिनी।

## (८) हौत्री

कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि निःक्षिप्याऽग्नि विधानतः। लयभागक्रमेणैव प्रत्यध्वानं यथाक्रमम्।। मन्त्रवर्णकला तत्र पदं विष्टपमेव च। संशोध्य होमरूपैर्या हौत्री दीक्षा समीरिता।।

# (१) शास्त्री

योग्यशिष्याय भक्ताय शुश्रूषाऽर्घापराय च। सार्ध शास्त्रपदा द्रव्या, शास्त्री दीक्षेति सोच्यते।।

### (१०) अभिषेचिका

शिवं च शिवपत्नीं च कुम्भे सम्पूज्य सादरम्। शिवकुम्भाऽभिषेकात्मा दीक्षा स्यादभिषेचिका।।

### २. वर्णमयी दीक्षा-शारदायाम् -

अथ वर्णमयीं दीक्षां वक्ष्ये चाऽऽगमचोदिताम्। पुं प्रकृत्यात्मना वर्णाः शरीरमपि तादृशम्।। यतस्तस्मात्तनौ न्यस्येत् वर्णान् शिष्यस्य देशिकः। तत्तत्थानयुतान् वर्णान् प्रतिलोमेन संहरेत्।। आज्ञया देवताभावाद् द्विविधा देशिकोत्तमः। तदा विनीय ततोयं शिष्यो दिव्यतनुभवित्।। परमात्मनि संयोज्य तच्चैतन्यं गुरुत्तमः। तस्मादुत्पादितान् वर्णान् न्यस्येच्छिष्यतनौ पुनः।। सृष्टिक्रमेण विधिवच्चैतन्यं च नियोजयेत्। जायते देवताभावः पराऽऽनन्दमयः शिशोः।। एषा वर्णमयी दीक्षा प्रोक्ता ज्ञानप्रदायिनी।

### । इति वर्णमयी दीक्षा ।

कलामयी वेधमयी च दीक्षा तन्त्रे विस्तरेणोपदिष्टा अनुपयुक्तत्वादत्र नोल्लिख्यते। मूलसूत्रम् - दीक्षास्तिस्रः शाक्ती, शाम्भवी, मान्त्री च। तत्र

शाक्ती शक्तिप्रवेशनात्, शाम्भवी, चरणप्रवेशनात् मान्त्री मन्त्रोपदिष्टा, सर्वाश्च कुर्यादेकैकम् इत्येके, एतद् व्याचक्षते श्रीशङ्कराचार्याः शाक्तीतः शिक्तः कुण्डलिनी परिचद्रूपा तस्याः क्रियासमिष्याहारेण कुलाऽकुलभेदाद् ब्रह्मनाड्यां परशम्भुमेलनं शिक्तप्रवेशः। शाम्भवी चरणविन्यासात् ते चरणाश्चत्वारः, शुक्लरक्तिमश्रपरस्वरूपाः। मान्त्री मन्त्रोपदिष्टा चरणद्वयं शिवशिक्तरूपम्। तत्र सत्वप्रधानः शुक्लः, रजः प्रधानो रक्तः, तमः प्रधानो मिश्रः, गुणाऽतीतो निर्वर्णः साक्षात्परमानन्दिनर्भरः सदाशिवरूपः सहस्रदलपद्मकर्णिकामध्यवर्तिचन्द्रमण्डलगतपीयूषधाराप्लाव्यमानश्चिन्तनीयः।

# षडन्वयमहारत्ने

त्रिविधा सा भवेद् दीक्षा प्रथमा आणवी मता।
शाक्तेयी शाम्भवी चाउन्या सद्योमुक्तिविधायिनी।।
गुरुणा ज्ञानमार्गेण क्रियेते ज्ञानचक्षुषा।
शाक्ती ज्ञानवती दीक्षा शिष्यदेहं प्रविश्य तु।।
मान्त्री क्रियावती दीक्षा कुम्भमण्डलपर्विका।
गुरोरालोकमात्रेण स्पर्शात् संभाषणादिप।।
सद्यः संज्ञा भवेज्जन्तोदीक्षा सा शाम्भवी मता।
मन्त्रवर्णाऽनुसारेण साक्षात् कृत्वेष्टदेवताम्।।
गुरुश्चोद्वोधयेच्छिष्यं मन्त्रदीक्षेति कथ्यते।

एतासां सर्वासां दीक्षाणां कैवल्याऽन्तं समानमेव फलम् तदुक्तम् -सर्वासामेव दीक्षाणां मुक्तिः फलमखण्डितम्।। इति

# ३. मान्त्रीदीक्षा-प्रयोगपद्धतिः

ददाति क्षिणोति च इति निरुक्त्या दीक्षाशब्दार्थः ब्रह्मज्ञानस्य प्रदानं समस्तपापानां च विनाशनमिति गम्यते। इममेवार्थमाश्रित्याऽनेके प्रकाराः दीक्षायास्तन्त्रग्रन्थेषु दृष्यन्ते। मान्त्री आणवी शाम्भवी वेधादिभेदैर्भिन्ना, तासु

मान्त्री दीक्षा सर्वासु मन्त्रसाधने विशेषोपयोगमाधत्ते। सैव क्रियामयीति व्यपदिश्यते, मन्त्रग्रहणं दीक्षां बिना न सम्भवति, अदीक्षितस्य प्रच्छन्नपापक्षयाऽभावात्, प्रक्षीणपापस्यैव मन्त्राधिकारात्, "दिव्यं भावं ददातीति दीक्षास्वरूपत्वाच्च। उक्तलक्षणलिक्षतगुरोः सकाशात् दीक्षां गृहीत्वा मन्त्रग्रहणं कर्तव्यम्।

## दीक्षाप्रकार -

सुदिनवारकरणनक्षत्रेषु यथाशास्त्रं परिशोध्य दीक्षा दातव्या सर्वसमृद्ध्यर्थं पापनिवृत्त्यर्थं च। सर्वसम्मतत्वात् साधारणत्वाच्च क्रियामयी दीक्षा संक्षेपतः प्रदर्श्यते। साधकहिताय शुभाऽनुकूलसमये शास्त्रोक्तविधिना आदौ वास्तुपूजामारभेत।

यथा – 'ततो भूमितले शुद्धे तुषाराऽङ्गारवर्जिते, पुण्याहं वाचियत्वा विप्राऽऽशिषा शास्त्रोदितं मण्डपं विरचय्य तन्मध्ये वेदिकायां वा स्थण्डिले वा सर्वतोभद्रात्मकं मण्डलम् अन्यद् वा यथाशास्त्रं विरचय्य चतुर्दिक्षु शास्त्रोक्तलक्षंणयुक्तानि कुण्डानि प्रकल्पयेत्। अथवोत्तरस्यां दिशि चतुरस्रं सर्वसाधारणं सर्वसम्मतम् एकं कुण्डं मेखलत्रययुतं तत्पश्चिमायां दिशि मेखलोपिर यथोक्तां योनि पिरकल्प्य गुरुः शुद्धात्मा प्राङ्मुख उदङमुखो वा मृद्धासने उपविश्य समाहितो मौनी भवेत्। गोमयेनोपलिप्य कुण्डमध्ये नाभिस्थाने स्वगृह्योक्तप्रकारेण षड्रेखा षट्कोणं त्रिकोणं वा विलिख्य स्थापयेत्। दिक्षणभागे पूजाद्रव्याणि यत्नतः, शुभोदकसमायुक्तं पूर्णकुम्भं ततः पुरः, ततः सुमनसः पात्रं, पिरतो घृतप्रज्ज्वालितान् दीपान् शुभान् पुरतः शङ्खं साधारं, परितोऽऽङकुरपत्राणि अन्यान्यपि यथाक्रमं पश्चात् स्थापयित्वा निजवामदिक्षण पार्श्वयोर्गुरुं गणेशं च नत्वा भूतशुद्धिमाचरेत्। यथोक्तम् –

प्राणायामं ततः कृत्वा मातृकास्तत्र विन्यसेत्। षडङ्गन्यासं च ततः कृत्वा (कल्पोक्तविधिना) तत्तन्यासान् समारभेत। तत्र मण्डपमध्ये धर्माऽऽदिपीठपूजानन्तरमांत्मपूजां विधाय हेमरजतताप्रमृण्मयकलशानां मध्येऽन्यतमं यथालाभं सम्यक् प्रक्षालितानन्तरं कर्पूराऽगुरुधूपितं शोभनाऽऽकृति सुलक्षणं त्रिसूत्रवेष्टितं नववस्त्रयुग्मेन च गन्धादिभिरभ्यिचतं नवरत्नोदरं दूर्वाक्षतसमन्वितं तारमुच्चार्य मन्त्री कर्णिकायां मध्येऽधोमुखं स्थापयेत् पश्चात् उत्तानं कृत्वा पीठस्य कलशस्य चैक्यं संसाधयेत् धिया प्रोक्तकषायोदकैस्तीथोंदकैर्वाऽन्यैः शुद्धतरैर्वा जलैः कर्पूरगन्धवासितैः प्रतिलोमेन मातृका जपन् तथैव मूलमन्त्रं च जपन् देवताबुद्ध्या कलशं पूरयेत्, ततः शङ्खे कषायाऽम्बुपूरिते शुद्धजलेन वा अष्टगन्धं समालोडय आवाहयेत् च कलाः सुधीः।

तद् यथा - 'ॐ अं अमृतायै नमः अमृतामावाह्यामि' इत्यमृतामावाह्य जलगन्धादिभिः सम्पूज्य 'अमृतायाः प्राणा इह प्राणाः' इत्यादि प्राणप्रतिष्ठाक्रमेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा 'ॐ आं मानदायै नमः ॐ इं पूषायै नमः ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॐ ऊं रत्यै नमः ॐ ऋं धृत्यै नमः ॐ ऋं शिशन्यै नमः ॐ लृं चिन्द्रकायै नमः ॐ लृं कान्त्यै नमः ॐ एं ज्योत्स्नार्य नमः ॐ ऐं श्रियै नमः ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॐ ओं अंगदायै नमः ॐ अं पूर्णीमृतायै नमः।'

एतासां च पूर्वोक्तप्रकारेण प्राणप्रतिष्ठां पूजां च कृत्वा, अनन्तरम् 'ॐ कं भं तिपन्यै नमः तपनीमावाहयामि इत्यावाह्य तिपन्याः प्राणा इह प्राणाः' इत्यादि प्राणप्रतिष्ठां पूजां च कृत्वा 'ॐ खं बं तािपन्यै नमः ॐ गं फं धूप्रायै नमः ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॐ ङं नं ज्वािलन्यै नमः ॐ चं धं रुच्यै नमः ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॐ जं थं भोगदायै नमः ॐ इं तं विश्वायै नमः ॐ जं णं बोधिन्यै नमः ॐ टं ढं धरण्यै नमः ॐ ठं डं उमायै नमः।'

एतासां पूर्वप्रकारेण प्रतिष्ठां पूजां च कृत्वा 'ॐ यं धूम्रायै नमः ॐ रं अर्चिष्यै नमः ॐ लं उष्मायै नमः ॐ वं ज्वलिन्यै नमः 3ॐ शं ज्वालिन्यै नमः 3ॐ षं विस्फुलिङ्गायै नमः 3ॐ सं सुश्रियै नमः 3ॐ हं सुरूपायै नमः 3ॐ लं किपलायै नमः 3ॐ क्षं हव्यवाहनायै नमः।'

इत्यभ्यर्च्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा अनन्तरम् – 'ॐ कं सृष्ट्यै नमः ॐ खं ऋद्धयै नमः ॐ गं स्मृत्यै नमः ॐ घं मेधायै नमः ॐ ङं कान्त्यै नमः ॐ चं लक्ष्म्यै नमः ॐ छं धृत्यै नमः ॐ जं स्थिरायै नमः ॐ झं स्थित्यै नमः ॐ ञं सिद्धयै नमः ॐ अं नमः'

इत्यादिप्रकारेण सम्पूज्य प्रत्येकं प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा अनन्तरम् 'ॐ टं जरायै नमः ॐ ठं पालिन्यै नमः ॐ डं शान्त्यै नमः ॐ ढं ऐश्वर्ये नमः ॐ णं कृत्यै नमः ॐ तं कामिकायै नमः ॐ थं वरदायै नमः ॐ दं ह्लादिन्यै नमः ॐ धं प्रीत्यै नमः ॐ नं दीर्घायै नमः।'

इति जलदिभिः सम्पूज्य प्रत्येकं प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा आसां प्रत्येकम् –

## ''प्रतिद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमेष्विधिक्षयन्ति भुवनानि विश्वा।। "

इति पठित्वा ऋचमावाहयामीत्यावाह्य ऋचं पूजयामीति पूजियत्वा 'ऋचः प्राणा इह प्राणा' इत्यादि प्रकारेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा अनन्तरम् 'ॐ पं तीव्रायै नमः ॐ फं रौद्रायै नमः ॐ बं भद्रायै नमः ॐ भं निद्रायै नमः ॐ मं तन्द्रायै नमः ॐ यं क्षुधायै नमः ॐ रं क्रोधिन्यै नमः ॐ लं क्रियायै नमः ॐ वं उल्कायै नमः ॐ शं मृत्यवे नमः।'

इत्यादिप्रकारेण जलादिभिः सम्पूज्य प्रत्येकं "त्र्यम्बकं यजामहे" इति ऋचं पठित्वा ऋचमावाहयामीत्यावाह्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा अनन्तरम् 'ॐ षं पीतायै नमः ॐ सं श्वेतायै नमः ॐ हं अरुणायै नमः ॐ ळं असितायै नमः ॐ क्षं अनन्तायै नमः।

इत्यादिप्रकारेण प्रत्येकमावाह्य सम्पूज्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा अनन्तरम् 'ॐ अं निवृत्त्यै नमः ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः ॐ इं विद्यायै नमः ॐ ई शान्त्यै नमः ॐ उं इन्धिकायै नमः ॐ ऊं दीपिकायै नमः ॐ ऋं रेचिकायै नमः ॐ ऋं भाविकायै नमः ॐ लृं सूक्ष्मायै नमः ॐ लृं असूक्ष्मायै नमः ॐ एं मृडायै नमः ॐ ऐं ज्ञानायै नमः ॐ ओं अमृतायै नमः ॐ औं आप्यायिन्यै नमः ॐ अं व्यापिन्यै नमः ॐ अः व्योमरूपायै नमः।

इत्यादिप्रकारेणाऽऽवाह्य सम्पूज्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा प्रत्येकम् – ॐ ''विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भ दधातु ते।।''

इति पठित्वा ऋचमावाहयामीत्यावाह्य सम्पूज्य, ऋचः प्राणा इह प्राणा इत्यादि प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा चतुर्नवतिमन्त्रान् शङ्खजले मूलमन्त्रमुच्चारयन् कलशे निःक्षिपेत्।

अनन्तरम् अश्वत्थादिकोमलपल्लवैः इन्द्रवल्लीसमाबद्धैः सुरतरुधिया कुम्भमुखे निधाय वेष्टयेत् नूतनसूक्ष्मवासोभ्यां च शेषमपि साऽक्षतं सफल रजतादियथालाभसुरद्रुमफलबुद्ध्या, पुन:कलशगतं देवं साऽङ्गं साऽऽवरणं साध्यमन्त्राऽनुरूपः सकलीकृत्य च गुरूपचारैः समाचरेत् नैवेद्याऽन्तान् तत्तन्मुद्रासिहतान्।

### मुद्राश्च

आवाहनम्, स्थापनम्, संनिधापनम्, सन्निरोधनम्, अवगुण्ठनम्, सकलीकरणम्, अमृतीकरणम् इत्यादीनि।

ततो नैवेद्यमनुद्धृत्य होमकर्म समारभेत्। सकलीकरणन्यासःकथं सकलीकरणन्यासः? उपलिप्य कुण्डं, स्वासने उपविश्य, आचान्तः प्राणानायम्य, न्यासपूर्वकं 'स्वगृद्धोक्तप्रकारेण षट्रेखा विलिखेत्, अथवा षट्कोणं वृत्तं त्रिकोणं वा विलिख्य तत्र ऋतुमतीं शिवां शिवेनाऽधिष्ठिताम् सकलजननीशिक्तं विचिन्त्य दीक्षाङ्गभूतहोमं करिष्ये, इति संकल्प्य तद्योनौ'

मणिभवगृहोच्छ्रत्मेव विह्नतारमुच्चारयन् स्वाभिमुखं क्षिपेत् मन्त्रिवर:। ततः किंचित् पिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय हन हन दह दह पच पच स्वाहेति मन्त्रेणाऽग्नि प्रज्वालय –

# "अग्नि प्रज्वितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णमनलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।"

इत्युपस्थाय – 'ॐ श्र्युं पद्मरागायै नमः' इति लिङ्गे न्यसेत् 'ॐ श्र्युं सुवर्णायै नमः' इति गुदे 'ॐ श्र्यूं भद्रलोहितायै नमः' इति मूर्ध्नि 'ॐ ह्र्यूं श्यामायै नमः' इत्याऽऽस्ये 'ॐ ल्य्रूं श्वेतायै नमः' इति नासिकायाम् 'ॐ प्यूं धूमिन्यै नमः' इति नेत्रयोः 'ॐ व्यं कराल्यै नमः' इति सप्त जिह्नाः सर्वाङ्गेषु विन्यस्य।

ततः 'ॐ सहस्रचिषे हृदयाय नमः' 'ॐ स्वस्ति पूर्णाय शिरसे स्वाहा' 'ॐ उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट्' 'ॐ धूमव्यपिने कवचाय हुम्' 'ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् 'ॐ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।' इति तत्तत्स्थानेषु षडङ्गन्यासं कृत्वा वह्नेरिप तदनन्तरं षडङ्गं विधातव्यम्।

'ॐ अग्नये जातवेदसे नमः' इति मूर्ध्नि 'ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः' इति वामांसे 'ॐ अग्नये हव्यवाहनायं नमः' इति वामपार्थे 'ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः' इति लिङ्गे 'ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमः' इति वामकिटभागे 'ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमः इति दक्षिण किटभागे' 'ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः' इति दक्षिणपार्थे, 'ॐ अग्नये देवमुखाय नमः' इति दक्षिणांसे न्यसेत्। अष्टमूर्तेविह्नरेवं विन्यस्य, ततः पिरसमूहन-पिरस्तरण-पिरषेकादिकं कृत्वा 'ॐ वैश्वानर जातवेद इहाऽऽवह लोहिताक्ष सर्वकर्मणि साध्य साध्य स्वाहा।' इत्यनेन जलगन्धपृष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिरिंग सम्पूज्य वक्ष्यमाणक्रमेण ध्यायेत्।

### ध्यानम्

दक्षिणाधः करमारभ्य प्रादक्षिण्येन वरद शक्तिकाभयसहितं चतुर्बाहुं

त्रिनेत्रम् अरुणजटाबद्धमौलिं शुभ्रवस्त्रम् अरुणसर्वालङ्कारभूषितम् अम्भोजसंस्थं वहिं ध्यायेत् -

जिह्ना ज्वालारूपी ज्ञेया वरदाऽभय हस्तकाः स्वस्वनामसदृशा। अङ्गानि मूर्तयश्च शक्तिस्विस्तिकहस्ता ध्यातव्या। तेनाऽऽज्येन स्नुचा व्याहितिभिर्व्यस्ताभिः समस्ताभिर्हुत्वा 'ॐ वैश्वानर जातवेद इहाऽऽवहेति पूर्वोक्तमन्त्रेण त्रिभिर्हुत्वा, अनन्तरं वह्नेर्गभीधान – पुंसवन – सीमन्त – जातकर्म – नामकरण – निष्क्रमणाऽन्नप्राशन – चौलोपनयन – प्राजापत्य – सौम्याग्नेयवैश्वदेवताख्यानि वेदब्रतानि चत्वारि समावर्तन – विवाहाऽन्तानि त्रीण्येतानि प्रत्येकं साधयन् प्रणवेनाऽष्टावाहुतीराज्येन जुहुयात्। पुनर्जिह्वामन्त्रैरङ्गमन्त्रैर्मूर्तिमन्त्रेश्च प्रत्येकमेकैकवारम् आज्येन स्वस्वनामपूर्वकं चतुर्थीनमोन्तैर्हुत्वा मध्यस्थायां जिह्वायां महागणपतिमन्त्रेण वक्ष्यमाणप्रकारेण दशाहुतीर्हुत्वा यथा –

'ॐ स्वाहा, ॐ श्री स्वाहा, ॐ श्रीं हीं स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्री हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये कर वरद स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा, ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

इत्यं दश त्रींश्चाऽऽहुतीर्हुत्वा पुनः समस्तेन मन्त्रेण चतुर्वारम् आज्येन जुहुयात्। पुनः साध्यमन्त्रेण पञ्चविंशतिवारान हुत्वा ॐ हीं बगलामुखी, इत्यादि मन्त्रराजेन हुत्वा महाव्याहृतिभिर्हुत्वा – महाव्याहृतयश्च – 'ॐ भूरग्नये च पृथिव्ये च महते च स्वाहा, ॐ भुवो वायवे चाऽन्तिरक्षाय च महते च स्वाहा, ॐ स्वः आदित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा।'

पुनर्ब्रह्मार्पणमनुना एकामाज्याहुति दत्वा इतः पूर्वं प्राणबुद्धि-देहधर्माऽधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु अवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यत् प्रोक्तं यत् कुतं, तत् सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा।' इति ब्रह्मार्पणमनुः।

अनन्तरं 'पूर्णाहुतिमुत्तमां जुहोति सर्वं वै पूर्णाहुतिः सर्वमेवाऽऽप्नोति, अथो इयं पूर्णाहुतिः, अस्यामेव प्रतितिष्ठति' इत्यनेन पूर्णाहुतिं हुत्वा परिषेचनपूर्वकं होमं समाप्य अग्निमात्मन्यारोप्य देशिकः पश्चात् मण्डले बिलमाहरेत्।

पयोऽम्भसा राशिनक्षत्रतिथिकरणादीनां चतुर्थीनमोऽन्तैः स्वस्वनामभिः मन्त्रैः बलिमाहरेत् 'एष बलिर्न मम' इति। ततो वा नैवेद्यमुद्धृत्य पूर्ववद् गन्धादिभिः परिपूज्य मुखवासादिकं दत्वा दण्डवत् प्रणमेद् भुवि। इति।

### होमद्रव्यप्रमाणम्

घृतं कर्षमात्रम्, शुक्तिमात्रं पयः, तत्समं मधु, पञ्चगव्यं च, दुग्धाऽन्नम् अक्षमात्रम्, दिध प्रसृतिमात्रम्, लाजाः स्युर्मृष्टिसिम्मिताः, तावत् पृथुकाः सक्तवः, गुडं पलार्धमात्रकम्, शर्कराऽपि ग्रासार्धमात्रम्, इक्षु पर्वाविधः – एकैकं पत्रपुष्पाणि तथा अपूपा अपि, कदल्यादि फलानि च –

मातुलुङ्गं चतुःखण्डं पनसं दशधा विदुः। अष्टधा नारिकेलं स्यात् त्रिखण्डं विल्वमुच्यते।। तथैवोर्वारुकमपि।

# फलान्यन्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशाऽङगुलाः। दूर्वात्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरङ्गुला।।

ब्रीहियवमाषमुद्गकोद्रवगोधूमकलाया अपि मुष्टिमात्रकाः। तण्डुलास्तदर्धं, तिलसर्षपाः चुलुकमात्रं लवणम्। मारीच्यानपि विंशातिः। गुग्गुलं बदरमात्रम्। रामठं तत्समम्। चन्दनाऽगरुकपूरकुंकुमानि तिंतिणिबीजमानानि समुद्दिष्टानि देशिकैः।

### । इति होमसामग्री ।

होमाभावेऽनुकल्प - होमाभावेऽथवा पुष्पै: पूरियत्वा अञ्जलिम् इष्टदेवताप्रीत्यै दद्यान् मूलमन्त्रमुच्चारयन्।

ततोऽन्यमण्डले शिष्यमुपवेश्य यथाविधि। नदत्सु पञ्चवाद्येषु सार्धं विप्राऽऽशिषा गुरुः।।

विधिवत्कुम्भमुद्धृत्य तत्स्थपल्लवान्तर्हितशिरसं सुरसं सुस्थिरं सुनियतं प्राङ्मूखोपविष्टं देवतामनुस्मरन् गुरुः शिष्यमभिषिञ्चेत्। तद्विधिर्वक्ष्यते।

यथार्थवत्प्रतिलोममातृकां जपन् तथैव मूलमन्त्रमि। अनन्तरं गुरुणाभिषिक्तो वाससी परिधाय शिष्यः आचम्य च स्वलंकृतो नमस्कृत्य गुरुं, तस्मै यथाशक्ति दक्षिणां प्रदाय निविश्य गुरुसिन्नधौ पूर्वाऽभिमुखौ मौनी भवेत्। ततः सुदेशिकः शिष्यं समविहतं दत्तदिक्षणं दिव्यदृष्ट्या विलोक्य तिस्मिश्च परदेवतामाबाह्य सकलीकृत्य तयोरैक्यिधया स्मरन् गन्धपुष्पाद्यैरलंकृत्य तस्मै विद्यां यथावद् दद्यात्। सत्सम्प्रदायविधिना (दिक्षणाम्नायेन) ऋष्यादिध्यानपूर्वकं मन्त्रं दिक्षणकर्णे वदेत्। गुरोर्लब्धां विद्यां पुनर्जपेत तत्संनिधावेव शताविध अष्टविशतिधा वा। गुरुदेवतामन्त्राणामैक्यं सम्भावयन प्रणमेद् दण्डवद् भूमौ गुरुं देवतात्मकम्। तथा च तत्पादौ मूर्ध्नि योजयेत्। शरीरमर्थं प्राणांश्च सर्वं तस्मै निवेदयेत्। अथवा गन्धपुष्पाद्यैवस्त्रालङ्काराद्यैश्च गुरुं सम्प्रीणयेत् वित्तशाठ्यं विना। ततः

प्रभृति गुरो: प्रियं कुर्वीत अनन्यधी:।

ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात् यथावित्तं विशालधीः। ब्राह्मणान् तर्पयेत् पश्चाद् दीक्षाभिर्यथेच्छया।। संक्षेपतोऽसौ विधिवच्च दीक्षा क्रियावती लोकहिताय पुण्या। ददाति पुंसामिह दिव्यभावं क्षिणोति पापानि भवेच्च दीक्षा।।

॥ इति प्रयोगपद्धति:॥

### ४. क्रमदीक्षा

अस्यां दीक्षायां प्रयोगप्रकारस्तु पूर्वोक्तदीक्षावत्। केवलो मन्त्रोपदेशक्रम एव विशेष:।

'काली, च सुन्दरी, तारा क्रमदीक्षाऽभिगामिनी।'

इति वचनानुसारेण तिसृणां विद्यानामेव क्रमोपदेशः, तथापि पुरश्चर्यार्णवे बगलामुख्या अपि क्रमो दृश्यते, गुरुपदेशप्रणाली चैतादृशी।

### उक्तं च -

बगलाया महेशानि साम्राज्यपरमे स्थिता। चन्द्रवेदसूक्ष्ममेरुमन्त्रहीनं शिवाऽन्तरम्।। हृदयं च शतार्णं च पञ्चास्रं कुल्लुका तथा। गायत्रीक्रमयोगेन साम्राज्यपरमेष्ठ्यधृक्।।

अनेन क्रमेण विद्योपदेशो भवति। चन्द्र १ वेद ४ सूक्ष्ममेरु ८ षट्त्रिंशदक्षरी विद्या, गणेशो, वटुकः, मृत्युञ्जयः दक्षिणा काली, सौभाग्यविद्या हृदयम्, शताक्षरम्, पञ्चास्त्रं, कुल्लुका तथा ब्रह्मास्त्रगायत्री इति क्रमः। एवं क्रमं प्राप्य अभिषेकः। छित्रमस्ताया अपि क्रमो दृश्यते पुरश्चर्याणीवे एतस्या दिव्यचीनाचारत्वात् तारायामन्तर्भावः, बगलायाः सुन्दर्यामिति क्रमत्रयमेव वदन्ति।

क्रमदीक्षा महेशानि पञ्च विद्यासु भेदतः। तदङ्गमन्त्रा गायत्रीकुल्लुकापञ्चकं शिवे।।

इत्यादि प्रसङ्गेन उक्तम्। बगलाया महात्रिपुरसुन्दरीरूपत्वात् ऐक्यम्। अत एवोर्ध्वाम्नाये त्रिकूटेषु व्युत्क्रमरूपेषु (ऐं हीं श्रीं सौं क्लीं ऐं हीं श्रीं पूर्वं संयोज्य त्रिकूटं, ततः पश्चात् ह्लीं ऐं क्लीं सौः श्रीं इति पराषोडशीरूपम्) स्थिरमायाबीजं संयोज्य पराषोडशी भवति। पीताम्बरात्वं च क्वचिद् ध्याने पठ्यते।

### यथा -

"ध्यायेत् पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्राऽऽयताक्षीम्। हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम्।। सर्वाऽलङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीम्। श्रीविद्यां शान्तमूर्ति सकलसुरनुतां सर्वसम्प्प्रदात्रीम्।।" इति।

उक्तं सांख्यायने

''बगलां सुन्दरीं ध्यायेद् द्विभुजां सर्वसिद्धिदाम्।''

पञ्चब्रह्ममयैकपीठनिलयाम्

इत्यनेन यथा षोडश्याः पञ्चप्रेतासनस्थत्वमुच्यते तथा बगलायाः।
''पीतवासोमते पुत्र पञ्चप्रेतगतां स्मरेत्।''
इत्यादि प्रमाणौरैक्यमुभयोर्गम्यते।
क्रमदीक्षाविधिर्यत्र तत्र पूर्णाभिषेचनम्।।

इति प्रमाणेन बगलाया अपि पूर्णाभिषेकः षडाम्नायविद्योपदेशश्च। एतत् सर्वं षोडशीवत् कर्तव्यम्। पूर्वाम्नाये ब्रह्मास्त्रगायत्री, हृदयम्, नवाक्षरम्, एकादशाक्षरम्, अन्ये षोडशीवत्। दक्षिणाम्नाये षट्त्रिंशदक्षरी, एकाक्षरी, चतुरक्षरी, अष्टाक्षरी। अन्यत् पूर्ववत्। पश्चिमाम्नाये-त्र्यक्षरः

शताक्षरः मालामन्त्रः शावरमन्त्रः परप्रयोगभक्षिणी, अन्यत् पूर्ववत्। उत्तराम्नाये-पञ्चास्त्रम्, बगलास्त्रम्, कवचिद्या शेषं पूर्ववत्। ऊर्ध्वाम्नाये ऐं हीं श्रीं क्लीं स क ल हीं ह स क ह ल हीं क ए ई ल हीं इति पराषोडशी हंसः सोहं ह्यौं ह्यौं बगलागायत्रीं, अन्यत् पूर्ववत। दिव्यौध-मानवौध-गुरव एक एव, केवलं सिद्धौधा भिन्नाः तदग्रे वक्ष्यन्ते। अनुत्तराम्नाये ऐक्यमेव। इति क्रमो वर्षत्रयेण ग्रहीतव्यः।

।। इति क्रमदीक्षाविधिः।।

#### ५. अभिषेकविधिः

## ्रिमिन्स्य विकास स्थापन स्

पूजाधारणयन्त्रज्ञ सर्वशास्त्रविशारद। अभिषेकविधिं तात वद मे करुणाकर।।

#### ईश्वर उवाच

आश्विने कार्तिके चैव चैत्रे मासि कुमारक।

कर्तव्यस्त्वभिषेकश्च मानवैः सिद्धिकांक्षिभिः।।

गुरौ रवौ भृगाविन्दौ वारकेषु कुमारक।

मन्त्राऽभिषेकः कर्तव्यः सद्यः सिद्धिकरो भुवि।।

एवं शुभे दिने सम्यक् पूर्वाह्ने समुपोषितम्।

स्नापयेत् पञ्चगव्येन ततश्चाऽऽमलकेन तु।।

रोहिण्यां श्रवणे चैव स्वात्यां चैव विशाखयोः।

मन्त्राऽभिषेकः कर्तव्यः सद्यःसिद्धिविधायकः।।

#### स्नानान्तरविधिः

ततः शिष्यं समानीय देवतासन्निधौ पुनः। अयुतं प्रजपेन् मन्त्रं गायत्रीं वेदमातरम्।। देवस्येशानभागे तु गोमयेन विलेखिते। रङ्गावल्या लिखेद् यन्त्रं रक्तपीतसिताऽसितैः।। षोडशाङ्ऽगुलमानं तु लिखेद् बिन्दुमनन्यधीः। तस्योपरि लिखेद् वृत्तमष्टपत्रं सुशोभितम्।। प्रियंगुशालिगोधूमचरकार्धकमाषकम् कुलत्थमुद्रनीवारान् क्रमान् मध्यादि विन्यसेत्।। प्रस्थं चैव चतुर्विंशत् प्रत्येकं धान्यमेव च। अर्चयेत् स्थूलकलशं मध्ये संस्थाप्य बुद्धिमान्।। अष्टपत्रं न्यसेत् पुत्र कलाशाऽष्टकमादरात्। क्षालितं वासितं शुद्धं कलशं तु समर्चयेत्।। षोडशैरुपचारैश्च धूपाद्येनैव विन्यसेत्। अधिकारिक अपोवातेन विकास स्वाहत

(ॐ आपो व इदं सर्वं विश्वाभूतानि आपः प्राणा वा आपः पशवः आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दास्यापो ज्योतींष्यापो यजूंषि आपस्सत्यमापस्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवरापः ॐ)

पूर्येत नदीजलमकल्मषम्।

निःक्षिपेन् नव भाण्डेषु नवरत्नं कुमारक। कस्तूरीं चन्दनोपेतां नवभाण्डेषु निःक्षिपेत्।। मध्ये देवीं समावाह्य चिन्मयीं बगलामुखीम्। प्राणास्थापनमार्गेण केरलोक्तविधानतः।। वाणीं चैव रमां गौरीं शचीं स्वाहां रितं तथा। दुर्गां छायां समभ्यर्च्य पूर्वाऽद्यष्टकसिद्धये।। अर्चयेत् पूर्वके पत्रे केरलोक्तविधानतः। नवीननवसंख्याकवस्रोणैव च वेष्टयेत्।। सुगन्धपत्रपुष्पाऽऽदीन् विन्यसेत् कलशान्तरे।
तत्र शिष्यं समानीय ऋत्विग्वरणमाचरेत्।।
वेदवेदाऽङ्गपारीणान् अष्टौ विप्रान् यथाविधि।
प्रार्थयेद् युग्मसंयुक्तमर्चयेद् वस्त्रभूषणैः।।
शक्रादिदिक्षु मन्त्रैश्च प्रथमं कलशाऽर्चनम्।
लक्ष्मीश्रीसूक्तकाभ्यां च द्वितीयं कलशाऽर्चनम्।
पौरुषेणैव सूक्तेन तृतीयं कलशाऽर्चनम्।
नारायणनुवाकेन चतुर्थं कलशं तथा।।
(नारायणोपनिषदन्तर्गतं सहस्रशीर्ष देवमित्यादि)।
पञ्चब्रह्ममयैर्मन्त्रैः पञ्चमं कलशं तथा।।
(सद्योजातादि।)

षष्ठं चाम्भस्यपारेण ब्रह्मवल्या तु सप्तमम्।। (नारायणोपनिषदन्तर्गतं प्रथमानुवाकमारभ्य तृतीयपर्यन्तम्। ब्रह्मावल्ली तैत्तिरीयोपनिषद्गता।)

अष्टमं भृगुवल्ल्या तु मार्जयेन् मन्त्रकोविदः। (तैत्तिरीयोपनिषदन्तर्गता भृगुवल्ली)

मध्यस्थं पूर्वकलशं मूलमन्त्रेण मार्जयेत्।
एवं च मार्जनं कृत्वा नवीनैर्वस्नभूषणैः।।
अलंकृत्य तु तं शिष्यमानीय मण्डपान्तरे।
वामोरूपरि विन्यस्य मूर्ध्नि स्वाघ्राय चाऽऽदरात्।।
एवं चैव पुरश्चर्या मूलमन्त्रं कुमारक।
सिहरण्योदकेनैव दद्याच्छिष्याय पुत्रक।।
स्वहत्कमलमध्यस्थां विद्यां ज्योतिर्मयीं पुनः।
शिष्यस्य हृदयं चैव प्रविशन्तीं विभावयेत्।।

तत्प्रयोगं तत्र मुक्ता तन्मन्त्रार्णक्रमेण तु।

षट्चक्रभेदनं कृत्वा स्वात्मैक्यं च विभावयेत्।।

विद्यारूपो भवेत् पुत्र साम्राज्यं परमेष्ठिना।

एवं मन्त्राऽभिषेकं च कुर्याद् ब्रह्मास्त्रविद्यया।।

सद्यः सिद्धिभवेत् पुत्र पुरश्चर्यां बिना भुवि।

। इति सांख्यायने तन्त्रे तृतीयः पटलः।

### ६. गुरुतत्त्वप्रकरणम्

दीक्षातत्त्वं संक्षेपतः उक्तम्, तच्च गुरुकृपात् एव लभ्यते, अतएव प्रसङ्गागतं गुरुतत्त्वं तदुपयोगिविषयं च निरूप्यते। उक्तं च -

गुरुमूलं जगत् सर्वं गुरुमूलं परं तपः।
गुरोः प्रसादमंत्रेण मोक्षमाप्नोति सद्वशी।।
गुरुरेकः शिवः साक्षाद् गुरुः सर्वार्थसाधकः।
गुरुरेव परं तत्त्वं सर्वं गुरुमयं जगत्।।
बिना गुरुप्रसादेन कोटिपुरश्चरणेन किम्।
गुरुमूलिमदं शास्त्रं नाऽन्यः शिवतमः प्रभुः।।
अत एव महेशानि यत्नतो गुरुमाश्रयेत्।।

### प्रोक्तं च रुद्रयामले -

गुरुं बिना यतस्तन्त्रे नाधिकारः कथंचन।
अत एव महेशानि गुरुः कर्त्तव्य उत्तमः।।
गुरुं बिना यस्तु मूढः पुस्तकाऽऽदिविलोकनात्।
जपबन्धं समाप्नोति किल्विषं परमेश्विर।।
न माता न पिता भ्राता तस्य को वा गितः प्रिये।
गुरुरेको वरारोहे पापं नाशयित क्षणात्।।

। इति गुरुमाहात्म्यम्।

गुरुस्तु द्विविधः प्रोक्तो दीक्षाशिक्षाप्रभेदतः।
आदौ दीक्षागुरुः प्रोक्तः शेषे शिक्षागुरुर्मतः।।
यन्मुखात्तु महामन्त्रः श्रूयतेऽभ्यस्यतेऽपि वा।
स गुरुः परमो ज्ञेयः तदाज्ञा सिद्धिदायिनी।।
प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः।।
पश्चैते कार्यभूताः स्युः कारणं बोधको भवेत्।

इति मन्त्रदातुः श्रेष्ठ्यम्। गुरुमन्त्रदेवतानां चैक्यमेवविभावनीयं साधकैः, येषु भेदधीकर्तुः सर्वाः क्रिया निष्फला भवन्ति।

> गुरुः परगुरुश्चैव परापरगुरुस्तथा। स्वगुरुः परमेशानि साक्षाद् ब्रह्म न संशयः।।

### वृहन्नीलतन्त्रे उक्तम्

परापरगुरुणां च निर्णयं श्रृणु पार्वति। आदौ सर्वत्र देविशि मन्त्रदः परमो गुरुः।। परापरगुरुस्त्वं हि परमेष्ठी त्वहं गुरुः। सर्वं गुरुमुखाल्लब्धं सफलं स्यान् न चाऽन्यथा।। स्त्रीगुरुरिप कुलाचारे प्रशस्ता, परन्तु विधवाया निषेधः।

पुत्रिणी चेत् तदा गुरुत्वेन ग्राह्या। गुरुशिष्यलक्षणानि पूर्वोक्तानि ज्ञातव्यानि। ननु इष्टदेवगुरुदेवयोर्मध्ये प्रथमं को ध्येय:? उच्यते, सर्वसम्मतत्वात् गुरुरेव प्रथमं ध्येय:। संक्षेपेण तद्विधि: प्रदर्श्यते –

ब्रह्मानन्दं परमसुखदम् केवलं ज्ञानमूर्तिम्। द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्। भावाऽतीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।। कुलवृक्षप्रणामाऽनन्तरं गुरुध्यानमुक्तम्।

क्रिलिक क्रिक्ट कुलवृक्षाश्च विकासिक विकासिक हरीतकी तथा धात्री निम्बाऽश्वत्थकदम्बकाः। उदुम्बरुर्बटबिल्वौ च तिंतिडी नवमः स्मृतः।। ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय कुलवृक्षं प्रणम्य च। शिरःपद्मे सहस्रारे चन्द्रमण्डलमध्यके।। अकथादित्रिरेखीये हंसमन्त्रसुपीठके। ध्यायेन् निजगुरुं वीरो रजताऽचलसन्निभम्।। पद्मासीनं स्मितमुखं वराऽभयकराम्बुजम्। शुक्लमाल्याऽम्बरधरं शुक्लगन्धानुलेपनम्।। वामोरुस्थितया रक्तशक्त्याऽऽलिङ्गितविग्रहम्। तथा स्वदक्षहस्तेन धृतचारुकलेवरम्।। वामेनोत्पलधारिण्या सुरक्तवसनस्रजा। सितरक्तप्रभां विभ्रत् शिवदुर्गास्वरूपिणम्।। परानन्दरसापूर्णं स्मरेत् तन्नामपूर्वकम्। तारत्रयं समुच्चार्य 'ह स ख फ्रें' ततः परम्।। 'हसक्षमलवर यूंहसखफ्रें हसौः' ततः।

'अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः। अमुकीं देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।' इत्यादि

अयं श्री पादुकामन्त्रः सर्वेप्सितफलप्रदः। मिथुनं चिन्तयित्वा ततः वाग्भवम् अष्टोत्तरशतं जपेत्। वाग्भवेन प्राणायामत्रयं विधाय गुह्येत्यादिना जपं निवेद्य स्तवादिकं पठेत्। अजपादि वृहत्पद्धतौ वक्ष्याम:।

### पादुकापंचकम्

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे, नित्यलग्नमवदातमद्भुतम्। कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं, द्वादशार्णसरसीरुहं भजे।।१।। तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे, क्लुप्तरेखमकथादिरेखया।
कोणलक्षितहलक्षमण्डली भावलक्ष्यमवलाऽऽलयं भजे।।२।।
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्धमानमणिपाटलप्रभम्।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुः विन्दुनादमणिपीठमण्डलम्।।३।।
ऊर्ध्वमस्य हुतभुविशखासखं, तद्विलासपरिबृंहणाऽऽस्पदम्।
विश्वघस्मरमहोत्सवोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः।।४।।
तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुङ्कुमाऽऽसवझरीमरन्दयोः।
द्वंद्वमिन्दुमकरन्दशीतलं, मानसं स्मरित मङ्गलाऽऽस्पदम्।।५।।

निषक्तमणिपादुका नियमिताधकोलाहल –
स्फुरित्कशलयाऽरुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकम्।।
पराऽमृतसरोवरोदितसरोजसद्रोचिषम्
भजामि शिरिस स्थितं गुरुपदाऽरिवन्दद्वयम्।।६।।
पादुकापञ्चक स्तोत्रं पञ्चवक्त्राद् विनिर्गतम्।
षडाम्नायफलं प्राप्तं प्रपञ्चे चाऽतिदुर्लभम्।।इति

#### गुरुमण्डले त्रिकोणस्वरूप विवरणम्

वामावर्तेन विलिखेद् अकथादि त्रिकोणकम्।
अकारादिविसर्गान्ता ब्रह्मरेखा प्रजापतिः।।
ककारादितकारान्ता विष्णुरेखा परात्परा।
थकारादिसकारान्ता शिवरेखा त्रिविन्दुतः।।
त्रिविन्दुं परमं तत्त्वं ब्रह्मविष्णुशिवाऽऽत्मकम्।
वर्णमयं त्रिकोणं तु जायते विन्दुतत्त्वतः।।

#### वामा ज्येष्ठा रौद्रीति शक्तित्रयम्

रजःसत्वतमोरेखा योनिमण्डलमण्डिताः। उपरिष्टात् सत्त्वरेखा रजोरेखा स्ववामतः।। तमोरेखा दक्षभागे रेखात्रयमुदाहृतम्।
अकथादिपंक्तया तु ह ल क्ष मण्डितम्।। तदुक्तम् कणिकान्तः पुटे देवि द्वादशाणिसरोरुहे।
तेजोमये कणिकान्तश्चन्द्रमण्डलमध्यगे।।
अकथादित्रिरेखीये ह ल क्ष त्रयभूषिते।
हंसपीठमन्त्रमये स्वगुरुं शिवरूपिणम्।।
चन्तयेदिति शेषः।

ॐ ऐं हीं श्रीं परमशिवात्मानन्दनाथः परा शक्त्यम्बा परानन्दनाथः, कौलेश्वरानन्दनाथः, कुलेश्वरानन्दनाथः, इति दिव्यौघाः।

सिद्धनाथानन्दनाथः, सिद्धानन्दनाथः, परमेष्ठिनाथानन्दनाथः, श्रीकण्ठानन्दनाथः, इति सिद्धौघाः।

गगनानन्दनाथः, विश्वानन्दनाथः, विमलानन्दनाथः, मदनानन्दनाथः, भुवनानन्दनाथः, नीलानन्दनाथः, स्वात्मानन्दनाथः, प्रियानन्दनाथः इति मानवौधाः।

गगनानन्दनाथस्य प्रसन्नत्वान् महेश्वरि। विख्याता बगलेत्येतद् रहस्यमिति गीयते।। अभेदत्वाच्य लकयोर्बगलेति प्रकीर्तिता।

गगनानन्दस्य पूज्यत्वाद् बगला लकयोरभेदत्वाद् बगलेति श्री विद्यारत्नसूत्रभाष्यम्। यजुर्वेदमयत्वं च।

स्त्रीगुरुमन्त्रश्च - ऐं हीं श्रीं सह ख फ्रें सह क्ष म ल व र यूं सह ख फ्रें स्हौ: इत्यमुकीमम्बापादुकां पूजयामीत्यादि। स्त्रीगुरुस्तोत्रादिकं तन्त्रान्तराद् विज्ञेयम्।

### ७. श्री बगलामुख्या आचारादिकथनम्

श्रीगुरुमुखाद् यथाविधि मन्त्रमादाय तद्यन्त्रम् आचारं च गृह्णीयात् इत्येतदर्थमिदं प्रकरणमारभ्यते - पूर्वाम्नाये यदा मन्त्रस्तदा प्राचीदिशि स्थितः। सदाशिवोऽहं भगवानाचारः परिकीर्तितः।। एवं वै दक्षिणाम्नायो दक्षिणस्यां दिशि स्थितः। एवमेवोत्तराम्नाये उत्तरस्यां दिशि स्थितः।।

इति क्रमेण सर्वेषामुपदेशो ज्ञातव्यः। यद्यपि बगलामुखी महाविद्या षडाम्नायेषु उपदिश्यते। यथा –

षट्प्रयोगमयी विद्या षडाम्नायप्रपूजिता। (षड्विद्यागमपूजिता।) तिरस्कृताऽखिला विद्या त्रिशक्तिमयमेव च।। (सां.त. १प. १व)

तथापि स्थितिक्रमस्य मुख्यत्वाद् दक्षिणाम्नाय एव मुख्यत्वेन गृह्यते (ऊर्ध्वाम्नाये भगवत्या ध्यानं चतुर्भुजात्मकं केवलं मुक्त्यर्थमेव गृह्यते।) तथाहि –

श्रीविद्या भेदसहिता तारा च त्रिपुरा तथा।
भुवनेशी चाऽत्रपूर्णा पूर्वाम्नाये प्रकीर्तिताः।।
बगलामुखी वशिनी त्वरिता धनदा तथा।
महिषध्नी महालक्ष्मीर्दक्षिणाम्नायकीर्तिताः।।

इति प्रमाणाद् दक्षिणाम्नाये बगला परिगणिता। तदाचारः प्रदर्शितो निरुत्तरे –

पूर्वाम्नायोदितं कर्म पाशवं कथितं प्रिये।
यदुक्तं दक्षिणाम्नाये तदेव पाशवं स्मृतम्।।
पश्चिमाम्नायजं कर्म पशुवीरसमाश्चितम्।
उत्तराम्नायजं कर्म दिव्यवीराश्चितं प्रिये।।
दिव्योऽपि वीरभावेन साधयेत् पितृकानने।
इत्यनेन बगलायाः पाशवाचारः।।

### निर्वाणतन्त्रे प्रशस्यते चाऽयम्

दिव्यवीरमयो भावः कलौ नास्ति कदाचन। केवल पशुभावेन मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।। कुत्रचित् कौलाचारोऽपि। यथा -कुलीना भैरवी देवी कुलीना छिन्नमस्तका। कुलीना सुन्दरी साक्षात कुलीना महिषमर्दिनी।। कुलीना भुवना बाला कुलीना बगलामुखी। धूमावती कुलीना च मातङ्गी कुलनायिका।। िमानस ज्ञानमाध्यक्षक महिन्द्रभीत्रहार व इत्यादि।

### सांख्यायने चोक्तम्

सांख्यायनमते देव्या वामाचारविधिर्मतः। सांख्यायनमते देवी कलौ जागर्ति केवलम्।। सांख्यायनमतेनैव संस्मरेद् यत्नतः सुत। इति प्रमाणाद् वामाचारोऽपि।

# पूजनक्रमे चोक्तं तत्रैव

सृष्टिस्थित्यन्तसंहारैः पूजा च त्रिविधा कलौ। करले सृष्टिपूजा च गर्भकौलाऽऽगमक्रमात्।। अर्चनं गौडदेशे तु स्थितिमार्गं कुमारक। कामरूपप्रदेशे तु संहारार्चनमेव च।। गुप्तगौडागमं नाम गौडदेशाऽर्चने विधिः। कामरूपागमं नाम संहारक्रमपूजनम्।। गौडागमं चाऽवलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा। उक्तवानागमं चैव स्थित्यर्चा शुणु पुत्रक।।

#### इत्यादि बगलापूजने द्रव्यमपि त्रिविधम्

गौडी माध्वी च पैष्टी च गौडी चैवोत्तमोत्तमा। छागकुक्कुटमत्स्याश्च बगलाप्रीतिकारणम्।।

सौभाग्यार्चनमपि तत्रैवोक्तम्; तथापि विस्तरभयान् न लिख्यते। शक्तिसङ्गमे ताराखण्डे द्रष्टव्यम्। यद्यापि कौलपशुमार्गयोर्विरोधः, तथापि देशभेदेन व्यवस्था –

वामदक्षिणमार्गो हि कालीताराविधौ स्मृतः। द्राविडो दक्षिणः प्रोक्तः गौडो वामः प्रकीर्तितः।। इति प्रमाणाद् गौडद्रविडभेदेन व्यवस्थापनाद् अदोषः।

#### महाविद्यात्वनिर्णयः

### चामुण्डातन्त्रे

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी। भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।। बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलाऽऽत्मिका। एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः।।

इति प्रमाणात् महाविद्यात्वं सिद्धविद्यात्वं च बगलायाः सिध्यति। नामार्थश्च तन्त्रान्तरे –

बकारे वारुणी प्रोक्ता गकारे सिद्धिदा स्मृता। लकारे पृथिवी चैव चैतन्या या प्रकार्तिता। जगन्माता जगद्धात्री जगतामुपकारिणी।

#### भैरवनिर्णय

बगलाया दक्षभागे एकवक्तत्रं प्रपूजयेत्। महारुद्रेति विख्यातं जगत्संहारकारम्।। 'ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।' केचित् लक्ष्मीगणेशं ब्रुवते।' ॐ श्रीं गं सौम्याय महागणपतये वर वरद् सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा' इति गणेशः। ॐ हीं बटुकायाऽऽपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय हीं ॐ स्वाहा, इति बटुकः।

ॐ में में विडालमुखी स्वाहा - इति यक्षिणी।

# वीररात्रि निर्णय

चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता। कुलऋक्षसमायुक्ता वीररात्रिः प्रकीर्तिता।।

॥ इति वीररात्रि निर्णयः॥

# ८. मालिकाकरणम्

### क्रींचभेदन उवाच

नमस्ते वृषभाऽऽरूढ नमः पत्रगभूषण। लक्षणं वद मे देव बगलामालिकां शिव।।

### इंश्वर उवाच

भृगुवारे तु संगृद्ध आरामसन्निशाम्बरम्। छायाशुष्कं सप्तरात्रं कृत्या तु तदनन्तरम्।। भूमावपतितं चैव कपिलामूत्रगोमयम्। पुनरेककराद् ग्राह्यं भाण्डमध्ये विनिःक्षिपेत्।। नदीजलसमायुक्तं कुर्यान् मण्डलमेव च। हिरद्रास्तत्र निःक्षिप्य पूजयेद् बगलामुखीम्।। चुह्लिकोपिर तद् भाण्डं रवौ रात्रौ विनिःक्षिपेत्। द्विगुणं जलसंयुक्तं कुर्यान् मेलनमेव च।।

अश्वत्थस्येन्धनेनैव कुर्यान् मृदु यथा भवेत्। गोमयाद्धि हरिद्राकं विभज्य तदनन्तरम्।। क्षालयेद् वारिणा सद्यश्छायाशुष्कं तु कारयेत्। हरिद्रा मणिमयं कृत्वा अष्टोत्तरशतं तु वा।। पुण्यस्त्रीनिर्मितं सूत्रमेकैकं छेदयेत् सुधीः। तां मालिकां रवौ वारे अभिषिञ्च्याऽमृतेन तु।। अर्चयेन् मूलमन्त्रेण षोडशैरुपचारकैः। निवेदयेत् पायसं च शर्कराऽऽज्यसमन्वितम्।। सहस्रं प्रजपेदादौ पञ्चाशद् वर्णमादरात्। एकाक्षरमहामन्त्रैर्बगलानामपावनैः अयुतं प्रजपेन् मन्त्रं मालिकासिद्धिमाप्नुयात्। एवं च मालिकां कुर्यान् मन्त्रसिद्धिमपेक्षताम्।। हरिद्रा वस्त्रमाच्छाद्य सिद्ध्यर्थ जपमाचरेत्। हरिद्रामयपुष्पाणि हरिद्रामयचन्दनम्।। समर्पयेदलंकृत्य जपं रात्रौ समाचरेत्। देवीभूत्वा जपेद् देवीमर्चनाविधिवद् यदि।। प्रमादान् मालिका भूमौ पतिता चेत् कुमारक। पुनः पूजा प्रकर्तव्या पूर्ववज् जपमाचरेत्।। अथ वक्ष्ये प्रयोगं च मालिकालक्षणं ततः। पञ्चविंशतिभिर्मोक्षे त्रिंशद् वै पौष्ट्यकर्मसु।। वशीकरणसम्मोहे कलासंख्या च मालिका। विंशतिःस्तम्भने विद्याद् बिना मेरुं च मालिकाम्।। द्वेषोच्चाटनकर्माणि मालिका चाऽर्कसंख्यया। ज्वररोगादिंपीडार्थं पञ्च चैव चतुर्दश।।

भृगुवारे च संगृह्य द्रव्याण्येतानि पुत्रक। हरिद्रां पङ्कजं चैव कस्तूरीं च मृगाङ्कम्।। श्रीखण्डं चाऽगुरुं चैव रोचनां कुसुमं समम्। शीतलेनैव जलेनैव कुमारक।। मर्दयेत् तेन कुर्यात् पुत्तलीं च चतुरङ्गुलमानतः। सदा च सुन्दरीं देवीं द्विभुजां बगलामुखीम्।। हस्ते वज्रधरां देवीं पानपात्रं च विभ्रतीम्। पीतवर्णा मदाऽऽघूर्णामर्धचन्द्रां च पुत्तलीम्।। प्राणप्रतिष्ठां कुर्याद् वै संस्थाप्य विधिनाऽर्भक्। अखण्डतण्डुलेनैव हरिद्राऽक्षतमेव च।। कृत्वा चैकाक्षरीमन्त्रैरक्षतान् मूर्ध्नि निःक्षिपेत्। प्रत्यहं युग्मपूजां च कुर्याच्चैव विचक्षणः।। एवं कृत्वा तत्त्वलक्षं देवीप्रत्यक्षमाप्नुयात्। यस्मै कस्मै न दातव्यं न वक्तव्यं कदाचन।। एवं पूजाविधिं कृत्वा दुर्वासा मुनिराट् पुरा। तत्त्वलक्षप्रकारेण ग्रन्थोक्तं फलमाप्नुयात्।।

॥ इति सांख्यायने चतुर्विंशतिः पटलः॥

### ९. योगविधिवर्णनम् विकास स्वीतिकास समिति ।

योगशास्त्रस्य चित्तवृत्तिनिरोधपर्यवसितत्वात् अस्मित्रेवाऽथें पतञ्जलिना सूत्रितत्वाच्च "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" इति चित्तवृत्तीनां निरुद्धे सत्येव योगसिद्धेः। प्रकृतोपयोगिमन्त्रसाधने योगस्य करणत्वमवेक्ष्य किञ्चित् प्रस्तूयते। यतश्चित्तैकाग्र्यमापन्ने मन्त्रार्थसाक्षात्कारः। आदौ – अहिंसा-सत्यमस्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहशौचसन्तोषाऽऽदियमनियमान् अनुतिष्ठन् साधको जपादि कुर्वन्नासनमनुतिष्ठेत् –

### आसनं च योगार्णवे

ततो गुह्ये वामपादपार्षणं तु विनियोजयेत्। तस्योपरि महादेवि दक्षपार्षिण निवेशयेत्।। ऋजुकायशिरोग्रीवः काकचञ्जुपुटेन च। अकारेण बहिर्वायुं जठरे परिपूरयेत्।। अङ्गुलीभिर्दृढं बध्वा करणानि समाहितः। अङ्गुष्टाभ्यामुभे श्रोत्रे तर्जनीभ्यां विलोचने।। नासारन्ध्रेमध्यमाभ्यामन्याभिर्वदनं दृढम्। बध्वा मे प्राणमनसामेकत्वं तन्मनुं स्मरन्।। धारयेन् मारुतं सम्यग् योगोऽयं योगिवल्लभः। योनिमुद्रा

इयं मुद्रा जपविधाविप कर्तव्या। ततः सिद्धासने उपविश्य प्राणायाममाचरेत्। यतो मनसो निरोधः प्राणाधीनत्वात्। हृदयमारभ्य नासाद्वारपर्यन्तं प्राणगतिः। अधोभागे अपानः, नाभिमण्डले समानः, कण्ठदेशे उदानः, सर्वशरीरवृत्तिः व्यानः। वामे यदा प्रवहति, तदा शीतांशुः, दक्षिणे भास्करः, साम्ये अग्निः। तद्गतिमूलास्तिस्रो नाड्यः। इडा पिङ्गला सुषुम्णेति प्रसिद्धाः। एतास्वेव योगः प्रवर्तते। नाडीत्रयेऽपि सुषुम्णैव मुख्या तन्मध्ये चित्रा नाडी, तन्मध्ये पञ्चभूताऽधिदेवता, ब्रह्मविष्णु रुद्रेश्वरसदाशिवसंज्ञकाः। चित्रायामेव षट्चक्राणां चिन्तनं योगिन: कुर्वन्ति। उक्तं च -

सुषुम्णा संनिविष्टा च तन्मध्ये चित्ररूपिणी। तत्रैव ग्रथितं पद्ममूलादि पञ्च पद्मकम्।। मूलद्वारं समाऽऽच्छाद्य स्थिता नागस्वरूपिणी। वायुना भिद्यते मुक्तं दृढं चित्रा नयेत् ततः।। इत्यादि

मूलाऽऽधारे त्वगादिधातुवेष्टितं चतुर्दलं पाण्डुरवर्णं पद्मं, तत्कर्णिकामध्ये योनिः, तन्मध्ये सकलप्रपञ्चचनिमित्तोपादानभूता कुण्डलिनी चिन्मयी शक्तिः। त्रिगुणिताऽऽदिरूपेण सूर्येन्दुवैश्वानराणां मूलभूता भ्रमति, या त्रिकोणमुत्थिता सुषुम्णा नाम नाडी वीणादण्डाख्यस्य पृष्ठवंशस्य पुरोभागमवलम्ब्य ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तमूर्ध्वाऽऽकारा तिष्ठति, प्राणायामस्य दृढतराऽभ्यासेन सा जागर्ति, यतोऽविद्यया निद्रिता, तेन सर्पाऽऽकृति परित्यज्य सुषुम्णामार्गेण ऊर्ध्वमुत्क्रामित, आधारात् स्वाधिष्ठानं ततो मणिपूरं ततोऽनाहतं, ततो विशुद्धं, ततः आज्ञां ततः सहस्रारं प्राप्य परमशिवे लीयते, मन्त्रविज्ञाने नादरूपा वर्णमयीति द्विधा स्मर्यते। मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं च तदैव सम्पद्यते, चक्राणां विशेषविवरणमुपरिष्टाद् वक्ष्यामः। अष्टकुम्भकमभ्यस्य मूलबन्धमुङ्घीयानं जालंधराख्यं बन्धत्रयं सम्पाद्य प्राणान् नियन्तुं हठाऽभ्यासिनां प्रसस्तोपायः। प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्येति सूत्रितत्वाच्च। ततः धारणासु च योग्यता मनसः। ततः "क्षीयते प्रकाशाऽऽवरणम्" इत्यादि सूत्रैः प्रत्यपादयन् माहात्म्यं प्राणानिरोधस्य। एवमनुष्ठिते विक्षेपाऽभावस्ततो देशबन्धश्चित्तस्य, धारणेति धारणाऽभ्यासः प्रवर्तते, बाह्ये आभ्यन्तरे च तद्विषय:। बाह्ये स्फुट: आभ्यन्तरे शाम्भवी-आदिमुद्राभि:।

"अन्तर्लक्ष्यो बहिर्दृष्टिर्निमेषोन्मेषवर्जितः"। एषा हि शाम्भवी मुद्रा सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।

तथा -

त्यजेत् शैथिल्यमङ्गानां नासाग्रे रोपयेद् दृशौ।
मुखं विवृणुयात् किञ्चचिद् दन्तैर्दन्तान् न च स्पृशेत्।।
रसनामन्तरा कुर्याद् अनङ्गे धारयेन् मनः।
इयं सा परमा मुद्रा निरालम्बेति पञ्चमी।।

अनङ्गे आधारस्थयोनिमण्डले। एवं धारणां कुर्वन् ध्यानाऽभ्यासे योग्यतां प्राप्नोति, ध्याने सिद्धे समाधिरिति पतञ्जलिक्रमः। अपरं च योगिनां चिन्तनक्रममेवाऽऽह –

इन्दुर्ललाटदेशे च तदूर्धे बोधिनी स्वयम्।
तदूर्धे भाति नादोऽसौ अर्धचन्द्राऽऽकृतिः परः।।
तदूर्धे च महानादो लाङ्गलाऽऽकृतिरुज्वलः।
तदूर्धे च कला प्रोक्ता आञ्जीति योगिवल्लभा।।
उन्मनी तु तदूर्धे च यद् गत्वा न निवर्तते।
(आज्ञाचक्रादूर्ध्वभागे सर्वमेतदवगन्तव्यम्।।)
सिच्चिदानन्दविभवात् सकलात् परमेश्वरात्।
आसीच्छक्तिस्ततो नादो नादाद् बिन्दुसमुद्भवः।।
पराशक्तिमयः साक्षात् त्रिधाऽसौ भिद्यते पुनः।
बिन्दुर्नादस्तथा बीजं तस्य भेदाः समीरिताः।।
बिन्दुर्नादात्मको बीजं शक्तिर्नादस्तयोर्मिथः।
समवायः समाख्यातः सर्वाऽऽगमविशारदैः।।

पराशक्तिमयः पर शिवस्तेन शिवशक्तिमयो बिन्दुरयं ललाटोध्वें स्थितः बिन्दुर्नादात्मकः शिवात्मकः। बीजं शक्तिबोधिनीरूपम्। नादस्तयोः समवायः सम्बन्धः क्षोभ्यक्षोभकरूपः, तेनाऽयं क्रियाशक्तिरूपः। एतात्तयोध्वें महानादः पूर्वोपदर्शितः। तदूर्ध्वे च कला कलाशक्तिराञ्जीति तिर्यग्रेखारूपमात्राऽऽकारा इयं शक्तिः सृष्ट्यादावाविर्भूता।

यत्र गत्वा हि मनसो मनस्त्वं नैव विद्यते।
उन्मनी सा समाख्याता सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।
सहस्रारकर्णिकायां चन्द्रमण्डलमध्यगा।
सर्वसंकल्परहिता कला सप्तदशी भवेत्।।

उन्मनी नाम तस्या हि भवपाशनिकृन्तनी। ततो हि व्यापिका शक्तिराञ्जीति यां विदुर्जनाः।। समनीमूर्ध्वस्तस्या उन्मनी तु तदूर्ध्वतः।

आज्ञाचक्रादूर्ध्वं द्वितीयबिन्दुः शिवरूपः, अर्धमात्रा बोधिनी शिवशक्ति समवायरूपा, अर्धचन्द्राकृतिर्नादः। तदूर्ध्वे समनी, ततः उन्मनीति सप्तकारणरूपाणि वर्तन्ते।

मूलाधारं स्वाधिष्ठानं, मणिपूरम्, अनाहतम्।
विशुद्धम् आज्ञाचक्रं च बिन्दुर्भूयः कलापदम्।।
निबोधिका तथोर्ध्वेन्दुं नादो नादान्त एव च।
उन्मनीं विष्णुवक्त्रम् च ध्रुवमाण्डलिकः शिवः।।
इत्येतत् कथितं देवि षोडशाऽऽधारमुत्तमम्।
अकुलेश्वरदेवस्य सम्बन्धः प्रथमः स्थितः।।
रूपाऽतीतः परो बिन्दुः शक्त्यावेष्टितभास्करः।
अतो नादो विरोधी च अर्धचन्द्रसमुत्क्रमात्।।
एतत्तु पञ्चमं प्रोक्तं ज्ञानरत्नं महोदयम्।
तत्र तद्दक्षिणं षट्कमाज्ञापूर्वं कुलोद्भवम्।।

इति षडाधाराः सर्वमेतत् कुण्डलिन्या जागरणे सित ज्ञातुं शक्यते।

### १०. सहस्रार-निर्णयः

सुषुम्नानाड्यूध्वें सहस्रदलपद्मं शुक्लवर्णम् अधोमुखम्, रक्तिकंजल्कशोभितम् अकारादिक्षकारान्तपञ्चाशद्वर्णैः शुक्लाभैर्वि-शत्याऽऽवर्तनेन सहस्रसंख्याकैर्युक्तं सहस्रदलम्, एतत् कर्णिकायां हंसस्ततः परमिशवरूपो गुरुः ततः सूर्यमण्डलम् चन्द्रमण्डलं ततो महावायुः ततो ब्रह्मरन्ध्रम्, ततो महाशिङ्किनी, चन्द्रमण्डले विद्युदाकारं

त्रिकोणं तन्मध्ये मृणालतन्तुशतभागैकभागरूपा सूक्ष्मा चन्द्रस्य षोडशी कला, अधोमुखी रक्तवर्णा, तत्क्रोडे केशाग्र सहस्र भागैक भागरूप सूक्ष्मा निर्वाणकला रक्तवर्णा अधोमुखी, तद्धस्ताद् अव्यक्तनादात्मकनि-बोधिकाऽऽख्यविहः तदुपिर निर्वाणकला क्रोडे परिबन्दुः शिवशक्त्यात्मकः। अस्य केशाग्रकोटिभागैक भागरूप-सूक्ष्मतेजोहंसरूपा निर्वाणशिक्तः अस्या हंसो जीवः, बिन्दोर्मध्ये शून्यं ब्रह्मपदम्।

मतान्तरम् – सहस्रदलकर्णिकामध्ये चन्द्रमण्डले अकथादि त्रिकोणं, तन्मध्ये त्रिकोणसमीपे त्रिबिन्दुः तस्याऽधो बिन्दुर्हकारः पुरुषात्मकः, उर्ध्वबिन्दुद्वयरूपविसर्गः सकारः प्रकृतिरूपः। एतदुभयाऽऽत्मको हंसिस्नबिन्दुरूपेण प्रकाशते, तन्मध्ये अमा कला, तत्क्रोडे निर्वाणशक्तिः तस्या मध्ये परं ब्रह्म। उक्तं च –

तेजोरूपा प्रिया तस्य ब्रह्मवर्त्मसुदुर्लभा। परमं ब्रह्म यत्पादपङ्कजद्युतिवैभवम्।। अमाषोडशभागेन देवि प्रोक्ता महाकला। संस्थिता परमा माया देहिनां देहधारिणी।।

#### ि हार्कि अन्यच्य संक्षेपेणाऽऽह उमानन्दे हार

तन्मध्ये तु त्रिकोणं तु विद्युदाकारमुत्तमम्। बिन्दुद्वयं च तन्मध्ये विसर्गरूपमव्ययम्।। तन्मध्ये शून्यदेशे च शिवः परमसंज्ञकः।

### महाभाग बर् शिवास्तन्त्रशास्त्रेषु निर्दिष्टा

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः। ततः परशिवो देवि षट् शिवाः परिकीर्तिताः।।

श्रीशङ्कराचार्यैरप्युक्तम् - "परमशिवपर्यङ्कनिलयाम्"। अयं सुन्दरीक्रमः। बगलाक्रमे उक्तम् - "पीतवासोमते पुत्र पञ्चप्रेतगतां स्मरेत्" "बगलां सुन्दरीं ध्यायेत्", "सुधासिन्धोर्मध्ये" "मध्ये सुधाब्धिमणि-मण्डपरत्नवेदी" त्यादिभिरुभयोरभेदः। अस्यामवस्थायां शिवशक्त्योरभेद-मनुभवित योगी। इदमेव सामरस्याऽऽख्यं महामाहेश्वरैः कथ्यते। वेदान्तसम्प्रदायविद्भिराचार्यैरिप "तत्त्वमिस" "अहं ब्रह्मास्मि" इति वचनैरिदमेव परमं तत्त्वमुपदिश्यते। उक्तं च संङ्केतपद्धतौ –

अकारः सर्ववर्णाऽऽद्यः प्रकाशः परमः शिवः। हकारोऽन्त्यः कलारूपो विमर्शाऽऽख्यः प्रकीर्तितः।। उभयोः सामरस्यं तु परस्मिन् महसि स्फुटम्।

अयमेव परमपुरुषार्थपदवाच्यः यं प्राप्य कुतकृत्यो भवति। उक्तं हि गीतायाम् -

''एतद् बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात् कृतकृत्यश्च भारत।'' ॥ इति विरम्यते॥

### ११. षट्चक्रनिरूपणम्

पूर्वं सुषुम्णा नाडी उक्ता, तदनन्तरे चित्रा नाम नाडी अतिसूक्ष्मा, तस्यामेव षट् चक्राणि ग्रथितानि । तेषु –

#### प्रभावन प्रमाणिकालय सिवार प्रथम चक्र ह

(१) प्रथमं मूलाधाराऽऽख्यं चतुर्दलात्मकं पीतवर्णं, वं शं षं सं इति दलागताश्चत्वारो वर्णाः, पूर्वीदिक्रमेण तेषां न्यासः, पार्थिवं लं बीजं, चतुष्कोणात्मक यन्त्रं, डािकनी देवी, ब्रह्मदेवश्चक्राधिपत्येन ध्येयः, स्वयम्भूनामकं लिङ्गाऽऽख्यं ज्योतिः, सार्धित्रवलयां कुण्डलिनीं तद्वेष्टितां चित्कलां चपलां तत्र चिन्तयेत्। तज्जागरणा हंसमन्त्रेण हुंकारेण वा गुरुपिद्षष्टमार्गेण, "यतोऽविद्यया सा सुप्ता" विसतन्तुनिभां चित्रान्तर्गतां तां कृत्वा सम्यगभ्यसेत्। मुहूर्तद्वयाऽभ्यासेन प्रकाशानुभूतिः सर्वाः सिद्धयश्चाऽऽविर्भवन्ति। यथा शरीरस्य कािन्तः नादव्यक्तः, अिनः

प्रदीप्तो भवति, इन्द्रियपाटवम्, नैरुज्यम्, दुःखराहित्यम्, अतीताऽनागतान् जानाति, अश्रुतशास्त्राणि वेत्ति, स्वेच्छाविहारित्वं जायते, स्तम्भक्षोभौ भवतः, बगलाया मुख्यं चिन्तनम् अत्रैव, ''बीजं स्मरेत् पार्थिवम्'' इति वचनात।

#### द्वितीय चक्र

(२) तदूध्वें द्वितीयं षड्दलाख्यं पद्मं लिङ्गमूले स्वाधिष्ठानाऽऽख्यं बालाऽऽदित्यिनिभं बं भं मं यं रं लं इति वर्णैर्युक्तं, विष्णुदेवः, चक्राधिपा देवी राकिणी, वं वारुणं बीजम् अर्धचन्द्राकृति यन्त्रम, एतिच्चन्तनेन विगतजराऽऽमयः, शुचिः, बिन्दुधारणे दृढः, मृत्युभीतिरहितः, कान्तिमान्, अश्रुतशास्त्रज्ञानवान्, अनङ्गसदृशो योगी भवति जले चाऽव्याहतगितः।

#### तृतीय चक्र

(३) तृतीयं मणिपूराऽऽख्यं नीलाञ्जनप्रख्यं त्रिकोणयन्त्रं रं बीजभूषितं दशदलोपेतं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं इति दश वर्णेः संयुतं, रुद्रो देवः, चक्राधिपा लाकिनी देवी, तत्त्वं विहः, एतिच्चन्तनेन वश्याऽऽकर्षणिनिर्विषीकरणे तथा तिरस्करिणीविद्यायां सिद्धिः मृतशरीरोत्थापने प्रवेष्टुं च योगी समर्थो भवति पातालसिद्धिश्चेत्यादयः प्रभावा भवन्ति।

### हा है है लिए की जिसके एक **चितुर्थ चक्र**ीए है कि विकास का कि

(४) चतुर्थम् अनाहतं चक्रं तृतीयान् मणिपूरकाद् ऊर्ध्वं हृदयस्थितम् इन्द्रगोपकीटनिभं रक्तवर्णं, षटकोणयन्त्रे वायुबीजं यं, काकिनी चक्राधिपा देवी, ईश्वरो देव:, कं खं गं घं डं. चं छं जं झं ञं टं ठं इति द्वादशवर्णेर्भूषितं, बाणाऽऽख्यं लिङ्ग चात्रैव, एतस्य चिन्तनेन त्रिकालविषयकं ज्ञानं, दूराच्छ्रवणं, योगिनां सिद्धानां च सम्मेलनं सिध्यति।

#### पञ्चम चक्र विकास स्थापन १ १

(५) कण्ठदेशे पञ्चमं विशुद्धाऽऽख्यं पद्मं धूम्राभं वृत्ताऽऽकारेण यन्त्रेण युक्तं हं बीजलिसतं, व्योम तत्त्वं, जीववासोऽत्रैव अणुपिरिमितः किलकाकारः, शािकनी देवी, सदािशवो देवः, अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः इति क्रमेण वर्णन्यासः एतिसमन् युक्तिचत्तो योगी त्रिकालदर्शी, रोगरिहतः, सदा युवा, कृष्णकेशः, वीतुमृत्युः सन् चिरं जीवित। एतदभ्यासी योगी यदि क्रुध्यित, सम्पूर्णं जगत् संचालयित, तं शमियतुं ब्रह्मादयोऽपि असमर्थाः भविन्त।

#### षष्ठ चक्र

(६) आज्ञानामकं षष्ठं चक्रं भ्रूमध्ये स्थितं शारदीयकमलसंकाशं प्रणवबीजेन युक्तं, मनसो वासोऽत्र, हािकनी देवी, इतरिलङ्गम् अर्धनारीश्वरो देव:, हकारसकारयुक्तः, एतिस्मन् कृताभ्यासो योगी पूर्वजन्मकृतािन कर्माणि स्मरित, दूरदर्शनं श्रवणं च भवित, मृतश्चेन्मोक्षलाभः। हािकन्या उध्वं त्रिकोणं, प्रणवो मनः इतरिलङ्गम्, निरालम्बया मुद्रया खेचरीित नाम्न्या धारणया परमाऽऽनन्दसुखािप्तः एतदुपिर सहस्राराख्यं पद्मं। कुण्डलिन्या ब्रह्मपदं प्राप्य कुलाऽमृतं रसं निपीय पुनस्तस्याः प्रत्यावर्तनम कार्यम्। यथा –

पीत्वा दिव्यामृतौधं पुनरिप च विशेन् मध्यदेशं कुलस्य। चक्रे चक्रे क्रमेणाऽमृतरसविसरैस्तर्पयेत् कुण्डलीं ताम्।।

तथोक्तं श्रीशङ्कराचार्ये -

सुधाधाराऽऽसारैश्वरणयुगलान्तर्विगलितैः । प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरिप रसाम्नायमहसा।। अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयम्। स्वमात्मानं कृत्वा स्विपिष कुलकुण्डे कुहरिणि।।

इत्यं कुलाऽकुलयोर्विस्तारः धारणाध्यानविषय

#### १२. नादाऽभ्यासवर्णनम्

सामरस्याऽभिधेयात् परमतत्त्वसकाशात् ज्ञानक्रिययोः सिसृक्षावशात् प्रादुर्भावः ज्ञानक्रियोपाधिमत्योः शिवशक्त्योः प्रथमः समुल्लासः बिन्दुः, तस्मान्नादः तस्माच्च क्रमेण सर्वा सृष्टिरिति सिद्धान्तः। स्थूलसूक्ष्मभेदेन षट्त्रिंशत्तत्त्वानि जायन्ते इत्यादि प्रस्तारः। अस्मिन् नादाभ्यासनाम्नि योगे नादाभ्यासेनैव परम तत्त्वसाक्षात्कारो मन्यते। स नादो द्विधा वर्णाऽऽत्मको ध्वन्यात्मको वा। वर्णाऽऽत्मकरूपेण विवृतस्य तस्य मन्त्राऽऽत्मकः परिणामः, यस्याऽभ्यासः मानसिकोपांशुवाचकभेदेन जपात्मकः प्रकारो, यस्येयता ग्रन्थेन उपदिष्टोऽपरो नादः तस्य विधिरिदानीं प्रदुश्यते – योनिमुद्राभ्यासशीलस्य योगिनः सुषुम्णाऽन्तर्गतः प्राणो भवति तेनाऽऽनन्दजनको नादः सहसाऽऽविभवति। तदुक्तम् –

आदौ मत्तालिमालागलपथविगलत्तारझंकारहारी।
नादोऽसौ वंशिकांस्याऽनिलभिरतलसद्धंशनिस्वानतुल्यः।।
घण्टानादानुकारी तदनु जलनिधिध्वानधीरो गभीरः
गर्जत्यर्जन्यघोषः पर इह कुहरे वर्तते ब्रह्मनाङ्याः।।१।।
विजितो भवतीह तेन वायुः, सहजो यस्य समुत्थितप्रणादः।
अणिमादिगुणा भवन्ति तस्याऽमितपुण्यस्य महासुखास्पदस्य।।२।।
सुरराजतनूजवैरिरन्ध्रे विनिरुध्य स्वकराऽङ्गुलिद्धयेन्।
जलधेरिव धीरनादमन्तः प्रसवन्तं सहसा शृणोति मर्त्यः।।३।।
(कर्णे - सुरराज इन्द्रः तस्य तनूजः अर्जुनः तस्य वैरी कर्णः)
परिभावयतोऽपि नादमेनं त्रिदशाऽधीशतनूजवैरिजातम्।
सततं भवतीह तस्य जन्तोर्गुणसम्पत्तिरपेतकल्मषस्य।।४।।
शृङ्गाण्यङ्गुलिभिर्निरुध्य विधिवत् कोदण्डयोः पण्डितः।
मध्ये बद्धमरुन्निरुध्य वृषभश्रेष्ठं च षष्ठेन्द्रियम्।।
साक्षात्तत्क्षणमेव पश्यित शनैस्त्रय्यन्तगीतं परम्।
योगी पश्यित दिव्यरूपममलं ब्रह्माऽऽख्यशुभ्रं महः।।५।।

# १३. नादसाधनरीतिः प्राप्त स्वामानामा स्वाप्त कर्मा । कार्याः

नास्ति नादात् परो मन्त्रो, न देवः स्वात्मनः परः। नानुसन्धेः परा पूजा, निह तृप्तेः परं सुखम्।।

इति प्रमाणात्रादानुसन्धानस्य श्रैष्ठ्यं गम्यते। प्रथमं द्वे मुद्रे कर्णच्छिद्रमुद्रणार्थं निर्मापयितव्ये। तद्द्रव्याण्येवम् – कस्तूरिका एकरित्तकापरिमिता, जायफलं द्विरित्तकापरिमितम् जावित्री त्रिरित्तका परिमिता, लवङ्गानि षट्रितिकापरिमितानि एतत् सर्व चूर्णीकृत्य जम्बुफलाऽऽकृत्या मुद्रानिर्माणं तदनन्तरं पट्टसूत्रैः संग्रथ्य अभ्यासकाले कर्णयोधिरणीये। सूर्योदयात् प्रागुत्थाय शौचादिकार्यं कृत्वा स्वस्थेन मनसा अभ्यासः कर्तव्यः। चिणीति प्रथमः, चिचिणीति द्वितीयः, घंटानादस्तृतीयः, शङ्गादश्चतुर्थः पञ्चमस्तन्त्रीनादः, षष्ठस्तालनादः, सप्तमो वेणुनादः, अष्टमो मृदङ्गनादः, नवमो भेरीनादः, दशमो मेघनादः। मूलाधारादारभ्य सहस्रारपर्यन्तं शुद्धस्फटिकसंकाशं नादस्वरूपं चैतन्याऽऽत्मकं ध्रयेयत्वेनाऽभिमतम्। हंसमन्त्रस्य अभ्यासः। अभ्यासकर्तुः शरीरोपि दश प्रभावास्वेत्थं भवन्ति।

प्रथमे चिंचिणीगात्रं, द्वितीये गात्रभञ्जनम्।

तृतीये खेदनं याति, चतुर्थे कम्पते शिरः।।

पञ्चमे स्रवते तालु, षष्ठेऽमृतनिषेवणम्।

सप्तमे गूढ़िवज्ञानं, परा वाचा तथाऽष्टमे।।

अदुश्यं नवमे देहं दिव्यं, चक्षुस्तथाऽमलम्।

दशमे परमं ब्रह्म भवेद् ब्रह्मात्मसित्रधौ।।

इति

योगेन स्तब्धछिन्नाऽऽदिदोषदुष्टा मन्त्राश्चैतन्या भवन्ति, सिद्धिश्चाऽऽसीदिति। ''जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः'' इत्यत्र पतञ्जलिना मन्त्रेण सिद्धयः प्रतिपादिताः। भोजेन मन्त्रसिद्धेरानुसिङ्गकं प्रतिपादितं तच्च सूत्रकारविरुद्धमेवाऽवगन्तव्यम्। योगो द्विविधः सिद्ध्यात्मको, मोक्षाऽऽत्मकश्च, सिद्धिरूपो योगो लौकिकैश्वर्यप्रदः तस्माद् विरक्तस्य मोक्ष इति तत्त्वं लक्ष्यीकृत्य योगप्रवृत्तिः। योगसम्पन्न एव महाविद्यातत्त्वं सम्यग् वेत्ति, अतो महाविद्यासाधने उपयुज्यते।

#### १४. कुण्डमण्डपविधिः

कर्मणः सिद्धौ साग्निकानामेवाऽधिकारः। ये च मुमुक्षवस्तेऽपि निष्कामतया देवताऽर्पणबुद्ध्या विहितं कर्म कुर्वन्तः सिद्धि समियन्ति। तदुक्तं गीतायाम् –

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। अग्निकार्ये कुण्डानामेव विधानं प्रधानम्। आदावतः कुण्डविधिः कथ्यते –

विद्वेषे चाऽभिचारे च त्रिकोणं कुण्डमिष्यते।
द्विमेखलं कोणमुखं हस्तमात्रं तु सर्वतः।।
उच्चाटनं तु नैऋत्यां शत्रुपक्षस्य कारयेत्।
उत्सादनं तु वायव्यां देवानामि कारयेत्।।
शत्रूणां तापने शस्तं योन्याऽऽख्यमिग्नकोणगम्।
अर्धचन्द्रं च याम्यायां शत्रुणां मारणे स्थितम्।।
त्रिकोणं नैऋते कुण्डं रिपूणां व्याधिवर्धनम्।
दाहायाऽग्नौ च विद्वेषे कुण्डं पूर्णेन्दुसन्निभम्।।
चतुरस्रं तु कर्तव्यं देषाऽदौ तु विचक्षणेः।
कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा तत्र कार्याणि साधयेत।।
चतुरस्रे भवेद् वश्यमाकर्षे च त्रिकोणकम्।
कर्षणे स्तम्भने देवि, विद्वेषं च त्रिकोणकम्।
अथैवोच्चाटनं प्रोक्तं षट्कोणे मारणं स्मृतम्।
उदीच्यां पौष्टिके कुण्डं वारुण्यां शान्तिकाऽऽदिषु।।

उच्चाटे चाऽनिले कुण्डे याम्ये च मारणं भवेत्।
मानहीनाऽऽदिकं दोषं नास्ति कुण्डेऽभिचारके।।
शुभेषु स्युर्विवाहान्ताः क्रियास्ताः क्रूरकर्मणि।
मारणान्ताः समृद्दिष्टा बह्नेरागमवेदिनः।।
ततो राज्ञाऽतिजिद्धासमथर्वश्रुतिपारगम्।
बहुभिर्द्रविणैर्वश्रैर्नानारत्नैर्विभूषणैः ॥
पूजियत्वा ततः पश्चाद् वृणुयाद् विधिना द्धिजम्।
यूनोऽप्युत्साहसंयुक्तः सर्वरक्षापरायणः।।
यत्नतो मारणं कुर्याद् राज्ञः कर्म हितेच्छया।
देशरक्षणधर्मेण न स्वयं पापभाग् भवेत्।।

उक्तं च तन्त्रराजे

दशास्थितिं च संवीक्ष्य कुर्यान् मारणमात्मवान्।
अनवेक्ष्य कृतं कर्म स्वात्मानं हन्ति तत्क्षणात्।।
ब्राह्मणं धार्मिकं भूपं विनतामास्तिकं नरम्।
वदान्यं सदयं नित्यमिभचारे न योजयेत्।।
योजयेद् यदि वैरेण प्रत्यगेनं निहन्ति तम्।
अभिचारस्य विषयानाकर्णय वदामि ते।।
पापिष्ठान् नास्तिकांश्चरान् देवब्राह्मणनिन्दकान्।
प्रजानां घातकान् सर्वक्लेशकर्मसु संस्थितान्।।
क्षेत्रवित्तधनस्त्रीणामाहर्तारं कुलाऽन्तकम्।
निन्दकं समयानां च पिशुनं राजघातकम्।।
विषाऽग्निक्षुरशस्त्राद्यौहंसकं प्राणिनां सदा।
नियोजयेन् मारणेषु कर्मस्वेतैर्न पातकी।।
कृत्वाऽऽशु मारणं कर्म तदन्ते स्वधनाऽर्धतः।
पादतो वा गुरुं विप्रानाराध्य स्वेन नित्यया।।
अभिषञ्च्य ततो विद्यां जपेल् लक्षं हिवष्यभुक्।

### कुण्डदिङनियम विशेष आर्थ

शान्तिक पौष्टिक चैव होमः स्याद् योग्यसाधनैः। कार्यं प्राग्वदनेनाऽथ सौम्येन वदनेन वा।। आकृष्ये वायुकुण्डे च कौबेरीदिङ्मुखेन तु। नैऋतीदिङ्मुखस्तिस्मन् कुण्डे विदेषणे हुनेत्।। आग्नेयीदिङ्मुखस्त्वेतत्कुण्डे मारुतकेऽिपवा। उच्चाटने हुनेन् मन्त्रीं मारणे याम्यादिङ्मुखः।। जुहुयाद् याम्यकुण्डे तु मन्त्री तत्साधनैस्ततः। वज्रलाञ्छितकुण्डे तु ग्रहभूतिनवारणे।। वायव्यदिङ्मुखो वश्ये कुण्डे योन्याऽऽकृतौ हुनेत्। वज्रलाञ्छितकुण्डे तु स्तम्भे प्राग्वदनो हुनेत्।।

होमद्रव्यादिकं बगलापटले षट्कर्मदीपिकोक्तविधाने कथितम्, स्रुक्सुवादि तथा होममुद्रादि प्रयोगानुकूलं ज्ञातव्यम्।

#### मण्डपकरणम् –

अथ पूजागृहस्य पूर्वस्यां दिशि ईशाने कौवेर्यां वा चतुरस्रमण्डलं कुर्यात्। नवहस्तपरिमितं सप्त पञ्च वा तोरणादिशोभितं कार्यम् चतु द्वरिम्, मध्ये अरितनमात्रोन्नतां वेदिकां रचयेत्। अन्यपूर्वाऽऽद्यष्टदिक्षु चतुरस्रं योनिम् (अश्वत्थपत्राऽऽ कारम्) अर्धचन्द्राऽऽकारं त्रिकोणं वृत्तं षट्कोणम् पद्माऽऽकारम् अष्टास्रं पूर्विदशमारभ्य कुर्यात्। आचार्यकुण्डमध्ये वर्तुलं परे तु इन्द्रेशानयोर्मध्ये वृत्तं, वायव्ये पञ्चकोणम् ईशकोणे मण्डलकोणं वा कुर्यात्।

(१) प्रथमं प्राच्ययसूत्रमास्फाल्य तन्मध्ये हि तं धृत्वा तन्मानेन दक्षिणोत्तरदिक्षु सुत्रचतुष्टयमास्फालयेत्। एवं कृते चतुर्हस्तपादोपेतं समं चतुरस्रं मण्डलं भवति। एतत्कुण्डं पूर्व दिगन्तम् इदमेव चतुरस्रम्। (२) क्षेत्रे क्षिप्त्वा बिहिरिह पुरो भूतभागेशमेकम्। कोणाऽर्धाऽर्ध सुनिशितमितभामयेत् संप्रगृह्य।। यावत् कोणं परमि तथा सुत्रयुग्मस्य पातम्। मध्यात् कुर्याद् भवति तदिदं मन्मथावासकुण्डम्।।१।।

इत्यादि कुण्डानां विस्तृतं विवरणं कुण्डार्ककुण्डरत्नावल्ल्यादौ प्रतिपादितं, विस्तरभयादुपरम्यते। उक्तं च –

चतुरस्रं विप्राणां राज्ञामिह वर्तुलं कुण्डम्। विणजामर्धशशाङ्काऽऽकारं त्र्यस्रं तु शूद्राणाम्।। चतुरस्रं सर्वेषां प्रशस्तिमिति केचिदाहुराचार्याः। सर्वप्रधानत्वाच्चतुरस्रमेवोद्धृतमत्र

### १५. कुण्डविशेषप्रयोगः (स्थण्डिलम्)

उत्तमं कुण्डहोमं च स्थण्डिलं चैव मध्यमम्।
स्थण्डिलेन बिना होमं निष्फलं भवति ध्रुवम्।।
षट्कोणं चाष्टकोणं च चतुष्कोणं च पुत्रक।
त्रिविधं स्थण्डिलं चैव वक्ष्येऽहं तु कुमारक।।
लक्ष्मीः शान्तिस्तथा पुष्टिविद्या विघ्ननिवारणी।
चतुरस्रे हुनेत् कुण्डे तत्र तत्प्रतिपादिते।।
वशीकरणसम्मोहे वाणिज्ये द्रव्यसंग्रहे।
कीर्तिकामस्तु जुहुयाद् गुरुमार्गेण बुद्धिमान्।।
विद्धेषणे तु जुहुयाद् वर्तुले कुण्डमध्यमे।
उच्चाटने तु जुहुयात् षट्कोणाख्ये च कुण्डके।।
मारणे चाष्टकुण्डे च तत्तत्कर्मानुसारतः।
तत्तद्द्रव्येण जुहुयात् तत्तन्मन्त्रेण मन्त्रवित्।।
रक्षार्थं स्थण्डिले होमः षट्कर्मसु कुमारक।
जुहुयाच्छान्तिवश्ये च स्थण्डिले चतुरस्रके।।

विदेशे स्तम्भने चैव जुहुयादष्टकोणके। उच्चाटने च वै पुत्र षट्कोणेषु विधीयते।। प्रादेशं शतहोमं च अरत्नि च सहस्रकम्। हस्तं चाऽयुतहोमे च द्विहस्तं लक्षहोमके।। गुणहस्तं कोटिहोमे कुण्डं निम्नोन्नतं सुत। स्थण्डिलस्य प्रवक्ष्यामि तान्त्रिकोक्तं च लक्षणम्।। अरित्नर्हस्तमात्रं तु द्विरित्नश्च द्विहस्तकम्। शतं सहस्रमयुतं लक्षहोमे त्वयं विधि:।। सर्वत्रैवोन्नतं पुत्र प्रादेशं स्थण्डिलं स्मृतम्। लक्षणं स्थण्डिले कुण्डे न ज्ञात्वा निष्फलं भवेत्।। शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा। मारणानि प्रशंसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः।। नानारोगैः कृत्रिमैश्च नानाचेष्टाक्रमेण च। विषभूतप्रयोगेषु निरासः शान्तिरीरिता।। वश्यं जनानां सर्वेषां वात्सल्यं हृद्गतं स्मरेत्। स्तम्भनं रोधनं पुत्र सर्वकर्मसु निश्चितम्।। मित्रस्य कलहोत्पत्तिर्विद्वेषणमुदाहतम्। बलबुद्धिभ्रमेणोक्तमुच्चाटनमिदं भुवि।। प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहतम्। प्रत्येकमेनं वक्ष्यामि होमयागं सुनिश्चितम्।। दूर्वाहोमं त्रिमध्वाक्तं जुहुयादयुतत्रयम्। रोगकृत्यागृहाऽऽदिभ्यः सद्यः शान्तिकरं भवेत्।। स्यमन्तकुसुमैराज्ययुक्तं वाणाऽयुतं तथा। जुहुयान् निशीथकाले वश्यं सम्मोहनं भवेत्।। बिभीतकसमिद्भिर्वा करञ्जबीजमेव च। नेत्राऽयुतं हुनेत् पुत्र स्तम्भनं परमं मतम्।।

निम्बाऽर्कपत्रहोमेन निम्बतैलेन मिश्रितम्।
नेत्राऽयुतेन विद्धेषं भवेत् पाषाणयोरिप।।
उल्ककाकयोः पत्रं वाणाऽयुतमनन्यधीः।
जुहुयान् नग्नतो रात्रौ भवेदुच्चाटनं सुत।।
तिलतैलेन संसिक्तं शाल्मलीकुसुमं तथा।
लक्षमेकं हुनेद् रात्रौ प्रेताऽग्नौ प्रेतकानने।।
नग्नः प्रेतमुखे भूमौ प्रेतकाष्ठं च बुद्धिमान्।
मृकण्डुसदृशस्याऽिप मारणं भवित ध्रुवम्।।

### षट् कर्मणां विशेषविधानम्

वश्याऽऽकर्षणकर्माणि वसन्ते साधयेत् प्रिये।
ग्रीष्मे विद्वेषणं कुर्यात्, प्रावृषि स्तम्भनं तथा।।
शिशिरे मारणं चैवः शान्तिकं शरिद स्मृतम्।
हेमन्ते पौष्टिकं कुर्यात् चतुःकर्मविशारदः।।
बसन्तश्चैव पूर्वाहणो, ग्रीष्मो मध्याह उच्यते।
वर्षा ज्ञेया पराहणे तु, प्रदोषे शिशिरः स्मृतः।।
अर्धरात्रौ शरत्काल, ऊषा हेमन्त उच्यते।
ऋतवः कथिता ह्येते सर्वे येन क्रमेण तु।।
तद्विहीना न सिध्यन्ति प्रयत्नेनाऽपि कुर्वतः।
अनन्यकारणात् ते हि ध्रुवं सिद्धयन्ति नाऽन्यथा।।

# तिथ्यादिनिर्णयः

सप्तमी, तृतीया, पञ्चमी, द्वितीया तथा बुधेज्यकाव्यसौमाश्च शान्तौ, गुरुचन्द्रयुता षष्ठी, चतुर्थी, त्रयोदशी, नवमीपौष्टिके – (धनजनानां वर्धनं पुष्टि:) अष्टमी दशम्यपि मतान्तरे। दशमी एकादशी भानुशुक्रदिने आकर्षणम्। अमावस्या नवमी, प्रतिपत्, पौर्णमासी, मन्दभानुयुक्ता सती

विद्वेषे। मन्दयुक्ता चतुर्दशी, अष्टमी उच्चाटे। चतुर्दशी, कृष्णपक्षीया अष्टमी, अमावस्या-मारणे। बुधचन्द्रदिनोपेता पञ्चमी, दशमी, पौर्णमासी-स्तम्भने। शुभोदये शुभानि, अशुभोदयेऽशुभानि कुर्यात्।

रौद्रकर्माणि रिक्तार्के, मृत्युयोगे च मारणमिति।

### १६. माहेन्द्रवारुणाऽऽदिनिर्णयः

स्तम्भनं मोहनं वश्यं माहेन्द्रे वारुणे कार्यम्। ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अनुराधा, रोहिणी – एतन् माहेन्द्रं मण्डलम्। उत्तरा भाद्रपदा, मूलं, शतिभषा, पूर्वा भाद्रपदा, आश्लेषा-वारुणं मण्डलम्। विद्वेषोच्चाटने वायुं विह्वयोगे साधयेत्। अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, मघा, श्रवण, विशाखा, कृत्तिका, पूर्वा फाल्गुनी, रेवती-वायुमण्डलसंस्थाः। स्वाती, हस्त, मृग, चित्रा, उत्तरा फाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु-विह्नसंस्थाः।

### मिन्द्र जिल्ला स्वरज्ञानम्

विद्विषां मारणं, स्तम्भं, मोहनोच्चाटनं वशम्। सूर्यनाड्यामियात् सिद्धिमत्युग्रं कर्म चाऽखिलम्।।

तथा +

TRAFFIE

पौष्टिकं, शान्तिकं, प्रीतिमौषधं च रसायनम्। योगाऽभ्यासाऽऽदिकं कर्म सर्वं साध्यं विधोःस्वरे।।

### भूतोदये षट्कर्मनियम

जलं शान्तिविधौ शस्तं, वश्ये विह्नरुदीरितः। स्तम्भने पृथिवी शस्ता, विद्वेषे व्योम कीर्तितम्।। उच्चाटे च स्मृतो वायुर्भूम्यग्नी मारणे मतौ। मण्डलसहितं पञ्चतत्त्वानां चिन्तनं कर्तव्यम्।।

#### विशेष -

परचक्रभयादौ वा तीव्ररूपे महाभये। न कालनियमो गम्यः प्रयोगाणां कदाचन।।

जयाहारितावयम

### क्रिजीविकार लग्नोदये कर्तव्यता अव्यक्तिकार्थ

कुर्याच्य स्तम्भनं कर्म हर्यक्षे वृश्चिकोदये। द्वेषोच्चाटादिकं कर्म कुलीरे वा तुलोदये।। मेषकन्याधनुर्मीने वश्यशान्तिकपौष्टिकम्। मारणोच्चाटने चासौ रिपुभेदविनिग्रहे।।

### दिङनियम

पूर्वे स्तम्भनमुच्चाटमग्नौ सर्वाऽभिचारकम्। याम्ये रक्षसि विद्वेषः शान्तिर्वारुणवायवे।। कुलोत्सादं मरुद्भागे यक्षे कलहविग्रहौ। कुर्वीत नोदितं कर्म यच्चाऽन्यद् ब्रह्मणः पदे।।

### षट्कर्मणां वर्णभेद

वश्ये चाऽऽकर्षणे क्षोभे रक्तवर्णं विचिन्तयेत्।
पृष्टौ कर्वुरकं शान्तौ तथा चाऽऽप्यायने सितम्।।
पीतं स्तम्भनकार्ये हि धूम्रमुच्चाटने सदा।
उन्मादे शक्रकीटाभं कृष्णवर्ण च मारणे।।
इति संग्रहः।

### दिङ्नियमविशेष

जपेत् पूर्वमुखे वश्ये दक्षिणं चाऽभिचारिकम्। पश्चिमं धनदं विद्याद् उत्तरं शान्तिकं भवेत्।।

### जपाङ्गुलिनियम 💮 💮

शान्त्यादिस्तम्भकार्येषु वृद्धाग्रेण च चालयेत्। अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यां तु जपेदाकर्षणे मनुम्।। अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु विद्वेषोच्चाटयोर्जपेत्। कनिष्ठाऽङ्गुष्ठयोगेन मारणे जप ईरितः।।

#### हुं फडादि योजनाप्रकार

शान्तिपृष्टिवशद्वेषाऽऽकुष्टयुच्चाटनमारणे । स्वाहा, स्वधा, वषट्, हुं च वौषट्, फट् योजयेत् क्रमात्।।

। इति माहेन्द्रवारुणादिनिर्णय:।

इति श्री बगलामुखीरहस्ये दीक्षादिविधानात्मकः द्वितीयः परिच्छेदः।

नुस्तान्याहे महत्वापे पति अस्ताहितप्रहो।

प्राप्त कर्षण्य शास्त्री नमा चार्यच्यायमे नितास ।। पीर्ट सम्यास्त्री हि प्राप्तस्त्रात्मे निता

Light tile the said that the said the

Payling to the fort fort filth filth

पश्चिम , बनेद , विवाद , इति । इति , विवेद् ।।

शास्त्रका च व्यवस्थान च चारणा।



# अथ तृतीयः परिच्छेदः

### अथ रुद्रयामलोक्तबृहत्पूजापन्द्रतिः

श्री गणेशाय नमः नत्वा पीताम्बरां देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। साधकानां हितार्थाय पद्धतिर्लिख्यते मया।।

तत्र ब्राह्मे मुहूर्ते शयनाद् दक्षिणाङ्गेन समुत्थाय रात्रिवस्नादिकं परित्यज्य शुचिवस्त्रादिकं संधार्य बद्धपद्मासनः श्रीगुरुं ध्यायेत्, स्वशिरसि सहस्रदलकमलकर्णिकायां श्वेतवस्त्राऽऽभरणभूषितं श्रीगुरुं वराऽभयज्ञान-मुद्रापुस्तककरं, चन्द्रकान्तनिभं, सुप्रसन्नं श्वेतचन्दनपुष्पालङ्कृतं, वामाङ्गतया रक्तवर्णया रक्तवस्त्राभरणगन्धमाल्यविभूषितया वामकरधृतलीलाकमलया देव्या दक्षिणभुजेनाऽऽलिङ्गितं, त्रिनेत्रं, शान्तम् अन्तर्मुखं, शिवरूपिणम्, वामतश्चरणाऽरविन्दस्रुतपीयूषधारया स्वात्मानमा प्लुतं विभाव्य, तेन सम्यक् संचिन्त्य च, ऐं अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः संकेतनाम्ना वा गुरुभ्यो नमः मानसौपचारैः सम्पूज्य, लं पृथिव्याऽऽत्मकं गन्धं समर्पयामि हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि, यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि, रं वह्र्यात्मकं दीपं समर्पयामि, वं अमृतात्मकं नैवेंद्यं समर्पयामि, सं सोमात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि, प्रणम्य, ऐं इति वाग्वीजम् अष्टोत्तरशतं जप्त्वा समर्प्य स्तूयात् -

अखण्डमण्डलाऽऽकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।१।। नमोऽस्तु गुरवे तस्मै स्वेष्टदेवस्वरूपिणे। यस्य वाक् सकलं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम्।।२।। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३।। अज्ञानतिमिराऽन्थस्य ज्ञानाऽअनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४।।

ततः स्वहृदि लयं भावयेत्। ततो मूलाऽऽधारादिब्रह्मारन्ध्राऽन्तं, सहस्रसूर्यप्रभं, सुषुम्णाऽन्तर्गतं, दण्डनिभं मूलमन्त्रं ध्यात्वा, तत्तेजोव्याप्तं स्विशरंः संचिन्त्य, मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं च विधाय, स्वहृदि पीताम्बरां ध्यात्वा प्रणमेत्। (अधिकं त्वनया रीत्या कर्तव्यम्) गुरुस्मरणाऽनन्तरं तदनुज्ञां गृहीत्वा, मूलाधारे कुण्डलिनीरूपां स्वेष्टदेवतां, तिडत्कोटिप्रभाम् विसतन्तुतनीयसीं, प्रसुप्तभुजगाऽऽकारां, सार्धित्रवलयोपेतां ध्यात्वा, 'हूं' इति चैतन्यं विधाय, 'हं. सः' इति मन्त्रेणोत्थाप्य सुषुम्णानाडीमार्गेण षट् चक्राणि भेदियत्वा, सहस्रदलकमलस्थितपरमिशवे संयोज्य, स्वेष्टदेवतारूपेण परिणतां परमिशवेन संगमय्य ध्यायन्, यथाशक्ति प्रजप्य, समर्प्य, प्रणम्य, पुनःकुण्डलिनीरूपेण परिशवान् निःसार्य, तत्संगमाऽमृतलोलीभूतां ''सोहम्'' इति मन्त्रेण मूलाधारे समानयेत्।

प्रकाशमानां प्रथमप्रयाणे, प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम्। अन्तः पदव्यामनुसंचरन्तीमानन्दरूपाममलां प्रपद्ये।।

इति नत्वा स्वतेजसा पूर्णं शरीरं भावयेत्। ततः स्वगुरुदेवताऽऽत्मनामैक्यं विभाव्य देवं स्तुत्वा –

प्रातःप्रभृति सायऽन्त सायादि प्रातरन्ततः। यत् करोमि महेशानि तदस्तु तव पूजनम्।।

इति निजं कृत्यं समर्पयेत्। अथ सहजसिद्धं गुरुपदेशेन ज्ञातम् अजपाजपं कुर्यात्। यथा –

ॐ अस्य श्री अजपामन्त्रस्य हंस ऋषि:, अव्यक्ता गायत्री छन्द:

हंसो देवता, हं वीजं, सः शक्तिः सोऽहं कीलकम्, मोक्षार्थे जपे विनियोगः। ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रौं हृ: इत्यनेन षडङ्गन्यास:। भूर्भुव; स्वरोमिति दिग्बन्धनं कृत्वा ध्यायेत। इस्मिन्न में इस्मिन्न महोद्धान सह में किई जेस्ट से

अग्नीसोमगुरुद्धयप्रणवकं बिन्दुत्रिनेत्रोज्चलम्। भास्वद्रूपमुखं शिवाङघ्रियुगलं पार्श्वस्थसूर्यानिलम्।। उद्यद्भास्करकोटिकोटिसदृशं हंसं जगद्व्यापिनम्। शब्दब्रह्ममयं हदम्बुजपरे नीडे सदा संस्मरेत्।।

मानसोपचारै: सम्पूज्य

रेजा उपनेता के किंद्रीय में मानिकारिक रिक् ''ॐ हीं हं सः सोऽहं स्वाहा। हंसहंसाय विद्यहे सोऽहं हंसाय धीमहि।। ाङ्क्षात्र प्रकार के तन्नों हंसः प्रचोदयात्"

इत्यात्माष्टाक्षरं गायत्रीं च यथाशक्ति जप्त्वा पूर्वदिनकृतमजपाजपं निवेदयेत्। २१६०० इति सर्वसंख्या।

#### निवेदनक्रम

वं शं षं सं वर्णयुते आधारपद्मे विघ्नराजस्तस्मै ६०० षट् शतम् निवेदयेत्, बं भं मं यं रं लं युक्तं स्वाधिष्ठानगतं ब्रह्मणे ६००० षट् सहस्रं निवेदयेत्, डादिफान्तवर्णैर्मणिपूरगतं हरये ६००० षट् सहस्रम् निवेदयेत्, कादिठान्तैर्वर्णेर्युक्ते पद्मेऽनाहते शिवाय ६००० षट् सहस्रम् निवेदयेत्, विशुद्धचक्रेऽपि एकमेव जीवाय १००० एकसहस्रम् निवेदयेत्, आज्ञाचक्रे गुरवे १००० एकसहस्रं निवेदयेत्, ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मने १००० एक सहस्रं समर्प्य ध्यायेत्।

हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिईंसमयश्च शम्भुः। हंसो हि जीवो गुरुरेव हंसः हंसो ममात्मा परमात्महंसः।।१।। देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो नाम सदाशिवः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोहंभावेन पूजयेत्।।२।।
अहं देवो न चाऽन्योऽस्मि ब्रह्मैवाऽहं न शोकभाक्।
सिच्चिदानन्दरूपोऽहमात्मानिमिति भावयेत्।।३।।
हकारेण वहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।
हंसात्मिकां भगवतीं जीवो जपति सर्वदा।।४।।

### प्रार्थना मुख्या अवस्थान

त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेवि पीताम्बरे त्वच्छरणाऽऽज्ञयैव। प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तियष्ये।।१।। संसारयात्रामनुवर्तमानं, त्वदाज्ञया शाङ्करि पीतवस्त्रे। संसारदावाग्निभयप्रमादात् रक्षां कुरु त्वं करुणाण्विशि।।२।। जानामि धर्मं न च में प्रवृत्तिः जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः। कयाऽपि देव्या च हृदिस्थयाऽहं यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।३।।

#### इति सम्प्रार्थ्य देव्याज्ञामादाय

समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य श्वासानुसारं तस्यां पादौ निधाय पदे पदे फट् मन्त्रं स्मरन् नैऋत्यां दूरं गत्वा।

उत्तिष्ठन्त्वृषयो देवा गन्धर्वा यक्षराक्षसाः। परित्यजन्त्वदं स्थानं मूत्रोत्सर्गं करोम्यहम्।।

इत्यनेन मन्त्रपूर्वकं यथावच्छौचं विधाय, ततः चतुर्दश गण्डूषाः आचमनकं च विधाय "क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इति दन्तधावनं कृत्वा, मूलेन मुखं प्रक्षाल्य स्नानार्थं गच्छेत्।

#### स्नानविधि

तीर्थाद् बहिः कटिशौचं विधाय, स्वगृह्योक्तविधिना स्नात्वा, स्नानान्तर्गततर्पणाऽन्ते अस्त्रेण मृत्तिकामाादाय अस्त्रेणाऽभिमन्त्र्य, मूलेन मूर्धाऽऽदिपादान्तं विलिप्य, तीर्थचलं प्रणम्य, त्रिर्निमज्योन्मज्य, देशकालौ संकार्त्य, 'श्रीपीताम्बराप्रीत्यर्थं मन्त्रस्नानमहं करिष्ये', इति संकल्प्य, मूलेन, प्राणायामत्रयं कृत्वा, ऋष्यादिषडङ्गन्यासांश्च विधाय स्वपुरतश्चतुरस्रे मण्डले।

# "गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।"

इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात् तीर्थमाबाह्य, 'वं' इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, 'हूं' इत्यवगुण्ठ्य, फिडिति संरक्ष्य, मूलेन एकादशधाऽभिमन्त्र्य, तत्र श्रीपीताम्बरां ध्यात्वा जलमयैरुपचारैः सम्पूज्य, मूलेनाऽष्ट्रवारमिभमन्त्र्य, मूलमन्त्रं जपेत्। हृदि पीताम्बरां स्मरन् त्रिर्निमज्योन्मज्य, स्विशारिस कुम्भमुद्रया त्रिरिभिषञ्च्य मूलेन्, स्वाहाऽन्तेन त्रिराचम्य, मूलेन त्रिःसन्तर्प्य, सूर्यमण्डले विसृज्य गृहेन्दुम्, उदकेन स्नात्वा, मुलेन प्राणायामत्रयं ऋष्यादिषडङ्गन्यासांश्च विधाय, शुद्धोदकेनाऽङकुशमुद्रया रवेस्तीर्थान्याबाह्य, मूलेनाऽष्ट्रवारमिभमन्त्र्य, स्विशारिस कुम्भमुद्रया मूलेन त्रिरिभषञ्च्य ''ऋतं च सत्यं चेति'' त्रिरधमर्षणं कृत्वा मूलेन त्रिराचम्य तदनन्तरं धौते वाससी परिधाय, द्रौ करौ च मृद्भिः प्रक्षाल्य, आचम्य, मूलाऽभिमन्त्रितं तिलकं कृत्वा, सर्वकर्माङ्गभूतं त्रिपुण्डं भस्मना कृत्वा, यथाविधि वैदिकीं सन्ध्यां कुर्यात्, अन्ते तान्त्रिकीं च।

तत्र मूलेन ऐं आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ऐं विद्यतत्त्वाय स्वाहा, ऐं शिवतत्त्वाय स्वाहा, इति त्रिराचम्य, मूलेन शिखां बद्ध्वा, मूलेनैव प्राणायामत्रयं कृत्वा, मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं षडङ्ग च विन्यस्य, स्वपुरतः पात्रं जलेनाऽऽपूर्य, धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य, मूलेनाऽष्टवारमिभमन्त्र्य, त्रिःप्रोक्ष्य, सूर्यमण्डले श्रीपीताम्बरां ध्यात्वा, दिक्षणहस्ते जलमादाय वामकरेण च स्पृशन्, लं वं रं यं हं इति बीजैः सप्ताऽभिमन्त्र्य, मूलेन च त्रिरिभमन्त्र्य, तज्जलं वामकरे निधाय, तद्गिलितिबन्दुभिवैदिकमूलमन्त्रेण स्विशारसी त्रिःप्रोक्ष्य, अविशिष्टं वामकरस्थं जलं वामनासासमीपमानीय, तेजोमयं वामनासारन्ध्रेण स्वदेहान्तः प्रविष्टं ध्यात्वा, तेन जलेन स्वदेहान्तः स्थं सकलकलुषं प्रक्षाल्य, कृष्णवर्ण तज्जलं दिक्षणनासारन्ध्रेण निर्गतं विभाव्य, दिक्षणकरेणाऽऽदाय, स्ववामभागे वज्रशिलां ध्यात्वा ''ॐ श्लीं पशु हुं फट्'' इति पातास्रेण तस्यामास्फाल्य, हस्तौ प्रक्षाल्य, मूलमन्त्रेण त्रिराचम्य, अञ्जलिना जल मादायोत्थाय, वक्ष्यमाणपीताम्बरागायत्रीमुच्चार्य, 'श्रीपीताम्बरे एष तेऽर्घ्यः स्वाहा' इति त्रिरर्घ्यं सूर्याऽभिमुखं प्रक्षिपेत्। वैदिकमूलान्ते श्रीपीताम्बरा तर्पयामि नमः इति त्रिःसन्तर्प्य, पुनः प्राणायामऋष्यादिकरषङ्गन्यासं विधाय सूर्यमण्डले देवीं ध्यायेत्।

### "ॐ कुलकुमार्ये विद्यहे पीताम्बरायै धीमहि। तन्नो बगला प्रचोदयात्।।"

इति गायत्रीं यथाशक्ति मूलमञ्चोत्तरशतं जप्त्वा, समर्प्य, प्रणम्य, सूर्यमण्डलां देवीं स्वहृदयाद् विसृज्य श्रीगुरुं प्रणमेद्, इति तान्त्रिकसन्ध्या कालत्रये कर्तव्या। इति तान्त्रिकसध्या।

## अथ तर्पणम् — अस्ति स्वापनः स्थानाम् विकास

पूर्वाभिमुख: ॐ देवाँस्तर्पयामि, उत्तराभिमुख: कण्ठलम्बित-यज्ञोपवीत:, ॐ ऋषींस्तर्पयामि, दक्षिणाभिमुख: पितृंस्तर्पयामि, तथा ॐ गुरुं तर्पयामि, ॐ परमगुरुं तर्पयामि, ॐ परापरगुरुं तर्पयामि, ॐ परमेष्ठिगुरुं तर्पयामि, इति मूलमुच्चार्य श्रीपीताम्बरां तर्पयामि, इत्यष्टोत्तरशतं तदर्धमष्टविंशतिवारं वा श्रीपीताम्बरामुखकमले परमामृतबुद्ध्या जलै: सन्तर्प्य, तत: आवरणदेवताम् एकैकाऽञ्जलिना सन्तर्प्य, देवीं स्वहृदयात् सूर्यमण्डले विसृज्य, गुर्वादीन् नमस्कृत्य, शुद्धोदकपात्रं, पूर्णं कृत्वा आदाय, हृदि स्वेष्टदेवतां स्मरन् मौनी स्वपादमात्रदृष्टिः सन् स्तोत्रादिकं पठन् गृहमागच्छेत्। ततो द्वारस्थितं स्वपापं समरेत्।

ॐ देवि त्वं प्रकृत्याऽचिन्त्ये पापाऽऽक्रान्तमभून् मम।
तिन्नःसारय चित्तान् मे पापं फट् फट् च ते नमः।।
सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाऽशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः।।

इति पठित्वा अस्त्रमन्त्रेण क्रोधदृष्ट्या पार्श्वद्वयमूर्ध्वमधश्च विलोक्य, सुमनो भूत्वा गृहान्ते प्रविश्याऽङ्गणे स्थित्वा, पादौ प्रक्षाल्य चाऽऽचम्य, नेत्राभ्यामपमृज्य हीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः इति सम्पूज्य, तत्र प्राङ्मुखः स्वस्तिकाद्यासनेनोपविश्य, सूर्यमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, सूर्यमण्डलस्य ऋष्यादिकरषडङ्ग विन्यस्य, यथा वा-शिरिस अजर्षये नमः, मुखे गायत्रीछन्दसे नमः, हृदये श्रीसूर्यदैवतायै नमः, इति संचिन्त्य हां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, हीं तर्जनीभ्यां नमः हूं मध्यमाभ्यां नमः, हैं अनामिकाभ्यां नमः, हौं किनिष्ठकाभ्यां नमः, हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।

एवं विन्यस्य ध्यायेत् -

रक्ताम्बुजासनंएषगुणैकसिन्धुं, भानुं सहस्रजगतामधिपं भजामि। पद्मद्वयाऽभयवरान् दधतं कराब्जं माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं। त्रिनेत्रम्।।

एवं सूर्यमण्डले साङ्गावरणा ध्यावां सम्पूज्य स्वपुरतः चतुरस्रवृत्तत्रिकोणात्मकं मण्डलं कृत्वा सम्पूज्य, तत्र प्रस्थग्राहि ताम्रपात्रं साधारं विधाय सूर्यमन्त्रेणाऽऽपूर्य, तिल-यव-सर्षप श्यामाक-कुशाग्रं गन्धाक्षतरक्तपुष्पाणि, रक्तचन्दनं च निःक्षिप्य कुशैः कराभ्यां च तत्पात्रमाच्छादयन् ॐ ह्रां हीं सः इति सूर्यत्र्यक्षरमन्त्रेणाऽष्टोत्तर-शतेनाऽभिमन्त्र्य, जानुभ्यामवनीं गतः समन्त्रकराभ्यां समग्रमुत्तोल्य सूर्यं निजेष्टदेवताया अभेदेन ध्यायन्, "ॐ ह्रां ह्री हं सः" सग्रहराशिनक्षत्रयोगकरणपरिवृत मनःस्थित श्रीसूर्य एष तेऽर्घ्यः स्वाहा, इति सूर्यायाऽर्घ्यं दत्त्वा तदर्धाम्बु आप्लुतः सूर्य ध्यायन् तन्मन्त्रं यथाशक्ति जप्त्वा, सूर्यं स्तुत्वा प्रणमेत्। ततो धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य तेन जलेन पूजामण्डपपश्चिमद्वारं प्रोक्ष्य, द्वारस्योर्ध्वशाखायां मध्ये ॐ विघ्नराजाय नमः तद्दक्षिणे महालक्ष्म्यै नमः, वामे सरस्वत्यै नमः, पुनर्मण्डपद्वारं श्रियै नमः, द्वारस्य वामदक्षिणयोः शाखयोः गं गणपतये नमः, क्षं क्षेत्रपालाय नमः, शं शंखनिधिवसुधाराभ्यां नमः, पं पद्मनिधिवसुमतीभ्यां नमः, मां मायाशक्तिकायै नमः, चिं चिच्छक्तयै नमः गं गङ्गायै नमः यं यमुनायै नमः धां धात्र्यै नमः, इति द्वन्द्वक्रमेणाऽधीशं सम्पूज्य, अधः देहल्यै नमः, तस्याः वामदक्षिणयो ब्रां ब्राहम्यै नमः, मां माहेश्वर्यै नमः, इति द्वारपालिके सम्पूज्य, द्वारपार्श्वयो: कौं कुमार्यै नम:, वैं वैष्णव्यै नम:, पूर्वद्वारमभ्युक्ष्य, विघ्नादिदेहल्यन्तं सम्पूज्य, पार्श्वयोः वां वाराहयै नमः, इं इन्द्राण्यै नमः इति द्वारपालिके सम्पूज्य, दक्षिणद्वारमभ्युक्षणादिदेहल्यन्तं सम्पूज्य, चां चामुण्डायै नमः मां महालक्ष्म्यै नमः इति द्वारपालिके सम्पूज्य पुनः पश्चिमद्वारे अस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं दत्त्वा द्वारमुद्घाट्य सर्षपाऽक्षतकुश-भस्मकुसुमान्यादाय अस्त्रमन्त्रेण समभिमन्त्रय -

"अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः। ये चाऽन्ये निवसन्त्यन्ये देवास्ते भुवि संस्थिताः।। अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इत्यन्तेऽस्त्रमन्त्रं जपन् नाराचमुद्रयाऽन्तः प्रक्षिप्य, तस्मान् निर्गच्छतां विघ्नानां वामाङ्गसंकोणमार्गं दत्वा उक्ताऽस्त्रमन्त्रेण वामपार्ष्णिघातत्रयेणोभौ अनूर्ध्वोर्ध्वं दत्वा उक्ताऽस्त्रमन्त्रेण वामपार्ष्णिघातत्रयेणोभौ अनूर्ध्वोर्ध्वं तालत्रयेणाऽन्तिरक्षगितग्मदृष्ट्याऽवलोकनेन दिव्यान् विघ्नान् उत्सार्य वामपादपुरःसरं देहलीमुल्लङ्घ्य, अन्तःप्रविश्य, निर्ऋितकोणे वायुपुरुषाय नमः, तत्रैव वास्त्वधीश्वराय नमः, ब्रह्मणे नमः इति सम्पूज्य, मण्डपस्येशान कोणे रक्तवर्णाय रक्तद्वादशशिक्तसिहतायेशानाय नमः इति सम्पूज्य, भैरवाऽनुज्ञां गृह्णीयात्।

अतितीक्ष्ण महाकाय कल्पाऽन्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा आसनं कर्त्तव्यम्। ॐ अस्य श्री आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि:, सुतलं छन्द:, कूमों देवता, आसने विनियोग:।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इति पृथिवीं सम्प्रार्थ्य स्वाऽऽसनस्थानं मुलेन वीक्ष्य, अस्त्रेण प्रोक्ष्य, तैरेव कुशैः सन्त्यज्य, कवचेनाऽभ्युक्ष्य, तत्र मण्डूकादिस्वर्ण-वेदिकादेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य, तत्रेदं चैलाजिनकुशोत्तरं स्वासनमास्तीर्य, मूलेनाऽभ्युक्ष्य, ह्वीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः इत्यासनं सम्पूज्य, तत्र प्राङ्मुख उदङमुखो वोपविश्य आसनस्य स्वदक्षिणाऽग्रकोणादिप्राग्दाक्षिण्येन गं गणपतये नमः, दुं दुर्गायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः, क्षं क्षेत्रपालाय नमः, इति सम्पूज्य, पूजाद्रव्याणि स्वदक्षिणभागे विधाय, "ह्वां हूं ह्वं फट्" इति मन्त्रं स्मरन् दिव्यदृष्ट्या विलोक्य, वामे शुद्धोदकपूर्णकुम्भं आं इति वामपाणिना संस्पृश्य दिक्षणकराऽङगुल्यग्रेण क्षौं इति कुम्भस्थं जलं स्पृशन् रं हं इति दीपशिखां स्पृष्ट्वा, हस्तौ प्रक्षाल्य, कृताञ्जलः वामे गुरुभ्यों नमः, दिक्षणे गणपतये नमः, हिद पीताम्बरायै नमः इति चन्दनाऽक्षतरक्तपुष्पाणि 'ॐ ऐं' इति मन्त्रेणाऽऽदाय, अस्त्रेणाऽऽचमनं कृत्वा, करौ सुरभीकृत्य, वामकरेण स्वमुद्दमनं परितः 'ऐं' इति भ्रामियत्वा प्राणे हीं।

ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।

मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।

इति पठित्वाऽस्त्रेण नाराचमुद्रया ऐशान्यां दूरे निःक्षिप्य, करशुद्धिं कृत्वा, ऊर्ध्वतालत्रयं दत्वा, दिग्बन्धनं कुर्यात् अङ्गुष्ठतर्जनीशब्देन। ततः त्रिशूलमुद्रया स्वमूर्धानं परितोऽस्त्रेण प्राग्दाक्षिण्येन त्रिर्भामयन् अग्निप्राकारत्रयं विधाय, तन्मध्ये गतमात्मानं संचिन्त्य, मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा, भूतशुद्धिं कुर्यात्।

# भूतशुद्धि -

तत्र पादाऽऽदिजानुपर्यन्तं लं पृथिवीबीजं, जान्वादिनाभिपर्यन्तं वं वरुणबीजं, नाभ्यादिकण्ठपर्यन्तं रं अग्निबीजं, कण्ठादिभ्रूमध्यान्तं यं वायुबीजं भ्रूमध्यादिब्रह्मरन्भ्रपर्यन्तं हं आकाशबीजम्, एवं पञ्चभूतानि स्मरेत्, ततः स्वस्थः सन् देवताकलाऽधिष्ठितबीजाऽऽदियुतं च। एवं भूतमये देहे धर्मकन्दसमुद्भूतम्, ज्ञानैश्वर्याऽऽदिषड्दलोपेतम् परं वैराग्यकर्णिकम्, स्वहृदयारविन्दे विभाव्य, तत्कर्णिकायां जीवाऽऽत्मानं बालग्रमात्रं, प्रदीपकलिकाभासुरम्, अनादिमलप्रच्छन्नपरिचिद्रूपं, संचिन्त्य, प्रागुक्तरूपेण मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य सुषुम्णावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा, तत्र सहस्रदलकमलकर्णिकामध्यवर्तिनि परमात्मज्योतिषि वर्णवर्णाऽधिदेवताकरम्बसहितं जीवाऽऽत्मानं 'हं सः' इति मन्त्रेण संयोज्य, तथा मूलाधार-स्वाधिष्ठान-मणिपूराऽनाहतादिचक्रवर्णादिदेवता यसन्तीं हृदयकमलमानीय जीवाऽऽत्मानं कवलीकृत्य परमात्मनि योजयेत्। तथा तत्त्वसंहारं कुर्यात्। ततः पृथिवीं यथार्थां संस्मृत्य ॐ ह्रां ब्रह्मणे नमः, पृथिव्यधिपतये निवृत्तिकलाऽत्मने 'हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण पृथिवीं कुण्डलिनीद्वारा अपां मध्ये संहरते। ततोऽप: ॐ ह्रीं विष्णवे जलाऽधिपतये प्रतिष्ठाकलाऽऽत्मने 'हुं फट् स्वाहा' इति अपः कुण्डलिनीद्वारा वह्नितत्त्वे संहरेत्। ततो विह्नं ॐ ह्रं रुद्राय तेजोऽधिपतये विद्याकलाऽऽत्मने 'हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण तं कुण्डलिनीद्वारा वायुमण्डले संहरेत्। ततो वायुं ॐ हैं ईश्वराय वाय्वधिपतये शान्तिकलाऽऽत्मने 'हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण तं वायुं कुण्डलिनीद्वारा आकाशमण्डले संहरेत्। ततः आकाशं हौं सदाशिवाय आकाशाऽधिपतये शान्त्यतीतकलाऽऽत्मने 'हुं फट् स्वाहा' इति कुण्डलिनीं नादे संहत्य नादं बिन्दौ, बिन्दुशिक्तं नादशक्तौ, नादशिक्तं परशक्तौ प्रणवेन संहत्य 'ॐ हीं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण तां परशिक्तं पूर्वोक्तपरमात्मिन सम्पूज्य, केवलशरीरे पापपुरुषं चिन्तयेत् तथा –

वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम्।

ब्रह्महत्याशिरःस्कन्धं स्वर्णस्तेयभुजद्वयम्।।

सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम्।

तत्संसर्गपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ।।

उपपातकरोमाण रक्तश्मश्रुविलोचनम्।

खड्गचर्मधरं क्रुद्धं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत्।।

इति विचिन्त्य वामनासारन्ध्रेण 'यं' बीजेन वायुमापूर्यं, नाभिस्थानवायुमण्डले संयोज्य वायु बीजं कृष्णवर्णं कुम्भकेनाऽऽवर्तयन् तदुद्भूतेन प्रचण्डवायुना सपापपुरुषं स्वदेहांशे संशोष्य तं वायुं दक्षिणनासाय्रेण विरेच्य पुनर्दक्षिणनासायां 'रं' बीजेन सह वायुमापूर्य मूलाधारे संयोज्य तत्र स्वविह्मण्डले 'रं' बीजं रक्त वर्णमावर्तयन् तदुत्थेन महाविह्नना पापपुरुषं स्वदेहं च संदद्य भस्मना हतं वायुं वामनासया विरेच्य, पुनर्वीमनासया 'वं' बीजं शुक्लवर्णं तेन सह वायुमापूर्य, ब्रह्मरन्ध्रेण संयोज्य, तत्राऽर्चिचन्द्रमण्डले उक्तलक्षणं 'व' बीजं कुम्भकेनाऽऽवर्तयन् तिन्नः सृताऽमृतधारया स्वदेहभस्मना संसिच्य, वायुं दिक्षणनासया विरेच्य, पुनर्दिक्षणनासया लं बीजेन सह वायुमापूर्य, मूलाधारस्थपार्थिवमण्डले संयोज्य, लं बीजं पीतवर्णं कुम्भकेनाऽऽवर्तयन् तदुद्भूतेन तेजसाऽमृतप्लावितं भस्माऽपनीय, तं वायुं वामनासया विरेच्य, पुनर्वीमनासया मायाबीजेन सह आपूर्य मूलाधारबिन्दुमध्ये मायाबीजं स्फुरन्

नृकलार्कवर्णकुम्भकेनाऽऽवर्तयन् तेन करचरणाद्यवयवसमेतं स्वदेहं निष्पन्नं विभाव्य, तं वायुं दक्षिणनासया विरेचयेदिति।

स्थूलशरीरं निष्पाद्य तत्र सहस्रारस्थपरमात्मनः सकाशात् सकलजगित्ससृक्षाविजृम्भितपख्रह्मस्थरूपिणीं पराशक्ति "ॐ हीं नमः" इति स्वस्थानमानीय, ततो नादशिक्ति बिन्दुशिक्ति च क्रमेण प्रणवेन सृष्ट्वा, बिन्दुशिक्तेः सकाशात् कुण्डिलनीं प्रणवेन सृष्ट्वा, निःसार्य कुण्डिलन्या आकाशम्, आकाशाद् वायुं, वायोरिग्नम् अग्निसकाशादापः, अद्भ्यः, पृथिवीति भूतानि स्वस्थाने स्थापयित्वा, नादशिक्ति-बिन्दुशिक्ति-प्रणवेभ्यः, स्वदेहशिक्तं विभाव्य, परमात्मनः सकाशात् कुण्डिलन्या जीवात्मानं संहत्य, वर्णवर्णाऽधिदेवता सिहतम् आज्ञादिचक्रेषु तत्र तत्र वर्णवर्णाऽधिदेवताः स्थापयेत्। ततो हृदयकमलमानीय हृदयकमले जीवात्मानं 'सोहम्' इति मन्त्रेण स्थापयित्वा, कुण्डिलनीं, सुषुम्णामार्गेण मिणपूरकाऽऽदिचक्रेषु तत्तद्वर्णवर्णाऽधिदेवताः स्थापयन् मूलाधारं नयेत्। ततः स्वशरीरं निरस्तसकलकलुषं, तेजोरूपम्, देवताऽऽराधनयोग्यं विभाव्य, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

प्राप्त हे । इति भूतसिद्धिः। । इति भूतसिद्धिः।

# अथ प्राणप्रतिष्ठा

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, श्री पराऽऽख्या प्राणशक्तिदेवता, आं बीजं, हीं शक्तिः, ॐ क्रौं कीलकम्, सर्वप्रतिष्ठार्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादि न्यस्य, कृताञ्जलिः सन् ॐ अङ्गुष्ठयोः ॐ आं हीं क्रौं अं कं खं गं घं डं. आं ॐ हीं वायविग्नसिललपृथ्वीस्वरूपाऽऽत्मनेऽङ्गप्रत्यङ्गयोः तर्जन्येश्च। ॐ आं हीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं ई परमात्मपरसुगन्धाऽऽत्मने शिरसे स्वाहा मध्यमयोश्च। ॐ आं हीं क्रौं उं टं ठं डं ढं णं ऊं श्रीत्रत्वक्चक्षुर्जिह्नाघ्राणाऽऽत्मने शिखायै वषट् अनामिकयोश्च। ॐ आं हीं

क्रौं एं तं थं दं धं नं ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थाऽऽत्मने कवचाय हुम् किनिष्ठिकयोश्च। ॐ आं हीं क्रौं ओं पं फं बं भं मं वचनादानगमन-विसर्गानन्दाऽऽत्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आं हीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अ: मनोबुद्ध्यहङ्कारचिताऽऽत्मने अस्त्राय फट्।

। इति करादिन्यासः।

# हृदयादि षडङ्गन्यास

ॐ आं हीं क्रौं अं कं खं गं घं डं. आकाशवायुविह जलपृथिव्याऽऽत्मने आं हृदयाय नमः। ॐ आं हीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाऽऽत्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ आं हीं क्रौं उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्नाघ्राणाऽऽत्मने ऊं शिखायै वषट्। ॐ आं हीं क्रौं एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थाऽऽत्मने ऐं कवचाय हुम। ॐ आं हीं क्रौं ओं पं फं बं भं मं वचनादानगमन-विसर्गाऽऽनन्दाऽऽत्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ आं हीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तप्राणाऽऽत्मने अः अस्त्राय फट् इति षडङ्गं विधाय, प्राणप्रतिष्ठा कुर्यात्।

स्वशरीरे देवताविग्रहे च यन्त्रसंस्कारविधावुक्तं चैतत्। ततो नाभ्यादिपादद्वयाऽन्तं आं नमः। कण्ठादिनाभ्यन्तं हीं नमः। तदुपरि क्रौं नमः THEFTHEFTHE इति विन्यस्य पीठन्यासं कुर्यात्। अथ पीठन्यास

ॐ ह्लीं अं इं उं ऋं लृं एं ओं अं कामरूपाय पीठाय नमः इति मूलाधारे। ॐ ह्लीं आं ईं ऊं ऋं लृं ऐं औं अ: जालन्धर पीठाय नमो हिंदि। ॐ ह्लीं कं खं गं घं डं. पूर्णिगिरिपीठाय नमो ललाटे। ॐ ह्लीं चं छं जं झं ञं उड्डीयानपीठाय नमः शिरिस। ॐ ह्लीं टं ठं डं ढं णं वाराणसीपीठाय नमः भ्रुमध्ये। ॐ ह्लीं तं थं दं धं नं अवन्तीपीठाय नमः

मुखवृत्ते। ॐ ह्लीं पं फं बं भं मं द्वारवतीपीठाय नमो ललाटे। ॐ ह्लीं यं रं लं वं मधुपुरीपीठाय नमः कण्ठमध्ये। ॐ ह्लीं शं षं सं हं अयोध्यापीठाय नमो नाभिमण्डले। ॐ ह्लीं ळं क्षं काञ्चीपुरपीठाय नमः कट्याम्।

इति बाराष्ट्रकेन व्यापकं कुर्यात्। ततो बगलापञ्चाक्षरं जपेत्।

ॐ अस्य बगलापञ्चाक्षरमन्त्रस्य वृहती छन्दः, श्रीबगलामुखी चिन्मयी देवी देवता, अक्षोभ्य ऋषिः, हूं बीजं, फट् शक्तिः, हीं श्रीं कीलकम्, पञ्चाक्षरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

पञ्चाक्षराय नमः, अन्त्याय नमः षड्दीर्घभाजा मायाबीजेन न्यासः। हां बगलायै नमः षडङ्गम्। हीं बगलायै मां रक्ष रक्ष अङ्गुल्योः। एवं हृदयादि। सर्वत्र, ऐं कं बगलादेवी शक्त्याधाराय नमः।

#### ध्यानम्

प्रत्यालीढपरां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्।

खर्वां लम्बोदरीं भीमां पीताम्बरपरिच्छदाम्।।

नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमुद्राविभूषिताम्।

चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्।।

खड्गकत्रींसमायुक्तां सव्येतरभुजद्वयाम्।

कपालोत्पलसंयुक्तां सव्यपाणियुगान्विताम्।।

पिङ्गोग्रैकसुखासीनां मौलावक्षोभ्यभूषिताम्।

प्रज्वलत्पितृभूमध्यगतां दंष्ट्राकरालिनीम्।।

तां खेचरां स्मेरवदनां भस्मालङ्कारभूषिताम्।

विश्वव्यापकतोयान्ते पीतपद्योपरिस्थिताम्।।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य, कर्त्रीखड्गपालोत्पलयोनिमुद्राः प्रदर्श्य प्राणायामः। 'ॐ हीं श्रीं हुं फट्' एतेनैव पूरकादि कर्तव्यम्।

# किल्लाम् क्रामाना क्यालामन्त्र सिक्तामाह स्थापिक व

ॐ माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्विय न्यस्तस्तेन त्वं सिद्धिदा भव।।

इति मन्त्रेण मालां सम्पूज्य दक्षिणकरेणाऽऽदाय

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मता। अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वसम्पत्करी मता।।

इति प्रार्थ्य यथाशक्ति जपेत्। ततः प्राणायामं कृत्वा न्यासं कुर्यात्।

# अथ न्यासक्रम

3ॐ अस्य श्री मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री मातृका देवता, हलो वीजम्, स्वराः शक्तयः न्यासे विनियोगः। ऋष्यादि विन्यस्य, षडङ्गं न्यसेत्। यथा – अं कं खं गं घं डं. आं हृदयाय नमः, इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा, उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्, एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्, ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्, अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्, इत्यस्त्रमन्त्रेण दिग्बन्धनं कृत्वा, तालत्रयं च दत्त्वा ध्यायेत् –

व्योम्नि द्वारसनार्णकर्णिकवचा द्वन्द्वैः स्फुरत्केशरं। पत्रान्तर्गतपञ्चवर्गयशला वर्णादिवर्गक्रमात्।। आशर्ष्वासषुलान्तलांगलियुता क्षोणीपुरेणाऽऽदृतम्। वर्णाब्जं शिरसि स्थितं विषगदं ध्यायामि मृत्यु अयम्।।

इति रन्ध्रे चरणारिवन्दं वक्ष्यमाणरूपं ध्यावा अन्तर्न्यासपूर्वकं बिहर्न्यासं कुर्यात्। तत्र मूलाधारध्विनं श्रुत्वा प्रबुद्धशिक्तं कुण्डिलनीं, ज्वलद्दीप्तपावकसंकाशां, सूक्ष्मतेजः स्वरूपिणीं, मूलाधारात् शिरः पद्यं स्पृशन्तीं, विद्युदाकृतिम्, तया स्पृष्टशिरः पद्मैकस्वरूपिणो निर्गतान्

मातृकावर्णान् सुषुम्णावर्तमना व्यापकत्वेन स्थितान् सर्वान् ध्यात्वा विन्यसेत्। इति सूक्ष्मरूपां वर्णतनुं कण्ठे षोडशदले कमले ऊर्ध्वे मुखे ध्यात्वा तद्दलेषु पूर्वादिप्राग्दाक्षिण्येन ॐ अं नमः ॐ आं नमः एवं प्रणवादिना इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं एं ओं औं अं अः इति विन्यस्य, तथा हृदयेऽनाहतचक्रेऽिप एवमेव क्रमेण द्वादशवर्णान् कं खं गं घं डं. चं छं जं झं ञं टं ठं इति न्यसेत्। ततो मणिपूरके नाभिमण्डले डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं इति विन्यसेत्। लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने बं भं मं यं रं लं इति षड् वर्णान् न्यसेत्। ततो मूलाधारे चतुर्दले वं शं षं सं इति क्रमेण न्यसेत्। ततो भूमध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले ॐ हं नमः, ॐ क्षं नमः, इत्यन्तर्मातृका विन्यस्य ध्यायेत्।

#### क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त ध्यानम् अस्तिकात्र क्रिक्त

आधारे लिङ्नाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदलगते द्वादशार्धं चतुष्के।।
नासान्ते वालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां।
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।।
ततो बहिर्मातृकान्यासं कुर्यात्। अन्तर्मातृकान्यासो मनसैव कार्यः।
अथ बहिर्मातृकान्यासः। ऋष्यादिषडङ्गं पूर्ववत् ज्ञेयम्।।

#### ध्यानम्

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोः पादुकुक्षिस्थलां च। देहां भास्वत्कदम्बां कलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम्।। अक्षस्रक्कुम्भचित्रैर्लिखितवरकरां तीक्ष्णदृष्टिं विशालाम्। अच्छाकल्पामनुक्षस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामः।।

एवं ध्यात्वा शिरिस अं नमः, मुखवृत्ते आं नमः दक्षनेत्रे इं नमः, वामनेत्रे ईं नमः, दक्षकर्णे उं नमः, वामकर्णे ऊं नमः, दक्षनासापुटे ऋं नमः, वामनासापुटे ऋं नमः, दक्षिणगण्डे लृं नमः, वामे लृं नमः, अध्वींछे एं नमः, अधरोछे ऐं नमः, अध्वीदन्तपंक्तौ ओं नमः, अधोदन्तपंक्तौ औं नमः तालुमूले अं नमः, जिह्वाग्रे अः नमः, दिक्षणबाहुमूले कं नमः, मध्ये खं नमः, मणिबन्धे गं नमः, अङ्गुलिमूले घं नमः अङ्गुल्यग्रे डं. नमः, वामबाहुमूले चं नमः, मध्ये छं नमः, मणिबन्धे जं नमः, अङ्गुलिमूले झं नमः, अङ्गुल्यग्रे जं नमः, दिक्षणोरुमूले टं नमः, जानुनि ठं नमः, गुल्फे डं नमः अङ्गुल्यग्रे जं नमः, अङ्गुल्यग्रे णं नमः, वामोरुमूले तं नमः, जानुनि थं नमः, गुल्फे दं नमः अङ्गुलिमूले धं नमः अङ्गुल्यग्रे नं नमः, दक्षपार्थे पं नमः, वामे फं नमः, पृष्ठे बं नमः, नाभौ भं नमः, जठरे मं नमः हदये यं नमः दिक्षणांसे रं नमः, ककुदि लं नमः, वामांसे वं नमः, हदयादिदिक्षणपादाग्रपर्यंत सं नमः, हदयादिवामकराग्रपर्यंत सं नमः, हदयादिवामपादपर्यंन्त हं नमः। हदयादिनाभ्यन्तं ळं नमः, हदयादिमूर्धपर्यंतं क्षं नमः। इत्येवं मातृकान्यासः।

#### अथ कलामातृकान्यास

ॐ अस्य श्रीकलामातृकान्यासस्य प्रजापितऋषिः, गायत्री छन्दः, कलारूपिणी मातृका सरस्वती देवता, कलामातृकान्यासे विनियोगः। ऋष्यादीन् न्यस्य करादिन्यासमेवं कुर्यात्। अं ॐ आं हृदयाय नमः, अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, इं ॐ ई शिरसे स्वाहा, तर्जनीभ्यां नमः, उं ॐ ऊं शिखायै वषट्, मध्यमाभ्यां नमः, एं ॐ ऐं कवचाय हुम्, अनामिकाभ्यां नमः, ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् किनिष्ठिकाभ्यां नमः अं ॐ अः अस्त्राय फट्, करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः, इति न्यासौ विधाय ध्यायेत् –

हस्ते पद्माङ्कयुक्तां गुणमयहरिणं पुस्तकं वर्णमालाम्।
टङ्कं शुभ्रं कपालं दलममृतलसद्धेमकुण्डं वहन्तीम्।।
मुक्तावीणाग्रयुक्तैः स्फटिकनवजपाबन्धुरैः पञ्चवक्त्राम्।
त्र्यक्षैर्वक्षोजनम्रां शशिशकलनिभां शारदां तां नमामि।।

### इति ध्यात्वा न्यसेत् अस्ति अस्ति ।

ॐ ह्लीं अं निवृत्यै नम:, ॐ ह्लीं आं प्रतिष्ठायै नम:, ॐ ह्लीं इं विद्याये नमः, ॐ ह्लीं ईं शान्त्ये नमः, ॐ ह्लीं उं इन्धिकाये नमः, ॐ ह्लीं ऊं दीपिकायै नम:, ॐ ह्लीं ऋं रेचिकायै नम: ॐ ह्लीं ऋं मोचिकायै नमः ॐ ह्लीं लृं परायै नमः, ॐ ह्लीं लृं सूक्ष्मायै नमः, ॐ ह्लीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः ॐ ह्लीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः, ॐ ह्लीं ओं अध्यापिन्यै नम:, ॐ ह्लीं औं व्यापिन्यै नम:, ॐ ह्लीं अं व्योमरूपिण्यै नमः ॐ ह्लीं अः अनन्तायै नमः ॐ ह्लीं कं सृष्ट्यै नम:, ॐ ह्लीं खं ऋद्ध्यै नम:, ॐ ह्लीं गं स्मृत्यै नम:, ॐ ह्लीं घं मेध्यायै नम:, ॐ ह्लीं डं. कान्त्यै नम:, ॐ ह्लीं चं लक्ष्म्यै नम:, ॐ ह्लीं छं युवत्यै नम:, ॐ ह्लीं जं स्थिरायै नम:, ॐ ह्लीं झं स्थित्यै नम:, ॐ ह्लीं ञं सिद्ध्यै नम:, ॐ ह्लीं टं ज़रायै नम:, ॐ ह्लीं ठं पालिन्यै नम:, ॐ ह्लीं डं शान्त्यै नम:, ॐ ह्लीं ढं ऐश्वर्यायै नम:, ॐ ह्लीं णं रत्यै नम:, ॐ ह्लीं तं कामिकायै नम:, ॐ ह्लीं थं वरदायै नमः ॐ ह्वीं दं ह्वादिन्यै नमः, ॐ ह्वीं धं प्रीत्यै नमः, ॐ ह्वीं नं दीर्घायै नम: ॐ ह्लीं पं तीक्ष्णायै नम:, ॐ ह्लीं फं रौद्रायै नम:, ॐ ह्लीं बं भयायै नम:, ॐ ह्लीं भं निद्रायै नम:, ॐ ह्लीं मं तन्द्रायै नमः, ॐ ह्लीं यं सुधायै नमः, ॐ ह्लीं रं रोधिन्यै नमः ॐ ह्लीं लं क्रियायै नमः, ॐ ह्लीं वं उत्कार्ये नमः, ॐ ह्लीं शं मृत्युरूपायै नमः, ॐ ह्लीं षं पीतायै नम:, ॐ ह्लीं सं श्वेतायै नम:, ॐ ह्लीं हं अरुणायै नमः, ॐ ह्लीं ळं असितायै नमः ॐ ह्लीं क्षं अनन्तायै नमः। इति शुद्धमातृकास्थाने कलामातृकान्यासः कर्तव्यः।

ततो मूलेन त्रिप्राणायामं कृत्वा योगपीठन्यासं कुर्यात्। तद्यथा-मूलाधारे मण्डूकाय नमः, स्वाधिष्ठाने कालाग्निरुद्राय नमः, मणिपूरे मूलप्रकृत्यै नमः, हृदये आधारशक्तयै नमः कूर्माय नमः, अनन्ताय नमः

वराहाय नमः पृथिव्यै नमः क्षीरसमुद्राय नमः, रत्नदीपाय नमः, स्वर्णपर्वताय नमः, नन्दनोद्यानाय नमः, कल्पवृक्षेभ्यो नमः विचित्ररत्नभूम्यै नमः स्वर्णप्राकाराय नमः, रत्नमण्डपाय नमः, स्वर्णवेदिकायै नमः, रत्नसिंहासनाय नमः, इत्येतत सर्व ततत्स्थानभावनया स्वशरीरमंशद्वयोरूर्ध्वप्रकल्पितपादचतुष्टयं मुखनाभिपार्श्वद्वयं कल्पित-गात्रचतुष्टयं रत्नसिंहासनं ध्यात्वा, दक्षिणांसे धर्माय नम, वामांसे ज्ञानाय नमः, वामोरी वैराग्याय नमः, दक्षिणोरी ऐश्वर्याय नमः मुखे अधर्माय नमः, वामपार्श्व अज्ञानाय नमः, नाभौ अवैराग्याय नमः दक्षिणपार्श्वे अनैश्वर्याय नमः, इति विन्यस्य, पुनः हृदये मायायै नमः, विद्यायै नमः, इत्युक्तं रूपं विचिन्त्य, तदुपरि सिंहासनाय नमः, मध्ये अनन्ताय नमः पद्माय नमः आनन्दकन्दाय नमः संविन्नालाय नमः प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः, विकारमयकेशरेभ्यों नमः, पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वात्मस्वरूपायै नमः कर्णिकायै नमः, (कर्णिकायाम्) ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः, ॐ सं सोममण्डलाय नमः, ॐ वं विह्नमण्डलाय नमः, ॐ सं प्रबोधात्मने सत्वाय नमः ॐ रं प्रकृत्यात्मने रजसे नमः, ॐ तं मोहात्मने तमसे नमः आं आत्मने नमः, अं अन्तरात्मने नमः पं परमात्मने नमः हीं ज्ञानात्मने नमः, सिंहासनस्य चतुर्दिक्षु मध्ये च ज्ञानतत्त्वात्मने नमः, मायातत्त्वात्मने नमः कलातत्वात्मने नमः विद्यातत्वात्मने नमः, परतत्वात्मने नमः, ततो हृदयाद्यष्टपत्रे मध्ये च पूर्वादिप्राग्दक्षिणेन ॐ जयायै नमः ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्यै नमः, ॐ अमोघायै नमः मध्ये – ॐ मण्डलायै नमः ॐ हीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः, ॐ योगपीठाय नमः, इति पीठमन्त्रेण मूर्धादिपादान्तं व्यापकं न्यसेत्। विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास

। इति योगपीठन्यास:।

#### किन वार्यक्रिका कि अथ मूलमन्त्रन्यास की क्रिका विकार

प्रथमं मूलेन त्रिःप्राणायामं कृत्वा विनियोगं च विधाय, ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। शिरिस नारायण ऋषये नमः मुखे त्रिष्टुप् छन्दसे नमः, हृदये बगलामुख्यै देव्यै नमः, गृह्ये ह्वीं बीजाय नमः, पादयोः स्वाहा शक्तये नमः, प्रणवकीलकाय नमः सर्वाङ्गे। इति विन्यस्य कृताञ्जलिर्वदेत्।

#### पडङ्गन्यास अध्यापक प्राप्ता अस

अङ्गुष्ठयोः 'ह्लीं' हृदयाय नमः, तर्जन्योः 'बगलामुखिं' शिरसे स्वाहा, मध्यमयोः 'सर्वदुष्टानां' शिखायै वषट्, अनामिकयोः 'वाचं मुखं पदं स्तम्भय' कवचाय हुम्, कनिष्ठयोः 'जिह्वां कीलय' नेत्रत्रयाय वौषट्, 'बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' अस्त्राय फट्, इति छोटिकाभिः दिग्बन्धनं कृत्वा, एवमेव करन्यासोऽपि कार्यः इति करन्यासः।

## अथ मन्त्रवर्णन्यास

ॐ नमः शिरिस, ह्लीं नमों ललाटे, वं नमो भूमध्ये, गं नमों दिक्षणनेत्रे, लां नमो वामनेत्रे, मुं नमो दिक्षणकणें खिं नमो वामकणें, सं नमो दिक्षणनासापुटे वं नमो वामे, दुं नमो दिक्षणगण्डे, ष्टां नमो वामे, नां नमः ऊध्वेंछे, वां नमः अधरोष्ठे, चं नमो मुखे, मुं नमो चिबुके, खं नमो गले, पं नमो दक्षबाहुमूले, दं नमः कूपिर, स्तं नमो मणिबन्धे, भं नमः अङ्गुलिमूले, यं नमः अङ्गुल्यग्रे जिं नमो वामदोर्मलेः ह्लां नमः कूपिर, कीं नमः मणिबन्धे, लं नमः अङ्गुलिमूले, यं नमः अङ्गुल्यग्रे वुं नमो दक्षोरुमूले, द्धिं नमो जानुनि, विं नमो गुल्फे, नां नमः अङ्गुलिमूले, शं नमः अङ्गुल्यग्रे, यं नमो वामोरौ, ह्लीं नमो वामजानुनि ॐ नमो गुल्फे, स्वां नमः अङगुल्मूले, हां नमो वामदिक्षणपादाङ्गुल्यग्रे। एवं सर्वत्र।

मूलेन त्रिधा व्यापकं कृत्वा, तदात्मानं नत्वा देवीं, हत्सरोजकमल-कर्णिकान्तर्गतयोगपीठं संस्थाप्य पीठोपरि यन्त्रराजं विचिन्तयेत्। इत्यं विभाव्य देवीं ध्यायेत्।

# मिल्हित भिति है है । अधिक स्थानम् विकास कर्म कर्मा क्रिका विकास

गम्भीरां च मदोन्मतां तप्तकाञ्चनसित्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्।।१।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्नां च वज्रकम्।
पीताम्बराधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम्।।२।।
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।
पीतभूषणभूषा च स्वर्णसिंहासने स्थिताम्।।३।।
एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्।
महाविद्यां महामायां साधकेष्टफलप्रदाम्।।४।।

दक्षिणाधरयोर्मुद्गरपाशौ, वामाधरयोर्जिह्वावज्रौ, जिह्वा साधक-विपक्षस्येति। ततः ऋष्यादिकरषडङ्ग विन्यसेत्। पुरःसरं – मुद्गर-पाश-ध्वजा-वज्र-जिह्वा-चतुरस्र-स्तम्भन-गोक्षुर-मत्स्य-योनिरूपा नव मुद्रा मन्त्रेण प्रदश्यं श्रीपीताम्बराम्बां साङ्गावरणां सम्पूज्य, स्वाभेदेन ध्यात्वा, स्विशरिस मूलमन्त्रेण पुष्पाञ्जलि दत्त्वा पुनर्हृदयकमले ध्यायेत्। वक्ष्यमाणपीठपूजापुरःसर मानसैरूपचारैदेवीं सांङ्गा सावरणां सम्पूज्य मूलाधारे; आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, ज्ञानात्मेति चैतन्यात्मकं चतुष्टयाऽऽकारचतुरस्रं कुण्डमध्ये चिच्छिक्तं कुण्डलिनीं विह्नरूपां ध्यात्वा, वैदिकमूलमुच्चार्य "अहन्ता जुहोमि स्वाहा", पुनर्मूलमुच्चार्य "मन्त्वं जुहोमि स्वाहा", एवं पैशुन्यं, कामं, क्रोधं, लोभं मोहं, मदं, मात्सर्यं च क्रमेण सुषुम्णासु युक्तमनः स्रुवेण जुहुयात्।

स्वागतं देवदेवेशि सन्निधा भव मे शिवे। गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाविताम्।। लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि, हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि, यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि, रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि, वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि, सं सोमात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि इति पञ्चोपचारै: सम्पूज्य, यथाशिक्त मूलं संजप्य, समर्प्य, नियोंगं कुर्यात्। यथा –

> अथान्तर्यजनं वक्ष्ये यथावदवधारय। वामनाडीं समाकृष्य किंचिदाकुश्चयेद् हदा।। रेचयेत् सव्यमार्गेण जिह्नां तालुगतां चरेत्। शक्तिः शिवपदे योज्या किंचिदाकुश्चयेदधः।। अन्तर्यागमिमं देवि गुरुभाषितमुक्तवान्।

### एवमन्तर्यागं विधाय वहिर्यागं कुर्यात्। यथा -

श्रीखण्डरक्तश्रीखण्डश्रीपर्णसम्भवे पट्टे प्रतिष्ठितं धातुमयं स्फाटिकं वा चक्रं शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य, तं चक्रं चन्दनादिना समभ्यर्च्य, पुरतः पीठे संस्थाप्य, तत्र मूलेन पुष्पाञ्जलि दत्त्वा, अर्घ्यस्थापनं कुर्यात्। स्वपुरतः किंचिद् वामाग्रे चतुरस्रवृत्तिकोणात्मकं मण्डलं विधाय, चन्दनादिनाऽनुलिप्य, तन्मूले मत्स्यमुद्रां विधाय, श्रीपीताम्बराऽर्घ्याधार-मण्डलाय नमः इति मण्डलं सम्पूज्य, ततः पुष्पाक्षतैः षडङ्गमन्त्रेश्च वायव्यादिनिर्म्यत्येशाग्नेयादिचतुर्दिश्च च क्रमेण षडङ्गानि सम्पूज्य, मूलेनाधारं प्रक्षाल्य, श्रीपीताम्बराम्बार्घ्यपात्राधारं स्थापयामि इति संस्थाप्य, अर्थे मं रं धर्मप्रददशकलात्मने विह्नमण्डलाय श्रीपीताम्बरार्घ्यपात्रासनाय नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य, धूम्रार्चिरादिकला इहाऽऽगच्छ इह तिष्ठ इति तत्र विह्नकलामावाद्य पूर्वोक्तक्रमेण प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, ('मम' पदस्थाने धूम्रार्चिरादिकलापदं दत्वा) स्वाग्रादिप्राग्दक्षिणेन वृत्ताऽऽकारेण दश कलाः पूजयेद् यथा –

यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षंसुश्रियै नमः, सं स्वरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः ळं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः, इति विह्निकलाः सम्पूज्य "ॐ बुद्धिवनाशायै ह्लीं ॐ स्वाहा" अस्त्राय फट् इत्यस्त्रमन्त्रेण स्वर्णादिरचितं पात्रं प्रक्षाल्य श्रीपीताम्बरार्घ्यपात्रं प्रतिष्ठापयामि इति तस्मित्राधारे संस्थाप्य, अहमर्थप्रदद्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय श्रीपीताम्बरार्घ्यपात्राय नमः, इत्यनेन पात्रं सम्पूज्य, तत्र भूमिस्थमण्डलेऽविनमण्डलं विधाय, तथैव षडङ्गैः सम्पूज्य, पूर्ववत् सूर्यकलामावाह्य प्राग्वत् प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, वृक्षाकारेण प्रदक्षिणेन कं भं तिपन्यै नमः, खं वं तापिन्यै नमः, गं फं धुम्रायै नमः, घं पं मरिच्यै नमः, डं. नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्णायै नमः, जं थं भोगदायै नमः झं तं विश्वायै नमः जं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नम:, ठं डं क्षमायै नम:, इति सम्पूज्य, शं षं सं हं ळं क्षं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं डं. घं गं खं कं अ: अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं, अनेन मूलमन्त्रं त्रिर्जप्य शुद्धोदकैः श्रीपीताम्बरार्घ्यपात्रं पुरयामि।

ततः पीयूषभावनया सम्पूर्य, तत्र पुष्प-गन्धाऽक्षत-यव कुशाप्रतिल-सर्षप-दूर्वा इत्यर्ध्यद्रव्याष्टकं निःक्षिप्य, ॐ डं सं कामप्रदषोडशकलात्मने सोममण्डलाय श्रीपीताम्बरार्ध्यामृताय नमः इति जलं सम्पूज्य तत्र प्राग्वद् भूमिस्थं मण्डलं विधाय पूर्ववत् षडङ्गैः सम्पूज्य, तत्र सोमकलाः प्राग्वत् समावाह्य तासां तथैव प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा, तत्र वृत्ताकारेण प्राग्दक्षिणेन अं अमृतायै नमः आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः ईं तुष्ट्यै नमः, उं पृष्टयै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ऋं शशिन्यै नमः, लृं चिन्द्रकायै नमः, लृं कान्त्यै नमः एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः, इति सम्पूज्य, सूर्यमण्डलात्तीर्थमङ्कुशमुद्रया "गङ्गे च यमुने चैव" इत्यादिना कुम्भमुद्रयाऽऽवाह्ये, मूलेन संयोज्य, "सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्" इति मन्त्रेण गालवीमुद्रां प्रदर्श्य, 'वं' इति धेनुमुद्रयाऽमृती कृत्य, तत्र जले श्रीपीताम्बराम्बां ध्यात्वा, श्रीपीताम्बराम्बादेहे षडङ्गन्यासं विन्यसेत्। एकवचनेनावगुण्ठ्य, नेत्रमन्त्रेण जलं वीक्ष्य "नेत्राय वौषट्, अस्त्रेण फट्" इति संरक्ष्य, शङ्खमुद्रयाऽवष्टभ्य, योनिमुद्रयोद्दीप्य, मूलमन्त्रेण देवीं गन्धादिभिः सम्पूज्य, प्राग्वत् षडङ्गानि चतुरस्रमूलेन अष्टधाऽभिमन्त्र्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छादयेत्। इति विशेषार्ध्यपात्रं संस्थाप्य ततस्तज्जलं पूर्वपूजाद्रव्यासादनप्रकारेण स्ववामे स्थापितसुगन्धिजल-पूरितकुम्भे किञ्चित्रः क्षिप्य ततः तत्पात्रस्योपरिष्टात् पंक्त्याकारेण साधारं जलपात्रद्वयं तृतीयं कांस्यपात्रं धृत्वा मधु दिध दुग्धं चेति पात्रत्रयं यथावत् संस्थाप्य वैदिकमूलमन्त्रेण तत्र गन्धादीन् निःक्षिप्य किञ्चित् किञ्चित् अर्घ्याम्बु निःक्षिप्य मलेनाऽष्टधा पृथगभिमन्त्र्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छादयेत्।

ततः पूजाचक्रस्य दक्षिणे त्रिकोणमण्डले साधारं सजलं पुनराचमनीयपात्रं स्थापयेत्। ततो विशेषार्घ्यपात्रात् किञ्चिज्जलं निःक्षिप्य गन्धादिकं दत्वा, मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य, तथैव तत्समीपे प्रोक्षणीपात्रं संस्थाप्य, अनेन जलेनात्मानं पूजाचक्रं पूजाद्रव्याणि च मूलेन संप्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत्।

ततः स्वदेहं गन्धादिभिरलङ्कृत्य स्वेष्टदेवतारूपं विभाव्य स्वशिरिस श्रीगुरुं सम्पूज्य, मूलेन मूलाधारे गणपतिं गन्धादिभिः सम्पूज्य, प्रागुक्तयोगपीठदेवताः तत्स्थाने हृदयकमले जयाद्यष्ट शक्तीः सम्पूज्य, पीठमन्त्रेण सर्वाङ्गे पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, पूर्ववत् मूलाधारे चतुस्रकुण्डं संचिन्त्य, मूलान्ते ''धर्माधर्महविरात्माग्नौ मनसा स्रुचा सुषुम्णावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिं जुहोम्यहं स्वाहा'', पुनर्वैदिकमूलंचोच्चार्य, श्लोकमूलान्ते ''पुण्यापुण्यकृत्याकृत्यसंकल्पविकल्पौ जुहोमि, धर्मं जुहोमि स्वाहा''। ततः प्रकाशविमर्शरूपहस्ताभ्यामवलम्ब्य उन्मनीस्रुवम् –

# धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णवहौ जुहोम्यहम्।

इति श्लोकमन्त्रेण धर्माधर्मात्मकं सकला प्रपञ्चं पूर्णाहुतित्वेन हुत्वा, निरस्तनिखिलोपाधितया निरितशयसुखस्वानन्दचिद्विलासात्मकं स्वात्मानं ध्यायेत्। यथाशक्ति मूलमन्त्रं संजप्य -

"गुह्याऽतिगुह्यगोष्त्री त्वं, गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि"।। इति समर्पणमन्त्रेण समर्पयेत्। का कार्यात्र हा कार्यात्र हा विकारात्र हा

प्राह्मपुरस्थात है अस्ति । इति बहिर्यागविधिः। अविकासिकाल सम्मन्त्राहास्

आवाहनं पूजां च तत्राऽर्घ्यजलेन पूजाचक्रम् अभ्युक्ष्य, पूज्यस्योत्तरभागे गुं गुरुभ्यो नमः, दक्षिणे गं गणपतये नमः, इति पुष्पादिना सम्पूज्य तस्याऽधस्तात् अतलादिसप्तपातालभावनया ॐ मं मण्डूकाय नमः ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ मं मूलप्रकृत्यै नमः, ॐ आं आधारशक्तये नम:, ॐ कूं कूर्मीय नम:, अं अनन्ताय नम:, ॐ वां वाराहाय नम:, इति सम्पूज्य, वाराहस्य दंष्ट्रोपरि पृं पृथिव्यै नमः, तस्यां क्षीं क्षीरसमुद्राय नमः, तस्मिन् नं नवरत्नमयद्वीपाय नमः स्वं स्वर्णपर्वताय नमः, तदुपरि नं नन्दनोद्यानाय नमः, तन्मध्ये कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः, तेषां मध्ये वि विचित्ररत्न भूम्यै नमः, स्वं स्वर्णप्राकाराय नमः, तन्मध्ये रं रत्नमण्डपाय नमः, तन्मध्ये स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः, तदुपरि रं रत्नसिंहासनाय नमः इति तत्तद्भावनया सम्पूज्य, पूजाचक्राधारपीठं सिंहासनोपरित्वेन कल्पयित्वा, अग्रे पादादिकोणे धं धर्माय नमः, ज्ञां ज्ञानाय नमः, वैं वैराग्याय नमः, ऐं ऐश्वर्याय नमः, इति प्राग्दाक्षिण्येन सम्पूज्य, स्वाग्रादिचतुर्दिक्षु अं अधर्माय नमः, अं अज्ञानाय नमः, अं अवैराग्याय नमः, अं अनैश्वर्याय नमः इति प्राग्दक्षिणेन सम्पूज्य, सिंहासनस्य मध्ये मां मायायै नम:, विं विद्यामायायै नम:, तदुपरि अं अनन्ताय नम:, तस्य मूर्ध्नि पद्माय नमः, तद्ष्टदलेषु पं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः, तत्केशरेषु षोडशकविकृतमयकेशरेभ्यो नमः तत्कर्णिकायाम् षड्विंशबीजवर्णाद्य-कर्णिकायै नम:, केशरेषु अं द्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय नम:, कर्णिकायां उं षोडशकलात्मने सोमाय नमः, पत्रेषु मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः, बं ब्रह्मणे नमः, विं विष्णवे नमः, रुं रुद्राय नमः, सं सत्वाय नमः रं रजसे नमः, तं तमसे नमः, आं आत्मने नमः, अं अन्तरात्मने नमः, पं परमात्मने नमः, हीं ज्ञानात्मने नमः इति सम्पूज्य, सिंहासनस्य स्वागादिचतुर्दिक्षु मध्ये च ज्ञां ज्ञानाय नमः, मां मायातत्त्वाय नमः, कं कलातत्त्वाय नमः, विं विद्यातत्त्वाय नमः, पं परतत्त्वाय नमः। इति सम्पूज्य तत्केशरेषु स्वाग्रादिप्राग्दक्षिणेन ॐ जयायै नम:, ॐ विजयाये नमः, ॐ अजितायै नमः ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नम:, ॐ विलासिन्यै नम:, ॐ दौश्थ्ये नम:, ॐ अमोघायै नमः, मध्ये मण्डलाय नमः, इति सम्पूज्य, ॐ ह्लीं सर्वशक्तिकलात्मने नमः, इति पीठमन्त्रेण सहस्रपीठं सम्पूज्य, मूलमन्त्रेण श्रीपीताम्बराम्बामूर्ति कल्पयामि, एवं पीठमध्येनोक्तमूर्तिं परिकल्प्य मूलेन पुष्पाञ्जलिमादाय पद्ममुद्रया पूर्वोक्तमातृकां भोजकत्वेन श्रीदेवीं ध्यात्वा, मम काये मूलाधारे सोमसूर्याग्निमयं त्रिकोणम्, तन्मध्ये सूर्यकोटिप्रतीकाशं, चन्द्रकोटिसुशीतलं, ज्योतिर्लिङ्गम्; तदुपरि चिद्रुपां तडित्कोटिप्रभाम्, विसतन्तुतनीयसीं सर्वान्तर्यामितया कुण्डलिनीं गूरूपदिष्टमार्गेण संस्थाप्य, सुषुम्णावर्त्मना मूलाधार-स्वाधिष्ठान-मणिपूराऽनाहत-विशुद्धाऽऽख्यचक्र-भेदनक्रमेण ब्रह्मरन्ध्रे नीत्वा, परमात्मनि संयोज्य, शिवशक्त्यात्मकं तत्तेजो बह्वभ्याससाध्यं विचिन्त्य, त्रि:पुष्पाञ्जलि संयोज्य,

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षती एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी, अष्टापदी, नवपदी वभूविषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

इति वैदिकमन्त्रं समुच्चार्य -

आत्मसंस्थां प्रजां शुद्धां त्वामहं परमेश्वरीम्। अरण्यामिव हव्याशं मूर्तिमावाहयाम्यहम्।।

इति पठित्वा 'श्रीपीताम्बरे अम्बिके इहाऽऽगच्छाऽऽगच्छ' इति पठित्वा पीठस्थमूर्तिशिरसि पुष्पाञ्जलि प्रक्षिप्य, आवाहनादि-मुद्रयाऽऽवाहयेत्। तद् ब्रह्मरन्ध्रप्रतिष्ठं विचिन्त्य श्रीपीताम्बरा रूपेण परिणतध्यानोक्तरूपां तां ध्यायन् -

तवेयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो। भक्तिस्नेहसमाकृष्टं दीपं च स्थापयाम्यहम्।।

इति पठित्वा वैदिकं मूलमन्त्रमुच्चार्य, स्थापिनीं मुद्रां बद्धवा, 'श्रीपीताम्बराम्बिके इह तिष्ठ' इति स्थापिनीं मुद्रां प्रदर्श्य प्रार्थयेत।

देवेशि भक्तसुलभे परिवारसमन्विते। यावत्त्वां पूजियष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव।। 

अनन्या तव देवेशि मूर्तिशक्तिरियं प्रभो। सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे।।

"श्रीपीताम्बरे इह सन्निधेहि सन्निधेहि" इति सन्निधापनमुद्रया सन्निधाप्य पुनर्वैदिकमूलेन -

आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधिगुणाम्बुधे। आत्मानन्दैकतृप्ते त्वं निरुद्धाभव हे गुरो।।

"श्रीपीताम्बरे इह सन्निरुद्धा भव सन्निरुद्धा भव"। इति सित्ररोधिनीमुद्रया सित्ररुध्य, पुनर्वैदिक मूलान्ते -

दृशा पीयूषवर्षिण्या पूरयन्ती यज्ञविष्टरम्। मूर्तिरायज्ञसम्पूर्तैः स्थिरा भव महेश्वरि।।

'इत्यंशुवेष्टिता भव सर्वतः श्रीपीताम्बरे, इहाऽवगुण्ठिता भव इहाऽवगुण्ठिता भव', इति अवगुण्ठ्य, हृदयादिषडङ्ग स्थानेषु देवीं सकलीकृत्य वैदिकमूलाभ्यां, 'श्रीपीताम्बरे सकलीकृता भव, सकलीकृता भव', इति सकलीकृत्य वैदिकमूलान्ते 'श्रीपीताम्बरे इहाऽमृतीकृत्य भव, इहाऽमृतीकृत्य भव' इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, श्रीदेव्या मूर्ध्न अमृतवृष्टिं ध्यायन् वैदिकमूलान्ते "श्रीपीताम्बरे इह परमामृतीकृता भव इह परमामृतीकृता भव' इति महामुद्रया देव्या मस्तके परमामृतवृष्टिं भावयेत्। पुनवैदिकमूलेन –

# ऐं वद वद वाग्वादिनि क्लिन्ने क्लीं ऐं। महाक्षोभं कुरु कुरु ऐं क्लीं सौ: क्षोभं कुरु कुरु सौ: सौ: ।।

इति दीपमन्त्रमुच्चार्य, मूलविद्याम्, अकारादिक्षकारान्तां मातृकां च पठित्वा, अध्योदकेन देवीं प्रोक्ष्य, देव्या हृदयं स्पृष्ट्वा, प्राणा इह प्राणा इत्यादिना प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। प्राणप्रतिष्ठाविधिरुक्त एव। (वैदिकमन्त्र: पुरुषसूक्तश्रीसूक्ते, पीताम्बरोपनिषत्प्रोक्तो मूलमन्त्रस्तान्त्रिको वा।) न्यासमात्रं पूर्वमनुक्तमेवाऽत्र लिख्यते। यथा हि –

ॐ आं नाभेरधः ॐ ह्लीं हृदयादि नाभिपर्यन्तम्, ॐ क्रौं मस्तकाद् आहृदयं न्यस्य, ॐ यं त्वगात्मने नमः, ॐ रं असृगात्मने नमः, ॐ लं मांसात्मने नमः, ॐ वं मेद-आत्मने नमः, ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः, ॐ षं मज्जात्मने नमः, ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॐ हं प्राणात्मने नमः, ॐ कः जीवात्मने नमः। इत्यादि न्यासप्रकारः।

पुनर्वैदिक मूलान्ते, 'श्रीपीताम्बरायै नमः', इति त्रिः पुष्पाञ्जलि दत्वा, नव मुद्राः प्रदर्शयेत्। मुदगरम्, पाशम्, वज्रम्, जिह्वाम्, चतुरस्रम्, स्तम्भनम्, गोक्षुरम्, मत्स्यम्, योनिम् इति क्रमेण प्रदर्शयेत्। वैदिकमूलान्ते मन्त्रं च प्रत्युपचारमुच्चार्य – सर्वान्तर्यामिनि देवि सर्वबीजमये शुभे। स्वात्मस्थमपरं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्।।

एवं पठित्वा ''श्रीपीताम्बरे इत्याऽऽसनं ते नमः। ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा।'' इत्याऽसनं निवेद्य, पद्ममुद्रां प्रदर्श्य, पुष्पाञ्जलि प्रत्युपचारैः कुर्यात्।

ततो वैदिकमूलान्ते श्रीपीताम्बरे कुशलस्वागतमिति — 💍 💆

ॐ यस्या दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्ध्ये। विकास

इति स्वागतकुशलप्रश्नं कृत्वा मुद्रां प्रदर्शयेत्। पाद्यपात्रादुदकमुद्धत्य, वैदिकमूलान्ते –

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः। तस्यै ते चरणा<mark>ब्जाय पाद्यं</mark> शुद्धाय कल्पये।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते पाद्यं नमः' इति पादयोर्दत्वा ''ॐ हं हं हं इदिमदं गुहाण स्वाहा'' इति निवेद्य, मुद्रां प्रदश्य, पुष्पाञ्जलि समर्पयेत्। पुनवैदिकमूलान्ते –

ॐ वेद्यानामि वेद्यायै देवतात्मने आचमनं कल्पयामि। ईशे शुद्धानां शुद्धिहेतवे श्रीपीताम्बरे एतत्ते आचमनीयम्।।

इति धेनुमुद्रया देवीमुखे दत्वा 'ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा' इति समर्प्य मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलि दद्यात्। पुनर्वैदिकमूलान्ते –

ॐ सर्वकालविहीना त्वं परिपूर्णा सुखात्मिन। मधुपर्कमिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते मधुपर्कम्' इति देव्या मुखे दत्त्वा 'ॐ हं हं हं

इदिमदं गृहाण' इति समर्प्य, मुद्रां प्रदश्य, पुष्पाञ्जलि विनिवेदयेत्। पुनर्वैदिकमूलान्ते –

ॐ शुचिरप्यशुचिर्वाऽपि यस्याः स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते पुनराचमनीयकम्।' इति शुद्धोदकं मुखे दत्त्वा "ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा।'' इति मन्त्रेण समर्प्य, मुद्रां प्रदर्श्य, पुष्पाञ्जलिः।

ततो रत्नपादुके उपनीय, पूर्वदिशि स्नानमण्डले नीत्वा, वैदिकमूलान्ते –

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथे महेश्वरि। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते सुगन्धितैलाभ्यङ्गम्।' सगन्धमलापकर्षणोद्वर्तनं कृत्वा, वैदिकमूलान्ते-

ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये । साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामीह चेश्वरि।।

गङ्गादितीर्थादाहृत्य जलकलशैः सहस्रैरभिषिञ्च्य, "ॐ हं हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा" इति निवेद्य, मुद्रां प्रदर्श्य, पुष्पाञ्जलि दद्यात्।

ततः पूर्ववदाचमनीयं निवेद्य, मुद्रां प्रदर्श्य, प्रोक्षणं कुर्यांत्।

ततः पीतदुकूलयुगं गृहीत्वा, ॐ वं इति अभिमन्त्रितजलेन अस्त्रेण प्रोक्ष्य, बार्हस्पत्यदेवतापवासोभ्यां नमः, इति सम्पूज्य, वैदिकमूलान्ते-

> ॐ मायाचित्रपरिच्छित्रनिजगुह्योरुतेजसः । निरावरणविज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम्।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते वस्त्रं नमः।'

#### ॐ मायामाश्रित्य महामाया जगत्संमोहिनी परा। तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।।

'श्रीपीताम्बरे! एतत्ते उत्तरीयकम्', इति वस्त्रं परिधाप्य ''ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा'' इति निवेद्य, मुद्रां प्रदर्श्य, मूलेन पुष्पाञ्जलि दद्यात्। पुनराचमनीयं पूर्ववत्।

ततः स्वर्णादिरचितं यज्ञोपवीतमादाय, वैदिकमूलान्ते -

यस्याः शक्तित्रयेणेदं संप्रोतं सकलं जगत्। यज्ञसूत्राय तस्यै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते यज्ञोपवीतम् नमः। ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण', इति विनिवेद्य, मुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलि दद्यात्। पूर्ववदाचमनीयम्।

ततो रत्नपादुके आरोहयामि, मुकुटादिकमलङ्कारमण्डलं नीत्वा, तत्र सिंहासने उपवेश्य, अलङ्कारान् पानीयेनाभ्युक्ष्य, मुकुटाद्याभरणेभ्यो नमः, इति सम्पूज्य, वैदिक मूलान्ते –

# ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रितेऽम्बिके। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।

एतानि, मुकुटाऽऽभरणानि समर्पयामीति समर्प्य, 'ॐ हं हं हं इं इदिमदं गृहाण' इति निवेद्य, भूषणमुद्रां प्रदश्य, पूर्ववत् पुष्पाञ्जलिः।

ततः पञ्चवाद्यपूर्वकं योगमण्डपं नीत्वा, योगपीठमध्ये उपवेश्य, देवतापरिवारगणं सूर्यात् किरणमिव स्वस्वस्थाने स्थितं ध्यात्वा, गन्धम्, अस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य, ॐ गन्धर्वदेवतायै गन्धाय नमः, इति गन्धं सम्पूज्य, किनिष्ठिकया गन्धमादाय वैदिकमूलान्ते –

ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते गन्धाय नमः।'

शरीरं ते न जानामि चेष्टां नैव च नैव च। मया निवेदितं गन्धं प्रतिगृह्य विलेप्यताम्।।

इति प्रार्थ्य 'ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण' इति निवेद्य, गन्धमुद्रां प्रदर्श्य पुष्पाञ्जलिः पूर्ववत्।

ततः पुष्पं वं इति अभिमन्त्रितजलेनास्त्रेण प्रोक्ष्य, वनस्पति देवताभ्यः पुष्पेभ्यो नमः, इति पुष्पाञ्जलि सम्पूज्य, मूलान्ते –

तुरीयवनसम्भूतं नानागुणमनोरमम्। आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्।।

'श्रीपीताम्बरे इमानि पुष्पाणि वौषट्' इत्येतानि विधानि पुष्पाणि पीतावर्णानि चम्पकादीनि समर्प्य, 'ॐ हं हं हं' इति मन्त्रेण विनिवेद्य, पुष्पमुद्रां प्रदर्श्य, पुष्पाञ्जलि समर्पयेत्।

एवं पुष्पपूजान्ते देव्या दक्षभागे 'एकवक्त्रं महारुद्रं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्' इत्यादि वैदिकमन्त्रेण, तथा ''ॐ नमो भगवते महारुद्राय हुं फट् स्वाहा'' इति तान्त्रिकमन्त्रेण वा सम्पूजयेत्। ततो देव्या हृदयषडङ्गस्थानेषु षडङ्गानि लयाङ्गत्वेन सम्पूज्य, 'श्रीपीताम्बरे तवावरणदेवतापूजनार्थमनुज्ञां देहि इति समुच्चारयेत्।

# आवरणपूजनम् कि किर्का विकास हिम्सिन्द्र विकास निवास स्थान

सच्चिन्मये परे देवि पराऽमृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि विश्वेशि परिवाराऽर्चनाय ते।।

इति सम्प्रार्थ्य, ततो देव्या देहे समस्तमातृकाक्षरन्यासस्थानेषु मूलमन्त्रपुटितमातृकावर्णैः सम्पूज्य, पश्चादावाह्य, अङ्गदेवताः पूजयेत्। ततः चतुरस्ने देव्याऽग्रद्वारमारभ्य प्रदक्षिणेन चतुर्षुद्वारेषु ॐ गं गणपतये नमः ॐ वं वटुकाय नमः, ॐ यां योगिनीभ्यो नमः, ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः। ततो वैदिकमूलान्ते देवीं त्रिः सम्पूज्य, प्रत्यावरणमेवं कार्यम्।

# अभीष्ट सिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणाय ते नमः।।

इति त्रि:पुष्पाञ्जलि:।

#### । इति प्रथमावरणाय नमः।

ततो महत्तमे भागे कल्पितप्राच्यनुसारेण आग्नेयाऽऽदिदिक्पालेभ्यो नमः, ॐ गुं गुरुभ्यो नमः, ॐ परमगुरुभ्यो नमः, ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः, ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः, ॐ अस्मद्गुरुभ्यो नमः। ततो वैदिकमूलान्ते –

अभीष्ट सिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्ता समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणाय ते नमः।। इति पूर्ववत् त्रि:पुष्पाञ्जलिः।

### । इति द्वितीयावरणाय नमः।

ततः षोडशदलेषु देव्यग्रमारभ्य, प्राग्दक्षिणेन ॐ अं मङ्गलायै नमः, ॐ आं स्तम्भिन्यै नमः, ॐ इं जृम्भिण्यै नमः ॐ ईं मोहिन्यै नमः, ॐ उं वश्यायै नमः, ॐ ऊं अचलायै नमः, ॐ ऋं चञ्चलायै नमः, ॐ ऋं दुर्धरायै नमः, ॐ लृं कल्मषायै नमः, ॐ लृं धीरायै नमः, ॐ एं कलनायै नमः, ॐ ऐं कालकर्षिण्यै नमः ॐ ओं भ्रामिकायै नमः, ॐ औं मन्दगमनायै नमः ॐ अं भोगदायै नमः, ॐ अः भाविकायै नमः, इति सम्पूज्य –

अभीष्टिसिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणाय ते नमः।।

इत्यादिना त्रि:पुष्पाञ्जलि: पूर्ववत्।

। इति तृतीयावरणाय नमः।

ततोऽष्टदलमारभ्य प्राग्दक्षिणेन ॐ ह्रीं ब्राहम्यै नमः, ॐ ह्रीं माहेश्वर्य्ये नमः, ॐ ह्रीं कौमार्ये नमः, ॐ ह्रीं वैष्णव्ये नमः, ॐ ह्रीं वाराह्यै नमः, ॐ ह्रीं इन्द्राण्ये नमः, ॐ ह्रीं चामुण्डाये नमः, ॐ ह्रीं महालक्ष्म्ये नमः, प्रणवेनाऽऽवाहनं, दीर्घस्वरयुक्तेन पूजनम्। ततो भैरवाष्टक च यजेत्।

असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोधश्चोन्मत्तसंज्ञकः। कपाली भीषणश्चैव संहारश्चाष्टमः स्मृताः।।

पूर्वादिवामावर्तेन ऐं हीं आं असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः, ॐ ऐं हीं ईं रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः, ॐ ऐं हीं ऊं चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॐ ऐं हीं ऋं क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः, ॐ ऐं हीं लृं उन्मत्तभैरव श्री पादुकां पूजयामि नमः, ॐ ऐं हीं ऐं कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः, ॐ ऐं हीं औं भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॐ ऐं हीं अः संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः, इति पूजयेत् तर्पयेच्च, इति वैदिकमूलान्ते –

अभीष्टिसिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिः पूर्ववत्।

। इति चतुर्थावरणार्चनम्।

ततः षट्कोणेषु देव्यग्रमारभ्य प्राग्दक्षिणेन ॐ डां डाकिन्यै नमः, ॐ रां राकिण्यै नमः, ॐ लां लाकिन्यै नमः, ॐ कां काकिन्यै नमः ॐ शां शाकिन्यै नमः ॐ हां हाकिन्यै नमः, इति सम्पूज्य, मध्ये त्रिःसम्पूज्य वैदिकमूलान्ते –

अभीष्टिसिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिः पूर्ववत्।

इति पञ्चमावरणार्चनम्।

ततो देव्यग्रमारभ्य प्राग्दक्षिणेन त्रिकोणेषु ॐ वां वामायै नमः, ॐ जां ज्येष्ठायै नमः, ॐ रां रौद्रयै नमः, इति पश्यन्तीमध्यमा-वैखरीरूपास्तिस्रः शक्तीः (रितः, प्रीतिः, मनोभवा इति नामान्तरा अपि।) सम्पूज्य, वैदिकमूलान्ते –

अभीष्टिसिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्टावरणार्चनम्।।

पूर्ववत् पुष्पाञ्जलिः।

## इति षष्ठावरणार्चनम्।

ततः पराम्बिकां श्रीबगलामुखीं सम्पूज्य, शिवशक्त्योरभेदं विभाव्य तदनन्तरं चतुरस्रे प्रथमं देव्यग्रमारभ्य किल्पतप्राच्यनुसारेण ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णीय वज्रहस्ताय, ऐरावतवाहनाय, श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः, पूर्वे। ॐ रं अग्नये तेजोधिपतये, रक्तवर्णाय, शक्तिहस्ताय, मेषवाहनाय श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः, आग्नेये। ॐ हं यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय, महिषवाहनाय, श्रीपीताम्बरापार्षदाय नम:, याम्ये। ॐ क्षं निर्ऋतिरूपिणे, रोगाधिपतये, धूम्रवर्णाय, खड्गहस्ताय, प्रेतवाहनाय, श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः नैऋत्ये। ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये शुक्लवर्णाय पाशहस्ताय महिषवाहनाय श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः, प्रतीच्याम्। ॐ यं वायवे, प्राणाधिपतये, धूम्रवर्णाय, अङ्कुशहस्ताय, मृगवाहनाय श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः, वायव्ये। ॐ मं कुबेराय यक्षाधिपतये, मौक्तिकवर्णाय, गदाहस्ताय, नरवाहनाय श्रीपीताम्बरा-पार्षदाय नमः, उत्तरे। ॐ हं ईशानाय, प्रमथाधिपतये स्फाटिकवर्णाय, त्रिशूलहस्ताय, वृषभवाहनाय, श्रीपीताम्बरापार्षदाय नम: ईशान्याम्। ॐ आं ब्रह्मणे लोकाधिपतये, रक्तवर्णीय, पद्महस्तायं हंसवाहनाय श्रीपीताम्बरापार्षदाय नमः, पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ हीं अनन्ताय नागाधिपतये, गौरवर्णाय, चक्रहस्ताय, गरुडवाहनाय, श्रीपीताम्बरा-

पार्षदाय नमः नैऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये। इति सम्पूज्य, मध्ये देवीं त्रिःसम्पूज्य, वैदिकमूलान्ते -

अभीष्टसिद्धिदे देवि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

पूर्ववत् पुष्पाञ्जलिः॥

#### इति सप्तमावरणार्चनम्।

ततो देव्यग्रतः कल्पितप्राच्यनुसारेण ॐ पीतवर्णाय वज्राय नमः, शुक्लवर्णायै शक्त्यै नमः, ॐ कृष्णवर्णाय दण्डाय नमः, आकाशवर्णाय खङ्गाय नमः, ॐ विद्युद्वर्णाय पाशाय नमः, रक्तवर्णीय अङ्कुशाय नमः, ॐ शुभ्रवर्णीयै गदायै नमः, ॐ नीलवर्णाय त्रिशूलाय नमः, ॐ रक्तवर्णाय पद्माय नमः, ॐ अरविन्दनाभाय चक्राय नमः इति सम्पूज्य, वैदिकमूलान्ते -अभीष्टसिद्धिदे देहि शरणागतवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्।।

पूर्ववत् पुष्पाञ्जलि:।

इति अष्टमावरणार्चनम्। अष्टमातृभि:सार्धं रुरुचण्डादिभैरवाणामपि एकमावरणमपि संग्रहीतव्यम्। एवं नवमावरणपूजनं भवतीति।

#### - १८८१ हिन्द्र । इति नवमावरणार्चन्। क्रिकेश

चत्स्रमारभ्य त्रिकोणान्तम्, त्रिकोणमारभ्य चतुरस्रान्तम्, आवरणचक्रमेव। एवमावरणानि सम्पूज्य, ततो धूपपात्रमस्त्रेण संप्रोक्ष्य, हन्मन्त्रेणाऽभ्यर्च्य, ततः साराङ्गारान् निधाय, वं इति गोमुद्रयाऽमृतीकृत्य, 'क्लीं' सुरभितेजसे स्वाहा। इति मन्त्रेण गुग्गुलादीन् नि:क्षिप्य गन्धर्वदेवतायै धूपं समर्पयामि नमः।

वैदिकमूलान्ते -

ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

'श्रीपीताम्बरे एतते धूपं समर्पयामि' इत्युत्सृत्य वामे घण्टां निधाय, अस्त्रेण प्रोक्ष्य, तेनैव त्रिरभ्यर्च्य, जनिमन्त्रमितः स्वाहाः इत्यादि वामहस्तेन घण्टां वादयन् ॐ हं हं हं इदिमदं गृहाण स्वाहा, इति नीचैः धूपं निवेद्य, देव्या वामभागे निधाय, धूपमुद्रां प्रदर्श्य, वैदिक मूलान्ते – 'श्रीपीताम्बराये नमः'। एवं पुष्पाञ्जलि दद्यात्।

ततः धूपपात्रवद् दीपं संशोध्य, दीपं हीं हीं हीं इति प्रज्वाल्य विष्णुदेवतायै घृतदीपं समर्पयामि नमः, इति सम्पूज्य, धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, वैदिकमूलान्ते –

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वत्र तिमिरापहः। सबाह्याभ्यन्तरे ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

'श्रीपीताम्बरे एष ते दीपः' एवं दीपमृत्सृज्य पार्श्वस्थघण्टां वादयेत्। देव्याः पादादिमूर्धान्तमुच्चैर्दीपं प्रदश्यं, देव्यादक्षिणभागे दीपं निवेश्य, ॐ हं हं इं इति मन्त्रेण निवेद्य, दीपमुद्रां प्रदश्यं, पुष्पाञ्जलिः पूर्ववत्।

पाद्यमाचमनीयकं च दत्वा, ततः स्वर्णादिपात्रस्थं नैवेद्यं नानाविधं मूलेन सम्पूज्य, देव्या अग्रे चतुरस्रमण्डले साधारं निधाय, वैदिकमूलाभ्यां वीक्ष्य, अस्त्रेण संप्रोक्ष्य, तैरेव कुशैः सन्ताडय, कवचेनाभ्युक्ष्य, अधोमुखं दक्षहस्तोपिर वामहस्तं निधाय, तथैव यं इति वायुबीजेनाऽष्ट्रवारमिमन्त्र्य, स्पर्शादिदोषान् शोषियत्वा, पुनर्वामस्योपिर दक्षिणकराच्छादितं रं बीजमष्टधा जपेत्। तद्दोषान् दग्ध्वा, वं इत्यमृतीकृत्य, गोमुद्रया अस्त्रेण चक्रमुद्रया च संरक्ष्य, वैदिकमूलाभ्यामष्टधाभिमन्त्र्य, दक्षहस्ते जलमादय –

ॐ हेमपात्रगतं दिव्यं परमात्रं सुसंस्कृतम्। पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।। इति नैवेद्योपिर चुल्लुकोदकं निःक्षिप्य, वैदिकमूलान्ते 'श्रीपीताम्बरे एतत्ते नैवद्यं नमः' इत्युत्सृज्य, ॐ हं हं हं इति मन्त्रेण निवेद्य, "ॐ अमृतोपस्तरणमिस स्वाहा" इति देवीं मन्त्रयित्वा, वामकरे ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य, प्राणादिमुद्रां प्रदर्शयेत्। स्वर्णादिपात्रस्थं जलं गोमुद्रयामृतीकृत्य –

ॐ नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम्। अन्यन्निवेदितं शुद्धप्रकृतिस्थं सुशीतलम्।। परमानन्दसंपूर्ण गृहाणं जलमुत्तमम्।

इति देव्या वामभागे पानार्थ जलं निवेद्य, सत्पात्रसिद्धसौख्यं विधानैकभक्षण निवेदयामि ते देवि सानुगायै, तदिति वं अमृतात्मकनैवेद्यं नमः, इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, अस्त्रेण दिग्ब्धनं कृत्वा, जवनिकां धृत्वा, नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य, देवीं भुञ्जानां ध्यात्वा, इमौ श्लोकौ पठेत् –

ब्रह्मेन्द्राद्यैः सरसमितः सूपविष्टा सदाख्या।
रम्या शिञ्जद्वलयकरयोः सादरं बीज्यमाना।।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरा ह्लादयन्ती च भोक्त्री।
भुङ्क्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् पीतवस्त्रा।।
शालीभक्तं सभद्रं शिशिरकरमितं पायसापूपरूपम्।
लेह्यं पेयं च चोष्यं शृतमसृतफलं पाकपूर्णं सुखाद्यम्।।
आज्यं प्राज्यं समज्यं नयनरुचिकरं रिञ्जकैलामरीच्यम्।
स्वाद्वाद्व्यं शार्कराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व।।

एवं पठित्वा, वैदिकमूले दशधा जप्त्वा, जवनिकां विसृज्य, नित्यहोमं प्रकुर्यात्।

#### नित्यहोमविधिः

तत्र द्वादशाङ्गुलचतुरस्रे लौकिकाग्नि संस्थाप्य, मूलेन वीक्ष्य, प्रोक्ष्य, अस्रोण, कुशै: सन्ताड्य, कवचेनाऽभ्युक्ष्य, ''ॐ चित् पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वं ज्ञापय स्वाहा'' इति मन्त्रेण प्रज्वाल्य 'वैश्वानर, जातवेद इहाव लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा' इति मन्त्रेणाऽग्निमावाह्य, चन्दनादिभिः सम्पूज्य, जठरानलपरमात्मनोरैक्यं विचिन्त्य, स्वहृदि, देवीं ध्यात्वा, विह्नमावाह्य मुद्रां प्रदश्यं द्वयोरैक्य विचिन्त्य मूलेन गन्धादिभिः सम्पूज्य, मूलेन पञ्चविशतिमाहृतिं हुत्वा, पुनः षड्ङ्गाहृतिं हुत्वा, तत आवरणदेवता नामेकैकाहृतिं पृथक्-पृथक् हुत्वा, ततो ध्याहृतिभिश्च हुत्वा, "ॐ रेतः पूर्वं प्राणाबुद्धिदेहधर्माधिकार-जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थायां मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं, यदुक्तं, यत् कृतं तत् सर्वं ब्रह्मार्पणमस्तु स्वाहा' इति मन्त्रेणाऽऽहुतिं हुत्वा, "ॐ हुं साङ्ग कुरु कुरु स्वाहा' इत्यनेन द्वितीयामाहृतिं हुत्वा, देवी पुनः सम्पूज्य, चक्रं विसृज्य, स्वहृदि विहं विसृज्य, देव्यै मूलेन पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा, बिलं दद्यात्।

मूलेन प्राणायामत्रयम् ऋष्यादिकरषडङ्गं च विधाय, पूजा चक्रस्येशानकोणे साधारं मण्डलं, तत्र व्यञ्जनान्नोदकपूरितविलं निधाय, सर्वभूतान्यावाह्य, सर्वभूतेभ्यो नमः, इति सम्पूज्य –

रौद्राश्च रुद्रकर्माणः रुद्रस्यैशानवासिनः। योगिन्योऽप्युग्ररूपाश्च गणानामधिपाश्च ये।। भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः। सर्वे ते प्रीतमनसो भूता गृह्णन्त्वमं बलिम्।।

इति वामकराऽङ्गुलिभिः अर्घ्यपात्रात् पात्रान्तरेणोद्धृतजलधारां बिलपात्रे निःक्षिपेत्। बिलमुत्सृज्य, पुष्पांजिलमादाय – 'भूतानि यानीह वसन्ति लोके, बिल गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तम्। सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु चान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः॥

इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा, नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य, अस्त्रेणात्मानं शुद्धजलेनाऽभ्युक्ष्य, देवीं तृप्तां ध्यात्वा, "अमृतापिधानमसि स्वाहा" इति देव्या उत्तरापोषणं दत्त्वा, नैवेद्यं गतसारं संधृत्य नैऋत्यां नैवेद्यपात्रं निधाय, गोमयेनाद्धिरस्रोण तत्स्थानं शोधियत्वा, नैवेद्यपात्रात् किंचिदन्नमुद्धृत्य, "निर्माल्यभोजिन्यै नमः" इत्यैशान्यां निःक्षिप्य, हस्तौ प्रक्षाल्य, गण्डूषजलं दत्वा, पूर्ववदाचमनीयं च दत्वा, ताम्बूलमादाय, वैदिकमूलान्ते –

### ॐ तमालदलकर्पूरयुगभागतरङ्गितम् । संशोधितं सुगन्धि च ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

'श्रीपीताम्बरे एतत्ते ताम्बूलं नमः' इत्येवं समर्प्य, ॐ हं हं हं इति निवेद्य, वेदिकमूलान्ते 'सुप्रसन्नायै श्री पीताम्बरायै नमः', इति त्रि:पुष्पाञ्जलिना सम्पूज्य, चन्दनपुष्पधूपदीपैराराधयेत्।

इति प्रसन्नपूजां विधाय, मुकुटं परिधाप्य, दर्पणं दर्शयित्वा, छत्रचामरव्यजनादिनानाविधराजषोडशोपचारान् परिकल्प्य दूर्वाऽक्षतजल-कुशमूलान्ते 'श्रीपीताम्बरे एतत्ते नीराजनं नमः' इति मुकुटोपरि निःक्षिपेत्।

ततः कांस्यपात्रेऽष्टदले पिष्टमयान् नव दीपान् हीं इति प्रज्वाल्य गोमुद्रयामृतीकृत्य अस्त्रेण चक्रमुद्रया च संरक्ष्य, "ॐ श्रीं हीं प्लूं म्लूं फ्लूं ब्लूं हीं श्रीं" इति नवरत्नेश्वरीविद्यया वैदिकमूलाभ्यां पृथक् पृथगभ्यर्च्य, वैदिकमूलान्ते 'श्रीपीताम्बरे एतत्ते नीराजनं नमः' इति देव्याश्चरणादिमूर्धान्तं मूर्धादिचरणान्तं पुनः पुनः नवकृत्वो नीराजयेत्। इति नीराजनविधः। ततः श्रीपीताम्बरायाः आरतीं पठेत्।

ततो मूलेन प्राणायात्रयं कृत्वा ऋष्यादिकरषडङ्ग कृत्वा, प्रतिष्ठितामक्षमालां ''हीं सिद्धयै नमः'' इति सम्पूज्य देवीं ध्यायेत्। मूलमन्त्रं प्रणवोच्चारणपूर्वकमष्टोत्तरसहस्रं, तदर्धं वा, त्रिंशदष्टोत्तरशतं वा जप्त्वा, ॐ इति जप्त्वा, समाप्य (जपविध्यनुसारम्) पुनः प्राणायामऋष्यादि-करषडङ्गंन्यासपूर्वकं मालां शिरसि निधाय, अध्योदकमादाय –

ॐ गुह्यातिगुह्यगोष्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि।।

इति देव्या दक्षिणहस्ते जपं समर्प्य, मालां सम्पूज्य, रहिस स्थापयेत्।

उत्तरकृत्यम् व्यवकात्रकात्री स्मात्र गुम्पलीनिकवित्रकार्यम् सोडिनेस तदनन्तरं घण्टावादनपूर्वकं श्रीपीताम्बरासहस्रनामस्तोत्रादिभिः देवीं स्तुत्वा प्रदक्षिणानमस्कारै: परितोष्य -

ॐ यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया।। आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्। पूजामर्चां न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि।। कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम। अन्तश्चारेण भूतानां दृष्टी त्वं परमेश्वरि।। मातर्योनिसहस्रेषु येषु येषु ब्रजाम्यहम्। तेषु तेष्वचला भक्तिरव्ययाऽस्तु सदा त्विय।। देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्। देवी जयित सर्वत्र या देवी साऽहमेव च।।

इति कृताञ्जलि; देवीं प्रार्थ्य, पुनः पुनः प्रणम्य, स्वेष्टार्थ सम्प्रार्थ्य, अर्ध्यपात्रमुद्धत्य -

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया। तत् सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं मम।।

कृतमाराधनं किञ्चिदघ्योंदकदानेन समर्प्य, पात्रं स्वस्थाने निवेश्य, पुष्पाञ्जलिमादाय, 'ॐ इतः पूर्वं प्राणामनोबुद्धिदेहधर्माधिकार जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं तत् कृतं तत् सर्वं श्रीगुरुदेवसमर्पितमस्तु'' इति देव्याः पादयोः पुष्पाञ्जलि निःक्षिप्य प्रणम्य, पुनः पुष्पाञ्जलिमादाय, वैदिकमूल चोच्चार्य -

🔻 🕉 रश्मिरूपा महेशान्याश्चात्र पूजितदेवताः। पीताम्बराङ्गे लीनास्ताः सन्तु सर्वंसुखावहाः।। इति पुष्पाञ्जलि निक्षिप्य, प्रणम्य 'द्वारदेवताभ्यश्चतसृभ्यो नमः' देवताश्चार्धाङ्गावरणदेवताश्च श्रीपीताम्बराङ्गे विलीना विभाव्य, देवीं सर्वतेजोरूपां च विभाव्य 'श्रीपीताम्बरे क्षमस्व' इति तालत्रयं दत्त्वा संहारमुद्रां प्रदर्शयेत्।

गच्छ गच्छ परस्थानं स्वस्थानं परमेश्विरि। यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम्।।

इति निर्माल्यपुष्पेण सह तत्तेजः समुद्धृत्य, आघ्राय, वहन्नासासु समाघ्राय, तत्तेजो ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा, सुषुम्णामार्गेण हृदयकमलमानीय-

ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि।।

एवं स्वहृदि संस्थाप्य, यथोक्तरूपां श्रीपीताम्बरां ध्यात्वा, मानसैरुपचारै: सम्पूज्य, देव्या निर्माल्यपुष्पादिकं निःक्षिप्य, नैवेद्यशेषं किञ्चिदादाय, 'लेह्मचोष्यात्रपानानि, ताम्बूलस्रक्विलेपनानि च निर्माल्यभोजनानि तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया इति तत्रैव निःक्षिप्य, हस्तौ प्रक्षाल्य, ततः ताम्रादिपात्रे गन्धपुष्पाक्षतान्वितं जलमापूर्य, श्रीसूर्याभिमुखं स्थित्वा –

ॐ नमो विवश्वते ब्रह्मान् भास्वते विष्णुतेजसे। नमः सवित्रे शुचये सर्वकर्मप्रसूतये।।

"ॐ ह्रां ह्रीं हं सः श्रीसूर्याय एषोऽर्घ्यः स्वाहा" इत्यनेन सूर्यायार्घ्यं दत्वा कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्।

ॐ यज्ञच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम। सर्वं तदच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः।।

इति छिद्रवाधां प्रार्थ्य, पूजावशिष्टं गन्धं अर्घ्योदकं च वामकरेणाऽऽलोड्य, वैदिकमन्त्रेणाऽष्टधाऽभिमन्त्र्य, तेनाऽऽत्मानं सम्प्रोक्ष्य, मूलेन निर्माल्यं शिरिस धृत्वा, पुनर्मूलेन चरणोदकं प्राश्य, नैवेद्यं देवीभक्तेभ्यो विभज्य दत्वा, स्वयमिप भुक्त्वा पीताम्बरारूपः सन् सुखं विहरेत्।

इति नित्यपूजाविधिः

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्। तत् सर्वं क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरि।।

इति श्रीशिवप्रोक्तरुद्रयामले महातन्त्रे श्रीमद्वगलामुखीवृहत्पूजापद्धतिः सम्पूर्णा।

इति श्रीबगलामुखीरहस्ये वृहत्पूजापद्धत्यात्मकः । तृतीयः परिच्छेदः।

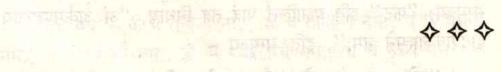
र स्थानकार सामग्रह । प्रियमित करें । विस्ता ना वर्षण

म देवता भारत प्रमासिक मिना हार्कि लेग-

तत निर्माण्यः प्रमादो प्रदर्शने मुख्यानीय आस्तारमाणिमन्त्रवाष्ट्रा व इति

श्राहरा वृज्येल किकार के हाता वा प्राहर के किया है।

नार्तकः च व वृक्तांश्वासिक्षण्यम् । एव सामस्यास्य संस्थान स्यास्य स्थापनि



# अथ चतुर्थः परिच्छेदः

PRINT (INDICATE TO

# अथ चक्रपूजाविधिः

# १. चक्रपूजारम्भः

ततो यथोक्तविधिना चन्दनादिना पूजार्थं यन्त्रमालिखेत्। त्रिकोणं षट्कोणम् अष्टदलम् षोडशास्त्रं धरापुरं संस्थाप्य पुरोवर्तिनि स्थाने पात्रस्थापनं कुर्यात्। स्ववामे चन्दनाऽऽदिना त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रं विलिख्य, तत्र 'आधारशक्तिभ्यो नमः' इति सम्पूज्य, 'अस्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रक्षालितां त्रिपदीं तत्र संस्थाप्य, 'दशकलात्मने विह्नमण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य, ''फट्'' इति प्रक्षालितं पात्रं तत्र निधाय, ''अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः', इति सम्पूज्य –

"गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।"

इति मन्त्रेण क्रों इत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य, प्रणवेन गन्धादीन् तत्र निःक्षिप्य, धृनुमुद्रां प्रदर्श्य, मूलमन्त्रेण अष्टवारमभिमन्त्रयेत्। वं इति सामान्यार्घ्यं संस्थाप्य, पृष्पोद्धृतजलेन आत्मानं पूजोपहारांश्च सम्प्रोक्ष्य, अग्रे मूलमन्त्रेण भुवं सम्प्रोक्षयेत्। ततोऽन्यपात्रं स्थापयेत्। यथाह कुलार्णवे तन्त्रकार -

स्वर्णरूपशिलाकूर्मकपालालावुमृण्मयम् । नारिकेलं च शङ्ख च मुक्ताशुक्तिसमुद्भवम्।। एवं सामान्यार्घ्यं संस्थाप्य कलशं स्थापयेत्। तद् यथा - स्ववामभागे यन्त्रम्, कर्दमादिगन्धमिश्रितजलेन भूमिं विलिप्य, तत्र षट्कोणान्तरं विन्दुं विलिख्य, बाह्ये वृत्तं चतुरस्रं च कृत्वा, सामान्यर्घ्यजलेनाऽभ्युक्ष्य, "आधारशक्त्यै नमः" इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य, मण्डलं कृत्वा, मूलेनाऽऽधारपात्रं प्रक्षाल्य, मण्डले संस्थाप्य, "रं दशकलात्मने धर्मप्रदाय विह्नमण्डलाय नमः" इत्याधारं सम्पूज्य, ध्रूम्मार्चिरादीः कलाः परितः पूजयेत्।

तद् यथा – यं धूम्राचिषे नमः रं ऊष्मायै नमः लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विष्फुल्लिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं किपलायै नमः, ळं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः, इति प्रादक्षिण्येन सम्पूज्य, ''फट्'' इति घटं प्रक्षाल्य, रक्तवस्त्रपुष्पमाल्यादिना भूषियत्वा, ''नमः'' इति देवीबुद्ध्या आधारे संस्थाप्य, द्वादशकलात्मने अर्थप्रदाय अर्कमण्डलाय नमः, इति घटं सम्पूज्य, यथोक्तविधिना तिपन्यादिकला परितः पूजयेत्।

तद् यथा – कं भं तिपन्यै नमः, खं बं तिपन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, डं. नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्णायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, जं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धरिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः, इति प्रादक्षिण्येन सम्पूज्य, परमानन्दपात्रं हस्तेन गृहीत्वा वस्त्रपूतम् अन्यपात्रे कुर्यात् ततः –

# सुधाध्यानम्

"समुद्रे मध्यमाने तु क्षीराब्धौ साररोत्तमे।
तत्रोत्पन्नां सुधां देवीं कन्यकारूपधारिणीम्।।
अष्टादशभुजैर्युक्तां रक्तामायतलोचनाम्।
शङ्ख खड्ग धनुश्चैव कपालं मुसलं तथा।।
शक्तिं गदाम्बुजं घण्टां दधानां सोत्तरैर्भुजैः।
चक्रं मुष्टिं शरं शूलं लोहखेटकतोमरम्।।

अभयं भिन्दिपालं च दधानां दक्षिणैर्भुजैः।

त्रिनेत्रां दीर्घतन्वङ्गीं कालाग्निसदृशोपमाम्।।

मन्दारवेष्टितां नित्यां बहुरूपधरां शुभाम्।

त्रासयन्तीमसुरान् सर्वान् देवानामभयङ्करीम्।।

या सुधा सा उमा देवी यो मदः स महेश्वरः।

यो वर्णः स भवेद् ब्रह्मा यो गन्ध स जनार्दनः।।

स्वादे च संस्थितः सोमः शब्दे देवो हुताशनः।

इच्छायां मन्मथो देवः लीलायां किल भैरवः।।

फेने गङ्गा स्थिता देवी बोधस्थाः सप्त सागराः।

इच्छाशक्तिः सुधामोदे ज्ञानशक्तिस्तु तद्रसे।।

तत्स्वादे च क्रियाशक्तिः तदुल्लासे परा चितिः।

एवं ध्यात्वा नमस्कृत्य, चन्दनाक्षतपृष्पैर्घटं सम्पूज्य, मूलमुच्चारयन् ॐ ह्लां बगलामुखि सर्वदुष्टानामित्यादि विलोममातृकया घटे कारणं पूरयेत्। तत्र चन्दनादि सुगन्धं निःक्षिप्य, "ॐ सां सीं सूं क्ष म ल व र यूं षोडशकलात्मने कामप्रदाय सोममण्डलाय नमः, इति गन्धपृष्पाभ्यां सम्पूज्य, अमृतादिकलास्तत्र पूजयेत्। अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ऋं शिशन्यै नमः, लृं चण्डिकायै नमः लृं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः ऐं श्रियै नमः ओं प्रीत्यै नमः औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः अः पूर्णामृतायै नमः इति षोडशकलाः सम्पूज्य, "अस्त्राय फट्" इति संरक्ष्य, "ॐ" इति अवगुण्ठ्य मूलेन्, "ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा" इत्यनेन संवीक्ष्य, तेनैवाऽभ्युक्ष्य, प्रणवेन पृष्पादिना सम्पूज्य, आत्मानं देवतात्मकं विभाव्य, गन्धलोलितं पृष्पमादाय "ॐ ऐं ह्लीं श्रीं विकारशोषिणि अस्य विकारापनयनाय ॐ फट्" इति जलमध्ये विलोड्य, तत्पृष्पमीशान्यां क्षिप्त्वा शापमोचनं कुर्यात्। कलशोपिर हस्तं दत्त्वा मन्त्रान्

पठेत्। 'शाँ शीं शूं शौं शौं शः' शुक्रशापिवमोचितायै सुरादेव्यै नमः, इति दशधा जपेत्। ततः ''ॐ ऐं हीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्नावय स्नावय स्वाहा'' इति दशधा जपेत्।

सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे। अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्।।

इति त्रि:प्रजप्य शुक्रशापं विमोचयेत्।

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।

इति त्रिःप्रजप्य ब्रह्मशापं विमोचयेत्। वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन मे देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहतु।।

इति त्रिरभिमन्त्र्य, क्रिकार्यक क्रिकार स्थापन क्रिकार स्थापन

ॐ ऐं अखण्डैकरसानन्दपरे परसुधात्मिन।
स्वच्छन्दरफुरणामन्तर्निधेहि कुलरूपिणि।।
ॐ क्लीं अकुलस्थामृताकारे सिद्धज्ञानकलेवरे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि।।
ॐ सौः तद्रूपेणैकरस्य च दत्वा त्वेतत् स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारे मिय विस्फुरणं कुरु।।

एतैर्मन्त्रैः कलाशमाच्छाद्य अमोघायै नमः, उत्पलायै नमः, सखायै नमः समाराध्यायै नमः इति सम्पूज्य, तदुपरि उद्धरणपात्रं संस्थापयेत्।

पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः। पावमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम्।। इति पवित्रीकृत्य मूलमुच्चार्य – ''कृष्णशापविनिर्मुक्ता मुक्ता च ब्रह्मशापतः। विमुक्ता शुक्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम्।। इति प्रजप्य, आनन्दभैरवाऽऽनन्दभैरव्यौ ध्यायेत्।

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्।।
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपिर स्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाऽऽभरणभूषितम्।।
कपालखट्वाङ्मधरं घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशाङ्कशधरं देवं गदामुसलधारिणम्।।
खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरशूलधारिणम् ।
विचित्रं खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिनम्।।
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः।

एचं ध्यात्वा, ''ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय वषट्।' इति आनन्दभैरवं त्रिःसम्पूज्य –

भावये च परां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वाऽन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्निधौ।।

एवं ध्यात्वा, ''ह स क्ष म ल व र यीं आनन्दभैरव्यै वषट्'' इत्यानन्दभैरवीं त्रि:सम्पूज्य -

''सुरादेव्यै च विद्यहे, समुद्रोद्भवे च धीमहि। तन्नस्तुष्टिः प्रचोदयात्।।

इति गायत्र्या त्रिरभिमन्त्र्य, ततो द्रव्यमध्ये त्रिकोणं विलिख्य वामावर्तेन पश्चिमकोणादारभ्य दक्षिणकोणपर्यंन्तं 'अं आं' इति षोडश स्वरान् मध्ये हं क्षं विलिख्य,

# आदिकादिकिलथादिरेखया वर्णमण्डलमखण्डसिद्धिदम्। अन्तरुल्लिसितहक्षलाक्षरं लक्षयन्ति पशवः कथं शिवे।।

अथ प्रथम शोधनम् पश्चात् मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, शिवेन सह संयोज्य तद्गलितामृतधारां वहन्नासापुटेन द्रव्यमध्ये पतितां विभाव्य, "गङ्गेति" मन्त्रेण क्रों इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलात् तीर्थान्यावाह्य, वं इति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्युद्रयाच्छाद्य हुम् इत्यवगुण्ठ्य, चक्रेण संरक्ष्य, अस्त्रेण छोटिकाभिर्दिग्बन्धनं कृत्वा मूलमष्ट्यारं प्रजयेत्। इति प्रथमशोधनम्। अथ द्वितीयशोधनम्

ततः यं इति शोषणम्, रं इति दहनम्, लं इति अमृतेनाप्लावनम्, वं इति मुद्रयाऽमृतीकरणम्। मूलमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य, कवचेनाऽभ्युक्ष्य, 'हुम्' इत्यवगुण्ठ्य, अस्त्रेण संरक्ष्य, ''मां मीं मूं मैं मौं मः मांसाशिनि दक्षिणे मांसं पवित्रं कुरु कुरु स्वाहा" इत्यागममन्त्रेण द्वितीयशोधनं कुर्यात्। इति द्वितीयशोधनम्।

# अथ तृतीयशोधनम् निर्माणक

द्वितीयवत् तृतीयशोधनम् विदध्यात्। तद् यथा "क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं कण्टकभिक्षणि कण्टकं भक्ष भक्ष स्वाहा" इत्यागममन्त्रेण मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य तृतीयां शुद्धि कुर्यात्। इति तृतीयशोधनम्।

## अथ चतुर्थशोधनम्

पोलिके त्वं महादेवि भैरवाऽऽनन्ददायिनि। सर्वसम्यक्प्रदे देवि मन्त्रसिद्धि प्रयच्छ तृतीयवत् चतुर्थशोधनम् योनिमुद्रया चतुर्थशोधनमिति संशोध्य, तिलमात्रं पिशितं कलशे निःक्षिप्य, मूलमष्टधा प्रजप्य, ततः कुम्भसमीपे चन्दनरक्तचन्दनकुङ्कुमानामेकत्र मेलनेन त्रिकोणवृतं चतुरस्रं विलिख्य शुद्धिमुद्रया मीनान्वितं बिलं निधाय, तत्त्वमुद्रया बिलमुत्सृज्य, 'हीं पिथकदेवेभ्यो नमः'' इति बिलं दद्यात्। पुनस्तं बिलं वामपाणिना उत्थाप्य कलशोपिर त्रिधा भ्रामियत्वा मूलमुच्चरन् पूजावाह्ये निःक्षिपेत्। ततः कारणकलशं संस्थाप्य, ततः शिक्तं शोधयेत्। इति चतुर्थशोधनम्।

#### अथ शक्तिशोधनम्

ततो गन्धतैलाभ्यक्तोद्वर्तनसुगन्धाम्बुना संशोध्य, दिव्यपीतवर्ण-दुकूलकञ्चक्यादिनिखिलाऽऽभरणैर्भूषियत्वा, शक्तिं यथोक्ततले समुपवेश्य, "ॐ हीं त्रिपुरायै नमः, इमां शक्तिं पवित्रां कुरु कुरु स्वाहा" "मम शक्तिं कुरु कुरु" इति सामान्याऽर्घ्यजलेन सम्प्रोक्ष्य, ततस्तत्कणें स्वाऽभेदेन निजं मन्त्रं जपेत्।

"ॐ हं ॐ हुं फट् स्वाहा", "ॐ हीं श्रीं सुरतप्रिये" "ॐ हीं श्रीं ॐ फट् स्वाहा" "ऐं प्लूं हौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि शुक्रशापं मोचये मोचय अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।"

ॐ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।
गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं तेऽश्विनौ देवौ आधत्तां पुष्करस्रजौ।।

इति शक्तिशोधनं कृत्वा, आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये विशेषार्घ्यं स्थापयेत्।

तद् यथा - पुष्पोद्धृतसामान्यार्घ्यजलेन आत्मानं पूजोपहारांश्च सम्प्रोक्ष्य, अग्नेर्मूलमन्त्रेण भुवं सम्प्रोक्ष्य, तत्र स्थिरमायाबीजित्रकोण-षट्कोणवृत्तचतुरस्ररूपं यन्त्रं विलिख्य, मूलमन्त्रेण त्रिकोणं सम्पूज्य, षट्कोणेषु षडङ्गानि सम्पूज्य, चतुरस्रे "पूर्णगिरिपीठाय नमः, जालन्धरपीठाय नमः, कामरूपपीठाय नमः', इति सम्पूज्य, अस्त्रमन्त्रेण क्षालितां त्रिपदीं स्थापयेत्। तदुपिर अग्नेर्दशकलाः "यं धूम्राचिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं किपलायै नमः, ळं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः'', इति सम्पूज्य, द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्। विलोममातृकया अर्घ्यपात्रे जलं पूरयेत्। ततः क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं जं झं जं छं घं डं. घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं अमृताद्याः षोडश कलाश्च पूजयेत्। जले अङ्कुशमुद्रया अमृतीकृत्य, आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत्। ततः षडङ्गेन सक्लीकृत्य, शङ्कमुद्रयाऽवष्टभ्य, योनिमुद्रया उद्दीप्य, गन्धाक्षतादिभिः देवीं सम्पूज्य, हृदयादिषडङ्गानि सम्पूज्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य मूलमन्त्रमष्टधा जपेत्।

### इति विशेषार्घ्यस्थापनम्।

अर्घ्यात् दक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रम् उत्तरतः शक्तिपात्रम्, तदुत्तरतः आचमनीयपात्रम्, सामान्यार्घ्यपात्रं च। तथाऽन्यानि पात्राणि स्थापयेत्। ततो वामे गुरुं दक्षिणे गणपतिं पूजयेत्।

### विद्या मार्थिक है अर हो पीठपूजनम् के लि अपटम्क करण

ततः सामयिकान् सर्वानाहूय यथास्थानं निवेशयेत्। पञ्चमुद्राभिः कुलमार्गपरायणाः चक्रमध्ये चक्ररूपेण पंक्त्याऽऽकारेण वा विशेयुः।

वीराः पद्मासनासीनाः शक्तियुक्ताः क्रमेण तु।
ततश्चक्रेश्वरो भक्त्या पूजयेत् शक्तिसाधकान्।।
चन्दनाक्षतपुष्पैश्च शिवशक्तिधिया क्रमात्।

ततः परामृतं प्रणम्य, अद्वैतभावनया निःशब्दं निर्विकारं कुण्डलिनीमुखे जुहुयात। यावन्न चलते दृष्टिर्यावन्न चलते मनः। तावत् पानं प्रकर्त्तव्यं पशुपानमतः परम्।।

इति नियमानुसारेण पानं कुर्यात्। ततो नीराजनं कृत्वा, ताम्बूलादिमुखवासं दत्त्वा, प्रदक्षिणां कृत्वा, दक्षिणां समर्प्य, शान्तिस्तोत्रम् पठेत्। पुनर्मूलमुच्चार्य –

"असाधु साधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया। तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाऽऽराधनं मम।।" "श्रीपीताम्बरार्ध्यं स्वाहा"

यज्ञच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम। सर्वं तदच्छिद्रमस्तु पीताम्बराप्रसादतः।।

इत्याच्छिद्रमवधार्य, मूलेन निर्माल्यं शिरिस, चन्दनं ललाटे वा, धृत्वा तिलकं कुर्यात्।

"यं यं स्पृशामि पादेन यं यं पश्यामि चक्षुषा। स एव दासतां याति यदि शक्रसमो भवेत्।। ततः संहारमुद्रया स्वहृदि देवतां संस्थापयेत्। यथासुखं च विहरेत्।

इति श्रीबगलामुखीचक्रपूजापन्दतिः सम्पूर्णां। पात्रवन्दनपद्यानि शान्तिस्तोत्रम् आनन्दस्तोत्रं चाऽत्र योज्यानि। इति

#### २. अथ पात्रवन्दनम् का विकास स्वापनिकास का

## (१) प्रथमं पात्रम्

ॐ श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसच्चन्द्रामृतप्लावितम् । क्षेत्राधीश्वरयोगिनीसुरगणैः सिद्धैः समाराधितम्।। आनन्दार्णवकं महात्मकमिदं साक्षात् त्रिखण्डाऽमृतम्। वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम्।।१।। इति स्थूलशरीरं शोधयामि स्वाहा।

# (२) द्वितीयं पात्रम्

ॐ हैमं मीनरसावहं दियतया दत्तं च पेयादिभिः। किञ्चिच्चञ्चलरक्तपङ्कजदशा तस्यै समावेदितम्।। वामे स्वादु विशुद्धिशुद्धिकरणं पाणौ निधायाऽऽत्मके। वन्दे पात्रमहं द्वितीयमधुनाऽऽनन्दैकसंवर्धनम्।।२।। इति सूक्ष्मशरीरं शोधयामि स्वाहा।

# (३) तृतीयं पात्रम्

ॐ सर्वाम्नायकलाकलापकितं कौतूहलद्योतनम्। चन्द्रोपेन्द्रमहेन्द्रशम्भुवरुणब्रह्यादिभिः सेवितम्।। ध्यातं देवगणैः परं मुनिवरैमोक्षार्थिभिः सर्वदा। वन्दे पात्रमहं तृतीयमधुना स्वात्मावबोधक्षमम्।।३।। इति कारणशरीरं शोधयामि स्वाहा।

# (४) चतुर्थं पात्रम्

ॐ मद्यं मीनरसावहं हरिहरब्रह्मादिभिः पूजितम्।

मुद्रामैथुनधर्मकर्मनिरतं क्षाराम्लितक्ताश्रयम्।।

आचाराष्ट्रकसिद्धिभैरवकलामांसेन संशोधितम्।

पायात् पञ्चमकारतत्त्वसिहतं पात्रं चतुर्थं नमः।।४।।

इति महाकारणशरीरं शोधयामि स्वाहा।

## (५) पञ्चमं पात्रम्

ॐ आधारे भुजगाधिराजवलये पात्रं महीमण्डलम्।

मद्यं सप्तसमुद्रवारि, पिशितं चाष्टौ च दिग्दन्तिनः।।

सोऽहं भैरवमर्चयन्, प्रतिदिनं तारागणै रक्षितम्।

आदित्यप्रमुखैः सुरासुरगणैराज्ञाकरैः किङ्करैः।।।।

इति आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

#### (६) षष्ठं पात्रम्

रुद्रं चामरभद्रपीठपरमानन्दोदितं दीपनम्। वामां राज्यमनोरमां शुभकरं सायुज्यसाम्राज्यदम्।। नानाव्याधिभवान्धकूपहरणं जन्मान्तरं नाशनम्। श्रीमत्सुन्दरितर्पणं हिरसं पात्रं च षष्ठं भजे।।६।। इति विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

#### (७) सप्तमं पात्रम्

ॐ जाग्रत्यप्नसुषुप्तिकार्यपरतश्चैतन्यसाक्षिप्रदम्।
विन्दुर्भांस्करविह्नचन्द्रधनुषो ज्योतिः कलां चार्पितम्।।
ईडापिङ्गलमध्यमाह्निवलया यत्कुण्डलीमध्यगम्।
पात्रं सप्तमपूरणेन परमानन्दाधिकं पातु माम्।।७।।
इति कुलतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

#### (८) अष्टमं पात्रम्

ॐ मूढाज्ञानकदम्बकाननकठोराग्निस्वरूपां पराम्। ज्ञानध्वस्तसमस्तसंशयघिया पूर्णं सुधाधारया।। भोगं मोक्षकरं सभावशकरं मूर्ध्निं ज्वलन्तीं पराम्। देवीं वक्षसि संजपन्ननुदिनं पात्रं भजे चाऽष्टमम्।।८।। इति मूलतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

#### (९) नवमं पात्रम्

ॐ मन्ये ब्रह्ममयं समस्तजगतां सारं महत् शाश्वतम्।
दुर्ज्ञेयं भवभोगचञ्चलिधयां स्थूलाकृतिं ध्यायताम्।।
अस्माकं द्रवरूपतां करुणाया पात्रं तदेतद् द्रुतम्।
तत् पात्र नवमं पिवेच्च नियतं भुक्तिं च मुक्तिप्रदम्।।९।।
इति विशेषतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

# (१०) दशमं पात्रम्

ॐ वामे चन्द्रमुखी मुखे चं मधुरं पात्रं कराम्भोरुहे।
मूर्ध्नि श्रीगुरुचिन्तनं भगवतीध्यानास्पदं मानसे।।
जिह्वायां जपसाधनं परिणतं कौलक्रमाभ्यासनम्।
तत् पात्रं दशमं पिवेच्च परमं भुक्तिं च मुक्तिप्रदम्।।१०।।
इति देवीतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

# (११) एकादशं पात्रम्

ॐ वामां वामकरे, सुधां च अधरे, मन्त्रं जपन् मानसे। वीणावेणुरवावयन्त्रविधिवद् गायन्ति पञ्चो रसः।। क्रीडाकेलिकुतूहलेन रसनालावण्यलीलारसः। प्राणोल्लासविलासपूर्णसमये पात्रं च एकादशम्।।१९१। इति सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा।

### ३. शान्तिस्तोत्रम्

ॐ नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा नश्यन्तु दूषका नराः।
साधकानां शिवाः सन्तु आम्नायपरिपालिनाम्।।
जयन्ति मातरः सर्वा जयन्ति योगिनीगणाः।
जयन्ति सिद्धडािकन्यो जयन्ति गुरवः सदा।।
जयन्ति साधकाः सर्वे विशुद्धाः कौलिकाश्च ये।
समयाचारसम्पन्ना जयन्ति पूजका नराः।।
नन्दन्तु अणिमासिद्धाः नन्दन्तु कुलपालकाः।
इन्द्राद्या देवताः सर्वास्तृष्यन्तु वास्तुदेवताः।।
चन्द्रसूर्यादयो देवास्तुष्यन्तु मम भक्तितः।
नक्षत्राणि ग्रहा योगाः करणा राशयस्तथा।।

सर्वे ते सुखिनो यान्तु सर्वा नद्यश्च पक्षिणः।
पशवस्तरवश्चैव पर्वताः कन्दरा गुहाः।।
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वे शान्ति कुर्वन्तु मे सदा।
शुभा मे विदिताः सन्तु मित्रास्तिष्ठन्तु पूजकाः।।
ये ये पापिधयः सुदूषणरता मित्रन्दकाः पूजने।
वेदाचारविमार्गनष्टहृदया भ्रष्टाश्च ये साधकाः।।
दृष्ट्वा चक्रमपूर्वमर्चनविधौ ये कौलिका दूषकाः।
ते ते यान्तु विनाशमत्र समये श्रीभैरवस्याऽऽज्ञया।।
साधकानां च द्वेष्टारः सदैवाम्नायदूषकाः।
डािकनीनां मुखे यान्तु तृप्तास्तत्पिशितैस्तु ताः।।
शत्रवो नाशमायान्तु मम निन्दाकराश्च ये।
देष्टारः साधकानां च ते नश्यन्तु शिवाऽऽज्ञया।।
ॐ शान्तिरस्तु शिवं चास्तु वासवाग्निप्रसादतः।
मरुतां ब्राह्मणैश्चैव वसुरुद्रप्रजापतेः।।

#### ४. सौभाग्यार्चनक्रमः

#### शक्तिसंगमे क्रिकालक अस्त्रीत वस्त्रीत वस्त्रीत

# श्रीदेव्युवाच

देवेश श्रोतुमिच्छामि बगलाक्रमनिर्णयम्।

#### ा श्री शिव उवाच हिम्मसमाहाहा ।

सौभाग्यर्चाक्रमेणैव बगला शीघ्रदर्शिनी।
पीताम्बरधरो मन्त्री पीतभूषणभूषितः।।
पीतामाल्याम्बरधरः पीतगेहसमास्थितः।
पीतपूजापरः प्रोक्तः पीतान्नप्रीतमानसः।।

पीतद्रव्योपभोगी च पीतासनसमन्वितः। पीतहोमी पीतपुष्पी पीतशक्तिसमन्वितः।। रोचनां भुवि संदद्यात् कुङ्कमं मुनिपुत्रकम्। हरिद्रया त्रिपुण्डूं च तन्मध्ये खादिरं शिवे।। हरिचन्दनेन धूपेन धूपितः परमेश्वरि। सर्वं सर्वं तु सम्पाद्य क्रममार्गरतो भवेत्।। मृष्टिस्थित्यन्तसंहारै पूजा च त्रिविधा कलौ। केवला सृष्टिपूजा स्यात् गर्भकौलागमक्रमात्।। अर्चनं गौडदेशे तु स्थितिमार्गं कुमारिके। गुप्तकौलागमं नाम गौडदेशार्चने विधिः।। कामरूपागमं नाम संहारक्रमपूजने। गौडागमं चाऽवलम्ब्य सांख्यायनमुनिस्तथा।। उक्तवानागमे चैव स्थित्यर्चा शृणु पुत्रिके। सर्वाङ्गसुन्दरीं रम्यां सर्वावयवशोभिताम्।। नवोढां पुष्पिणीं चैव प्रार्थयेद् विप्रकन्यकाम्। कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कुमारिकाम्।। अथ वा भौमवारे च निशायां भृगुवासरे। सुवासितेन तैलेन कुर्यादभ्यञ्जनं तथा।। तूलिकातल्पमानीय आस्तीर्योदङ्मुखे तदा। तस्योपरि समास्तीर्य शेवन्तैर्जातिचम्पकैः।। कर्पूरं चैव कस्तूरीमिश्रितं चन्दनं तथा। सर्वाङ्गलेपनं कुर्यात् लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान्।। पर्यङ्कोपरि तां कन्यां चन्दनेन विलेपिताम्। ध्रुवा द्यौरिति मन्त्रेण कन्यां दक्षिणतोमुखीम्।। उन्मुखीशयनं कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारकः। तस्याः पादौ प्रसार्याऽथ गुप्तेनाऽर्चनमाचरेत्।।

न्यस्य षोढाद्वयं चैव बगलापञ्जर न्यसेत्। कन्यां चैव न्यसेदेवं तत्तदङ्गानि संस्मरन्।। पादं जपपुरं चैव मार्जयेन्मूलविद्यया। गन्धद्वारेति मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम्।। मूलमन्त्रेण सम्यक् च पुष्पमालां समर्पयेत्। निवेदयेद् द्रव्यशुद्धिं तत्रैव जपमाचरेत्।। शतमष्टसहस्रं च च मन्त्रराजमिमं जपेत्। पुरश्चरणमध्ये च प्रतिमार्गं च वासरे।। अथवा पौर्णमास्यां च सौभाग्यार्चनमाचरेत्। प्रयोगसिद्धिदं पुंसां मन्त्रसिद्धिकरं परम्।। एतत्क्रमं विना देवि प्रयोगो न भवेत् क्वचित्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सिद्ध्यर्थ देवि भूतले।। सौभाग्याख्यक्रमं देवि बिना सिद्धिर्न कोटिभिः। अभिमानाष्टकं त्यक्त्वा त्यक्त्वा वै दूषणत्रयम्।। त्यक्त्वा पञ्चेन्द्रियासिक्तं सौभाग्यक्रममाचरेत्। सुखदुःखे समे कृत्वा लाभाऽलाभौ जयाऽजयौ।। शीतोष्णसमतां कृत्वा सौभाग्यक्रममाचरेत्। षोढाद्वयं च न ज्ञात्वा यः करोत्यर्चनं भुवि।। पतितः स भवेत् पुंसो रौरवं नरकं ब्रजेत्। वाह्याभ्यन्तरयोर्देवि प्रभेदज्ञायोर्विना।। पीतक्रमो न कर्तव्यो देवताशापमाप्नुयात्। संकल्पं च विकल्पं च त्यक्त्वा विज्ञानमानसः।। पीतक्रमं ततः कुर्यात् नो चेद् भ्रष्टो भवेद् ध्रुवम्। जितेन्द्रियः सुखं कृत्वा कुर्यात् पीतक्रमं शिवे।। सुखार्थं कुरुते योऽसौ देवताशापमाप्नुयात्। स्वस्यावेशविधिं चैव न ज्ञात्वा परमेश्वसि।।

यः करोत्यर्चनं देवि स विप्रः पतितो भवेत्। यस्तु कन्यामनः क्षोभं करोति यजने शिवे।। भ्रान्तचित्तो भवेत् सद्यो वाचस्पतिरिवापरः। नोत्पादयेद् वेदनां च मनसश्च शरीरयोः।। वेदनां जनयेद् यस्तु स नरः पतितो भवेत्। स्वपत्नीं भ्रातृपत्नीं वा गुरुपत्नीमथापि वा।। अर्चयेद् यौवनोपेतां सांख्यायनसमर्पिताम्। दीक्षालयस्थां रजकीं कुलालगृहकन्यकाम्।। पुलिन्दकन्यकां वापि मृदुचूडकमादरात्। अर्चयेद् ऋषिपत्नीं च पूर्वोक्तलक्षणैर्युताम्।। अर्चनं विधिमार्गेण पूजां दुर्वाससो मतम्। सर्वलक्षणसंयुक्तां प्राप्तिक पुष्पिणीमर्चयेच्छिवे।। मतङ्गमुनिनोक्तं च सद्यःसिद्धिकरं भुवि। सिद्धिक्रमोऽयं देवेशि नास्ति सिद्धिर्गुरुं विना।। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गुर्वाज्ञापरिपालकः। सिद्धो भवति देवेशि नात्र कार्या विचारणा।। इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि। इति शक्तिसंगमे चतुर्विशतिपटले ताराखण्डे सौभाग्यर्चनम्।

# ५. मुण्डसाधनम् (वीरसाधनम्)

नानाकोटिमुनीन्द्रसेवितपदां पीताम्बरालङ्कृताम्। वामे मुण्डधरां गदां च दधतीं प्रेतासनाध्यासिनीम्।। ध्वंसीं दुष्टजनस्य भक्तजनतां सन्तोषयन्तीं सदा। ध्यायेऽहं बगलामुखीं प्रतिदिनं दारिक्र्यविध्वंसिनीम्।।

#### उक्तं च संगमे - किक्रा का म निर्देश के म

श्रीविद्यायां कालिकायां तारिण्यां भैरवीमनौ। चण्डके बगलानां च साधनेयं प्रकीर्तिता।। इति प्रमाणाद् बगलामन्त्रे वीरसाधनमुच्यते।

#### प्रथमं शय्यासाधनम्

कुहुपूर्णेन्दुसंक्रान्त्यां शनौ वा मङ्गले दिने। चतुर्दश्यष्टभागे तु चितां वापि शवं ब्रजेत्।। शय्यादिकं तु तदनुकल्पम्, तत्र प्रयोगः-

आदौ नग्नो भूत्वा रात्रौ सार्धप्रहरगतायां, शय्यां व्रजेत् मूलेन शय्यामभिमन्त्रयेत्, तत्रोपविशेत्, वामे "गुरुभ्यो नमः, परमगुरुभ्यो नमः, परमणुरुभ्यो नमः, परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः" इति गुरुचतुष्टयं प्रणम्य, दक्षिणे गणेशं, मध्ये श्मशानवासिन्यै, ततो 'हीं' इत्यासनं सम्पूज्य, आसनतले शय्यातले वा "ॐ ऐ फट्" वा लिखेत्। मूलेनाचम्य 'ॐ मणिधरवित्रिणि महाप्रतिसरे मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" इति शिखां बद्धा, शरीरेऽङ्गन्यासादीन् भूतशुद्ध्यन्तं कृत्वा, स्वहृदि देवतां विभाव्य, मानसैः सम्पूज्य, शय्यातले पूर्वलिखितमन्त्रोपिर 'वं वटुकेभ्यो नमः' इति मनसा पाद्यादिभिः सम्पूज्य, रं इति जलधारयां अग्निप्राकारं विचिन्त्य, संकल्पं कुर्यात्।

तिथ्याद्युल्लिख्य, अमुकशर्म्माऽहम् अद्यारभ्य, एकदिनसाध्ये तु,'यावत् कालेन सिध्यति तावत् कालम्' अमुकदेवता (बगलामुखी) – सिद्धिकामः अमुकमन्त्रसाधनम् (मन्त्रराजं हृदयस्तोत्रस्थं वा) अहं करिष्ये, इति संकल्प्य, अष्टाधिकायुतजपं कुर्यात्। जपं समर्प्य, पुनः संकल्पं कुर्यात्, तद्दशांशहवनादिकं चाऽऽचरेत्। धारणकुशेन वटुकं कृत्वा क्षमस्वेति विसृजेत्, इति शय्यासाधनम्। एवं परकीय शून्यागारेऽपि।

# , प्राप्तिकारम् अथ त्रिपथचतुष्पथसाधनम् को सम्बन्धि केन्द्रीएक

त्रिपथं चतुष्पथं वा गत्वा गुरुं सम्पूज्य, 'मणिधरी' इति मन्त्रेण वस्त्रान्ते ग्रन्थि बध्वा –

ॐ श्मशानवासिनो येऽपि देवा दैत्याश्च भैरवाः। दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदास्ते भवन्तु मे।।

इति प्रणमेत्। ततः पूर्वमुख उदङमुखो वोपविश्य, आचम्य, स्वस्तिवाचनस्थानं सम्मार्ज्य, तत्र 'ह सौः इति विलिख्य, तत्रासनमास्तीर्य संविशेत्। हृदि इष्टं ध्यात्वा, मानसैः समभ्यच्योंपकरणैः अष्टदिक्षु बलि दद्यात्। तद्यथा-पूर्वे काल्यै नमः, इति सम्पूज्य बलि दद्यात्।

काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी। विप्रचित्ता तथा नीला बलाका च घनत्विषा।।

एता अष्टदिक्षु सम्पूज्य बलि दद्यात्। तत्र संकल्पः - अमुकदेवताया अमुकमन्त्रजपेन अमुकसिद्धिकामः अष्टाधिकायुतजपमहं करिष्ये। त्रिपथे चतुष्पथे वा जपं समर्प्य, दक्षिणादिकं दत्वा, शयनं संस्कृत्य इष्टं स्मरेत्। गृहं गच्छेत्। एवं विषाणवृक्षे उज्जटे महोज्जटेऽपि साधयेत्।

#### जपसंख्यानियम

एकाक्षरो दशसहस्रात्मकः द्व्यक्षरोऽष्टसहस्रात्मकः त्र्यक्षरोऽष्टसहस्रात्मकः, इति साधारणनियमः।

#### अथ बिल्वमूलम् -

सवारि बिल्वमूलं गत्वा, गुरुं सम्पूज्य, क्षेत्रपालं च समभ्यर्च्य –
"ॐ क्षेत्रपाल महाभाग श्मशानाधिप सुव्रत।

सिद्धिं देहि जगत्कर्तः देहि स्थानं नमोऽस्तु ते।।"

इति नत्वा सम्मार्जितस्थले "ऐं ह सौ ऐं" इति लिखेत्। पूर्ववत्

जपादिकं विघाय, संकल्पं कुर्यात्। अमुकदेवतायाः अमुकमन्त्रसिद्धिकामः अष्टाधिकायुतम् इत्यादि। बिल्वमूले जपं कृत्वा समर्पयेत्, स्थानं विसृज्य, स्थानं सम्मार्ज्य गृहं गच्छेत् इति।

## अथ त्रिमुण्डम्

वानरमहिषमार्जारमुण्डत्रयं, मनुष्यमुण्डत्रयं वा गन्धोदकेन संप्रोक्ष्य, स्थापयेत्। भूमौ पोथियत्वा, तदुपिर वितस्तिमितां वेदीं विधाय, तत्र भूतनाथादीन् पूजयेत्। पूर्वे भूतनाथाय नमः, दक्षिणे श्मशानाधिपाय नमः, पश्चिमे कालभैरवाय नमः, उत्तरे ईशानाय नमः, इति सम्पूज्य, बिलं दत्त्वा, मध्ये "ह सौः" इति विलिख्य, तत्र ऐं, वाग्देवतायै नमः, इति बिलं दत्त्वा –

देवेश देवदेवेश मुण्डरूप जगत्पते। दयां कुरु महाभाग सिद्धिदो भव मुण्ड मे।।

इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा, ''हीं हीं हुं फट्'' इति मुण्डेभ्यः पाद्यादिकं दद्यात्। विदिक्षु 'ह्नीं'चण्डिकायैः' इति नैऋत्यादि कोणेषु वायव्ये 'हीं भटुकरिण्यै' ईशान्ये 'हीं दयायै', अग्निकोणे 'हीं चण्डिकायै', इति बलि दद्यात्। ततः सम्मुखे उत्थाय –

श्मशानवासिनो ये ये देवा देव्यश्च भैरवाः। दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदास्तु भवन्तु मे।।

इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा, स्थानं स्पृष्ट्वा, 'वशो भव' इति वदेत्। ततो वेदिकायामासनमास्तीर्य, उपविश्य, 'रं' इति जलधारया अष्टप्राकारं विचिन्त्य, संकल्पोक्तविधिना इष्टं सम्पूज्य, संकल्पं कुर्यात्। अमुकदेवतायाः (श्रीबगलामुख्याः) अमुकमन्त्रसिद्धिकामः त्रिमुण्डोपरि अष्टाधिकायुतजपमहं करिष्ये, इति जप्त्वा, समर्प्य, दक्षिणादिकं दत्त्वा, स्थानं संस्कृत्य, पुरश्चरणविशेषः कीलकं विना कार्यः।

### ्रिमुण्डपोथनस्थानमाह

शून्यागारे नदीतीरे पर्वत वा चतुष्पथे। बिल्वमूले श्मशाने वा निर्जने चैकलिङ्गके।। मुण्डं सर्वकामार्थसिद्धये। योजयेन् एतेषु

विकारी के अवस्थान इति त्रिमुण्डसाधनं सम्पूर्णम्। 河南 四河市 富。产,严明历代高。48、50年

# ६. कवचम्

**北**斯特斯特 (50 श्रीगणेशाय नमः। प्रथमं गुरुं ध्यायेत्।

अनुसामा श्रीदेव्युवाच नामा सम राज्ञां मण्डलिकादेवीबगलोपरि सर्पताम्। सवर्णानां महादेव धनविप्लुतचेतसाम्।।१।। दुष्टसर्पादिजन्तूनां स्तम्भनं वद शङ्कर।

श्रीभैरव उवाच पुरा कृतयुगे देवि वातक्षोभ उपस्थिते।।२।। महार्णवानामेकत्वे गते क्षोभं भयं ययुः। सेन्द्राः सबैष्णवाः सर्वे सभयं मामुपस्थिताः।।३।। शिव शङ्कर रुद्रेश रक्षाऽस्मान् शरणागतान्। महावातादिसंक्षोभभयादस्मान् महार्णवात्।। तच्छूत्वाऽहं महेशानि कवचं पूर्वनिर्मितम्। दत्तवान् सर्वदेवेभ्यो महाभयनिकृन्तनम्।।५।। कवचं बगलामुख्याः शिवप्राणप्रदं महत्। पूर्वं भस्माऽसुरत्रासाद भयव्याकुलितः स्वयम्।।६।। पच्यन्ते तेन मत्प्राणास्तान् ररक्ष महेश्वरी। शिवप्राणाप्रदं तस्य विश्रुतं रक्षकं परम्।।७।।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीकवचस्य श्री भैरव ऋषिः उष्णिक् छन्दः, अद्वैतरूपिणी महास्तम्भनकारिणी श्रीपीताम्बरा देवी, स्थिरमाया बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रणवः कीलकम्, मम दूरस्थानां समीपस्थानां सर्वदुष्टानां वाक्पदगतिमुखस्तम्भनार्थ, परसैन्यपरमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तम्भनार्थं, सर्वराज-कुलमोहनार्थं, सर्वकामिनीजनवश्यार्थं श्रीबगलामुखीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ ह्लां हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखाये वषट्, ॐ ह्लें कवचाय हुम्, ॐ ह्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ हृः अस्त्राय फट्। एवं करन्यासः।

## अथ ध्यानम्

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डितरत्नवेद्याम्।
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम्।।
पीताम्बराऽऽभरणमाल्याविभूषिताङ्गीम् ।
देवीं नमामि धृतमुद्ररवैरिजिह्वाम्।।

षट्त्रिंशदक्षरा विद्या बगला पातु मे शिरः।
सहस्रारे गुरुः पातु शक्त्या परमयोज्ज्वलः।।८।।
चिद्रूपा परमा शक्तिर्ललाटं शिवगेहिनी।
भूयुग्मं मे महाकाली नेत्रे मे परमेश्वरी।।९।।
कर्णयुग्मं पीतपुष्पप्रिया मे पातु कपोलयोः।
चिबुके परमा शक्तिरोष्ठयोः परमा कला।।१०।।
वदनं सकलं पातु परब्रह्मस्वरूपिणी।
पीतपुष्पार्चिता कण्ठं स्कन्धौ स्कन्दस्तनप्रदा।।१९॥।
पीताम्बरा दक्षभुजां वामे वामाङ्गधारिणी।
हदयं च स्तनद्वन्द्वं नाभि विश्वस्वरूपधृक्।।१२॥।
उदरं दुर्धरा मेऽव्यात् कटिं कन्दर्परूपधृक्।
नितम्बौ निमता देशे देवता जघनं रमा।।१३॥।

जङ्घायुग्ममनाधारा जानुनी जन्तुरूपिणी। करू धर्मप्रदा मेऽव्याद् गुल्फे गगनरूपधृक्।।१४।। पादौ तु कूर्मरूपा सा पातु पादाङगुलीस्तथा। शिरसः पादपर्यन्तं पातु मां परमा कला।।१५।। गणेशरूपिणी मेऽव्यादाधारं सच्चतुर्दलम्। स्वाधिष्ठानं षड्दलं पातु में ब्रह्मरूपधृक्।।१६।। मणिपूरे दशदले पातु केशवरूपिणी। हत्पङ्कजं शैवभक्तिविशुद्धं जीवरूपिणी।।१७।। आज्ञाचक्रे बिन्दुरूपा परब्रह्मकुटुम्बिनी। ब्रह्मरन्ध्र सहस्रारे पङ्कजे स्वच्छरूपिणी।।१८।। पातु मां परमा शक्तिश्चमरी कुटिलालका। षट्त्रिंशदक्षरा विद्या पीता पीतवपुर्धरा।।१९।। पीतपुष्पार्चिता पीतनैवेद्याऽपि बलिप्रिया। सर्वाङ्गे मे शुभा पातु वैरिस्तम्भनकारिणी।।२०।। ब्रह्मरन्ध्रं तु परमा संसारार्णवतारिणी। मां तारयेन् महादेवी मनोवाञ्छितदायिनी।।२१।। आज्ञाचक्रे गुरुरूपा महाभयविनाशिनी। सर्वविद्याप्रदा पातु जिह्नां शास्त्रवपुर्धरा।।२२।। विशुद्धे षोडशदले जीवेश्वरवपुर्धरा। षट्त्रिंशत्तत्वरूपा सा कण्ठस्था मां शिवाऽवतु।।२३।। हत्पङ्कजे भवानी सा हद्यरूपा परात्मिका। स्वकीयान् महाशत्रून् विदारय विदारय।।२४।। मणिपूरे दशदले महाविष्णुस्वरूपिणी। दारयत्यखिलान् लोकान महामाया परा तु सा।।२५।। प्रजापतिस्वरूपेयं स्वाधिष्ठाने तु षड्दले। सृष्टिस्थितिपरा विद्या मां पातु बगलामुखी।।२६।।

गणेशरूपधृक् पातु ममाधारे चतुर्दले। षोडशस्वररूपेण पातु मां परमा कला।।२७।। कं खंगं घं तथा डं चं छं जं झं तथाऽवतु। ञं टं ठं डं ढं तथा णं तं थं दं धं तथाऽवतु।।२८।। नं पं फं तु शत्रुभ्यः पीतां मां ध्यानतत्परम्। बं भं मं यं विदारय शत्रून् मे वाक्स्वरूपिणी।।२९।। रं लं वं शं तथा षं सं शत्रोर्जिह्नां विदारयतु। मे वाचं मे मुखं जिह्नां सदा रक्षतु रक्षतु।।३०।। हं ळं क्षं सकलं पातु रक्ष मे परमं यशः। प्रणवं स्थिरमायां च तृतीयं कान्तिरूपिणी।।३१।। या तृतीयस्वरा युग्मं पादाद्यं स्वरपङ्कजम्। द्विस्तृतीयं दक्षनेत्रं 'सर्वदुष्ट' बहुस्मृतम्।।३२।। द्वितीयं कीलयेति च तथा बुद्धिं विनाशय। षष्ट्या वाचं मुखं पदं स्तम्भयाथोऽपि जिह्नया।।३३।। स्थिरमाया तथा तारं चान्ते वह्निवधूप्रिया। एषा विद्या महाविद्या शत्रुस्तम्भनकारिणी।।३४।। त्रिधा मन्त्रं तथोच्चार्य सर्वाङ्गे व्यापकं कुरु। जयत्येव न संदेहः शत्रून् घोरान् महाहवे।।३५।। कुलालमृत्तिका ग्राह्या वामहस्तेन दीपकम्। कृत्या प्रज्वाल्य तैलेन वाग्रे स्थाप्यं ततो जपेत्।।३६।। त्रिरात्रे स्तम्भयत्येव शत्रुसेनां महाहवे। गौरवर्णां पीतपुष्पैर्बालां सम्पूज्य वामतः।।३७।। न्यासान् विधाय तद्देहे जायायोगे जपेन् मनुम्। पीतोपचारैस्तां शक्तिं सन्तोष्य परिवारणात्।।३८।। वशयत्येव लोकेशं कि पुनः क्षुद्रमानुषम्। वाचः स्तम्भनकामस्तु वीरशक्तिं शुभाननाम्।।३९।।

षोडशाष्ट्रसुवर्णाद्यैरलङ्कृत्य । भजन् शिवाम्। क्रिक्टि सहस्रं मूलमन्त्रं तु जप्त्वा वाचस्पतेरपि।।४०।। स्तम्भयत्यैव परमां वाचं, किं पुनः क्षुद्रमानुषम्। वशीकरणकामस्तु बध्वा परिकरं दृढम्।।४१।। शक्तिर्लिङ्गोपरि स्थाप्या त्रिसहस्रं जपेन् मनुम्। इन्द्राणीं वशयत्येव किं पुनः क्षुद्रमानुषीम्।।४२।। मण्डलाधीशं वशीकुर्याच्चोत्तराभिमुखः स्थितः। सुन्दरी षोडशीं शुभ्रां स्वाननां च शुचित्मिताम्।।४३।। तत्कुचौ च करे धृत्वा पीताद्यां हसिताननाम्। लिङ्गे संस्थाप्य संचुम्बन् मुखं पीतामनु जपेत्।।४४।। त्रिसहस्रे महाराजं वशयत्येव नाऽन्यथा। कृष्णाष्टमी समारभ्य यावत् कृष्णचतुर्दशी।।४५।। नियतं तु सहस्रं च शापाऽनुग्रहसिद्धये। येन केनाप्युपायेन बगलाभक्तितत्परः।।४६।। स्तम्भयेत् सकलान् देवान् वशयत्येव शङ्करम्। मारयेच्छत्रुसंघातं चालयेत् पर्वतानिप।।४७।। देवान् स्थापयते चैन्द्रे दृष्टवा ज्वरविनाशनम्। स्तम्भितं चैकधा देवि तत् सकृच्चासकृज् जपन्।।४८।। एका सा परमा विद्या महाशत्रुविदारिणी। नास्तिके तस्करे दुष्टे मूढे पण्डितमानिनि।।४९।। न देया दुर्जने विद्या शुभोदयमवाष्नुयात्। सुशीलाय सुदातव्या गुरुभक्तिपराय च।।५०।। विशुद्धाय महामन्त्रजापिने देयमुत्तमम्। अस्य पार्वतीमाहात्म्यकवचस्य वरानने।।५१॥

महेन्द्रादौ रणे वाते प्रलये पर्युपस्थिते। स्तिम्भिता चैकधा देवि स्मृत्वा तं सकृज् जपात्।।५२।। कृत्वा पुरा तु कवचं जपेन् मन्त्रं समाहितः। नान्यथा स्तिम्भिनी विद्यासिद्धिः स्यादिति निश्चयम्।।५३।।

इति श्रीवीरतन्त्रे महोत्रताराकल्पे भैरवसंवादे षट्त्रिंशदक्षरविद्याप्रस्तावे बगलामुखीकवचं समाप्तम्।

इति श्री बगलारहस्ये शान्तिस्तोत्रादिविधानात्मकः चतुर्थः परिच्छेदः।

विभिन्ने समास्य योवत् कृष्णेत्वतिशामिक्रियो

विताय के संवर्ध के अध्यात महाम्यान के संवर्ध वर्ग अस्ति के सम्बद्धात के स्वति के सम्बद्धात के स्वति क

The All College of the State of

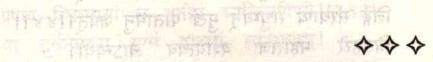
केल्या अस्ति विमान्ति स्थानिकारिया केल्या

नीक्ष्मप्रदेश प्राथमिक विकासिक व्याप्ति ।

अस्य विसंकृतिस्थानयनस्थान् अस्याति । १५० ।।

Literal Field In Literal In 1800

PARIS PRINTED FIRST PRINTED PRINTED



# अथ पञ्चमः परिच्छेदः

PROPER PROPERTY IN

AND THE PARTY OF T

व में अज्ञाता संभाता आचा। में हि मनावस्ता अपना अ

# वैदिकं प्रकरणम्

# १. श्रीबगलामुख्या वैदिकं रूपम्

उक्तं चाभिचारिकप्रकरणे यजुर्वेदे - प्राप्ताम हात (१) है . जि

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे निष्ठ्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्करामि, यं मे सजातो यमसजातो, निचखानोत्कृत्यां किरामि। (यजु: ५।२३)

उळ्ट भाष्यम् – रक्षोहणं रक्षांसि या वागपहन्ति सा रक्षोहा तां रक्षोहणम्। "ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप" धातूपपदकालप्रत्ययनियमात्र प्राप्नोति, इति 'बहुलं छन्दिस इति क्विप् प्रत्ययः। वलगहनं वलगान् कृत्याविशेषान् भूमौ निखनितान् शत्रुभिर्विनाशार्थं हन्तीति वलगहा वाक्। 'पूर्ववत् क्विप् प्रत्ययः।' तां वलगहनम्। 'वलो वृणोतेः' यस्य वधार्थं क्रियते तं रोगादिभिर्वृण्वन् आ प्रच्छादयन् गच्छतीति वलगः, वैष्णवीं विष्णुदेवत्यां वाचं वदेति सम्बन्धः। उत्किरितः। इदमहं यत् करोमि तद् वलगकृत्याविशेषम् उत्किरितः। उद्यामि। यं मे निष्ठ्यः यं वलगं मे मम निष्ठ्यः पुत्रः, स हि निर्गत्य शरीरात् ततो विस्तीणों भवति यं च अमात्यः वलगं निचखान निखनितः। छन्दिस लङ्लुङ्लिटः सर्वेषु कालेषु भवन्ति। द्वितीयमुत्किरितः। यं मे समानो विद्यादिभिः सदृशः असमानः विद्यादिभिरसदृशः। शेषं व्याख्यातम्। तृतीयमुत्किरितः। यं मे सबन्धः।

सबन्धुः स्वजनः असबन्धुस्तद्विपरीतः शेषं व्याख्यातम्। चतुर्थंमुत्किरित। यं मे सजातः। सजातो भ्राता। स हि समानजन्मा भवति, असजातः। असमानजन्मा भ्रातुरसदृशः। शेषं व्याख्यातम्। सर्वमुत्किरित उत्कृत्यां किरामि उत्किरामि कृत्याम्।

महीधरेणाऽपि समानमेतद् व्याख्यातम्। प्रमाणवाक्यानि कानिचिद्धिकानि प्रदत्तानि। किञ्चिद् वैशद्यं च प्रदर्शितम् यथा –

पराजयं प्राप्य पलायमानैः राक्षसैरिन्द्रादिवधार्थमभिचाररूपेण भूमौ निखाता अस्थिकेशनखादिपदार्थाः कृत्याविशेषा वलगा। ''वलगो वृणोतेः'' (नि. ६।२) ''तान् बाहुमात्रान् खनेत्'' इति श्रुतेः ''असुरा वै निर्यन्तो देवानां प्राणेषु वलगान् न्यखनन् तान् बाहुमात्रे त्वविन्दन् तस्माद् बाहुमात्राः खायन्ते इति तैत्तिरीयश्रुतेः।'' वैष्णवी विष्णुसम्बन्धिनीम्।

कात्यायनसूत्रे कृत्यानिवारणात्मकस्य अस्य प्रकरणस्य निरूपण-प्रकारः सम्यक् प्रदर्शितोऽस्ति। अस्मिन् प्रकरणे यः सिद्धान्तो निरूपितः, स श्रीबगलामुख्यस्तान्त्रिकस्वरूपेण साम्यतां गच्छति। अथर्ववेदस्य बगला-सूक्तेऽनेके प्रकाराः कृत्यायाः दर्शिताः सन्ति, तान् सुक्तलेखने दर्शियष्यामः।

यजुर्वेदस्य काण्वशाखायां तैत्तिरीय-काठक-मैत्रायणीशाखास्विप चैतल्लभ्यते। वैष्णवीिमिति पदेन विष्णूपासिता शक्तिः स्वतन्त्रसम्मता यद्विद्याप्रस्तावे उक्तम्-स्तम्भनशक्तिरूपेयं विद्या तस्याः व्यापकत्वमभ्युपगम्य पुरुषरूपेण स्तौति।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हम विकास स्वापनिकास सम्बद्धाः (य. ३२।६)

स्पष्टार्थत्वात्र व्याख्यायते। अन्यच्च - नामि हो हा हा अन्य

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधिसूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (य. ३२।७)

अत्रापि उक्तमेव तत्त्वं स्वीकृतम्। बृहदारण्यकस्याक्षरब्राह्मणे अक्षररूपेणेदमेव व्याख्यातम्।

एतस्याक्षरस्य प्रशासने गार्गिसूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः, एतस्याक्षरस्य प्रशासने गार्गिद्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः।

ा हिंदी साम क्रीस्कृतिय अपने असम के स्टब्सिट (३१९) ''अक्षराम्बरान्तधृतेः'' ''सा च प्रशासनात्'' (वे.द.-१।३।१०,११) इत्यनेन शक्तिरूपेण सूत्रितं च। एभिर्वचनै रक्षात्मकं शत्रुविनाशकं च स्तम्भनमाहात्म्यं व्याख्यातं भवति।

### अशासात सीएकारेय गीतायां च ार्व में के हैं है

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जिह शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।। विष्टभ्याहिमदं कृत्स्नमेकान्तेन स्थितो जगत्। (गी.अ. ३।४३।१०, ४२) इत्यादि रहस्यम्।

। १ । भार साम्बनार अन्यच्य ह क तन्तर विकास "रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद् । मार्ड साम्रहाम अस्त का का (य.वे. ५।२२)

अस्मिन् मन्त्रे रक्षसां विनाशने बृहतीछन्दो विशिष्टां बृहत्वगुणयुक्तां वाचं प्रयुंक्ते। श्रीभगवत्या मन्त्रो बृहतीछन्दोविशिष्टो निर्दिष्टः।

उक्तं च दैवतब्राह्मणे बृहस्पतेर्भवति वाचमभवद् (ख.२-७)

सायणेनेत्थं व्याख्यातम् "बृहस्पतेर्वाचं वाक्यं बृहती छन्दः अभवत् अक्षरत् अगच्छद् वा वृहत्या सार्धं बृहस्पतिरिप। तस्मात् प्रजापतेर्यज्ञेऽजायत इत्यर्थः। हताः इन्ह्राहाम

पुनश्च तत्रैवोक्तं वृहती वृहतेर्वृद्धिकर्मणः (ख. ३।११) छान्दोग्ये च-वाग् हि वृहती तस्या एष पतिः (१।३।२।११) रहस्यरूपेण उभयं चैतद् बगलामन्त्रे संगच्छते।

#### २. बगलासूक्तम्

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये। आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।१।। यां ते चक्रुः कृकवाका वजे वा यां कुरीरिणि। अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।२।। यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति। गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।३।। यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम्। क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।४।। यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः। शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।५।। यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरिधदेवने। अक्षेषु कृत्यां यां चक्क पुनः प्रतिहरामि ताम्।।६।। यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे। दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।७।। यां ते कृत्यां कूपे वदधुः श्मशाने वा निचख्नुः। सद्यनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम्।।८।। यां ते चक्रुः पुरुषस्यास्थे अग्नौ संकसुके च याम्। म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रतिहरामि ताम्।।९।। अपथैनाजभारैणां तां पथेतः प्रहिण्मसि। अधीरो मर्या धीरेभ्यः संजभाराचित्या।।१०।। यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्चे पादमङ्गुरिम्। चकार भद्रमस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः।।११।। कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेऽप्यम्। इन्द्रस्तं हन्तुमहता बधेनाग्विर्विध्यत्वस्तया।।१२।। इति अथर्ववेदे पञ्चमकाण्डे षष्ठोऽनुवाकः।

अस्य सूक्तस्य नियमपूर्वकपारायणेन सर्वकृत्याजन्यं व्याध्यादि निवर्तते। रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमित्यादि कण्डिकायां कृत्यानिवारणार्थं प्रयोगविशेषं भाष्यकृन्महीधरः प्रादर्शयत। विस्तरभिया अत्र नोक्तम्।

# ३. श्रीबगलामुखीति संज्ञार्थनिर्णयः

ननु बगलामुखीति संज्ञा कथं संगच्छते, बगलेति नाम्ना प्रसिद्धं कोशादौ व्याकरणव्युत्पत्त्याऽपि साधियतुं दुर्घटमेवेति चेत् न यास्केन वृणोते रूपस्याङ्गीकारत् "वलगो वृणोतेः" (नि.६।२) वलगहनिमत्या-दिव्याख्यानावसरे उव्वटमहीधराभ्यां तथैवाङ्गीकारत् सुसाधुत्वं चावगम्यते। बगल शब्दार्थ उक्त एवः वलगा इति लुप्तनकारिद्धतीयाबहुवचन-स्यानुकरणम्। तान् खनित विदारयित इति 'बगलामुखी' सिध्यति। "खनु अवदारणे" इत्यस्मात् "ङित् खनेर्मुट् स चोदात्तः" इत्युणादिसूत्रेण मुखशब्दनिष्पादनं भवति।

मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि। सन्ध्यन्तरे नाटकादेः द्योशब्देऽपि नपुंसकम्।।

इति मेदिनीकोशाद् अनेकेऽर्थाः मुखशब्दस्थाऽवगता भवन्ति। अत्र वेदार्थानुगतत्वात् तन्त्रार्थसम्मतत्वाच्च निःसारणमेवाभिप्रेतं भवति। वलगानां तथात्वात्। न च 'नखमुखात् संज्ञायाम्' इति ङीषो निवृत्तिरिति वाच्यम् स्वाङ्गवाचके तत्प्रवृत्तत्वात्। नह्मत्र स्वाङ्गवाचकत्वं, तस्माद् गौरादित्वात् ङीष् भवत्येव। एवं कृते ज्वालामुखी, गोमुखीत्यादयः संज्ञाशब्दा अपि सिध्यन्ति। क्वचिद् बगलानना बगला, बगलावक्राऽपि संज्ञा दृश्यते मुखशब्दस्य स्थाने, तथापि मुखशब्दस्य सादृश्ये नवं मन्तुं. योग्यम् पर्यायमात्र विवक्षितत्वात् नतु स्वाङ्गत्वम्। ननु बगलामुखीति संज्ञा कथम, वैदिकग्रन्थेषु सर्वत्र वलगेति दर्शनात् इति चेत्र ''परोक्षप्रिया इव हि देवाः'' इति श्रुतिमनुसृत्य बगलामुखीति स्थाने बगलामुखीति प्रयुज्यते। 'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्' इति 'सिंहो वर्णविपर्ययाद्' इतिवद् विपर्ययः। केचिद् बगं वाचं लातीति निरुक्त्या बगलाशब्दं साधयन्ति, केचिद् वाचा अलित भूषयतीति बगला अत एव बगला वाक्प्रदायिनी, इति संगच्छते। सत्या, भामा, भीम इतिवत् बगलाः इत्यिप व्यवह्रियते ''बगलेति नाम लिलितमिति स्तोत्रप्रमाणाच्च। बगलापिक्षविशेषस्य मुखमिव मुखं यस्या इत्यिप केचित् साहिसका ऊचुः इति।

# । इति बगुलामुखी संज्ञार्थनिर्णयः।

# ४. अथ पीताम्बरोपनिषत् काण्ड विशेष क्राक्षाक्षक्र केल्प

🕉 अथ हेनां ब्रह्मरन्ध्रे सुभगां ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणीमाप्नोति ब्रह्मास्त्रां महाविद्यां शाम्भवीं सर्वस्तम्भकरीं, सिद्धां चतुर्भुजां, दक्षाभ्यां कराभ्यां मुद्ररपाशौ वामाभ्यां जिह्नावज्रे दधानां, पीतवाससं, पीतालङ्कारसम्पन्नां, दृढंपीनोन्नतपयोधरयुग्माढ्यां, तप्तकार्तस्वरकुण्डलद्वयविराजित-मुखाम्भोजां, ललाटपट्टोल्लसतपीतचन्द्रार्धमनुबिभ्रतीम्, उद्यद्विवा-करोद्योतां, स्वर्णसिंहासनमध्यकमलसंस्थां धिया संचिन्त्य, तदुपरि त्रिकोणषट्कोण-वसुपत्रवृत्तान्तः षोडशदलकमलोपरि अनुसन्धाय तत्राद्ययोन्यन्तरे देवीमाहूय ध्यायेत्। योनि जगद्योनि समायमुच्चार्य, शिवान्ते भूमाग्रविन्दुमिन्दुखण्डमग्नबीजं ततो वरुणाङ्गुणार्ण मत्रियुतं स्थिरामुखि इति सम्बोध्य, सर्वदुष्टानामिदं चाभाष्य, वाचमिति, मुखमिति, पदमिति; स्तम्भयेति चोच्चार्य, जिह्नां वैशारदीं कीलयेति, बुद्धि विनाशयेति प्रोच्चार्यं, भूमायां वेदाद्यं, ततो यज्ञभूगुहायां योजयेत्। स महास्तम्भेश्वरः, सर्वेश्वरः, स सेनास्तम्भं करोति। किंबहुना विवस्वद्धृतिस्तम्भकर्ता, सर्ववातस्तम्भकर्तेति किं दिवा कर्षयति स सर्वविद्येश्वरः सर्वमन्त्रेश्वरो भूत्वा पूजाया आवर्तनं त्रैलोक्यस्तम्भिन्याः कुर्यात्। अङ्गमाद्यं द्वारतो गणेशं, वटुकं, योगिनीं, क्षेत्राधीशं च पूर्वादिकमभ्यर्च्य, गुरुपङ्किमीशा सुरान्तमन्तः प्राच्यादौ क्रमानुगता बगला, स्तम्भिनी, जृम्भिणी, मोहनी, वश्या, अचला, चला, दुर्धरा, अकल्मषा,

आधारा, कल्पना, कालकर्षिणी, भ्रमरिका, मन्दगमना, भोगिका (भोगा), योगिका। ह्यष्टदलानुगाः पूज्याः- ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, चामुण्डा, महालक्ष्मीश्च षड्योनिगर्भान्ता डािकनी, रािकनी, लािकनी, कािकनी, शािकनी, हािकनी वेदाद्यस्थिरमायायाः समभ्यर्च्यं शक्रािग्नयमिनर्ऋतिवरुणवायुघनदेशान-प्रजापितनागेशाः, परिवारािभमताः स्थिरादिवेदाद्याः सवाहनाः सदस्रका वाह्यतोऽभ्यर्च, तां योनि रितं प्रीतिमनोमुवा एताः सर्वाः समाः पीतांशुका ध्येयाः। तदन्तमूलायां दलादिषोड्शनुगताः पूज्याः नीराजनैः सहैश्वर्ययुक्तो भवित, य एनां ध्यायित स वाग्मी भवित, सोऽमृतमश्नुते सर्वसिद्धिकर्ता भवित, सृष्टिस्थितसंहारकर्ता भवित, स सर्वेश्वरो भवित स तु ऋद्धीश्वरो भवित, स सातः, स वैष्णवः स गणपः स शैवः, स जीवन्मुक्तो भवित, स सन्यासी भवित न तु मुण्डितमुण्डः। षट्त्रिंशदस्त्रेश्वरो भवेत् सौभाग्यार्चनेनेति प्रोतं वेद ॐ शिवम् 'सहनाववतु' इति मन्त्रेण शान्तिः।

### प्रशास इति पीताम्बरोपनिषद्। इति पीताम्बरोपनिषद्।

# ५. कलशपूजनमन्त्राः विशेष

इदानीमभिषेककलशस्थापने मन्त्राणां यथोपयोगस्तं सप्रयोगं कथयामि।

### १. दिक्पालमन्त्रप्रयोगः (प्रथमकलशः)

इन्द्रो वहिः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत्। कुबेर ईशो ब्रह्मा च ह्यनन्तो दश दिक्पतिः।।

#### (१) इन्द्र -

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्। आवाहये यज्ञसिद्धयै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।। ॐ त्रातारिमन्द्रमवितारिमन्द्रं हवे हवे सुहव शूरिमन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरूहूतिमन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ भूः इन्द्रेहागच्छ। इन्द्राय नमः। इन्द्रं स्थापयामि पूजयामि।

(२) अग्नि –

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। प्राप्तिकम् च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध। त्राता लोकस्य तनये गवामस्य निमेष ऐ रक्षमाणस्तव व्रते॥ ॐ भूः अग्ने इहागच्छ। अग्नये नमः। अग्नि स्थापयामि पूजयामि।

(३) यम –

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।

यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।
ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।
ॐ भूः यमेहागच्छ। यमाय नमः। यमं स्थापयामि पूजयामि।

(४) निर्ऋति –
सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।
ॐ असुन्वन्तमयजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यामिन्विह तस्करस्य।
अन्यमस्मिदच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥
ॐ भूः निर्ऋते इहागच्छ। निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिं स्थापयामि
पूजयामि।

(५) वरुण – शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्। आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि:। अहेडमानो वरुणेह वोध्यरुश ७ समा न आयुः प्रमोषी:। ॐ भूः वरुण इहागच्छ वरुणाय नम:। वरुणं स्थापयामि पूजयामि।

(६) वायु – मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्। यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ऐ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन् सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भूः वायो इहागच्छ। वायवे नमः। वायुं स्थापयामि पूजयामि।।

(७) कुबेर -

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।
ॐ वय ७ सोम ब्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूः सोमेहागच्छ। सोमाय नमः। सोमं स्थापयामि पूजयामि।

(८) ईशान -

सर्वाधिपं महादेव भूतानां पतिमव्ययम्। आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसदृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। 🕉 भूः ईशानेहागच्छ। ईशानाय नमः। ईशानं स्थापयामि पूजयामि।

(९) ब्रह्मा —

पद्मयोनि चतुर्मूर्ति वेदगर्भ पितामहम्। आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे।।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषा:। य: शंसते स्तुवते धायि वज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ २ अवन्तु देवा:।

पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ भूः ब्रह्मन्निहागच्छ। ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं स्थापयामि पूजयामि।

(१०) अनन्तः –

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्। जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सुप्रथाः।।

निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ भूः अनन्तेहागच्छ। अनन्ताय नमः। अनन्तं स्थापयामि पूजयामि॥

ा इति दिग्पालमन्त्रप्रयोगः। 💯 🥦 🤏

# २. श्री सूक्तम् (द्वितीयः)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्चं पुरुषानहम्।।२।। अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्लये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। काँसोरिमतां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणमहं प्रपद्मे अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वा वृणोमि।।५।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।७।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रमकर्दम। श्रियं वायस मे कुले मातरं पद्ममालिनीम।।१९।। आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१३।। आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

इति श्रीसूक्तम्। पर गानस्य भ्राप्तर विवा

## । भारतीय महातिया प्रकार किया है जिल्ला सम्मान किया है । । भारतीय प्रकार ३. लक्ष्मीसूक्तम्

ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।१।। धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो वृहस्पतिः वरुणं धनमश्चिनौ।।२।। वैनतेय सोमं पिव सोमं पिवतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।३।। न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाऽशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्।।४।। पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे। तन्मे भजिस पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।५।। विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।।६।।
महालक्ष्मीं च विद्यहे, विष्णुपत्नीं च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।७।। पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मिय सन्निधत्तव्।।८।। आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवि देवता।।९।। ऋणरोगादिदारिक्र्यं पापं च अपमृत्यवः। भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।१०।। श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यं मा विधाच्छोभमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सर दीर्घमायुः॥१५५॥

#### इति लक्ष्मीसूक्तम्।

# ४. पुरुष सूक्तम् (तृतीयः कलशः)

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रापात्। सभूमिं विश्वतो वृत्त्वा अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।। पुरुष एवेद 😯 सर्वं यद् भूतं यच्य भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। एतावानस्य महिमा अतो ज्यायांश्च पूरुषः।।१।। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्, पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।। ततो विष्वङ व्यक्रामत् साशनानशने अभि। तस्माद् विराडजायत् विराजो अधिपूरुषः।। स जातो अत्यरिच्यत् पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।२।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इघ्मः शरद्धविः।। सप्तास्यासन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृता। देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।।३।। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये। तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्च ये। तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।। छन्दा 😯 सि जिज्ञरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत्।।४।।

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जिज्ञरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः।। यत् पुरुषं व्यद्धुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमासीत् कौ बाहु कावूरू पादावुच्येते।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।।५।। उरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या 😯 शूद्रो अजायत। चन्द्रमा मनसो जातः चक्षोः सूर्यो अजायत्।। मुखादिन्द्रश्च अग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्ष 👽 शीर्ष्णो घौः समवर्तत।। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान् अकल्पयन्।।६।। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तपसस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि धीरः नामानि कृत्याभिवदन् यदास्ते।। धाता पुरस्ताद् यमुदाजहार शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः। तमेव विद्वानमृत इह भवति नान्यः पन्थाः अयनाय विद्यते।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।७।।

#### इति पुरुषसूक्तम्।

# ५. अथ नारायणानुवाकः (चतुर्थः कलशः)

ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्।।
विश्वतः परमानित्यं विश्वं नारायणं हरिम्।
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद् विश्वमुपजीवति।।
पतिं विश्वस्यात्मेश्वर **ए** शाश्वतं शिवमच्युतम्।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्।।

नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणपरं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः।। नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्य किञ्चिज् जगत् सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा।।१।। अन्तर्बहिश्च तत् सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनन्तमव्ययं कविं समुद्रेऽन्तविश्वशंभुवम्।। पद्मकोशप्रतीकाशं हृदयं चाप्यधोमुखम्। अधोनिष्ठ्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति।। ज्यालामालाकुल भाति विश्वस्यायतनं महत्। सन्ततं शिराभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभम्।। तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः।। सोग्रभुक् विभजन् तिष्ठन्नाहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तताः।। सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकम्। तस्यमध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः।। नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा।। तस्याः शिखाया मध्ये तु परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्मा स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्।।२।।

६. पञ्चब्रह्ममन्त्राः (पञ्चमः कलशः)

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवस्य माम्भवोद्भवाय नमः।।१।। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमो, ह्राय नमः, कालाय नमः, कलविकरणाय नमो बलप्रमथनाय नमः, सर्वभूतदमनाय नमो, मनोन्मनाय नमः।।२।।

ॐ अधोरेभ्यो ऽथ घोरभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।३।। तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।।४।।

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्, ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।।५।।

इति पञ्चब्रह्ममन्त्राः।

### ७. अम्भस्यपारेणानुवाकः (षष्ठः कलशः)

3ॐ हरि:। अम्भस्यपारे भुवनस्य मध्ये नाकस्य पृष्ठे महतो महीयान्। शुक्रेण ज्योती ऐषि समनुप्रविष्ट:। प्रजापतिश्चरित गर्भे अन्त:। यस्मित्रिदं संचिवचैति सर्वं यस्मिन् देवा अधिविश्वे निषेदुः।

तदेव भूतं तदुभव्यमा इदं तदक्षरे परमे व्योमन्।
येनावृतं खं च महीं च येनादित्यस्तपित तेजसा भ्राजसा च।।
यमन्तःसमुद्रे कवयो वयन्ति यदक्षरे परमे प्रजाः।
यतः प्रसूता जगतः प्रसूती तोयेन जीवन् व्यससर्ज भूम्याम्।।
यदोषधीभिः पुरुषान् पशूंश्च विवेश भूतानि चराचराणि।
अतः परं नान्यदणीयस • हि परात्परं यन्महतो महान्तम्।
यदेकमव्यक्तमनन्तरूपं विश्वं पुराणं तमसः परस्तात्।।।।।
तदेवर्तं तदु सत्यमाहुः तदेव ब्रह्म परमं कवीनाम्।

इष्टापूर्तं बहुधा जातं जायमानं विश्वं विभित्तं भुवनस्य नाभिः।
तदेवाग्निस्तद्वायुः तत्सूर्यस्तदु चन्द्रमाः।।
तदेव शुक्रममृतं तद् ब्रह्म तदापः स प्रजापितः।
सर्वे निमेषा जित्तरे विद्युतः पुरुषादिध।।
कला मुहूर्ताः काष्टाश्चाहोरात्राश्च सर्वशः।
अर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरश्च कल्पताम्।।
स आपः प्रदुधे उभे इमे अन्तरिक्षमथो सुवः।
नैनमूर्ध्वं न तिर्यंच न मध्ये परिजग्रभत्।
न तस्येशे कश्चन तस्य नाम महद् यशः।।२।।
न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यित कश्चनैनम्।
हदा मनीषा मनसाभिक्लृप्तो य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति।।

अद्भ्यः सम्भूतो हिरण्यगर्भः इत्यष्टौ-एष हि देवः प्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः स विजायमानः स जिनष्यमाणः प्रत्यङमुखस्तिष्ठित विश्वतोमुखः। विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखं विश्वतोहस्त उत विश्वतस्पात् संबाहुभ्यां धमित संपत्रत्रैर्धावाभू पृथिवी जनयन् देव एकः। वेनस्तत् पश्यन् विश्वाभुवनानि विद्वान् यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। यस्मित्रिद ७ संचिवचैकं स ओतः प्रोतश्च विभः प्रजास्। प्रतद्वोचे अमृतं न विद्वान् गन्धर्वो नाम निहितं गुहासु॥३॥

ं इति अम्भस्यपारेणातुवाकः।

## ८. ब्रह्मानन्दवल्ली (सप्तमः कलशः)

ॐ सहनाववतु सह नौ भूनक्तु सहवीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

हरि: ॐ ब्रह्मविदाप्नोति परम् तदेषाभ्युक्ता सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायाम् परमे व्योमन् सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति। तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूतः आकाशाद् वायुः, वायोरिग्नः, अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम्, अन्नात् पुरुषः, स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः। तस्येदमेव शिरः, अयं दक्षिणः पक्षः अयमुत्तरः पक्षः, अयमात्मा, इदं पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येष श्लोको भवति।।१।।

अन्नाद् वै प्रजाः प्रजायन्ते याः काश्च पृथिवीं श्रिंताः।
अथो अन्नेनैव जीवन्ति अथैनदिप यन्त्यन्ततः।।
अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्, तस्मात् सर्वौषधमुच्यते।
सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति येऽन्नं ब्रह्मोपासते।।
अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्, तस्मात् सर्वौषधमुच्यते।
आन्नाद् भूतानि जायन्ते जातान्यन्नेन वर्धन्ते।।
अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते।इति

तस्मद्वा एतस्माद् अन्नरसमयात् अन्योऽन्यतर आत्माप्राणमयः तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम अन्वयं पुरुषविधः। तस्य प्राण एव शिरः, व्यानो दक्षिणः पक्षः अपान उत्तरः पक्षः, आकाश आत्मा, पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येष श्लोको भवति ॥२॥

> प्राणा देवा अनुप्राणिन्त मनुष्याः पशवश्च ये। प्राणो हि भूतानामायुः तस्मात् सर्वायुषमुच्यते।। सर्वमेव त आयुर्यन्ति ये प्राणं ब्रह्मोपासते। प्राणो हि भूतानामायुः तस्मात् सर्वायुषमुच्यते।। इति

तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्य तस्माद्वा एतस्माद् अन्योऽन्यतर आत्मा मनोमयः। तेनैष पूर्णः स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः। तस्य यजुरेव शिरः, ऋग् दक्षिणः पक्षः, सामोत्तरः पक्षः, आदेश आत्मा, अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति।।३।।

# यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान न विभेति कदाचन।। इति

तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्य तस्माद्रा एतस्मान्मनो मयात् अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः। तेनैष पूर्णः स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः तस्य श्रद्वैव शिरः, ऋतं दक्षिणः पक्षः, सत्यमुत्तरं पक्षः योग आत्मा महः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति।।४॥

विज्ञानं यज्ञं तनुते कर्माणि तनुतेऽपि च।
विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्मज्येष्ठमुपासते।।
विज्ञानं ब्रह्म चेद् वेद तस्माच्चेत्र प्रमाद्यति।
शरीरे पाप्मनो हित्वा सर्वान् कामान् समश्नुते।। इति

तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्य तस्माद्वा एतस्माद् विज्ञानमयाद् अन्योऽन्यतर आत्मानन्दमयः। तेनैष पूर्णः स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः। तस्य प्रियमेव शिरः मोदो दक्षिणः पक्षः प्रमोद उत्तरः पक्षः, आनन्द आत्मा, ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति॥५॥

असन्नेव स भवति असद् ब्रह्मोति वेद चेत्। अस्ति ब्रह्मोति चेद् वेद सन्तमेन ततो विदुः।। इति तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस। अथानुप्रश्नाः। उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चन गच्छति ३। आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चित् समश्नुता ३ उ।।

सोऽकामयत बहुस्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत् यदिदं किञ्च तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्। तद्नु प्रविश्य सच्चासच्चाभवत्, निरुक्तं चानिरुक्तं च, निलयनं चानिलयनं च, विज्ञानं चाविज्ञानं च, सत्यं चानृतं च, सत्यमभवत् यदिदं किञ्च

तत्सत्यमित्याचक्षते। तदप्येष श्लोको भवति॥६॥

#### असद्वा इदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत्। तदात्मानं स्वयमकुरुत तस्मात् तत्सुकृतमुच्यते।। इति

यद्वै तत्सुकृतम्। रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति। को ह्येवान्यात् कः प्राण्यात् यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्। एष ह्येवानदं याति यदा ह्येवेष एतिस्मन्नदृश्येऽनात्मेऽनिरुक्तेऽनिलयने ऽभयं प्रतिष्ठां विन्दते सोऽभयं गतो भवित यदा ह्येवष एतिस्मन्नद्ररमन्तरं कुरुते। अथ तस्य भयं भवित तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वानस्य। तदप्येष श्लोको भवित।।७।।

#### भीषास्माद् वातः पवते भीषोदेति सूर्यः। भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः।। इति

सैषानन्दस्य मीमांसा भवति-युवा स्यात् साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठो द्रिढछो बलिछः, तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्, स एको मानुष आनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः स एकः पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतिमन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतिमन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। ते ये शतिमन्द्रस्यानन्दाः स एकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य। स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एकः। स य एवंवित् अस्माल्लोकात् प्रेत्य एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं प्राणमन्दमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं प्राणमन्दमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानम्यमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानम्वयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानम्वयमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानस्यमात्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानस्यमित्मानमुपसंक्रामित, एतं विज्ञानस्यात्मानमुपसंक्रामित, विज्ञानस्यान्यात्मानम्यमात्मानम्यमात्मानमुपसंक्रामित, विज्ञानस्यान्यसंवित्यस्य विज्ञानस्यान्यमात्मानम्यमात्मानम्यसंवित्यस्य चाक्यानस्यसंवित्यस्यस्यानस्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्यसंवित्

# यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न विभेति कुतश्चन।। इति

एत छं ह वा न तपित किमहं साधु नाकरवम् किमहं पापमकरवम् इति स एवं विद्वान् एते आत्मान छं स्पृणुते, उभे हि एव एष एते आत्मान छं स्पृणुते ये एवं वेद। इत्युपनिषद्॥९॥

सहनाववतु. ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। इति ब्रह्मानन्दवल्ली।

# ९. अथ भृगुवल्ली (अष्टमः कलशः)

3ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यंकरवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्धिषावहै। 3ॐ शान्तिः शान्तिः।

हरि: ॐ भृगुर्वे वारुणि: वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तस्मा एतत् प्रोवाच अत्रं प्राणः चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचिमिति त छ होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति तद् विजिज्ञासस्य तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।।१।।

अत्रं ब्रह्मित व्यजानात्। अत्राद्ध्यैव खिल्विमानि भूतानि जायन्ते, अत्रेन जातानि जीवन्ति, अत्रं प्रयन्ति अभिसंविशान्ति इति। तद् विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार कधीहि भगवो ब्रह्मेति। त 🕏 होवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्य तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।।२।।

प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्। प्राणाद्व्येव खिल्वमानि भूतानि, जायन्ते, प्राणेन जातानि जीवन्ति, प्राणं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति। तद् विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त र होवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्य तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।।३।।

मनो ब्रह्मेति व्यजानात्। मनसो ह्येव खिल्वमानि भूतानि, जायन्ते

मनसा जातानि जीवन्ति, मनः प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति। तद् विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त 🕏 होवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्वा।।४।।

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्। विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते, विज्ञानेन जातानि जीवन्ति, विज्ञानं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति। तद् विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त 🕏 होवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्य तपो ब्रह्मेति। स तपस्तप्त्वा।।५।।

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते, आनन्देन जातानि जीवन्ति, आनन्दं प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति। सैषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योम्नि प्रतिष्ठिता, य एवं वेद प्रतितिष्ठिति, अन्नवान्, अन्नादो भवति, महान् भवति, प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या।।६।।

अत्रं न निन्धात् तद् व्रतम्, प्राणो वा अत्रं शरीरमन्नादम्, प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्, शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्, सय एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठिति, अन्नवान् अन्नादो भवति, महान् भवति, प्रजया पशुर्भिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या।।७।।

अन्नं न परिचक्षीत तद् व्रतम्, आपो वा अन्नम् ज्योर्तिन्नादम्, अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितं, ज्योतिष्वापः प्रतिष्ठिताः, तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं, स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति, अन्नवान् अन्नादो भवति, महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या॥८॥

अत्रं बहु कुर्वीत तद् व्रतम्, पृथिवी वा अन्नम् आकाशो अन्नादः पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः, आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता, तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं, स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठितं, अन्नवान् अन्नादो भवति, महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या॥९॥

न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत तद् व्रतम्, तस्माद् यया कया च विधया

बह्वतंप्राप्नुयात् आराध्यस्मा अत्रमित्याचक्षते। एतद्वै मुखतोत्र छं राद्धम् मुखतोस्मा अत्र छं राध्यते, एतद्वै मध्यतोऽत्र छं राध्यम्, मध्यतोस्मा अत्र छं राध्यते, एतद्वा अन्ततोऽत्र छं राद्धम्, अन्ततोस्मा अत्र छं राध्यते य एवं वेद। क्षेम इति वाचि, योगक्षेम इति प्राणापानयोः, कर्मेति हस्तयोः, गितिरिति पादयोः, विमुक्तिरिति पायौ, इति मामुषी समज्ञा। अथ दैवी तृप्तिरिति वृष्टौ, बलमिति विद्युति, यश इति पशुषु, ज्योतिरिति नक्षत्रेषु प्रजातिरमृतानन्द इत्युपस्थे, सर्वमित्याकाशे, तत्, प्रतिष्ठेति उपासीत, प्रतिष्ठावान् भवति। तन्मह इत्युपासीत, महान् भवति, तन्मन इत्युपासीत, मानवान् भवति। तन्नम इत्युपासीत, न मन्यन्तेऽस्म कामाः तद् ब्रह्मेत्युपासीत, ब्रह्मवान् भवति। तद् ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत, पर्येणं प्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः परि ये भ्रातृत्याः स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एकः। स य एवं वेद अस्माल्लोकात् प्रेत्य एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रम्य, एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्य, एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रम्य, एतं वज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रम्य, एतं प्रमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रम्य इमान् लोकान् कामान्नी कामरूपी अनुसंचरन एतत् साम गायन्नास्ते।

हा ३ वू हा ३ बुहा ३ बु अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहमन्नादो ३ हमन्नादो ३ हमन्नादो ३ हमन्नादो ३ हमन्नादो ३ हमन्नादो अहं श्लोककृदहं श्लोककृदहं श्लोककृत्। अहमस्मि प्रवामजा ऋताऽस्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य ना ३ भा ३ यि। यो मा ददाति स इदेवमा ३ वा ३। अहमन्नमन्नमदं तमा ३ दि। अहं विश्वं भुवनमभ्यभवाम् सुवर्णज्योतिः य एव वेद। इत्युपनिषद्।।१०।।

सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। इति भृगुवल्ली समाप्ता।

tie sit respinstable Pall - an

#### १०. अथ नवमकलशपूजनमन्त्रः (नवमः कलशः)

मूलमन्त्रेण कर्तव्यम्। किल्म क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया

इति कलशपूजनमन्त्राः।

## ६. अथ बगलामुखी-स्तवराजः (अर्चाक्रमीयः)

वन्दे सकलसन्देहदावपावकमीश्वरम्। करुणावरुणावासं भक्तकल्पतरुं गुरुम्।।१।। उल्लसत्पीतविद्योति विद्योतिततनुत्रयम्। निगमागमसर्वस्वमीडेऽहं तन्महन्महः।।२।। 🕉 पूर्वं स्थिरमायां च बगलामुखि सर्वतः। दुष्टानां वाचमुच्चार्य मुखं पदं तथोद्धरेत्।।३।। स्तम्भयेति ततो जिह्नां कीलयेति समुद्धरेत्। बुद्धिं विनाशयेति पदं स्थिरमायामनुस्मरेत्।।४।। प्रणवं वह्निजायां चेत्येष पैताम्बरो मनुः। पातु मां सर्वदा सर्वंनिग्रहानुग्रहक्षमः।।५।। कण्ठं नारद ऋषिः पातु पङ्क्तिश्छन्दोऽवतान्मुखम्। पीताम्बरा देवता तु हन्मध्यमवतान्मम्।।६।। ह्मीं बीजं स्तनयोर्मेऽव्यात् स्वाहा शक्तिश्च दन्तयोः। सं कीलकं तथा गुह्ये विनियोगोऽवताद् वपुः।।७।। षड्दीर्घभाजा बीजेन न्यासोऽव्यान्मे करादिकम्। द्विपञ्चपञ्चनन्देषुदशभिर्मन्त्रवर्णकैः।।८।।

षडङ्गकल्पना पातु षडङ्गानि ह्यनुक्रमात्।
ऐ विद्यातत्त्वं क्लीं मायातत्त्वं सौश्च शिवात्मकम्।।९।।
तत्त्वत्रयं सं बीजं च मूलं हत्कण्ठमध्यगः।
सुधाब्धौ हेमभूरूढचम्पकोद्यानमध्यतः।।१०।।

गारुडोत्पलनिर्व्यूढस्वर्णसिंहासनोपरि। स्वर्णपङ्कजसंविष्टां त्रिनेत्रां शशिशेखराम्।।१९।। पीतालङ्कारवसनां मल्लीचन्दनशोभिताम्। सव्याभ्यां पञ्चशाखाभ्यां वज्रं जिह्नां च विभ्रतीम्।।१२।। मुद्गरं नागपाशं च दक्षिणाभ्यां मदालसाम्। भक्तारिविग्रहोद्योगप्रगल्भां बगलामुखीम्।।१३।। ध्यायमानस्य मे पातु शास्त्रवोद्द्वेषणे भृशम्। भूकलादलदिक्पत्रषट्कोणं त्र्यस्रबैन्दुकम्।।१४।। यन्त्रं पैताम्बरं पायाद पायात् सा माम् अविग्रहा। आधारशक्तिमारभ्य ज्ञानात्मान्तास्तु शक्तयः।।१५।। पीठाद्याः पान्तु पीठेऽत्र प्रथमं मां च रक्षतु। शान्तिशङ्खविशेषात्मशक्तिभूतानि पान्तु माम्।।१६।। आवाहनाद्याः पञ्चापि मुद्राश्च सुमनोजलैः। त्रिकोणमध्यमारभ्य पूजिता बगलामुखी।।१७।। क्रोधिनी स्तम्भिनी चापि धारिण्यश्चापि मध्यगाः। ओजः पूषादिपीठानि कोणाग्रेषु स्थितानि वै।।१८।। त्रिकोणबाह्यतः सिद्धनाथाद्या गुरवस्तथा। सिद्धनाथः सिद्धानन्दनाथः सिद्धपरेष्ठि - हि।।१९।। नाथः सिद्धः श्रीकण्ठश्च नाथः सिद्धचतुष्टयम्। पातु मामथ षट्कोणे सुभगा भगरूपिणी।।२०।। भगोदया च भगनिपातिनी भगमालिनी। भगावह च मां पातु षट्कोणाग्रेषु च क्रमात्।।२१।। त्वगात्मा शोणितात्मा च मांसात्मा मेदसात्मकः। रूपात्मा परमात्मा च पातु मां स्थिरविग्रहा।।२२।। अष्टपत्रेषु मूलेषु ब्राह्मी माहेश्वरी तथा। कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी च तथा पुनः।।२३।।

चामुण्डा च महालक्ष्मीस्तत्र मध्ये पुनर्जया। विजया च जयाम्बा च राजिता जृम्भिणी तथा।।२४।। स्तम्भिनी मोहिनी वश्या कर्षिणी, अथ तदग्रके। असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रौधोन्मत्तकपालिनः। भीषणश्चापि संहार एते रक्षन्तु मां सदा।।२५।। ततः षोडशपत्रेषु मङ्गला स्तम्भिनी तथा। जृम्भिणी मोहिनी वश्या ज्वालासिंही वलाहका।।२६।। भूधरा कल्मषा धात्री कन्यका कालकर्षिणी। भान्तिका मन्दगमना भोगस्था भाविकेति च।।२७।। पातु मामथ भूसद्म दशदिक्षु दिगीश्वराः। इन्द्रोऽनलो यमो रक्षो वरुणो मारुतः शशी। ईशोऽनन्तः स्वयम्भूश्च दशैते पान्तु मे वपुः।।२८।। वज्रः शक्तिर्दण्डखङ्गी पाशाङ्कुशगदाः क्रमात्। शूलं चक्रं सरोजं च तत्तच्छस्राणि पान्तु माम्।।२९।। अथ च पूर्वादिचतुर्द्वारेषु परतः क्रमात्। पातु विघ्नेशवटुकौ योगिनी क्षेत्रपालकः।।३०।। गुरुत्रयं त्रिरेखासु पातु मे वपुरञ्जसा। पुनः पीताम्बरा पातु उपचारैः प्रपूजिता।।३१।। साङ्गावरणशक्तिश्च जयश्रीः पातु सर्वदा। वलयं, बटुकादिभ्यो रक्षां कुर्वन्तु मे सदा।।३२।। शक्तयः साधका वीराः पान्तु मे देवता इमाः। इत्यर्चाक्रमतः प्रोक्तं स्तोत्रं पैताम्बरं परम्।।३३।। यः पठेत् सकृदप्येतत् सोऽर्चाफलमवाप्नुयात्। सर्वथा कारयेत् क्षिप्रं प्रपद्यन्ते गदातुरान्।।३४।। राजानो राजपत्न्याश्च पौर जानपदास्तथा। वशगास्तस्य जायन्ते सततं सेवका इव।।३५॥

गुरुकल्पाश्च विबुधा मूकतां यान्ति तेऽग्रतः। स्थिरीभवति तद्गेहे चपलापि हरिप्रिया।।३६।। पीताम्बराङ्गंवसनो यदि लक्षसंख्यं। पैताम्बरं मनुममुं प्रजपेत् नरो यः।। हैमीं सकृत्रियमवान् विधिना हरिद्रा -मालां दधत् भवति तद्वशगा त्रिलोकी।।३७।। भवानि बगलामुखि त्रिदशकल्पवल्लि प्रभो कृपाजलानिधे तव चरणधूतबाधाखिलः।। सुरासुरनरादिक - सकलभक्तभाग्यप्रदे त्वदङघ्रिसरसीरुहद्वयमहं तुध्याये सदा।।३८।। त्वमम्ब जगतां जनिस्थतिविनाशबीजं निज -प्रकाशबहुलद्युतिर्भवति भक्तहन्मध्यगा। त्रयीमनुसुपूजिता हरिहरादिवृन्दारकैरनु -क्षणमनुक्षणं मिय शिवे क्षणं वीक्ष्यताम्।।३९।। शिवे तव तनूमहं हरिहराद्यगम्यां पराम् निखिलतापप्रत्यूहहृद्दयाभावयुक्तां स्मरे।। विदारय विचूर्णय ग्लपय शोषय स्तम्भय प्रणोदय विरोधय प्रविलय प्रबद्धारीणाम्।।४०।। क्व पार्वति कृपालसन् मिय कटाक्षपातं मनाग् अनाकुलतया क्षणं क्षिप विपक्षसंक्षोभिणि। यदीक्षणपथं गतः सकृदपि प्रभुः कश्चन स्फुटं मय वशंवदो भवतु तेन पीताम्बरे।।४१।।

> ॐ नमो भगवते महारुद्राय हुं फट् स्वाहा। इति भैरवमन्त्रः। इति अथर्वणरहस्ये बगलामुख्या अर्चाक्रमस्तोत्रम्।।

इति श्रीदेवानन्दनाथशिष्यरामचन्द्रनाथविरचितायां मन्त्रसंग्रहदीपिकायां श्रीबगलास्तवराजः समाप्तः। हीं स्त॰ मा. ३ श्री ल. ऐं वा ३ क्लीं ४ हीं माया ५ आं पाश: ६। क्रौं अंकुश: हुं वाराहं ग्लौं शक्ति:।

इति वैदिकं प्रकरणम्।

### ७. अथ पूर्णाभिषेकप्रयोगः

#### निर्वाणतन्त्रे

अभिषेकपूर्विहे सर्विविध्नोपशान्त्यर्थं यथाशक्त्युपचारेण गुरुर्विध्नेशं पजयत्। गुरुस्तत्र चेन्नाधिकारी, तदाभिषिक्तं कौलं गुरुत्वेन स्वीकृत्य तेन सर्वं कारयेत्। गमिति गणेशस्य बीजम्। कृतिनत्यक्रिय आसने उपविश्याचान्तोऽर्घ्यस्थापनादिभूतशुद्ध्यन्तं कर्म कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। यथा-गणक ऋषिः नीवृच्छन्दो विध्नराजो देवता स्वकर्तव्यपूर्णाभिषेककर्मणः सर्वविध्नशान्त्यर्थं जपे विनियोगः। शिरिस ॐ गणक ऋषये नमः, मुखे नीवृच्छन्दसे नमः हदि विध्नराजाय देवतायै नमः। गं हृदयाय नमः। इत्यादिनाऽङ्गन्यासकरन्यासौ विधाय, मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा ध्यायेद्। यथा –

सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं। खड्गं पाशाङ्कशेष्टान्यरुणकरलसद्धारुणीपूर्णकुम्भम्।। बालेन्दूद्दीप्तमौलिं करिपतिवदनं बीजपूरार्द्रगण्डं। भोगीन्द्रीबिद्धभूषं भजत गणपति रक्तवस्राङ्गरागम्।।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारेण सम्पूज्य, यन्त्रे घटे वा पीठशक्तीः पूजयेद्। यथा – एते गन्धपुष्पे ॐ तीव्रायै नमः, एवं सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन। ॐ ज्वालिन्यै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ कामरूपिण्यै नमः, ॐ उग्रायै नमः, ॐ तेजस्वत्यै नमः, ॐ सत्यायै नमः, मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः,। पूर्वादिक्रमेण पूजयेत्। तत एते गन्धपुष्पे ॐ कमलासनाय नमः,। पुनर्ध्यात्वा घटादौ गन्धपुष्पे दत्त्वा,

गणेश इहागच्छेत्यावाद्य, पाद्यादिभिः पञ्चतत्त्वोपचारैश्च सम्पूज्य, चतुर्दिश्च एते गन्धपुष्पे गणेशाय नमः। एवं गणनायकाय, गणनाथाय, गणक्रीज्ञाय, एकदन्ताय, वक्रतुण्डाय, लम्बोदराय, गजाननाय, महादेवाय, विकटाय, धूमाभाय, विघ्ननाशाय, सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन गन्धपुष्पाभ्यां पूजयेत्। धूमाभाय, विघ्ननाशाय, सर्वत्र प्रणवादिनमोऽन्तेन गन्धपुष्पाभ्यां पूजयेत्। ब्राहम्यै, माहेश्चर्ये, कौमार्ये, वैष्णव्ये वाराह्ये, इन्द्राण्ये, नारसिंह्ये, महालक्ष्म्ये, इन्द्रादिदिग्पालेभ्यो, वज्राद्यस्त्रेभ्यो, नमः इत्यनेन पूजियत्वा, नतो यथाशक्ति मूलमन्त्र जप्त्वा, जपं समर्प्य प्रणम्य, गणपते क्षमस्वेति विसर्जयेत्। ततो दीक्षापद्धत्युक्तमिधवासनं कृत्वा ब्रह्मज्ञकुलसाधकान् पञ्चतत्त्वैभोजयेत्।

ततः परिदने स्नातः कृतिनत्यिक्रयः 'ॐ तत्सिदित्युच्चार्य ॐ अद्येत्यादि अमुकमासि अमुकराशिस्थे भास्करे अमुकपक्षे अमुकितथौ अमुकगोत्रः श्री अमुकशर्मा आजन्मज्ञानाज्ञानकृतपापक्षयकाम एतत् सितलकाञ्चनं विष्णुष्दैवतं यथासम्भवगोत्रनाम्ने ब्राह्मणायाऽहं सम्प्रददे'। इति तिलकाञ्चनमृत्सृज्य दक्षिणां दद्यात्। ततः कौलतृप्त्यर्थं भोज्यमेकमृत्सृजेत्। ततः सूर्यायार्घ्यं दत्वा, ब्रह्मविष्णुनवग्रहान् सम्पूज्य, गौर्यादिषोडशमातृकापूजावसुधारासम्पातनायुष्यसूक्तजपाभ्युदियकश्राद्धानं कृत्वा, गुरोः पार्श्व गत्वा, प्रणम्य प्रार्थयेत् –

ॐ एहि नाथ कुलाचारनिलनीकुलवल्लभ।
त्वत्पादाम्भोरुहच्छायां देहि मूर्धिन कृपानिधे।।
आज्ञां देहि महाभाग शुभपूर्णाभिषेचने।
निर्विंघ्नं कर्मणः सिद्धिमुपैमि त्वत्प्रसादतः।।

ततो गुरुर्वदेत् -

ॐ शिवशक्तव्याज्ञया वत्स कुरु पूर्णाभिषेचनम्।

मनोरथमयी सिद्धिर्णायतां शिवशासनात्।।

इति गुरोरनुज्ञां गृहीत्वा 'ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्री अमुकशर्मा

आयुर्लक्ष्मीबलारोग्यप्राप्तिकामो महानिर्वाणतन्त्रीयदशमपरिच्छेदोक्तपूर्णाभिषेकमहं करिष्ये' इति संकल्प्य, ॐ यज्जायत. इति, ॐ देवो व.
इति वा पठेत्। ततः ॐ साधु भवानास्तामित्यादि कर्म कृत्वा,
वस्त्रालङ्करणादिना सशुद्धिकारणेन च गुरुमभ्यर्च्य, 'ॐ अद्येत्यादि
मत्संकित्पतमहानिर्वाणतन्त्रीयदशमपरिच्छेदोक्तपूर्णाभिषेककर्मणि
अमुकगोत्रं श्री अमुकानन्दनाथं गुरुत्वेन गुरुकर्मकरणाय वा भवन्तमहं वृणे'
इति शिष्ये वदित, 'ॐ वृतोऽस्मि' इति गुरुर्बूयात्। ततः— 'ॐ यथाविहितं
गुरुकर्म कुरु' शिष्ये वदित 'ॐ यथाज्ञानतः करवाणीति' गुरुर्बूयात्।
ततोगुरुर्मनोहरे गृहे सुचित्रिते चित्रध्वजपताकाचन्द्रातपाद्युपशोभिते,
धूपगुग्गुलादिभिः सुवासिते, घृतप्रदीपमालाविगतान्धकारलेशे, चतुरङ्गुलोच्छायसार्धहस्तमृण्मयवेदिकायां सर्वतोभद्रादिमण्डल
पञ्चवर्णरजोभिर्विदध्यात्।

तत्र क्रमः- नवरात्राभिषेके सर्वतोभद्रं, सप्तरात्राभिषेके नवनाभं, पञ्चरात्राभिषेके पञ्चाब्जं त्रिरात्रैकरात्राभिषेके अष्टदलपद्मं निर्माय, तत्र घटस्थापनं दीक्षापद्धत्युक्तं कुर्यात्। ततः पञ्चतत्वादिकं संशोध्य, ठिमिति चन्द्रबीजेन घटे दध्यक्षतौ दद्यात्। ॐ इति ब्रह्मबीजेन घटं स्थापयेत्। श्रीमिति लक्ष्मीबीजेन घटे सिन्दूरं दद्यात्। सिवन्दुकैः क्षकाराद्यकारान्तैर्वर्णैः मूलमन्त्रेण ठकारेण घटं पूरयेत्। अथवा तीर्थतोयेन शुद्धजलेन वा पूरयेत्। नवरत्नं स्वर्णं वा घटमध्ये निःक्षिपेत्। पनसोदुम्बराश्वत्थवकुलाम्राणां पञ्चपल्लवानि ऐं इति वाग्भवबीजेन घटमुख दद्यात्। फलाक्षतयुक्तं नूतनशरावं श्रीमिति हीमिति मन्त्रेण तदुपरि दद्यात्। वस्त्रयुग्मेन घटस्य ग्रीवां बध्नीयात्।

तत्र क्रमः - शाक्ते रक्तेन, शैवे वैष्णवे च श्वेतेन। ततः स्थां स्थीं हीमिति श्रीमिति मन्त्रेण घटं स्थिरीकृत्य, घटश्रीपात्रयोर्मध्ये दक्षिणादितो नव पात्राणि स्थापयेत्। तत्र क्रमः - शक्तिपात्रं राजतं, गुरुपात्रं हिरण्मयं, वीरपात्रं महाशङ्खम्, आत्मपात्रमपि तथा। अथवा पाषाणदारुलौहभिन्नानि

पात्राणि कुर्यात्। ततो गुरुं देवीं च कारणेन तर्पयेत्। ततः कारणपूर्णघटे स्वस्वकल्पोक्तविधिना देवतां सम्पूज्य, यथाशिक्त जप्त्वा, जपं समर्प्य बिलदानादिकं कृत्वा, स्तवकवचादिकं पिठत्वा, अष्टोत्तर सहस्रं शतं हुत्वा गन्धपुष्पवस्त्रमाल्यपात्रादिभिः कुमारीशिक्तसाधकान् सम्पूज्य –

ॐ अनुगृह्णन्तु कौला मे शिष्यं प्रति कुलव्रताः।
पूर्णाभिषेकसंस्कारे भवद्भिरनुमन्यताम्।।

इति चक्रेश्वरे पठित, ते ब्रूयुः -

महामायाप्रभावेण प्रभावात् परमात्मनः। शिष्यो भवति पूर्णस्ते परतत्त्वपरायणः।।

ततो गुरु: पूर्वोक्ते घटे शिष्येण देवीमर्चीयत्वा श्रीं हीं जप्त्वा घटं चालयेत्।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मकलश देवताभीष्टसिद्धिद। सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेन पूरयाऽस्य मनोरथम्।।

इति पठित्वा, सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः शिष्येष्टदेवता देवता, प्रणवो बीजम्, आयुःकीर्तिबलारोग्याद्यवाप्त्यै पूर्णाभिषेके विनियोगः।

ॐ गुरवस्त्वाऽभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
दुर्गालक्ष्मीभवान्यस्त्वामभिषिञ्चन्तु मातरः।।१।।
षोडशी तारिणी नित्या स्वाहा महिषमर्दिनी।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।।२।।
जयदुर्गा विशालाक्षी ब्रह्माणी च सरस्वती।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु बगला वरदा शिवा।।३।।
नारसिंही च वाराही वैष्णवी वनमालिनी।
इन्द्राणी वारुणी रौद्री त्वाऽभिषिञ्चन्तु शक्तः।।४।।

भरवी भद्रकाली च तुष्टिः पुष्टिरुमा क्षमा। श्रद्धा कान्तिर्दया शान्तिरभिषिश्चन्तु ते सदा।।५।। महाकाली महालक्ष्मीर्महानीलसरस्वती। उग्रचण्डा प्रचण्डाद्या अभिषिञ्चन्तु सर्वदा।।६।। मत्त्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा। रामो भार्गवरामस्त्वामभिषिञ्चन्तु वारिणा।।७।। असिताङ्गो रुरुश्चण्ड क्रोधोन्मत्तक्षयङ्करः। कपाली भीषणश्च त्वामभिषिञ्चन्तु वारिणा।।८।। काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी। विप्रचित्ता महोग्रा त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वदा।।९।। इन्द्रोऽग्निः शमनो रक्षो वरुणः पवनस्तथा। धनदश्च तथेशानः सिञ्चन्तु त्वां दिगीश्वराः।।१०।। रविः सोमो मङ्गलश्च बुधो जीवः सितः शनिः। राहुः केतुः सनक्षत्रा अभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः।।११।। नक्षत्रं करणं योगा वाराः पक्षौ दिनानि च। ऋतुर्मासो हायनस्त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वदा।।१२।। लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजलान्तकाः। -समुद्रास्त्वाऽभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा।।१३।। अनन्ताद्या महानागाः सुपर्णाद्याः पतत्रिणः। तरवः कल्पवृक्षाद्याः सिञ्चन्तु त्यां दिगीश्वराः।।१४।। पातालभूतलव्योमचारिणः क्षेमचारिणः। पूर्णाभिषकसन्तुष्टास्त्वाऽभिषिञ्चन्तु पाथसा।।१५।। दौर्भाग्यं दुर्यशो रोगा दौर्मनस्य तथा शुचः। विनश्यन्त्वभिषेकेण कालीबीजेन ताडिताः।।१६।। भूताः प्रेताः पिताचाश्च ग्रहा येऽरिष्टकारिणः। विद्वतास्ते विनश्यन्ति रमाबीजेन ताडिताः।।१७।।

अभिचारकृता दोषा वैरिमन्त्रोद्भवाश्च ये। मनोवाक्कायजा दोषा विनश्यन्त्वभिषेचनात्।।१८।। नश्यन्तु विपदः सर्वाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः। अभिषेकेण पूर्णेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।१९।।

इत्येतैर्मन्त्रैः शिष्यमभिषिञ्च्य पशोर्मुखाद् यो मन्त्रो लब्धस्तं पुनः गुरुः श्रावयेत्। पूर्वोक्तनाम्ना शिष्यं संबोध्य शिक्तसाधकान् विज्ञाप्य गुरुरानन्दनाथान्तं नाम शिष्याय दद्यात्। श्रुतमन्त्रौ गुरौ इष्टदेवतां सम्पूज्य पञ्चतत्त्वैर्गुरुमर्चयेत्। ततो गोभूहिरण्यवासोयानालङ्कारणानि दक्षिणां च गुरवे दद्यात्। ततः पञ्चतत्त्वैः कौलशिक्तसाधकान् अभ्यर्च्य, गुरोश्चरणौ स्पृष्ट्वा, प्रार्थयेद्। यथा –

श्रीनाथ जगतां नाथ मन्नाथ करुणानिधे। परामृतप्रदानेन पूरयास्मन्मनोरथम्।।

ततो गुरु: विकास के स्टार्ट अस्ति कर्ष

आज्ञा मे दीयतां कौलाः प्रत्यक्षशिवरूपिणः। सच्छिष्याय विनीताय ददामि परमामृतम्।।

ते ब्रूयुः कार्या निर्मा छ निर्मार ।

चक्रेश परमेशान कौलपङ्कजभास्कर। कृतार्थ कुरु सच्छिष्यं देह्यमुष्मे कुलामृतम्।। इति कौलाज्ञामादाय शुद्धिसहितं कारणपात्रं शिष्याय दद्यात्। ततः स्रुवलग्नभस्मना सर्वेषां ललाटे तिलकं द्यात्। ततश्चक्रं सम्पूर्णन कृत्वा यथेष्टं विहरेत्।

इति पूर्णाभिषेकः।

## पूर्णाभिषेकानन्तरं तु इत्यान्य प्राप्तका आकृतान्त्रमान

# वामकेश्वरतन्त्रे चतुःपञ्चाशत्पटले

मण्डपं विधिवत् कृत्वा पूजोपकरणानि च। परमहंसेन गुरुणा पूर्णाभिषेचनं चरेत्।। नवरत्नं जले स्थाप्य जलेनापूर्य कुम्भकम्। द्विपञ्चाशत्पटले विशेषिक विशेषिक हुए

नातिहस्वं नातिदीर्घं कलशाष्टकमुत्तमम्।। अभिषेकात्मकमिति रत्नादिभिरलङ्कृतम्। वस्रोण वेष्टयेत् कुम्भान् माल्यचन्दनपूर्वकम्।। गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। नदा हदाः पुण्यतमा नद्यः पातालवर्त्मगाः।। सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम्। रमाबीजेन जप्तेन पल्लवं प्रतिपादयेत्।। कूर्चेन फलदानं स्यात् स्रीबीजेन स्थिराकृतिः। सिन्दूरं वहिबीजेन पुष्पं प्रेतेन विन्यसेत्।। मूलेन प्रणवेनापि दूर्वां दद्याद् विचक्षणः। हुं फट् स्वाहेति मन्त्रेण कुर्याद् दर्भेण ताडनम्।। ईशकुम्भे यजेद् देवीं संकल्पोक्तविधानतः। संकल्पोक्तेन विधिना यजेदावरणं ततः।। बिलं दद्यात् प्रयत्नेन होमयेत् तन्त्रवित सुधीः। आगमोक्तविधानेन कुर्यात् तत्र कुशकण्डिकाम्।। त्रिमध्याक्तेन विधिना बिल्वपत्रेण होमयेत्। उपचारैः षोडशैस्तु पुनर्देवीं प्रपूजयेत्।।

पुनरावरणं देवि पूजयेद यत्नतः सुधीः। ततः पूर्णाहुतिं दत्त्वा प्रकुर्यात् गुरुपूजनम्।। सुवेद्याः पूजयेदष्टौ कुमारीश्च प्रपूजयेत्।

## चतुः पंचाशत्पटले

पूजावसाने देवेशि कलशैरभिषेचयेत्। विशेषतश्च तन्मन्त्रं वक्ष्यामि शृणु सादरात्।। 🕉 हीं श्रीं ह् सौ: पुत्र त्वं सर्वसिद्धीश्वरो भव। इति पूर्वकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।। ॐ ऐं हीं श्रीं क्रौं हौं हं सः पुत्र त्वं वेतालो भव। इत्यग्निकलशेनैव गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।। ॐ हीं ऐं हीं ह सौ: हं स: पुत्र त्वम् अणिमादिसिद्धीश्वरो भव। इति दक्षिणेन कलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।। ॐ हुं हौं क्रीं श्रीं पुत्र त्वम् अञ्जनासिद्धीश्वरो भव। इति नैऋतकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।। इति नैऋतकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।।
ॐ अं आं ऐं क्रौं श्रीं हीं पुत्र त्वं लिघमासिद्धीश्वरो भव।
इति वारुणकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।।
ॐ आं ऐं क्रीं हीं पुत्र त्वं काम्यसिद्धीश्वरो भव।
इति मरुत्कलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।।
ॐ ऐं ओं हीं पुत्र त्वं स्तम्भनादिसिद्दिश्वरो भव।
इति क्रबेरकलशेन गुरुः विञ्चित्यां व्याप्ता इति कुबेरकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।।
ॐ हं सः ऐं हीं नवनवनामकरणाभिधानपूर्वकं।
पुत्र त्वमाकर्षणसिद्धीश्वरो भव।
इतीशानकलशेन गुरुः सिञ्चेच्छिशुं शुभम्।
दक्षिणान्तं क्रियाकाण्डं कुर्यात् साधकसत्तमः।। । इत्यभिषेकप्रकरणम्।

#### १. ध्यानसहस्यम् कार्या व्यवस्थानम् विकास

साधकानां परमतत्त्वप्रापंक यथा मन्त्रविज्ञानं, तथैव ध्येयवृत्तिकरणार्थं ध्यानमप्यावश्यकम्, ध्याने साधकलक्ष्यभूतं समस्तं तत्त्वं सन्निहितं भवति, तिच्चन्तनाभ्यसदाढ्यें सित निखिलपुरुषार्थसिद्धिः अत एवोक्तम् –

'ध्यानं विना भवेन्मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि साधकः।'

तस्माद् ध्यानतत्त्वं विशदीकर्तुं प्रकरणमिदमारभ्यते। प्रोक्तं च भगवत्या बगलामुख्या मुख्यं ध्यानम् –

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं। हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।। हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनां संविभ्रतीं भूषणैर्व्याप्ताङ्गीं। बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

विवरणम् -वैदिकप्रकरणे यत् स्तम्भनतत्वं वेदप्रामाण्येन प्रसाधितं, तदेवात्र, 'बगलामुखी' ति प्रसिद्धं शक्तितत्त्वं, तिच्चन्तनं तन्त्रशास्त्रानुमतं विव्रियते। शिवशक्त्यात्मकस्य परतत्त्वस्य प्रकाशकं शब्दतत्त्वं, तस्मादेव मन्त्राणामाविभवो, देवतास्वरूपव्यक्तिश्च पराख्यावाणीरूपेण योगिभिरनुभूयते। मूलाधारादुद्भवति परमात्मनो भाषेयं सर्वथा सत्यं बिभर्ति, यामत्रभवान् पतञ्जलिः सूत्रयामास "ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा" परा पश्यन्ती मध्यमा-वैखरीति संज्ञाभिः सैव, चतुष्प्रकाराः ता एव भगवत्या श्चत्वारो बाहवः, तेषु चत्वारि शस्त्राणि च निर्दिष्टानि तत्प्रभावद्योतकानि। प्रथमं 'गदा'। 'गद' व्यक्तायां वाचि इति निष्पन्नत्वेन सिध्यति। द्वितीयम् ''स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति" इति वज्ररूपं निर्दिष्टम्। पाशरूपेण तृतीयं तन्माधुर्यादिगुणान्वितं, तेन साधको महतोऽपि सम्यग्रूपेण बध्नाति। चतुर्थं जिह्नारूपं स्थूलं 'दुर्वाग्' इति श्रुतिप्रसिद्धं वरुणदेवतात्मकम्। तद् यथा - ''वरुणो वा एष दुर्वागुभयतो यदक्षः'' इति श्रुतेः, अक्षः, इति संकेतेन अकारमारभ्य क्षकारपर्यन्तं ग्राह्मम्, उच्चारणादिदोषदुष्टो वरुण: वृणोते:

रूपं, तेन कुत्सितशब्दानां ग्रहणं भगवत्या विग्रहे जिह्नाग्रहणं स्पष्टतया सर्वत्र प्रायो दृश्यते, एतेन वागिन्द्रियस्य रसनस्य चोपादानं द्वयोः सम्यक् संयमोऽभिलक्ष्यते। जिह्नासंयमेनैव कामो विजीयते, वाक्संयमेन वाग्मित्वं च प्राप्यते, अनयोर्नियन्तृत्वेन सर्वे दोषा विलीयन्ते। "चत्वारि वाक्परिमितानि पदानि" इत्यादि मन्त्रेण एतद् व्याख्यातं भवति। क्वचित् पाशशब्देन लज्जाघृणादिप्रसिद्धानामि ग्रहणं भवति, तेनािप बन्धनात्मको भावो व्याख्यातव्यः। पीतवर्णेन माङ्गलिकं रक्षात्मकं तत्त्वं गृह्यते, बीजं भगवत्या रक्षात्मकत्वं प्रसिद्धम्। यथा –

## हकारेकारपृथिवीनादबिन्दुसमन्वितम्। बीजं रक्षामयं प्रोक्तं मुनिभिर्व्रह्मवादिभिः।

पीतवर्णं पृथिव्याः, तेन स्थैर्य गृह्यते, तस्मादेव स्थिरमाया स्तब्धमाया स्थिरामुखीति वा कथ्यते, पीतवस्त्रेण छन्दसां ग्रहणम् छादकत्वात्, स्वर्णकुण्डलाभ्यां भोगमोक्षौ, अनेकैश्वर्यपदवाच्या रत्नपुष्पगुम्फितमाला, परामेष्ठयपदं मुकुटं, षोडशीकलारूपश्चन्द्रो मुकुटसंस्थितः नेत्रत्रयेण चन्द्राग्निसूर्या जाग्रदाद्यवस्थाभेदा वा, चतुर्थी तुरीया सर्वसाक्षिणी पराम्बा बगलेति वा, अव्याकृतमासनं छत्रं मणिद्वीपमित्यादि, सिंहवाहनेन धर्मो गृह्यते, रहस्योक्तं ''दक्षिणे पुरतः सिंह'' मित्यादिना एतत सर्वं लक्ष्मीकृत्य यः साधको मन्त्रार्थं भावयन् ध्यायित, स सर्वं फलं प्राप्नोति इति।

## २. इतिवृत्तम्

जगत्कारणतायाः शक्तिपदार्थेऽन्वितत्वात् ज्ञेयत्वेन ध्येयत्वेन च सम्मतत्वात् उपास्यभूता चित्कला सर्वोत्कर्षेण वर्तते। तदुपासनामाश्रित्य भगवान् ब्रह्मा वैदिकारीत्यनुसारमनुष्ठाय सृष्टिकरणसामर्ध्यमवाप। तेनैव सनकादिभ्य उपदिष्टा विद्या। सनत्कुमारे नारदाय, नारदो मुनिः सांख्यायननाम्ने परमहंसाय उपदिदेश। सांख्यायनस्तन्त्रं प्राप्तवान्,

षट्त्रिंशदात्मकै: पटलैरुपनिबबन्ध. द्वितीयोपासको भगवान् विष्णुर्यस्य वर्णनं स्वतन्त्रतन्त्रादौ सहस्रनामसु च दृश्यते, स एव भगवान् विद्याप्रचारं वैष्णवेषु अकार्षीत्। तृतीयोपासको भगवान् शिवस्तेनैव कार्तिकेयाय तारकासुरवधवेलायामुपदिष्टा विद्या। भगवान् शिव एव परशुरामाय ब्रह्मास्त्रभूतां विद्यामुपदिदेश। जामदग्न्यो रामो द्रोणाय, द्रोणाऽश्वत्थाम्ने। ब्राह्मणवेषधारिणे कर्णाय च भार्गवो रामः प्रदत्तवान्। भगवान् शिव एव भार्गवाय च्यवनमुनये प्रदत्तवान् विद्याम्। अश्विनीकुमार-योर्यज्ञाधिकारप्रदानसमये स मुनिर्दैवराजवज्रं तस्तम्भे। श्रीहनूमान् यदा सूर्यनिगरणं चक्रे, तदा पवनेन स्तम्भनं प्रादर्शि। तत् सर्वं भगवत्या महात्म्यम्। रावणपुत्रौ मेघनादो हनूमन्तं बबन्ध तद्गति चोपरुरुद्ध लङ्कायाम्। अङ्गर्देन रावणसभायां स्वपाद आरोपितस्तन्नोत्थापयितुं केऽपि शेकुः। शक्तिपराहतं लक्ष्मणं रावणो न शशाकोत्थापयितुम्। द्वापरे योगेश्वरो भगवान् कुष्णः सूर्यं स्तम्भितवान् जयद्रथवधप्रसङ्गे। श्रीमद्गोविन्दपादसमाधिविघ्नकारिणीं रेवां तस्तम्भे भगवत्पादाचार्यः श्रीशङ्करः। श्रीनिम्बार्को महामुनिः आदित्यं दर्शयामास निम्बवृक्षोपरि स्वाश्रमागताय कस्मैचित् परिव्राजकायेति प्रसिद्धं वैष्णवेषु इति। अनेकेतिहासवृत्तं श्रीभगवत्याः पीताम्बरायास्तत्साधकानां च आर्यग्रन्थेषु उपलभ्यते। तत् संग्रहीतुं चेदीहा, तर्हि बहुकालसाध्यं श्रमसाध्यं च भवेत् पृथगेव महत्तरं पुस्तकं स्यात्, तस्माद् विस्तरभयाद् विरम्यते। इति शिवम्।

दिसहस्रमिते वर्षे वैक्रमे सिंहगे रवौ।
शुक्लपक्षे दिने चंद्रे भाद्रे शिवतिथौ तथा।।१।।
रहस्यं बगलामुख्याः कृत्वा तस्यै समर्पितम्।
तुष्यतां परया प्रीत्या तेनाम्बा बगला शिवा।।२।।
इति श्रीबगलारहस्ये प्रकरणाद्यात्मकः

पञ्चमः परिच्छेदः। इति समाप्तः प्रथमो भागः

# अथ परिशिष्टात्मको द्वितीयो भागः

PETEL TEPTITIFE (B

tell exity the state of

# अथ पञ्चाङ्गप्रकरणम्

# १. अथ श्रीब्रह्मास्त्रमहाविद्यास्तोत्रम्

## श्री गणेशाय नमः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता, त्रिष्टुप् छन्दः, मम सिन्निहितानामसिन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुखबुद्धीनां स्तम्भनार्थं श्रीमहामायाबगलामुखीवर-प्रसादिसद्ध्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः। ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्, ॐ जिह्नां कीलय किनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषु।

# अथ ध्यानम्

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्।
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।।
हस्तैर्मुद्ररपाशवज्ररसनाः, संबिभ्रतीं भूषणैः।
व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

#### जपमन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय। जिह्नां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।। अथ स्तोत्रम्

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्याविभूषिताङ्गीम् देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।१।।

जिह्नाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिषीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।२।। त्रिशूलधारिणीमम्बां सर्वसौभाग्यदायिनीम्। ध्यात्वा प्रपूजयेत्।।३।। सर्वश्रृङ्गारवेशाढ्यां देवीं पीतवस्त्रां त्रिनेत्रां च द्विभुजां हाटकोज्ज्वलाम्। शिलापर्वतहस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम्।।४।। देवीं पीतपुष्पविभूषिताम्। रिपुजिह्वाग्रहां वैरिनिर्दलनार्थाय स्मरेत् तां बगलामुखीम्।।५।। गम्भीरां च मदोन्मतां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च कमलासनसंस्थिताम्।।६।। मुद्ररं दक्षिणे पाशं वामे जिह्नां च वज्रकम्। सान्द्रदृढ़पीनपयोधराम्।।७।। पीताम्बरधरां हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्। पीतभूषणपीताङ्गीं स्वर्णसिंहासने स्थिताम्।।८।। एवं ध्यात्वा जपेत् स्तोत्रमेकाग्रकृतमानसः। सर्वसिद्धिमवाप्नोति मन्त्रध्यानपुरःसरम्।।९।। आराध्या जगदम्ब दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभिः। माल्यैश्चन्दकुङ्कुमैः परिमलैरभ्यर्चिता सादरात्।। सम्यङ्न्यासिसमस्तभूतनिवहे सौभाग्यशोभाप्रदे। श्रीमुग्धे बगले प्रसीद विमले दुःखापहे पाहि माम्।।१०।।

आनन्दकारिणी देवी रिपुस्तम्भनकारिणी।
मदनोन्मादिनी चैव प्रीतिस्तम्भनकारिणी। १९।।
महाविद्या महामाया साधकस्य फलप्रदा।
यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्। १९।।
वामे पाशाङ्कुशौ शक्ति तस्याधस्ताद वरं शुभम्।
दक्षिणे क्रमतो वत्रं गदाजिह्वा ५ भयानि च। १९३।।
विभ्रतीं संस्मरेत्रित्यं पीतमाल्यानुलेपनाम्।
पीताम्बरधरां देवीं ब्रह्मादिसुरवन्दिताम्। १९४।।
कयूराङ्गदकुण्डलभूषां बालार्कद्युतिरिञ्जतवेषाम्।
तरुणादित्यसमानप्रतिमां कौशेयांशुकबद्धनितम्बाम्। १९५।।
कल्पद्रुमतलनिहितशिलायां प्रमुदितिचित्तोल्लसदलकान्ताम्।
पञ्चप्रेतिनिकेतनबद्धां भक्तजनेभ्यो वितरणशीलाम्। १९६।।
एवंविधां तां बगलां ध्यात्वा मनिस साधकः।
सर्वसम्पतसमृद्धयर्थं स्तोत्रमेतदुदीरयेत्। १९७।।

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलाम्।
लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम।।
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्नां चलाम्।
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम्।।१८।।
पीयूषोदिधमध्यचारुविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे।
तिसाहासनमूलपातितिरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।।
स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमां।
यस्त्वां ध्यायित, यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः।।१९।।
देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलिं।
मुद्रां वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्।।
पीताध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं।
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाङ्यं भवेत् तत्क्षणात्।।२०।।

मन्त्रस्ताबदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते। यन्त्रं वादिनियन्त्रणे त्रिजगतां जैत्रं न चित्रं हि तत्।। मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे। तन्नामस्मरणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम्।।२१।। वादी मुकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतित। क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः। श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः।।२२।। दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं वारिक्र्यविद्रावणं। भूभृत्संनमनं च यन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम्।। सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणे। 🕞 🦠 शत्रोर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।।२३।। मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्नां च संकीलय। ब्राह्मीं यन्त्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।। शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे। विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे।।२४।। मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये। श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे।। मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे। दासोऽहं शरणागतोऽस्मि कृपया विश्वेश्वरि त्राहि माम्।।२५।। त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौधविध्वंसिनी। योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्धिनी।। दुष्टोच्चाटनकारिणी पशुमनः संमोहसंदायिनी। जिह्नाः कीलय वैरिणां विजयसे ब्रह्मास्त्रविद्या परा।।२६।। मातर्यस्तु मनोरमं स्तविममं देव्याः पठेत् सादरम्। धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाह्नोः करे वा गले।।

राजानो बरयोषितोऽथ करिणः सर्पा मृगेन्द्राः खलास्ते-। वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा।।२७।। अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालं। पठित स भुवनेऽसौ पूज्यते देववर्गैः।। सकलममलकृत्यं तत्त्वदृष्टा च लोके। लोकमाता पराम्बा।।२८।। भवति परमसिद्धा पीतवस्रवसनामरिदेहप्रेतजासननिवेशितदेहाम्। फुल्लपुष्परविलोचनरम्यां दैत्यजालदहनोज्ज्वलभूषाम्।।२९।। पर्यङ्कोपरि लसद्द्विभुजां कम्बुहेमनतकुण्डललोलाम्। वैरिनिर्दलनकारणरोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे।।३०।। चिन्तयामि सुभुजां शृणिहस्तां सद्भुजां च सुरवन्दितचरणाम्। षष्ठिसप्ततिशतैर्धृतशस्त्रैर्बाहुभिः परिवृतां बगलाम्बाम्।।३१।। चौराणां संकटे च प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये। वह्रौ वादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्।। वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये प्राणबाधे रणे वा। गच्छंस्तिष्ठंक्षिकालं स्तवपठनमिदं कारयेदाशु धीरः।।३२।। विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्राः सम्पद् राज्यमिष्टं च सिद्धिः। मातः श्रेयः सर्ववश्यत्वसिद्धिः प्राप्तं सर्वं भूतले त्वत्परेण।।३३।। गेहं नाकति गर्वितः प्रणमित स्त्रीसंगमो मोक्षति। द्वेषी मित्रति पातकं सृकृतित क्ष्मावल्लभो दासित।। मृत्युर्वेद्यति दूषणं गुणति वै यत्पादसंसेवनात् तां वन्दे भवभीतिभञ्जनकरीं गौरीं गिरीशप्रियाम्।।३४।। परमेश्वरि। यत् कृतं जपसंध्यानं चिन्तनं शत्रूणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते।।३५।। ब्रह्मास्त्रमेतद् विख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।३६।। पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम्। शिलामुद्गरहस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम्।।३७।। सिद्धिं साध्येऽवगन्तुं गुरुवरवचनेष्वार्हविश्वासभाजाम्। स्वान्तः पद्मासनस्थां वररुचिबगलां ध्यायतां तारताराम्।। गायत्रीपूतवाचां हरिहरमनने तत्पराणां नराणाम्। प्रातमध्याद्भकाले स्तवपठनमिदं कार्यसिद्धिप्रदं स्यात्।।३८।।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरखण्डे श्रीब्रह्मास्त्रमहाविद्याबगलामुखीस्त्रोत्रं सम्पूर्णम्।

### भियाण स्वाहाल विगलागायत्री क्रियां क

ॐ ऐं बगलामुखि विद्यहे ॐ क्लीं कान्तेश्वरि धीमहि। ॐ सौः तन्न प्रह्मीं प्रचोदयात्।।

# २. अथ हृदयम्

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्वीं बीजं, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकं श्रीबगलामुखीवरप्रसादिसद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। अथ न्यासः। ॐ नारद ऋषये नमः शिरिस, ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, ॐ श्रीबगलामुख्ये देवताये नमः हृदये, ॐ ह्वीं बीजाय नमो गृह्ये, ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। अथ कराङ्गन्यासौ। ॐ ह्वीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्वीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ क्लीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्वीं हृदयाय नमः, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा,

ॐ ऐं शिखायै वषट्, ॐ ह्लीं कवचाय हुम्, ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इति दिग्बन्धः।

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषिताम्। पीतकञ्जपदद्वन्द्वां बगलां चिन्ततेऽनिशम्।। इति ध्यात्वा सम्पूज्य विवास सम्पूज्य किलान सम्पूज्य

''पीतशङ्खगदाहस्ते पीतचन्दनचर्चिते। बगले मे वरं देहि शत्रुसङ्घविदारिणि।।"

इति सम्प्रार्थ्य, "ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा" इति मन्त्रं जिपत्वा पुनः पूर्ववद् हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्। तद् यथा -

वन्देऽहं बगलां देवीं पीतभूषणभूषिताम्। तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजःस्वरूपिणीम्।।१।। भुकुटीभीषणाननाम्। गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम्।।२।। पूर्णचन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम्। पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम्।।३।। पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले। पीताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम्।।४।। पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरूपिणीम्। पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मजवन्दिताम्।।५।।

लसच्चारुसिअत्सुमऔरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतंसाश्चितास्याम्। वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्यसत्पादपद्माम्।।६।। सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते। रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैरकृद्घातमातः।।७।। भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम्। .गरीयोगुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम्।।८।।

जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम्। भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम्।।९।।

तव ध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः। प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिका। दासतुल्या भवन्ति।।१०॥

नमामस्ते मातः कनककमनीयाङ्घ्रिजलजम् घनतिमिरविध्वंसकरणम्। बलद्विद्युद्वर्णं भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणम् प्रपन्नानां मातर्जगित बगले दुःखदमनम्।।१९।। ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकरमणिविषक्ताङ्कभवनम् स्मरामस्ते धाम स्मरहरहरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः।। अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम् परं पीताकारं परिचितमणिद्वीपवसनम्।।१२।। वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितम् लसन्मात्रावर्णं जगित बगलेति प्रचरितम्।। चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने भजामो यच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम्।।१३।। पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु यथा ते प्रासन्न्यं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम्।। अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्तचा भवतु नो दिशातः सद्भक्ति भुवि भगवतां भूरि भवदाम्।।१४।।

मम सकलिरपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु भगवति रिपुजिह्नां कीलय प्रस्थतुल्याम्।। व्यवसितखलबुद्धि नाशयाऽऽशु प्रगल्भाम् मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब प्रसीद।।१५।। व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था करधृतगदया तान् घातयित्वाऽऽशु रोषात्।। सधनवसनधान्यं सद्य तेषां प्रदह्य पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम्।।१६।। करधृतरिपु जिह्नापीडन व्यग्रहस्ताम् पुनरिप गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम्।। प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्रां बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः।।१७।। हृदयवचनकायैः कुर्वतां भक्तिपुञ्जं स्वताहरू प्रकटित करुणार्द्रां प्रीणती जल्पतीति।। धनमथ बहुधान्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिः सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम्।।१८।। तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं द्वुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम्।। मुदुलमपि शरं ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम्।।१९।। बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः। पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत्।।२०।। पीताघ्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पतः। निष्कल्मषो भवेन् मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।।२१।। आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम्। यस्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः।।२२।। देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम्। पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः।।२३।। पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन्। बगलायाः पठेन् नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम्।।२४।। न किंचिद्दुर्लभं तस्य दृश्यते जगतीतले। शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः।।२५।।

इति श्रीसिन्द्रेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले भाग । भाग । भाग श्रीबगलाहृदयस्तोत्रं । भाग श्रीबगलाहृदयस्तोत्रं मान्त्रहाय **समाप्तम्।** इतिहासने । अवस्ति हाउनम्

# ३. अथ बगलापञ्चरस्तोत्रम्

मून अर्थ हो क्षेत्राह्म सूत उवाच कि विकास कार्य कार्य कार्य

सहस्रादित्यसंकाशं शिवं साम्बं सनातनम्। प्रणम्य नारदः प्राह विनम्रो नतकन्धरः।।१।।

भ्यापत्ते क्षेत्रकार्यम् । प्रमानव श्री नारद् उवाच समाने प्रमानवास भगवन् साम्ब तत्त्वज्ञ सर्वदुःखापहारक। श्रीमत्पीताम्बरादेव्याः पञ्जरं पुण्यदं सताम्।।२।। प्रकाशय विभो नाथ कृपां कृत्वा ममोपरि। यद्यहं तव पादाब्जधूलिधूसरितोऽभवम्।।३।।

## श्री शिव उवाच

ॐ अस्य श्रीमद्भगलामुखीपीताम्बरापञ्जररूपस्तोत्रमन्त्रस्य भगवते नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे, जगद्वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो दक्षिणस्तने, स्वाहा शक्तये नमो वामस्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम

परसैन्यमन्त्रतन्त्रयन्त्रादिकृतविपक्षक्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बराबगलादेव्याः प्रीतये जपे विनियोगः। करसम्पुटेन मूलेन करशुद्धिः। ह्लामिति षट्दीर्घेण षडङ्गः। मूलेन व्यापकम्।

# U अ । अनुमान कि अथ ध्यानम् विकासि । विकासि ।

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डितरत्नवेद्यां सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्।

इति ध्यात्वा, मनसा सम्पूज्य, मुद्रां प्रदर्श्य, ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, पञ्जरं न्यसेत्।

# 11 द हो। मुख्यमिल्या सम्बद्धी शिव उवाच हम सिमलपूर्व

पञ्चरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरिप नराः क्वचित्।।१।।
ॐ ऐं हीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिवर्धिनी।
पातु मामनिशं साक्षात् सहस्रार्कंसमद्युतिः।।२।।
शिखादिपादपर्यन्तं वज्रपञ्जरधारिणी।
ॐ ऐं हीं श्रीं श्रीमद्ब्रह्मास्त्रविद्याया पीताम्बराविभूषिता।।३।।
बगला मामवत्वत्र मूर्धंभागं महेश्वरी।
ॐ ऐं हीं श्रीं कामाङ्कशकला पातु बगला शास्त्रबोधिनी।।४।।
पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामितार्थदा।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी।।५।।
कर्णयोश्चैव युगपद अतिरत्नप्रपूजिता।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा।।६।।

पीतपुष्पैः पीतवस्नैः पूजिता वेददायिनी।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला ब्रह्मविष्ण्वादिसेविता।।७।।
पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवौ।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला विलदा पीतवस्त्रधृक्।।८।।
अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्नां च मुखगां मम।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी।।९।।
गले हस्ते तथा वाह्नोः युगपद् बुद्धिदा सताम्।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्नगनुलेपना।।१०।।
हृदये च स्तनौ नाभौ कराविप कृशोदरी।
ॐ ऐं हीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रधनावृता।।१९।।
जङ्धायां च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमि यत् स्थानं त्वक्केशनखलोमकम्।।१२।।
असृङ मांसं तथाऽस्थीनि सन्ध्यश्चापि मे परा।।

### ।। १। हार्नाहरू के अभी शिव उवाच

इत्येतद् वरदं गोप्यं कलाविष विशेषतः।।१३।।
पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्रचनाशनम्।
पञ्जरं यः पठेत् भक्तचा स विघ्नैर्नाभिभूयते।।१४।।
अव्याहतगतिश्चास्य ब्रह्मविष्णावादिसत्पुरे।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तं कदाचन।।१५।।
प्रवाधन्ते नरव्याघ्रं पञ्जरस्थं कदाचन।
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि।।१६।।
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थविनाशनम्।
महादारिद्रचयशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्धनम्।।१७।।
विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम्।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम्।।१८।।

पठेतु स्मरेदु ध्यानसंस्थः स जीयान् मरणान् नरः। यः पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि।।१९।। कौलको 5कौलिको वापि व्यासवद् विचरेद् भुवि। चन्द्रसूर्यप्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि।।२०।। श्री सूत उवाच WITH THE

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धंकारम्।। स्मरणमतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यः यदि विशति सदा वै पञ्जरं पण्डितः स्यात्।।२१।।

इति श्री परमरहस्यातिरहस्ये पीताम्बरापञ्चरं HELIEUS PRESENTE TO THE PERSON OF THE

## अथ पञ्चरन्यासस्तोत्रम् वर्षः वर्षास्य

बगला पूर्वतो रक्षेद आग्नेय्यां च गदाधरी। पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते।।१।। जिह्नाकीलिन्यतो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा हि माम्। वायव्ये च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी।।२।। ब्रह्मास्त्रदेवता पातु ऐशान्यां सततं मम। संरक्षेन् मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका।।३।। ऊर्ध्व रक्षेन् महादेवी जिह्नास्तम्भनकारिणी। एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा।।४।। एवं न्यासविधिं कृत्वा यत् किञ्चिज् जपमाचरेत्। तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत्।।५।।

इति पञ्जरन्यासस्तोत्रं सम्पूर्णम्। ।। स्थालाम कार्यक्रापं कार्यका विकास केर्याच्या ।।

### (४) अथ कवचम् हरायम हामहि है सम्बद्धार हुई में हुई है

# (१) बगलामुखी कवच

कैलासाचलमध्यगं पुरवहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम्। वामस्था गिरिजा प्रणम्य कवचं भूतिप्रदं पृच्छति।। देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या। तस्याश्चापविमुक्तमन्त्रसहितं प्रीत्याधुना ब्रूहि माम्।।१।।

### श्री शङ्कर उवाच

देवि श्री भववल्लभे शृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदम्।
देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम।।
तारं रुद्रवधू विरिश्चिमहिला विष्णुप्रिया कामयुक्।
कान्ते श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय युग्मं त्वति।।२।।
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं।
कार्यं साधय युग्मयुच्छिववधूविह्नप्रियान्तो मनुः।।
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा।
कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दो विराट्संयुतम्।।३।।
स्वेष्टार्थस्य परस्य वेति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये।
नानाऽसाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये।।
ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकम्।
दीर्धैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैविंन्यस्याङ्गके।।४।।

### ा शाराम्हासीकार स्थानम् कृति राष्ट्रवी परवर्त है।

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्।
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।।
हस्तैर्मुद्ररपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः।
व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषि:, विराट् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोभिलाषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः। शिरसि भैरव ऋषये नमः, मुखे विराट छन्दसे नमः। हृदि बगलामुखीदेवतायै नमः। गुह्ये क्लीं बीजाय नमः। पादयोः ऐं शक्त्ये नमः। सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय नमः। ॐ हां अङ्गुष्ठाभ्यां नम:। ॐ हीं तर्जनीभ्यां नम:, ॐ हूं मध्यमाभ्यां नम:, ॐ हैं अनामिकाभ्यां नम:, ॐ हौं किनिष्ठिकाभ्यां नम:, ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। ॐ ह्रां हृदयाय नम:, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ हूं शिखायै वषट्, ॐ है कवचाय हुम, ॐ हों नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हः अस्त्राय फट्। मन्त्रोद्वारः विकास मन्त्रोद्वारः

35 हीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय, ममैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवाच्छितं कार्यं साधय साधय, हीं स्वाहा।

शिरो मे पातु ॐ हीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्। सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने।।१।। श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम्। पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम्।।२।। देहिद्धन्द्धं सदा जिह्नां पातु शीघ्रं वचो मम। कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम्।।३।। कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम। मायायुक्ता यथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा।।४।। अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी। रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम।।५।। ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु। मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा।।६।। 🕉 हीं पातु नाभिदेशं किंट मे बगलाऽवतु। मुखिवर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम्।।७।। जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्। वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी।।८।। जङ्घायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी। स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रय मम।।९।। जिह्नावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च। पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम।।१०।। विनाशयपदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे। हीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रियवचांसि मे। 1991। सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु। ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा।।१२।। माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु। कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता।।१३।। वाराही चोत्तरे पातु नारासिंही शिवेऽवतु। ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मी पाताले शारदाऽवतु।।१४।। इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः। राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः।।१५।। श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु। द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः।।१६।। योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम। इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।।१७।। श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम्। अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम्।।१८।। निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः। जिपत्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम्।।१९।।

पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः। यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले।।२०।। तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शङ्करि। गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वित:11२१।1 कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन। यं ध्यात्वा प्रजपेन् मन्त्रं सहस्रं कवच पठेत्।।२२।। त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः। लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया।।२३।। लिखित्वा हदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम्। एकविंशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्रकम्।।२४।। जप्त्या पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्। संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा।।२५।। विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात्। श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः।।२६।। नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि। वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्यावलसमन्वितः।।२७।। श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ। पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया।।२८।। भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत्। हस्तं तद्भदये दत्वा कवचं तिथिवारकम्।।२९।। ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः। म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः।।३०।। संलिखेत्। भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा।।३१।। संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्।।३२।।

सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत्।

वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः।।३३।।

कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः।

कवितालहरी तस्य भवेद् गङ्गाप्रवाहवेत्।।३४।।

गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः।

एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते।।३५।।

पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम्।

न देयं परिशष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः।।३६।।

देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽज्नुयात्।

इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम्।

शतकोटि जपित्वा तु तस्य सिद्धिनं जायते।।३७।।

दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्रोप्नोति सिद्धिं परां।

विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम्।

ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै।

धृत्वा राजपुरं ब्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः।।३८।।

इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचम् (१) सम्पूर्णम्।

### (२) अथ श्रीमद्बगलामुखीकवचम् कार्या विक्रासम्बद्धाः

श्रीगणेशाय नमः। श्रीबगलायै नमः।

प्रथमं गुरुं घ्यात्वा प्राणायामं कृत्वा कवचं पठेत्। ॐ अस्य श्रीपीताम्बराबगलामुखीकवचस्य महादेव ऋषिः उष्णिक् छन्दः, श्रीपीताम्बरा देवता, स्थिरमाया बीजम्, स्वाहा शक्तिः अं ठः कीलकम्, मम् सन्निहितानां दूरस्थानां सर्वदुष्टानां वाङ्मुखपदजिह्वापवर्गाणां स्तम्भनपूर्वकं सर्वसम्पत्तिप्राप्तिचतुर्वर्गफलसाधनार्थे जपे विनियोगः।

### ध्यानम् विश्व अस्ति । ध्यानम् विश्व अस्ति ।

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम्।।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गी
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।१।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन् परिपीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।२।।

इति ध्यात्वा पठेत्।

हितवत्तनया गौरी कैलासेऽथ शिलोच्चये। अपृच्छद् गिरिशं देवी साधकानुग्रहेच्छया।।१।।

## श्री पार्वत्युवाच विकास विकास

देवदेब महादेव भक्तानुग्रहकारक।
शृणु विज्ञाप्यते यत्तु श्रुत्या सर्वं निवेदय।।२।।
विशुद्धाः कौलिका लोके ये मत्कर्मपरायणाः।
तेषां निन्दाकरा लोके वहवः किल दुर्जनाः।।३।।
मनोबाधां विदधते मुहुः कटुभिरुक्तिभिः।
तेषामाशु विनाशाय त्वया देव प्रकाशितः।।४।।
यो मन्त्रो बगलामुख्याः सर्वकामसमृद्धिदः।
कवचं तस्य मन्त्रस्य प्रकाशय दयानिधे।।५।।
यस्य स्मरणमात्रेण पशूनां निग्रहो भवेत्।
आत्मानं सततं रक्षेद् व्याघ्राग्निरिपुराजतः।।६।।
श्रुत्वाऽथ पार्वतीवाक्यं ज्ञात्वा तस्या मनोगतम्।
विहस्य तां परिष्वज्य साधु साध्वित्यपूजयत्।।७।।
तदाह कवचं देव्यै कृपया करुणानिधिः।

# श्रीशङ्कर उवाच

शृणु त्वं बगलामुख्याः कवचं सर्वकामदम्।।८।। यस्य स्मरणमात्रेण बगलामुखी प्रसीदति। सर्वसिद्धिप्रदा प्राच्यां पातु मां बगलामुखी।।९।। पीताम्बरा तु चाग्नेय्यां याम्यां महिषमर्दिनी। नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु भक्तानुग्रहकारिणी।।१०।। पातु नित्यं महादेवी प्रतीच्यां शूकरानना। वायव्ये पातु मां काली कौवेर्यां त्रिपुराऽवतु।।११।। ईशान्यां भैरवी पातु पातु नित्यं सुरप्रिया। ऊर्ध्वं वागीश्वरी पातु मध्ये मां ललिताऽवतु।।१२।। अधस्ताद् अपि मां पातु वाराही चक्रधारिणी। मस्तकं पातु मे नित्यं श्रीदेवी बगलामुखी।।१३।। भालं पीताम्बरा पातु नेत्रे त्रिपुरभैरवी। श्रवणौ विजया पातु नासिकायुगलं जया।।१४।। शारदा वचनं पातु जिह्नां पातु सुरेश्वरी। कण्ठं रक्षतु रुद्राणी स्कन्धौ मे विन्ध्यवासिनी।।१५।। सुन्दरी पातु बाहु मे जया पातु करौ सदा। भवानी हृदयं पातु मध्यं मे भुवनेश्वरी।।१६।। नाभिं पातु महामाया कटिं कमललोचना। ऊरू मे पातु मातङ्गीं जानुनी चापराजिता।।१७।। जङ्घे कपालिनी पातु चरणौ चञ्चलेक्षणा। सर्वतः पातु मां तारा योगिनी पातु चाग्रतः।।१८।। पृष्ठं में पातु कौमारी दक्षपार्श्वे शिवाऽवतु। रुद्राणी वामपार्श्वे तु पातु मां सर्वदेष्टदा।।१९।। स्तुता सर्वेषु देवेषु रक्तबीज विनाशिनी। इत्येतत् कवचं दिव्यं धर्मकामार्थसाधनम्।।२०।।

गोपनीयं प्रयत्नेन कस्याचित्र प्रकाशयेत्। यः सकृच्छृणुयाद् एतत् कवचं मन्मुखोदितम्।।२१।। स सर्वान् लभते कामान् मूर्खो विद्यामवाप्नुयात्। तस्याशु शत्रवो यान्ति यमस्य भवने शिवे।।२२।।

इति श्रीरुद्रयामले महातन्त्रे अवस्थान

श्रीमहाविद्यापीताम्बरबगलामुखीकवचम् (२) समाप्तम्।

(३) अथ बगलामुखीकवचम्

श्री भैरवी उवाच

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर। इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवच वद मे प्रभो।।१॥ वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम्। शुभदं स्मरणात् पुण्यं, त्राहि मां दुःखनाशन।।२॥

श्रीभैरव उवाच

कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे। पठित्वा धारयित्वा तुं त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।।३।।

3ॐ अस्य श्रीबगलामुखीकवचस्य नारद ऋषि:, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, लं बीजं, ईं शक्तिं, ऐं कीलकम्, पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।

शिरो में बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा।
ॐ हीं ॐ में ललाटे च बगला वैरिनाशिनी।।४।।
गदाहस्ता सदा पातु मुखं में मोक्षदायिनी।
वैरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं में बगलामुखी।।५।।

उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात् परा। परात् परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी।।६।। हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे। विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे।।७।। पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गं शिवनर्तकी। श्रीविद्या समयं पातु मातङ्गी पूरिता शिवा।।८।। पातु पुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम। पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा।।९।। रन्ध्रे हि बगलादेव्याः कवच मन्मुखोदितम्। न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।१०।। पठनाद् धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितं लभेत्। इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।।१९।। पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः। वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा।।१२।। महाभये विपत्तौ च पठेद् वा पाठ्येत् तु यः। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति।।१३।।

इति श्रीरुद्रयामले श्रीबगलामुखीकवचम् (३) समाप्तम्।

### (४) अथ श्रीबगलामुखीशत्रुविनाशककवचम्

श्रीगणेशाय नमः। श्रीपीताम्बरायै नमः।

श्री देव्युवाच

नमस्ते शम्भवे तुभ्यं नमस्ते शशिशेखर। त्वत्प्रसात्छुतं सर्वमधुना कवचं वद्र।।१।।

### श्री शिव उवाच का विश्व हिन्द

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्धुतम्। यस्य स्मरणमात्रेण रिपोः स्तम्भो भवेत् क्षणात्।।२।। कवचस्य च देवेशि महामायाप्रभावतः। पङ्क्तिः छन्दः समुद्दिष्टं देवता बगलामुखी।।३।। धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः। ॐकारो मे शिरः पातु ह्लींकारो वदनेऽवतु।।४।। बगलामुखि दोर्युग्मं कण्ठे सर्व-सदाऽवतु। दुष्टानां पातु हृदयं वाचं मुखं ततः पदम्।।५।। उदरे सर्वदा पातु स्तम्भयेति सदा मम। जिह्नां कीलय मे मातर्बगला सर्वदाऽवतु।।६।। बुद्धिं विनाशय पादौ तु ह्लीं ॐ मे दिग्विदिक्षु च। स्वाहा मे सर्वदा पातु सर्वत्र सर्वसन्धिषु।।७।। इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्। यस्य स्मरणमात्रेण सर्वस्तम्भो भवेद् क्षणात्।।८।। यद् धृत्वा विविधा दैत्या वासवेन हताः पुरा। यस्य प्रसादात् सिद्धोऽहं हरिः सत्त्वगुणान्वितः।।१।। वेधा सृष्टिं वितनुते कामः सर्वजगज्जयी। लिखित्वा धारयेद् यस्तु कण्ठे वा दक्षिणे भुजे।।१०।। षट्कर्मसिद्धिस्तस्याशु मम तुल्यो भवेद् ध्रुवम्। अज्ञात्वा कवचं देवि तस्य मन्त्रो न सिध्यति।।१९।।

इति श्रीबगलामुखीशत्रुविनाशकं कवचम् (४) समाप्तम्।

### (५) अथ ब्रह्मास्त्रबगलाकवचम् विवास

### श्रीब्रह्मोवाच

विश्वेश दक्षिणामूर्ते निगमागमवित् प्रभो।
मह्यं पुरा त्वया दत्ता विद्या ब्रह्मास्त्रसंज्ञिता।।१।।
तस्य मे कवचं ब्रूहि येनाहं सिद्धिमाप्नुयाम्।
भवामि वज्रकवचं ब्रह्मास्त्रन्यासमात्रतः।।२।।

# श्रीदक्षिणामूर्तिरुवाच

शृणु ब्रह्मन् परं गुह्मं ब्रह्मास्त्रकवचं शुभम्। यस्योच्चारणमात्रेण भवेद् वै सूर्यसन्निभः।।३।। सुदर्शनं मया दत्तं कृपया विष्णवे तथा। तद्वत् ब्रह्मास्त्रविद्यायाः कवचं कथयाम्यहम्।।४।। अष्टाविंशत्यस्त्रहेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रमुत्तमम्। सर्वतेजोमयं सर्वं सामर्थ्य विग्रहं परम्।।५।। सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वदारिद्रचनाशनम्। सर्वापच्छैलराशीनामस्रकं कुलिशोपमम्। कुलिशोपमम्।।६।। न तस्य शत्रवश्चापि भयं चौर्यभयं जरा। नरा नार्यश्च राजेन्द्र खगा व्याघ्रादयोऽपि च।।७।। तं दृष्ट्वा वशमायान्ति किमन्यत् साधवो जनाः। यस्य देहे न्यसेद् धीमान् कवचं बगलामयम्।।८।। स एव पुरुषो लोके केवलः शङ्करोपमः। न देयं परशिष्याय शठाय पिशुनाय च।।९।। दातव्यं भक्तियुक्ताय गुरुदासाय धीमते। कवचस्य ऋषिः श्रीमान् दक्षिणामूर्तिरेव च।।१०।।

अस्यानुष्टुप्छन्दः स्यात् श्रीबगला चास्य देवता। बीजं श्रीवहिजाया च शक्तिः श्रीबगलामुखी।।११।। कीलकं विनियोगश्च स्वकार्ये सर्वसाधके। अथ ध्यानम् अथानम्

शुद्धस्वर्णनिभां रामां पीतेन्दुखण्डशेखराम्।। पीतगन्धानुलिप्ताङ्गीं पीतरत्नविभूषणाम्। पीनोन्नतकुचां स्निग्धां पीतलाङ्गीं सुपेशलाम्।। त्रिलोचनां चतुर्हस्तां गम्भीरां मदविह्नलाम्। वज्रारिरसनापाशमुदगरं दधतीं करैः।। महाव्याघ्रासनां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम्। प्रसन्नां सुस्मितां क्लिन्नां सुपीतां प्रमदोत्तमाम्।। सुभक्तदुःखहरणे दयार्द्रां दीनवत्सलाम्। एवं ध्यात्वा परेशानि बगलाकवचं स्मरेत्।।

अथ रक्षाकवचम् बगला मे शिरः पातु ललाटं ब्रह्मसंस्तुता। बगला मे भ्रुवौ नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी।। त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा। मोहिनी नासिकां पातु श्रीदेवी बगलामुखी।। ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला।
सिद्धात्रपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रे शारदाम्बिके।।
अकल्मषा मुखे पातु चिबुके बगलामुखी।
धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी।। शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका। कण्ठमूले महाभोगा स्कन्धौ शत्रुविनाशिनी।। भुजौ मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा। बगला मे सदा पातु कूपर कमलोद्भवा।। बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धे महाबला। बगलाश्रीर्हस्तयोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम्।। नखेषु वज्रहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी। स्तनौ मे मन्दगमना कुक्षयोर्योगिनी तथा।। उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवता। पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातुच नो देववन्दिता।। पार्श्वयोर्हनुमद्वन्द्या पशुपाशविमोचिनी। करौ रामप्रिया पातु ऊरुयुग्मं महेश्वरी।। भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा। लिङ्गमूले महाक्लिज्ञा वृषणौ पातु दूतिका।। बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः। जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावणपूजिता।। चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बा चरणाङ्गुलीः। पादपृष्ठं पद्महस्ता पादाधश्चक्रधारिणी।। सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी। ब्राह्मी में पूर्वतः पातु माहेशी वह्निभागतः।। कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णवी स्वर्गमार्गतः। ऊर्ध्वं पाशधरा पातु शत्रुजिह्नाधरा ह्यधः।।
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये। बगला भैरवी पातु नित्यं क्लींकाररूपिणी।। इत्येवं वज्रकवचं महाब्रह्मास्त्रसंज्ञकम्। त्रिसन्ध्यं यः पठेद् धीमान् सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्।।

न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च। बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात् सोऽपि मित्रत्यमाणुयात्।। शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः। रूपेण कामतुल्यः स्याद् आयुषा शूलधृक्समः।। सनकादिसमो धैर्ये श्रिया विष्णुसमो भवेत्। तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः।। नारी वापि प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात्। द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः।। तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात्। याता तुरीयं संध्यायां भूशय्यायां प्रयत्नतः।। सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयान् नरः। दारिद्र्यान् मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीभविद् गृहे।। सर्वान् कामानवाप्नोति सविषो निर्विषो भवेत्। ऋण निर्मोचनं स्याद् वै सहस्रावर्तनाद् विधे।। भूतप्रेतिपशाचादिपीड़ा तस्य न जायते। द्युमणिर्भाजते यद्वत् तद्वत् स्याच्छ्री प्रभावतः।। स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम्। जयदं बोधनं कामममुकं देहि मे शिवे।। जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै सोऽभीष्टफलमाप्नुयात्। इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्।। न स सिद्दिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम्।। नित्यं पदाम्बुजध्यानान् महेशानसमो भवेत्।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां ब्रह्मास्त्रबगलामुखीकवचम् (५) समाप्तम्।

# (६) अथ त्रैलोक्यविजयकवचम्

# श्रीभैरव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम्।
श्रुत्वा गोप्यं गुप्ततमं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि।।१।।
कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ।
तत्सर्वस्वं परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मना।।२।।
त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम्।
मन्त्रगर्भं ब्रह्ममयं सर्वविद्या विनायकम्।।३।।
रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपकम्।
ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ।।४।।
पूर्णमेकोनपञ्चाशद्वर्णैरुक्तं महेश्वरि।
त्वद्भक्त्या विम देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत्।।५।।

# भारती प्राप्त महासम्बद्धा श्री देव्युवाच

भगवन् करुणासार विश्वनाथ सुरेश्वर। कर्मणा मनसा वाचा न वदामि कदाचन्।।१।।

### भी भीरव उवाच विकास समिति ।

त्रैलोक्य विजयाख्यस्य कवचास्यास्य पार्वति।
मनुगर्भस्य गुप्तस्य ऋषिर्देवोऽस्य भैरवः।।१।।
उष्णिक्छन्दः समाख्यातं देवी श्रीबगलामुखी।
बीजं ह्लीं ॐ शक्तिः स्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते।।२।।
विनियोगः समाख्यातः त्रिवर्गफलप्राप्तये।
देवि त्वं पठ वर्मैतन्मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि।।३।।
बिनाध्यानं कुतः सिद्धि सत्यमेतच्च पार्वति।
चन्द्रोद्भासितमूर्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकराम्।।४।।

बालांसत्स्रकचञ्चलां मधुमदां रक्तां जटाजूटिनीम्। शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्धासिनीम्।।५।। प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे। ॐ ह्लीं मम शिरः पातु देवी श्रीबगलामुखी।।६।। ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं देवी स्तम्भनकारिणी। 🕉 अं इं हं भ्रुवौ पातु क्लेशहारिणी।।७।। 🕉 हं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी। ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ अं आं इं भुवनेश्वरी।।८।। 🕉 ऐं क्लीं सौ: श्रुतौ पातु इं ईं उं च परेश्वरी। ॐ ह्वीं हूं ह्वीं सदाव्यान्मे नासां ह्वीं सरस्वती।।९।। 🕉 हां हीं मे मुखं पातु लीं एं ऐं छिन्नमस्तिका। ॐ श्री वं मेऽधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका।।१०।। 🕉 क्लीं श्रीं शिरसः पातु कं खं गं घ च सारिका। 🕉 हीं हूं भैरवी पातु डं. अं अ: त्रिपुरेश्वरी।।११।। ॐ ऐं सौः मे हनुं पातु चं छं जं च मनोन्मनी। 🕉 श्रीं श्रीं मे गलं पातु झं ञं टं ठं गणेश्वरी।।१२।। ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् इं ढं णं हूं हू चैव तु तोतला। 🕉 हीं श्री मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी।।१३।। ऐं क्लीं सौ: स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी। क्रों क्रों मे रक्षयेद् वक्षः फं बं भं भगवासिनी।।१४।। ॐ ही रां पातु कुक्षि मे मं यं रं विह्नवल्लभा। 🕉 श्रीं हूं पातु मे पार्श्वीं लं बं लम्बोदर प्रसू:।।१५।। ॐ श्रीं हीं हूं पातु मे नाभि शं षं षण्मुखपालिनी। ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठ सं हं हाटकरूपिणी।।१६।। 🕉 क्लीं ऐं कटिं पातु पञ्चाशद्वर्णमालिका। 🕉 ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी।।१७।।

ॐ श्रीं ऊं ऋं सदाव्यान्मे इं ईं खं खां स्वरूपिणी। ॐ जुं सः पातु मे जंघे हं सं धं अघहारिणी।।१८।। श्रीं हीं पातु मे जानू उं ऊं णं गणवल्लभा। ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ लिं लीं ऊं चं चण्डिका।।१९।। ॐ ऐं हीं पातु मे वाणी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया। 🕉 श्रीं क्लीं पातु पादौ में झं ञं टं ठं भगोदरी।।२०।। ॐ हीं सर्वं वपुः पातु अं अः त्रिपुरमालिनी। ॐ हीं पूर्वे सदाव्यान्मे झं झां डं ढं शिखामुखी।।२१।। ॐ सौ: याम्यं सदाव्यान्मे इं ईं णं तं च तारिणी। ॐ वारुण्यां च वाराही उं थं दं धं च कम्पिला।।२२।। ॐ श्रीं मां पातु चैशान्यां पातु ॐ नं जनेश्वरी। ॐ श्रीं मां चाग्रेयां ऋं भं मं धं च योगिनी।।२३।। ॐ ऐं मां पातु नैऋत्यां लृं लं राजेश्वरी तथा। ॐ श्रीं पातु वायव्यां लृं लं वीतकेशिनी। 🕉 प्रभाते च मां पातु लीं लं वागीश्वरी सदा।।२४।। 🕉 मध्याह्ने च मां पातु ऐं क्षं शङ्कर वल्लभा। श्रीं हीं क्लीं पातु सायं ऐं आं शाकम्भरी सदा।।२५।। 🕉 हीं निशादौ मां पातु 🕉 सं सागरवासिनी। क्लीं निशीथे च मां पातु ॐ हं हरिहरेश्वरी।।२६।। क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद् लं लां त्रिपुरसुन्दरी। विसर्गा तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।।२७।। क्लीं तन्मे सकलं पातु अं क्षं ह्लीं बगलामुखी। इतदं कवचं दिव्यं मन्त्राक्षरमयं परम्।।२८।। त्रैलोक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम्। अप्रकाश्यं सदा देवि श्रोतव्यं च वाचिकम्।।२९।।

दुर्जनायाकुलीनाय दिक्षाहीनाय पार्वति। न दातव्यं न दातव्यामित्याज्ञा पारमेश्वरी।।३०।। दीक्षाकार्य विहीनाय शक्तिभक्ति विरोधिने। कवचस्यास्य पठनात् साधको दीक्षितो भवेत्।।३१।। कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम्। ब्रह्मविद्यामयं गोप्यं यथेष्टफलदं शिवे।।३२॥ न कस्य कथितं चैतद् त्रैलोक्य विजयेश्वरम्। अस्य स्मरण मात्रेण देवी सद्योवशी भवेत्।।३३।। पठनाद् धारणादस्य कवचेशस्य साधकः। कलौ विचरते वीरो यथा श्रीबगलामुखी।।३४।। इदं वर्म स्मरेन् मन्त्री संग्रामे प्रविशेद् यदा। युयुत्सुः पठन् कवचं साधको विजयी भवेत्।।३५।। शत्रुं कालसमानं तु जित्वा स्वगृहमेति सः। मूर्धिन धृत्वा यः कवचं मन्त्रगर्भं सुसाधकः।।३६।। ब्रह्माद्यमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत्। धृत्वागले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि।।३७।। वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः। उत्पातेषु घोरेषु भयेषु विविधेषु च।।३८।। रोगेषु च कवचेशं मन्त्रगर्भ पठेन्नरः। कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शांतिमेष्यति।।३९।। श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मयोदितम्। त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्र धनप्रदम्।।४०।। ऋणं च हरते सम्यक् लक्ष्मीर्भोगविवर्धिनी। वन्ध्या जनयते कुक्षौ पुत्ररत्नं न चान्यथा।।४१।। मृत्वत्सा च विभूयात् कवचं च गले सदा। दीर्घायुर्व्याधिहीनश्च तत्पुत्रो वर्धतेऽनिशम्।।४२।। इतीद बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम्।
त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्यकस्यचित्।।४३।।
अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनायदिम्भिने।
लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन्।।४४।।
लोभदम्भिवहीनाय कवचेशं प्रदीयताम्।
अभक्तेभ्यो अपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेत्ररः।।४५।।
रवौ रात्रौ च सुस्नातः पूजागृहगतः सुधीः।
दीपमुज्ज्वाल्य मूलेन पठ्डमेंदमुत्तमम।।४६।।
प्राप्तौ सत्यां त्रिरात्रौ हि राजा तद्गृहमेष्यति।
मण्डलेशो महेशानि देवि सत्यं न संशय।।४७।।
इदं तु कवचेशं तु मया प्रोक्तं नगात्मजे।
गोप्यं गुद्धतरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्।।४८।।

।। इति विश्वयामले बगलामुख्यास्त्रैलोक्यविजयं कवचम्।।

### (७) अथ बगला प्रत्यंगिरा कवचम्

# श्री शिव उवाच

अधुनाऽहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम्। यस्य पठन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते।। प्रत्यंगिरां तां देवेशि शृणुस्व कमलानने। यस्य स्मरण मात्रेण शत्रवो विलयं गताः।।

### भ स्थिति प्रति स्थानि श्री देव्युवाच विश्वति ।

स्नेहोऽस्ति यदि में नाथ संसारार्णव तारक। तथा कथय मां शम्भो बगला प्रत्यंगिरा मम।।

# श्री भैरव उवाच व महान्य उन कि 🕹

यं यं प्रार्थयते मन्त्री हठात्तंतमवाप्नुयात्। विद्वेषणाकर्षणे च स्तम्भनं वैरिणां विभो।। उच्चाटनं मारणं च येन कर्तुं क्षमो भवेत्। तत्सर्वं ब्रूहि मे देव यदि मां दयसे हरे।। श्री सदाशिव उवाच

अधुना हि महादेवि परानिष्ठा मतिभवित्। अतएव महेशानि किंचित्र वक्तुर्महिसि।।

# क्राल कि के क्राडम के श्री पार्वत्युवाच

जिघान्सन्तं जिघान्सीयात्र तेन ब्रह्महा भवेत्। श्रृति रेषाहिगिरिश कथं मां त्वं निनिन्दसि।।

# श्री शिव उवाच

साधु साधु प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहितानघे।
प्रत्यंगिरां बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम्।।
नाशिनीं सर्व दुष्टानां सर्व पापौघ हारिणीम्। सर्वप्राणिहितां देवीं सर्व दुःख विनाशिनीम्।। भोगदां मोक्षदां चैव राज्य सौभाग्य दायिनीम्। मन्त्र दोष प्रमोचनीं ग्रहदोष निवारिणीम्।।

अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य नारद ऋषिस्त्रष्टुप् छन्दः प्रत्यंगिरा देवता ह्रीं बीजं हूं शक्ति: ह्रीं कीलकं ह्री ह्रीं ह्रीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे विनियोग:।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान् साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान् शत्रून् खादय खादय मारय मारय घातय घातय ॐ हीं फट् स्वाहा।

हार मा प्रयोग्य कि कि

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनीदेवी क्षोभिणीमोहिनी तथा। संहारिणी द्राविणी च जृम्भिणी रौद्ररूपिणी।। इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजिताः। धारयेत् कण्ठदेशे च सर्व शत्रु विनाशिनी।। 🕉 हीं भ्रामिर सर्व शत्रून् भ्रामय भ्रामय 🕉 हीं स्वाहा। ॐ हीं स्तम्भिनि मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ॐ हीं स्वाहा। ॐ हीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ हीं स्वाहा। 🕉 हीं मोहिनि मम शत्रून्मोहय मोहय 🕉 हीं स्वाहा। ॐ हीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ हीं स्वाहा। ॐ ही द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ हीं स्वाहा। 🕉 हीं जृम्भिणि मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय 🕉 हीं स्वाहा। 🕉 हीं रौद्रि मम शत्रुन् सन्तापय सन्तापय 🕉 हीं स्वाहा। विद्या महाविद्या सर्व शत्रु निवारिणि। धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान् दुष्टान् विनाशयेत्।। त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्स्थरमानसः। न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः।। यं यं स्पृशति हस्तेन यं यं पश्यति चक्षुषा। स एव दासतां याति सारात्सारामिमं मनुम्।।

इति श्री रुद्रयामले शिवपार्विति सम्वादे बगला प्रत्यंगिरा कवचम्।

# अथ शतनामस्तोत्रम्

श्री नारद उवाच

भगवान देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मकम्। शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाऽधुना।।१।।

# श्री भगवानुवाच

शुणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। पीताम्बर्याः महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम्।।२॥ यस्य प्रपठनात् सद्यो वादी मूको भवेत् क्षणात्। रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।३॥

ॐ अस्य पीताम्बर्य्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीपीताम्बरी देवता, श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः।

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशङ्करभामिनी। बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरिप।।१।। महामत्स्या महाकूम्मा महावाराहरूपिणी। नरसिंहाप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी।।२।। जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता। कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी।।३।। बुद्धिक्षपा बुद्धिभार्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी। कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी।।४।। कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी। केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी।।५।। केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता। रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता।।६।। नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता। नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता।।७।। नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता। नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा।।८।। नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता। नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी।।९।।

रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी। सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णभा स्वर्गतिप्रदा।।१०।। रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी। भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा।।११।। रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी। यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी।।१२।। लङ्कापतिध्वंसकरी लङ्केशरिपुवन्दिता। लङ्कानाथकुलहरा महारावणहारिणी।।१३।। देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी। पराऽणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी।।१४।। वरदा वरदाऽऽराध्या वरदानपरायणा। वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता।।१५।। वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना। बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता।।१६।। पीतपुष्पप्रिया पीतहरा पीतस्वरूपिणी। इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।१७।। यः पठेत् पाठ्येद् वापि शुणुयाद् वा समाहितः। तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति वै नात्र संशयः।।१८।। प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत् सुभक्त्या परिचिन्त्या पीताम्। द्वृतं भवेत् तस्य समस्तवृद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः।।१९।।

इति श्रीविष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्री बगलाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।

PERSONAL STATE OF THE PROPERTY.

। । १ महाका क्वारत सिन एयाचा सी-चर्यकार्थिया १।।

# सर्व सिब्हिप्रद

# बगलाऽष्ट्रोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

ब्रह्मास्त्ररूपिणी देवी माता श्रीबगलामुखी। चिच्छक्तिर्ज्ञानरूपा च ब्रह्मानन्दप्रदायिनी।।१।। महाविद्या महालक्ष्मी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी। भुवनेशी जगन्माता पार्वती सर्वमङ्गला।।२।। ललिता भैरवी शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी। वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती।।३।। जगत्पूज्या महामाया कामेशी भगमालिनी। दक्षपुत्री शिवांकस्था शिवरूपा शिवप्रिया।।४।। सर्वसम्पतकरी देवी सर्वलोकवशङ्करी। वेदविद्या महापूज्या भक्तादेषी भयङ्करी।।५।। स्तम्भरूपा स्तम्भिनी च दुष्टस्तम्भनकारिणी। भक्तप्रिया महाभोगा श्रीविद्या ललिताम्बिका।।६।। मैनापुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी। नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा।।७।। नागिनी नागपुत्री च नगराजसुता उमा। पीताम्बा पीतपुष्पा च पीतवस्त्रप्रिया शुभा।।८।। पीतगन्धप्रिया रामा पीतरत्नार्चिता शिवा। अर्द्धचन्द्रधरी देवी गदामुद्गरधारिणी।।९।। त्रिपदा शुद्धा सद्योरागविवर्धिनी। विष्णुरूपा जगन्मोहा ब्रह्मरूपा हरिप्रिया।।१०।। रुद्ररूपा रुद्रशक्तिश्चिन्मयी भक्तवत्सला। लोकमाता शिवा सन्ध्या शिवपूजनतत्परा। १९१।

धनाध्यक्षा धनेशी च धर्मदा धनदा धना। चण्डदर्पहरी देवी शुम्भासुरनिवृर्हिणी।।१२।। राजराजेश्वरी देवी महिषासुरमर्दिनी। मधुकैटभहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी।।१३।। धूम्राक्षदैत्यहन्त्री च भण्डासुरविनाशिनी। रेणुपुत्री महामाया भ्रामरी भ्रमराम्बिका।।१४।। ज्वालामुखी भद्रकाली बगला शत्रुनाशिनी। इन्द्राणी इन्द्रपूज्या च गुहमाता गुणेश्वरी।।१५।। वज्रपाशधरा देवी जिह्नामुद्गरधारिणी। भक्तानन्दकरी देवी बगला परमेश्वरी।।१६।। अष्टोत्तरशतं नाम्नां बगलायास्तु यः पठेत्। रिपुबाधाविनिर्मुक्तः लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात्।।१७।। भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रहपीडानिवारणम्। राजानो वशमायांति सर्वैंश्वर्यं च विन्दति।।१८।। नानाविद्यां च लभते राज्यं प्राप्नोति निश्चितम्। भुक्तिमुक्तिमवाप्नोति साक्षात् शिवसमो भवेत्।।१९।। ।। इति रुद्रयामले सर्व सिद्धिप्रद बगलाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्।।

# अथ सहस्रनामस्तोत्रम् क्याक्रम् ह्या स्थानी

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम्। शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह।।१।।

श्रीदेव्युवाच परमेष्ठिन् परं धाम प्रधान परमेश्वर। नाम्नां सहस्रं बगलामुख्याद्या ब्रूहि वल्लभ।।२।।

# ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम्। परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम्।।३।। गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम्। अति गुप्ततरं विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।४।। विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्यौघदायिनी। गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।।५।। अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुब्रते। रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी सर्वयोषिताम्।।६।। स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम्। पुरा चैकाण्वि घोरे काले परमभैरवः।।७।। सुन्दरीसहितो देव केशवं क्लेशनाशनः। उरगासनमाासीनं योगनिद्रामुपागतम्।।८।। निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः। महास्तम्भकरं देवि स्तोत्रं वा शतनामकम्।।९।। सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित्। नियाना तिवसित्त विलब्धी निरामधा हिंची

# श्रीभगवानुवाच

शृणु शङ्कर देवेश परमातिरहस्यकम्।।१०।। अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः। गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत्।।११।।

3ॐ अस्य श्रीपीताम्बरीसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टिसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

### अथ ध्यानम्

पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम्। जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम्।।१२।। शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च विभ्रतीं परमां कलाम्। सर्वागमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये।।१३।। सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूतां महेश्वरीम्। गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते।।१४।। जगद्धिध्वसिनीं देवीमजरामरकारिणीम्। तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम्।।१५।। प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत्। बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च।।१६।। मुखं पद स्तम्भयेति जिह्नां कीलय बुद्धिमत्। विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत्।।१७।। विद्विप्रिया ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः। ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी।।१८।। ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यवगला ब्रह्मचारिणी। नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया।।१९।। सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी। कमला विमला नीला रत्नकान्तिर्गुणाश्रिता।।२०।। कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी। मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी।।२१।। कामिनी कामनी काम्या कामुका कामचारिणी। कामप्रियां कामरता कामा कामस्वरूपिणी।।२२।। कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी। कामदा कामहा काली कपाली च करालिका।।२३।।

कंसारि कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा। कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक्।।२४।। क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा। कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी।।२५।। खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा वरा। खङ्गहस्ता खड्गस्ता खङ्गिनी खर्परप्रिया।।२६।। गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्धिनी। गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी।।२७।। गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुड़ासना। गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी।।२८।। गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठनिवासिनी। गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधराप्रिया ग्रहा।।२९।। घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा। दैत्यैन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिस्वना।।३०।। डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना। उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी।।३१।। चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च। उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनो।।३२।। चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी। चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी।।३३।। क्षत्रप्रायश्शिरोवाहा छला छलतरा छली। क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी।।३४।। जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा। जायिनी जयनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रियाऽजिता।।३५।। जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी। जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा।।३६।। झङ्कारा झञ्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी। झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी।।३७।। झञ्झरा झमुरी झारा झरत झरतरा परा। झञ्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी।।३८।। ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया। टङ्कारी टिटिका टीका टङ्किनी चटवर्गगा।।३९।। टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया। ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया।।४०।। ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया। डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया।।४१।। डाकिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा। ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी।।४२।। ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी। अनेकरूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायिनी।।४३।। अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता। तार तन्त्रवती तन्त्रतत्त्वरूपा तपस्विनी।।४४।। तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा। तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीतिप्रघर्षिणी।।४५।। तन्त्रयन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी। तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थिति:।।४६।। स्थाणुप्रिया स्थपरास्थिलता स्थानप्रदायिनी। दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा।।४७।। दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी। दमनप्रमदा दैत्यदया दानपरायणा।।४८।। दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता। दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी।।४९।।

दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी। दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी।।५०।। धारणी धरणी धात्री धराधरधरप्रिया। धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी।।५१।। धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी। धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी।।५२।। धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी। नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा।।५३।। नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा। नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी।।५४।। सुनीलपुष्पखचिता नीलजम्बुसमप्रभा। नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा।।५५।। नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दान्दविवर्धिनी। यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी।।५६॥ नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी। नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः॥५७॥ पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता। पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिङ्गमूर्धजा।।५८।। पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता। परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी।।५९।। परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा। पराविद्या परासिद्धिः परास्थानप्रदायिनी।।६०।। पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता। पुरातना पूर्वपरा परिसद्धिप्रदायिनी।।६१।। पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयस्विनी। प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी।।६२॥ पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा। पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी।।६३।। पावनी पालिका पात्री परदा बरदा शिवा। प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी।।६४।। जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतप्रिया। पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा।।६५।। पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी। फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी। १६६।। परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी। फुत्कारा फुत्करा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना।।६७।। फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी। स्फाटिका घुटिका घोरा स्फाटिकाद्रिस्वरूपिणी।।६८।। वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा। विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्रनिवासिनी।।६९।। विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया। वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी।।७०।। ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया। वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी।।७१।। ब्रह्मरूपा परब्रह्ममहेश्वरी। भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा।।७२।। भवपारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी। भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्याविनाशिनी।।७३।। भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका। भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा।।७४।। भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा। भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी।।७५।।

भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा। भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी।।७६।। भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी। भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा।।७७।। भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी। भगलिङ्गासम्भोगा भगलिङ्गासवावहा।।७८।। भगलिङ्गसमाधुर्य्या भगलिङ्गनिवेशिता। भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता।।७९।। भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता। माधवी माधवी मान्या मधुरा मधुमानिनी।।८०।। मन्दहासा महामायां मोहिनी महदुत्तमा। महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृति:।।८१।। मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना। मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषिता।।८२।। मिल्लका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा। मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया।।८३।। मत्तहंसा समोत्रासा मत्तसिंहमहासनी। महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यञ्च मिथुनात्मजा।।८४।। महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा। माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी।।८५।। मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमातङ्ग गामिनी। मदप्रिया मांसरता मत्तयुक् कामकारिणी।।८६।। मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा। मरीचिर्मा रतिर्माया मनोवुद्धिप्रदायिनी।।८७।। मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्यदप्रदायिनी। यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा।।८८।।

याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी। रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया।।८९।। रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता। रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा।।९०।। रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्धिनी। रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा।।९१।। रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा। ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया।।९२।। रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका। लक्ष्मीर्लज्जा च लितका लीलालग्ना निताक्षिणी।।९३।। लीला लीलावती लोभा हर्षाह्वादनपट्टिका। ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता।।९४।। ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी। वेदाङ्गना वेदरूपा वनिता विनता बसा।९५।। वाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा। विन्ध्यस्था विंध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दुभूषणा।।९६।। विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला। वामाचारप्रिया बह्निर्वामाचारपरायणा।।९७।। वामाचाररता देवी वासुदेवप्रियोत्तमा। बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च वुद्धा चरणमालिनी।।९८।। बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया। शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका।।९९।। शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा। शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया।।१००।। शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका। षण्मुखी च षडङ्गा च षट्चक्रविनिवासिनी।।१०१।।

षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका। षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी।।१०२।। षडानना षडस्ना च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया। षडङ्गवादा षोडशी च षोढा न्यासस्वरूपिणी।।१०३।। षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरूपिणी। षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्रदान्विता।।१०४।। सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा। सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा।।१०५।। सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धसिद्धस्वरूपिणी। हरा हरप्रिया हारा हरिणी हारयुक्तथा।।१०६।। हरिप्रिया हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया। हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी।।१०७।। क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा। क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना।।१०८।। अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी। स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी।।१०९।। अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी। स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्दलोचना।।११०।। अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती। अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी।।१११।। अष्टिसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता। अरविन्दमुखी देवी भोगसौख्यप्रदायिनी।।११२।। आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी। सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता।।१११३।। इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी। इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रवद्योक्षिणी तथा।।११४।। ईला कामनिवासा च ईस्वरीश्वरवल्लभा। जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत्।।११५।। उमा कात्यायनी ऊर्द्धा मीना चोत्तरवासिनी। उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी।।११६।। उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा। उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा।।११७।। ऊर्द्धदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी। उमासिद्धिप्रदा या य उरगासनसंस्थिता।।११८।। ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्विसिद्धिप्रदायिनी। उत्सवोत्सवसीमान्ता कामिका च गुणान्विता।।११९।। एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा। ॐकारवलयोपेता ॐकारपरमा कला।।१२०।। 🕉 वद वद वाणी च ॐकाराक्षरमण्डिता। ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी।।१२१।। ॐकारमध्यवीजा च ॐ नमो रूपधारिणी। परब्रह्मस्वरूपा च जिल्हा अंशुकांशुकवल्लभा।।१२२।। ॐकारा अः फट्मंत्रा च अक्षाक्षरविभूषिता। अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता।।१२३।। प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः। हींकाररूपा हींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा।।१२४।। हल्लेखा सिद्धियोगा च हत्पद्मासनसंस्थिता। बीजाख्या नेत्रहृदया हींबीजा भुवनेश्वरी।।१२५।। क्लीं कामराजिक्लन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा। क्लीं क्लीं क्लीं रूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी।।१२६।। कमला शक्तिबीजा च पाशाङ्कंशविभूषिता। श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा।।१२७।।

🕉 ऐं क्लीं हीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला। हीं क्लीं श्रीङ्कारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा। 19२८।। सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा। सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी।।१२९।। सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी। गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी।।१३०।। सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी। सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा।।१३१।। सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी। सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी।।१३२।। मनोवाञ्छितदात्री च मनोबुद्धिसमन्विता। अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।।१३३।। पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी। स्ववर्गा देववर्गा च त वर्गा च समन्विता।।१३४।। अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा। तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी।।१३५।। नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च। वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च।।१३६।। मातङ्गी मधुमता च अणिमा लिघमा तथा। सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी।।१३७।। रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता। स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्याचरणशुक्रभा। १९३८।। संक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता। प्रथमा च दितीया च तृतीया च चतुर्थिका।।१३९।। पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा। अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा।।१४०।। द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा। अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा।।१४१।। खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा। भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुधविभीषणा।।१४२।। कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा। कुलकर्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्धिनी।।१४३।। कीर्तिः श्रीः चरमा रामा धर्म्मायै सततं नमः। क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी।।१४४।। उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविवर्धिनी। साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च।।१४५।। काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी। कौलिनी कालिकी चैव कचटतपवर्णिका।।१४६।। जियनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा। स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी।।१४७।। ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वालामालासमाकुला। भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी।।१४८।। अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला। काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च।।१४९।। कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्धिनी। सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छित्रासिशङ्करा।।१५०।। दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च। अग्निनैर्ऋतिवायव्या ईशान्या दिक् तथा स्मृता।।१५१।। ऊर्ध्वाङ्गाऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका। चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा।।१५२।। चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा। चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा।।१५३।।

धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी। सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा।।१५४।। ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा। नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छित्रमस्तका।।१५५।। सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता। हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी।।१५६।। हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुलाभरणा च सा। जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा। 19 ५७।। जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा। जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी।।१५८।। ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया। जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा।।१५९।। विद्याधरा च विम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी। विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा।।१६०।। मन्त्रस्तपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी। गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च।।१६१।। विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी। बहुबहुसुन्दरी च कंसासुरविनाशिनी।।१६२।। शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहरापि च। दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया।।१६३।। सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च। मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला।।१६४।। विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना। सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा।।१६५।। सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा। ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी।।१६६।।

योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता। योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्ददायिनी।।१६७।। इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया। विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयङ्करी।।१६८।। भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी। बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी।।१६९।। पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी। िसिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी।।१७०।। मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी। सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका।।१७१।। यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा। चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्द्रनाराण्यवासिनी।।१७२।। चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी। सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा।।१७३।। महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी। विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी।।१७४।। धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी। कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी।।१७४।। सुरेन्द्रपूजिता सिद्धामहातेजोवतीति च। परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी।।१७६।। इति ते कथितं देवि पीतानामसहस्रकम्। पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिभवित् प्रिये।।१७७।। इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम्। प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वति।।१७८।। एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति। एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत्।।१७९॥ द्विवारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत्। त्रिवारपठनाद् देवि सर्व सिध्यति सर्वथा।।१८०।। स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते। मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्।।१८१।। विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम्। महित्वं वत्सरान्ताच्य शत्रुहानिःप्रजायते।।१८२।। क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत्। यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये।।१८३।। गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः। गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत् सदा।।१८४।। हेतुयुक्तो भवेत्रित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत। य इदं पठेत नित्यं शिवेन सदृशो भवेत्।।१८५।। जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान् मृतो मोक्षपतिर्भवेत्। सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशय: 119 ८ ६ 11 स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते। सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात्।।१८७।। पीतगन्धानुलेपनाम्। पीताम्बरपरीधानां परमोदयकीर्तिः स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि।।१८८।।

> इति श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्रे विष्णुशङ्करसंवादे श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्।

# ब्रह्मास्त्रविद्या क्रमबीजरत्नावली स्तोत्रम्

ॐकारद्वयसम्पुटांतरपुटं मायास्थिराद्वन्दितम्। तन्मध्ये बगलामुखीति विमलं सम्बोधनं सर्व च।। दुष्टानामपि वाचमाशु च मुखं संस्तम्भयेदक्षरम्। जिह्नां कीलय कीलयेति विलिखेद् बुद्धिं तथा नाशयेत्।। अन्तेवह्निविलासिनी विलासितं विश्वेश्वरत्वप्रदम्। रुद्रोपेन्द्रमहेन्द्रनारदमुखैः ससेवितं सिद्धये।।१।। ब्रह्मास्त्रं सकलार्थ सिद्धिजननं षट्त्रिशरत्नाक्षरम्। प्रोक्तं पद्मभुवा हिताय जगतां यन्नारदाग्रे पुरा।। जीवन्मुक्तपदे विभाति सुधियो येषां मुखे भासते। निर्द्धन्द्वामृत सागरेन्दुकिरणो हारश्चकोरायते।।२।। ओमित्याद्यं स्वरूपं जपति तवशिवे शब्द तन्मात्र गर्भम्। वाचोयस्मात्परार्थ प्रकटितपटवो वर्णरूपानिरीयुः।। ब्रह्माद्यैः पञ्चतत्वैरिप वरमनघं चित्प्रबोधादिगम्यम्। दुर्ज्ञेयं योगयुक्ता कथमपि तपसा योगिभिगृह्ममाणो।।३।। क्ष्माबीजं हदये विभाति विमलं लक्ष्मी स्थिरातद्गृहे। धैर्यं तस्य कलेवरेपि भजते दीर्घायुराभूतले।। कल्पान्तेष्वपि वृद्धिमेति विमला तद्वंशवल्लीलता। शौर्यं स्थैर्यमुपैति तस्य पुरतस्त्रस्यान्ति वादीश्वराः।।४।। बद्धुं वारिधिमुद्यतो जनकजानाथोपि पीताम्बरे। त्वां ध्यात्वा रविशोषणे कृतमितः सेतुं प्रचक्रेऽद्धृतम्।। जित्वा रावणमुग्र शत्रुमखिलं बंदीन्विमोच्यामरान्। लोकसुखोदयामरचयत्कल्पास्थिरामम्बिके।।५।। गर्वी खर्वति रंकति क्षितिपतिर्मूकायते वाक्पति-। र्विह्नः सीदित दुर्जनः सुजनित पुष्पायते वासुिकः।। श्री नित्ये बगले तवाक्षरपदैयत्नीकृताः यंत्रिताः। के के नो निपतन्ति त्रस्तमुकुटाश्चण्डार्क तुल्या अपि।।६।।

लावण्यामृतपूरिते तव कृपापांगे निमग्ना नरा। ब्रह्मेन्द्रादि दिगीश भूतिमपिते जानन्ति गुंजोपमम्।। येषां चेतसिसंस्थितासि बगले ते विश्वरक्षाक्षमाः। प्रारब्धं दृढयन्ति सत्वरतरं विघ्नैरविघ्नीकृताः।।७।। मुख्यत्वं समुपैति संसदि तवापांगावलोके नरः। किं तिच्चित्रमहो स्वयं प्रभवते सृष्टिस्थितिध्वंसने।। यच्चिते नवभक्तिमाशु कुरुते त्यद्दर्शनं यस्य वा। तं सर्वोप्यणिमादयोप्यतितरामाराधयन्ते ध्रुवम्।।८।। खिन्नानां बलदायिनी जलनिधौ पीतस्थितानां गतिस्त्वं प्राणं निगदन्ति गह्नरगिरि व्याघ्रादिभिस्तेष्वपि।। त्वां पीताम्बरधारिणीं परचमूविद्रावणोद्धगदा। हस्तां वामकरेण शत्रुरसनामुन्मूलयन्तीं भजे।।९।। स्पष्टं ये प्रणमन्ति पादयुगलं पीताम्बरे तावकम्। ते वाञ्छाधिकमर्थमाशु सकलं सिद्धिं भजन्ते पुनः।। यद्यत्कर्तुमुरीकरोति बगले त्वत्सेवकोत्राधुना। तत्संजातमवेक्षते तव कृपापांगावलोके क्षणात्।।१०।। वाणीसूक्तिसुधारसद्रवमयी सालंकृतातन्मुखे। शापानुग्रहकारिणी कवि जनानन्दैक संवर्धिनी।। या कर्तुं क्षमते विशालमितमान् त्वत्सेवकोत्राधुना। किंचित्रं यदि सृष्टिमाशुकुरुते ब्रह्माण्डकोट्यालये।।११।। देवि त्वद्वक्रदृष्ट्या तुहिनगिरिमुखाः पर्वताः पांशुतुल्या। ज्वालामालापि चन्द्रामृत कर सदृशी पुष्पतां यांति नागाः।।

मूकत्वंवाक्पतीन्द्राः सरिससमतुलामाश्रयन्तेसमुद्राः। राजानो रङ्कभावं रणभुवि रिपवो विद्रवन्ते विशस्त्राः।।१२।। दृष्ट्वा तावकमन्त्रबीजममलं दुष्टौघ संस्तम्भनम्। वश्याकर्षणमारणं प्रथमतः प्रक्षोभणोच्चाटनम्।। व्यक्तं वज्रमिवापरं यदिमुखे जागर्तितस्याग्रतः। पादांता इव संचरंति रिपवो ये सप्तद्वीपेश्वरा।।१३।। नावावर्ण विभूषिते मणिमये द्वीपे सुधासागरे। कल्पानोकहकाननांतरगता या रत्नवेदो परा।। तत्रप्रेतक पञ्चकादि समये सिंहासने संस्थिताम्। ध्यायेद्घाटक शेखरामरि हरामाद्यामशेषार्थंदाम्।।१४।। वाग्देवी वदनेव सत्यविरतं नेत्रे च लक्ष्मीः करे। दानं दीनकृपालुता च हृदये वीरत्वमाजौ सदा।। त्वद्भक्तस्य भवाब्धि पारतरणे तत्त्वोदयो जायते। येनेद निलनीदलोपरि जलाकारं जगद्भासते।।१५।। चञ्चत्काञ्चनतुल्य पीतवसनां चन्द्रावतंसोज्वलाम्। केयूरांगद हारकुण्डलधरां भक्तोदयायोद्यताम्।। त्वां ध्यायामि चतुर्भुजां त्रिनयनामुग्रारि जिह्नांकरे। कर्षतीमहमेव पाहिबगले त्राणं त्वमेवासि मे।।१६।। मातस्ते महिमा तमुग्रमधिकं प्रोक्तं स्वयं मानवैः। वाक्यं संहियते श्रमेण ह्यथवा शक्त्या गुणाम्भोनिधे।। नोनिः शेषतया सुरैरविदितं प्राप्तस्य पद्मालये। तस्मात्सर्वगता त्वमेव सदसद्रूपा सदा गीयसे।।१७।। खंजं तार्क्यजयोदितं प्रकुरुते तार्क्य चखञ्जादिकम्। वातं स्तम्भयते जलाग्निशमने यद्वक्त्रशक्तिः शिवे।। सद्वीजं बगलेतिमेस्तु रसनालग्नं सदैवामलम्। यं ब्रह्मादिषु दुर्लभं भुवि नरैस्तत्प्राकृतैर्लभ्यते।।१८।।

प्राप्ता श्रीबगलामुखी वदनतः स्वप्नेषु विद्यामया। षट्त्रिंशद्भिरिमैः सुवर्णनिचयैः सद्बीजरत्नावली।। येषां कंठगता विभाति जगतीपीठे प्रयोगक्षमा। वश्याकर्षण मोहनावनविधौ स्तम्भेतथोच्चाटने।।१९।। देवीस्वप्नगतास्वहस्तलिखितं मह्यं ददावद्भुतम्। दिव्यास्त्रंपुरतः पठस्व विमल सिंदूरवर्णैः करैः।। रोमाञ्चांकित हर्षबाष्यलुलितै रंगैपठत्तूत्तरम्। प्राप्तोहं परमोदयः प्रदियतं ज्ञान कवीन्द्रार्चितम्।।२०।। स्तम्भत्वं परमोपियाति पवनो भक्तस्य पीताम्बरे। किंचित्रं यदि वारिधिः स्थलपदं मेरुस्तु माषोपमम्।। कल्पानोकह कामधेनु प्रमुखैरत्नैरनेकैः स्थितैर्य-द्वाञ्छाधिक दानमाशु कुरुते खित्रेषुदीनेषु च।।२१।। भाग्यं यस्यमुखे विभाति विमलं विद्या विशेषाधिका। षट्त्रिंशद्भिरथोदिता बहुगुणैर्बीजैस्तु सर्वार्थदा।। तं सर्वे प्रणमंति मानवममुं सेन्द्रासुराभूचरा। क्रांताशेषमहोदयं स्वकलनाक्रांत त्रिलोकालयम्।।२२।। यत्किचिद्भुवने विभाति विमलं रत्नैः महानंददम्। या या वृत्तिरुदारतां जनयते यद्यत्परं सुन्दरम्।। यद् किंचिद्भुवनेथवाणु महतां शब्देनवाकीर्त्यते। तत्सर्व तवरूपमेव बगले संसारपार प्रदे।।२३।। जाग्रत्पूर्णकृपामृतौघभरिते श्रीमत्कटाक्षे क्षणे। सर्वार्थप्रतिपादकव्रतधरे ये ये निमग्ना नराः।। तेषां भाग्यमतीन्द्रियं निगदितुं ब्रह्मादयो न क्षमा। ये संकल्प विकल्पमात्ररचना प्राणञ्च ये हेलवः।।२४।। हस्तं संगृह्य चापं शरभरनिकरैर्यत्किरातं महाजौ। पार्थो ब्रह्मास्रविद्याभ्यसनपटुमितर्द्धन्द्वयुद्धे तुतोष।।

तत्सर्वं देववृन्दैरथरिपुनिवहैवीक्षितं सिद्धलोकै-। धैर्यं शौर्यं समस्तं तव वरजनितं भातिपीताम्बरेदः।।२५।। कर्णालम्बितलोलकुण्डलयुगां पीतेन्दुमौलौ करै:। केयूरांगदपाशमुद्ररगदावज्रादिकान् बिभ्रतीम्।। देवीं पीतं विभूषणामरि कुलाबाधोद्यतां ये नरा। ध्यायंत्याशु लभंति सिद्धिमतुलां त वालिशास्युः कथम्।।२६।। लब्ध्वा मातरशेषकांतिभरितानन्दं कृपावीक्षणम्। वर्षीयानिप मोदितुं प्रभवतिस्रीवृन्दमुन्मीलितुम्।। किं तिच्चित्रमनेकदा भ्रमयते दृष्ट्या त्रिलोकीमिमाम्। सूर्येन्द्रवरधारिणीमपि बलात्कंदर्प दर्पाधिकाम्।।२७।। यंत्रं जैत्रमनेकदुःखशमनं पीताम्बरेतावकम्। ॐकारद्वय सम्पुटस्थ सकलाभीष्ट त्रिधा वेष्टितम्।। तद्वाह्ये स्थिरमाययाष्ट्रपुटितं पाशांकुशाभ्यां वृतम्। येषां चेतसि संस्थितासि बगले ते विश्व रक्षा क्षमा।।२८।। कर्पूरागरुचन्दनैर्मृगमदैर्गोरोचनेः केसरैः। त्वत्पादाम्बुजमर्चयन्ति बगले यत्प्रत्यहं मानवा।। ते लब्ध्वा श्रियमद्भु तामपि चिरं भोगांश्च भुक्त्वावनौ। सायुज्यं लयमाविशन्ति परमानन्दोस्ति यत्राधिकः।।२९।। लब्ध्वा पादयुगे रतिं तव शिवे क्षुद्रोपि देवेन्द्रता-मासाद्यामरसुन्दरीभिरमलैभेंगैर्दिवि क्रीडिति।। ये हित्वा तव भक्तिमन्यघटनानिन्द्याश्चिरं ते नरा। भ्रष्टाधर्मपराङ्मुखा भ्रमधियो भारं वहंते भुवि।।३०।। यामाराध्य हरो हरत्वमभजद्विष्णुस्तु विश्वात्मताम्। चक्रे सृष्टिमजोस्यवोचदखिलं वेदादि सद्वाङ्मयम्।। ध्यात्वाध्वान्तमशेषमाशु हरते सूर्योपि पीताम्बरे। तापांतकमपाचकार रजनीनाथोपि चुड़ाश्रितः।।३१।।

बुद्धिं नाशय कीलय स्वरसनामूर्वोर्गतिं स्तम्भय। दुष्टान् द्रावय मारयस्वपिशुनान् साधूंश्चिरं पालय।। इत्थं ये बगलामुखि त्विय रितं लब्ध्वा पठिष्यन्ति ते। यंत्रारूढ़िमवारिवृन्दमिखलं कर्तुं समर्था सदा।।३२।। ध्यात्वा त्वां बगले पूरागिरिसुता चक्रे शिवंस्वेवशम्। प्रोक्तं नार्पयितुं शिवेनगदिता सङ्कल्पनाना तदा।। त्यक्त्वाग्नि गलितावलिंगिरिसुता त्यक्त्वा गलत्तांमुखा-। त्तस्मात्त्वं बगलामुखीतिगदिता नित्या परायोगिनी।।३३।। नागेन्द्रैर्देवसंघैः ऋषिवरनिवहैर्दानवै राक्षसेन्द्रै-। र्दिक्पालैर्दिक्करींन्द्रैहिमकरप्रमुखैः सद्गृहैस्तारकाद्यैः।। ब्रह्माद्यैः स्थूलसूक्ष्मैरविदितमुदिता त्वं परा चोन्मना त्वम्। नित्यं पीताम्बरात्वं रिपुभयशमनी भक्तचिन्तासनस्था।।३४।। शम्भुर्यद्गुणगायनोद्यतमतिर्नृत्योत्सवे तांडवे। चन्द्रमयूखकम्पनच्छलात्रीराजनं पादयोः।। चक्रे हेमांभोजदलैर्जटाजलभरेरानन्दितैमैं।लिभिः। पूजांप्रत्यहमातनोति नटयन् स्वैंहस्ततालादिभिः।।३५।। पादांघ्रौ चतुराननोऽपि वदने चित्तारविंद स्थिताम्। यां वक्षस्थल संस्थितां हरिरजामालिंग्य पीताम्बराम्।। यद्देहार्धमुरी चकारमुरभित्सौन्दर्यसाराधिका।

षट्चक्राक्षररूपिणीं भजसखे देवीं जगद्व्यापिनीम्।।३६॥ हस्ते भाति गदा सदार्तिशमनी रत्नावली तद्भुजे। पादेनूपुरमीशमौलिमणिभिः नीराजनं राजते।। ताटंकं श्रवणे कुचोपिर सदा कस्तूरिकालेपनम्। काश्मीरद्रवमङ्गरागमधिकां पीतांच्छविं तन्वते।।३७॥ ॐकारद्वयसम्पुटेनपुटितां विद्यामजाद्यैः स्तुताम्। षट्चक्राक्षरसारबीजरिचतां षट्त्रिंशवर्णात्मिकाम्।।

ये जानन्त यजन्ति सन्ततमिष ध्यायन्ति गायन्ति वा।
ते विद्याविबुधैश्चरन्ति भुवने सिद्धार्चिताः श्रद्धया।।३८।।
स्वाहाशक्तिरुपांतके तव ऋषिः श्रीनारदी दैवतम्।
नित्या श्रीबगलामुखीतिगदिताच्छंदो भवेत्त्रैष्टुभम्।
बीजंतुस्थिरमायया विरचितं नानाविध स्तंभनम्।
प्रोक्तं पद्मभुवा विभाति विनियोगो पुच्छता कीलकम्।।३९।।
हद्यं सर्वसुरेश्वरैश्च ऋषिभिः दुष्प्राप्यमेवाद्भुतम्।
स्तोत्रं गोप्यतमं स्वभाग्यवशतः प्राप्तं पठिष्यन्ति ये।।
सूक्त्या देवगुरुं धनेषु धनदं जित्या चिरंजीविनः।
षणमासामृतसागरे शिव समाः क्रीडां करिष्यन्ति ते।।४०।।

।। इति रुद्रयामले क्रमबीजरत्नावली स्तोत्रम्।।

### रहस्यस्तोत्र

ब्रह्मादिदेवगणवन्दित पादपद्मां।
विश्वेश्वरीं निखिलविश्वविकासियत्रीम्।।
आधारपद्मगत कुण्डिलनीं वरेण्यां।
देवीं प्रणौमि बगलां परतत्वरूपाम्।।१।।
आविष्करोषि भुवनं परमेशितुस्त्वं।
स्पन्दं च तत्त्विनचयं धरणीशिवान्तम्।।
त्वं कारणं परमविन्दु प्रकाशकस्य।
मातर्नमामि सततं तव रूपमेतत्।।२।।
नादैश्च वर्णनिवहैस्तव चित्रवृत्तं।
पश्यन्ति योगिपुरुषा निहितं गृहायाम्।।
ग्रन्थिप्रभेदनपटोर्लय चिन्तकस्य।
जोषं त्वदीय चरितं मुखरी करोति।।३।।

भेदाविभेदमतयस्तव दिव्यरूपे। नित्यं गृणन्ति बहुशो मनसाप्यगम्ये।। नूनं न ते विकृतभाविबडम्बिता वै। जानन्ति देवि तव कृत्यमचिन्त्यरूपम्।।४।। पश्यन्ति शुद्धमनसो मुनयो मनोज्ञां। विद्युल्लतासदृशवक्रगतिं सुतन्वीम्।। षट्चक्रभेदनिपुणामनलाभकान्ति। मूलाधिवासनिरतां च परे लयन्तीम्।।५।। मुक्ता भवन्ति यतिनो व्रतिनो महान्तो। मुक्ता भवन्ति यातना ब्रातना महान्ता।

दंदद्य भेदविततं भवक्लेशजातम्।।

नाविर्भवन्ति जगता जिनदुःखभावो।

ध्यात्वा त्वदीयममलं पररूपमाघम्।।६।।

मध्ये सुधाब्धमणिमण्डपरत्नवेद्यां।

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।।

पीताम्बरां सकलदेवगणौर्निषेव्यां।

देवीं स्मरामि सततं भववन्धमुक्त्यै।।७।। इत्थं त्वदीयचरितं सुविचिन्त्यनित्यं। गच्छन्ति ते पदमनामयमम्बिकेते।। भोगान् समस्त जगतां परिलभ्य नूनं। स्वानन्दवारिनिधि सौख्यभुजो भवन्ति।।८।। पराशक्तेरिदं स्तोत्रं ये पठन्ति नरा भुवि। वाञ्छितं सुफलं तेषां भवत्येव न संशयः।।९।।

॥ इति श्रीपरमहंस परिव्राजकाचार्य श्री अनंत श्रीस्वामिपादैर्निर्मित रहस्यस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

## श्री पीताम्बराष्टकम्

सेयं नित्यं विशुद्धं यदिप नुतिशतैर्बोधितं वेदवाक्यैः। सच्चिद्र्पं प्रसन्नं विलसितमखिलं शक्तिरूपेण ज्ञातुम्।। शक्यं चैतां प्रजुष्टां भवविलयकरीं शुद्ध संवित्स्वरूपां। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सतत सुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।१।। गौराभां शुभ्रदेहां दनुजकुलहरां ब्रह्मरूपां तुरीयां। वज्रं पाशं च जिह्वामसुरभयकरीं लौहबद्धां गदाख्याम्।। वहन्तीं द्विजवरमुकुटां स्वर्णसिंहासनस्थां। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सतत सुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।२।। कौर्मरूपं विधात्रीं कृतयुग समये स्तब्धरूपां स्थिराख्यां। हारिद्रे दिव्यदेहां विवुधगणनुतां विष्णुनावन्दितां ताम्।। आनर्चुः स्कन्दमुख्याः स्मरहरमहिलां तारके संविवृद्धे। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सततसुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।३।। आधारे तत्वरूपां त्रिवलय सहितां योगिवृन्दैः सुध्येयां। पीतां रुद्रेण सार्धं रितरसनिरतां चिन्तयित्वा मनोज्ञाम्।। गद्यं पद्यं लभन्ते नवरस भिरतं सान्द्रचन्द्रांशुवर्णां। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सततसुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।४।। मायावीजं महोग्रं पशुजभयहरं भूमियुक्तं जपन्ति। पुत्रैः पौत्रेः समेताः प्रणिहितमनसः प्राप्य भोगान् समस्तान्।। लब्ध्वा चान्ते विमोक्षं विगतभवभयामोदमाना भवन्ति। नाम्नापीताम्बराढ्यां सततसुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।५।। ध्यानं मातस्त्वदीयं जपमनुसततं मन्त्रराजस्य नित्यं। दुष्टैः कृत्या स्वरूपा वलग इति कृता आशु शान्ति प्रयान्ति।।

तस्मादाख्यां त्वदीयां द्विभुज परिणतामुग्रवेषां सुभीमां। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सतत सुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।६।। जप्त्यावीजं त्वदीयं यदि तव सुजनो याति विद्वेषिमध्ये। रूपं दृष्ट्वा त्वदीयं रिपुजन सकलः स्तम्भनं याति शीघ्रम्।। गर्वी खर्वत्वमेति श्रवणपथगते नामवर्णे त्वदीये। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सतत सुखकरीं नौमि नित्यं प्रसन्नाम्।।७।। ब्रह्मा विष्णुमहिशो जपति तवमनुं भावयुक्तं महेशि। लब्ध्वा काम स्वरूपं समरसनिरता दिव्यभावं भजन्ते। तामेवाहं भवानीं भवसुखविरतो भावयुक्तं स्मरामि। नाम्ना पीताम्बराढ्यां सततसुखकरीं नौमिनित्यं प्रसन्नाम्।।८।। धन्यास्ते भक्तियुक्ताः सततजपपराहीनवर्णेऽपि जाता। वैमुख्ये लग्नचित्ता यदपि कुलपरा नो प्रशस्याः कदाचित्।। इत्थं सिञ्चन्त्य मातः। प्रतिदिनममलं नामरूपं त्यदीयं। सर्वं सन्त्यज्य नित्यं सतत भयहरे! कीर्तये सर्वदाऽहम्।।९।। स्तोत्रेणाऽनेन देवेशि। कृपां कृत्वा ममोपरि। बगलामुखि ! मे चित्ते वासं कुरु सदाशिवे।।१०।। यः कश्चित् प्रपठेन्नित्यं प्रातरुत्थाय भक्तितः। तस्य पीताम्बरा देवी शीघ्रं तुष्टिं समेष्यति।।१९।। प्रयतो ध्यानसंयुक्तो जपान्ते यः पठेत् सुधीः। धनधान्यादिसम्पन्नः सान्निध्यं प्राप्नुयाद् द्रुतम्।।१२।।

> ।।इति श्रीपीताम्बराष्टकं समाप्तम्।। इदं श्री पीताम्बराष्टकं श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यवर्यैः श्री स्वामिपादैकरारि।।

# श्री पीतोपनिषद्

तस्यादाण्यां लहीयां द्विपुत्र प्रियमामण्याय रामाम

### 10 त हाइन एक विक्र श्रीगणेशायनमः । विक्र कि विक्र होता है। इस्ति विक्र होता श्रीगणेशायनमः । विक्र कि विक्र होता है।

### अथ पीतोपनिषदारम्भः

3ॐ अथारिमोचिनीम्पीताम्प्रणमामि यां ब्रह्मपत्नीं ब्रह्माणीम्पीताम्भा-स्वत्तनुमिवाराध्यमानोनिपतित तिरः यद्द्वेष्टि कुलं पुरुषं परितापयित सनंक्ष्यमानोनिपतित।

यः पीतामनुस्मरित स सर्वज्ञतामेति अथह मणिबन्धे पुरुषचतुष्टय ज्ञानवर्तिनीं शरणमहम्प्रपद्ये।।

यत्रितान्तमाविष्करोति विद्धिषः सेयम्पीतावयवैः पूज्या यो यं कालात्मकोबोधः संसारमनुमर्दयित शत्रुः स लुप्यते यिच्चन्तनीया तिच्चन्तयामि तिच्चन्तयामि तद्भावयामि तारं मायां तदनु बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलयेति पदं तारं मायां विह्ववल्लभान्तज्जपत्ररीन्त्रोच्चाटयित प्रोत्सादयित इत्थं वेदेष्चागमेषु प्रसिद्धमूर्ति बगलां श्रद्धामि यः श्रावयित सूनृतया गिरा तद्द्वेष्ट्रउच्चाटनयैव कल्पेरन्।।

एषा तामसी शक्तिस्तामसीशक्तिः राजसी शक्तिः राजसीशक्तिरित्याह भगवान्कालाग्निरुद्रः॥

इति पीतोपनिषद्।।

# श्रीबगलामुखी-कल्पविधानम्

A PERIOD GRAPHITE THE

### किन्न भन्न विज्ञा। श्रीगणेशाय नमः।।

मूलविद्यया त्रिराचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा प्रयोगमुच्चार्य आदावन्ते शुद्धशक्तिमालामन्त्रम् अष्टोत्तरशतं जपेत्, अथ दिग्बन्धनं कुर्यात्।

| 30  | Ť  | ह्यीं | श्रीं | श्यामा मां पूर्वतः पातु। |
|-----|----|-------|-------|--------------------------|
| 350 | ऐं | ह्यीं | श्रीं | आग्नेय्यां पातु तारिणी।। |
| 350 | ऐं | ह्यीं | श्रीं | महाविद्या दक्षिणे तु।    |
| 35  | ऐं | ह्यें | श्रीं | नैर्ऋत्यां षोडशी तथा।।   |
| 30  | ऐं | ह्रीं | श्रीं | भुवनेशी पश्चिमायाम्।     |
| 30  | ऐं | ह्यां | श्रीं | वायव्यां बगलामुखी।।      |
| 30  | ऐं | ह्रीं | श्रीं | उत्तरे छिन्नमस्ता च।     |
| 30  | ý  | ह्रीं | श्रीं | धूमावती तथेशान्याम्।।    |
| 30  | ऐं | ह्रीं | श्रीं | कमला पातु ऊर्ध्वं तु।    |
| 30  | ऐं | ह्रीं | श्रीं | अन्तरिक्षं सर्वदेवताः।।  |
| 30  | ý  | ह्रीं | श्रीं | अधस्तात् चैव मातङ्गी।    |
| 30  | Ť  | ह्रीं | श्रीं | सर्वदिग् बगलामुखी।।      |

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ब्रह्मास्त्रसिद्धप्रयोगस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, हं बीजम्, ईं शक्तिः, लं कीलकं, मम सर्वार्थसाधनसिध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ॐ भगवते नारदाय ऋषये नमः शिरित। ॐ हां हीं हूं है हीं हः श्यामादेव्यै नमः ललाटे। ॐ हां हीं हूं है हीं हः तारादेव्यै नमः कर्णयोः। ॐ हां हीं हूं हैं हीं हः महाविद्यायै नमः भ्रुवोर्मध्ये।

ॐ हां हीं हूं है हीं हः षोडशीदेवी नमः नेत्रयोः। ॐ हां हीं हूं है हीं हः अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ हां हीं हूं है हीं हः श्रीबगलामुखीदेव्ये नमः हदये। ॐ हां हीं हूं है हीं हः बगला भुवनेश्वरीभ्यां नमः नासिकयोः। 🕉 ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हीं हः छिन्नमस्तादेव्यै नमः नाभौ। ॐ ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हों हः धूमावतीदेवी नमः कटयाम्। ॐ ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हों हः कमलादेवी नमः गुह्ये। ॐ ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हों हु: श्रीमातङ्गीदेव्ये नमः पादयोः। 🕉 ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हीं हः ह्वीं बीजाय नमः नाभौ। 🕉 ऐं हीं श्रीं हां हीं हूं है हीं हः ह्वीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। मम सर्वार्थसाधने बगलादेव्यै जपे विनियोगः। करन्यासः।

ॐ ह्लां बगलामुखी अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्रं बगलामुखी मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रै बगलामुखी अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौ बगलामुखी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हः बगलामुखी करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः करन्यासवत् हृदयादिन्यासः करणीय:। - LIGHTE - DE GOTTOWIS

्राशिष्ट्रायम् । ध्यानम् सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं। हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।। हस्तैर्मुद्ररपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः। व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।।

# किल्ला कार्य के अथ यन्त्रोन्हारः

त्रिकोणं चैव षट्कोणं वसुपत्रं ततः परम्। पुनश्च वसुपत्रं च वर्तुलं च प्रकल्पयेत्।। षोडशारं ततः पश्चात् चतुरस्रं विधीयते। वर्तुलं चतुरस्रं च मध्ये मायां समालिखेत्।।

मित्राप्रकृति अनि इति यन्त्रोद्धारः। विकास विकास

यन्त्रोद्धारम् आवाहनादिप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं पञ्चोपचारै: कुर्यात्।

# मोर्किक क्षेत्र के कि जिल्ला के कि कि के कि कि

आदौ त्रिकोणदेवताः पूजयेत् 🕉 ऐं हीं श्रीं क्रोधिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं स्तिभिन्ये स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं चामरधारिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

# पुनिस्त्रकोणे – वाहरू आहार वाहरू

ॐ ऐं हीं श्रीं ओड्यानपीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं जालन्धरपीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं कामगिरिपीठाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं अनन्तनाथाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं श्रीकण्ठनाथाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं दत्तात्रेयनाथाय खाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

# अथ षट्कोणे -

🕉 ऐं हीं श्रीं सुभगायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भगसर्पिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भगवाहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भगमालिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भगशुद्धायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं भगपत्न्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

# अथ वसुपत्रे — हर्ष कार्य हर्णा मार्थिक विकास विकास

ॐ ऐं हीं श्रीं ब्राह्मयै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं माहेश्वर्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं कौमार्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं वैष्णव्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं वाराह्मै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं चन्द्राण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं चामुण्डायैं स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं चामुण्डायैं स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

## अथ द्वितीय वसुपत्रे -

ॐ ऐं हीं श्रीं जयाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं विजयाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं अजिताय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं अपराजिताय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं जृम्भिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं स्तम्भिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं मोहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

### अथ पत्राग्रे-

ॐ ऐं हीं श्रीं असिताङ्गभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं रुरुभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं चण्डभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं क्रोधभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं उन्मत्तभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं कपालिभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भीषणभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं संहारभैरवाय स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

# षोडशदले - वान्यां प्रधान कार्य स्वास्त्रहरू । स्वास्त्रह

ॐ ऐं हीं श्रीं बगलामुख्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं स्तम्भिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं जृम्भिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं मोहिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं चञ्चलायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं अचलायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं वश्यायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं कालिकायै खाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं कल्मषायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं धार्त्र्ये स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं कल्पान्तायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं आकर्षिण्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं शाकिन्यै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं अष्टगन्धायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। 🕉 ऐं हीं श्रीं भोगेच्छायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि। ॐ ऐं हीं श्रीं भाविकायै स्वाहा पूजयामि नमः तर्पयामि।

### । इति यन्त्रपूजा।

ॐ ऐं हीं श्रीं ह्वीं बगलामुखि सर्वदृष्टानां वश्यं कुरु कुरु क्लीं क्लों हीं हुं फट् स्वाहा। ॐ हां बगलामुखि श्रीबगलामुखि दुष्टान् भिन्धि, भिन्धि, छिन्धि, छिन्धि, परमन्त्रान् निवारय निवारय, वीरचक्रं छेदय छेदय, बृहस्पतिमुखं स्तम्भय स्तम्भय, ॐ हीं अरिष्ट्रस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा। अथ स्तोत्रम् पठेत् — विकास आहर्षशास्त्र विकास कार्य

# ब्रह्मास्त्रां प्रवक्ष्यामि बगलां नारदसेविताम्। विवान्धर्वयक्षादिसेवितपादपङ्कजाम् ।।

त्रैलोक्यस्तम्भिनी विद्या सर्वशत्रुवशङ्करी आकर्षणकरी उच्चाटनकरी विद्वेषणकरी जारणकरी मारणकरी जृम्भणकरी स्तम्भनकरी ब्रह्मास्त्रेण सर्ववश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

🕉 ह्रां द्राविणि द्राविणि भ्रामिणि भ्रामिणि एहि एहि सर्वभूतान् उच्चाटय उच्चाट्य सर्वदुष्टान् निवारय निवारय भूतप्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी: छिन्धि छिन्धि, खड्गेन भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण संमारय संमारय, दुष्टान् भक्षय भक्षय, ससैन्यं भूपतिं कीलय कीलय मुखस्तम्भनं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

आत्म-रक्षा ब्रह्म-रक्षा विष्णु-रक्षा रुद्र-रक्षा इन्द्र-रक्षा अग्नि-रक्षा यम-रक्षा नैऋत-रक्षा वरुण-रक्षा वायु-रक्षा कुबेर-रक्षा ईशान-रक्षा सर्व-रक्षा भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-रक्षा अग्निवैताल-रक्षा गण-गन्धर्व-रक्षा, तस्मात् सर्वरक्षां कुरु कुरु, व्याघ्र-गज-सिंह रक्षा रणतस्कर-रक्षा, तस्मात् सर्वं बन्धयामि ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

3% हीं भो बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय हीं ॐ स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्रीं बगलामुखी एहि एहि पूर्विदशायां बन्धय बन्धय इन्द्रस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय इन्द्रशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्री वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्रां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्रीं पीताम्बरे एहि एहि अग्निदिशायां बन्धय बन्धय अग्निमुखं स्तम्भय स्तम्भय अग्निशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं अग्निस्तम्भं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्रीं महिषमर्दिनि एहि एहि दक्षिणदिशायां बन्धय बन्धय यमस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय यमशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं हज्जृम्भणं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

35 ऐं हीं श्रीं चण्डिक एहि एहि नैऋत्यदिशायां बन्धय बन्धय, नैऋत्यमुखं स्तम्भय स्तम्भय नैऋत्यशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्हीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्हां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्रीं करालनयने एहि एहि पश्चिमदिशायां बन्धय बन्धय वरुणमुखं स्तम्भय स्तम्भय वरुणशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्रीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्रां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ऐं हीं श्रीं कालिके एहि एहि वायव्यादिशायां बन्धय बन्धय वायुमुखं स्तम्भय स्तम्भय वायुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मर्थय मर्दय मर्दय ॐ ह्वीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्वां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्री महात्रिपुरसुन्दिर एहि एहि उत्तरिदशायां बन्धय बन्धय कुबेरमुखं स्तम्भय स्तम्भय कुबेरशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यम् कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

3ँ ऐं ऐं महाभैरवि एहि एहि ईशानदिशायां बन्धय बन्धय

ईशानमुखं स्तम्भय स्तम्भय ईशानशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय अॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं गाङ्गेश्वरि एहि एहि ऊर्ध्विदशायां बन्धय बन्धय ब्रह्माणं चतुर्मुखं स्तम्भयं स्तम्भय ब्रह्मशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्रीं वश्यम् कुरु कुरु ॐ ह्रां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं लिलतादेवि एहि एहि अन्तरिक्षिदिशायां बन्धय बन्धय विष्णुमुखं स्तम्भय स्तम्भय विष्णुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं चक्रधारिणि एहि एहि अधोदिशायां बन्धय बन्धय वासुिकमुखं स्तम्भय स्तम्भय वासुिकशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां वगलामुिख हुं फट् स्वाहा।

दुष्टमन्त्रं दुष्टयन्त्रं दुष्ट पुरुषम् बन्धयामि शिखां बन्ध ललाटं बन्ध भुवौ बन्ध नेत्रे बन्ध कणौं बन्ध नासौ बन्ध ओष्ठौ बन्ध अधरौ बन्ध जिह्नां बन्ध रसनां बन्ध बुद्धि बन्ध कण्ठं बन्ध हृदयं बन्ध कुक्षिं बन्ध हस्तौ बन्ध नाभिं बन्ध लिङ्ग बन्ध गृह्यं बन्ध ऊरू बन्ध जानू बन्ध जङ्घे बन्ध गुल्फौ बन्ध पादौ बन्ध स्वर्ग-मृत्यु-पातालं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि इन्द्राय सुराधिपतये ऐरावत-वाहनाय श्वेतवर्णाय वज्रहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् निरासय निरासय विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा। ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि अग्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय रक्तवर्णीय शक्तिहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विष्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि यमाय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वरुणाय जलाधिपतये मकर वाहनाय श्वेतवर्णाय पाशहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वायव्याय मृगवाहनाय धूम्रवर्णाय ध्वजाहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ईशानाय भूताधिपतये वृषभवाहनाय कर्पूरवर्णीय त्रिशूलहस्ताय सपिरवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ब्रह्मणे ऊर्ध्वदिग्लोकपालाधिपतये हंसवाहनाय श्वेतवर्णाय कमण्डलुहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा। ॐ ऐ ऐ ॐ ह्लीं बगलामुखि वैष्णवीसहिताय नागाधिपतये गरुड़वाहनाय श्यामवर्णाय चक्रहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्ली अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु करु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

🦟 🕉 नमो भगवति पुण्यपवित्रे स्वाहा । 💮 🕬 📆 🔻

ॐ ह्लीं बगलामुखि नित्यम् एहि एहि रविमण्डलमध्याद् अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु करु। ॐ ऐं परमेश्वरीम् आवाहयामि नम:। मम सान्निध्यं कुरु करु। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं हीं श्रीं ह्नां ह्नां हूं हैं ह्नौं ह्नः बगले चतुर्भुजे मुद्ररशरसंयुक्ते दक्षिणे जिह्वावन्नसंयुक्ते वामे श्रीमहाविद्ये पीतवस्त्रे पञ्चमहाप्रेताधिरूढे सिद्धविद्याधरवन्दिते ब्रह्मविष्णुरुद्रपूजिते आनन्दस्वरूपे विश्वसृष्टिस्वरूपे महाभैरवरूपधारिण स्वर्गमृत्युपातालस्तिम्भिनि वाममार्गाश्रिते श्रीबगले-ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपनिर्मिते षोडशकलापरिपूरिते दानवरूपसहस्रादित्यशोभिते त्रिवणें एहि एहि मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय शत्रुमुखं स्तम्भय स्तम्भय अन्यभूतिपशाचान् खादय खादय अरिसैन्यं विदारय विदारय परिवद्यां परचक्रं छेदय छेदय वीरचक्रं धनुषा संभारय संभारय त्रिशूलेन छिन्धि छिन्धि पाशेन बन्धय बन्धय भूपति वश्यं कुरु कुरु संमोह्य संमोह्य विना जाप्येन सिद्धय सिद्धय विना मन्त्रेण सिद्धि कुरु कुरु सकलदुष्टान् घातय घातय मम त्रैलोक्यं वश्यं कुरु कुरु सकलकुलराक्षसान् दह दह पच पच मथ मथ हन हन मर्दय मर्दय मारय मारय भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष विस्फोटकादीन् नाशय नाशय ॐ हीं विषमज्वरं नाशय नाशय विषं निर्विषं कुरु कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ क्लीं क्लीं ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्नां कीलय कीलय बुद्धि विनाशय विनाशय क्लीं क्लीं ह्रीं स्वाहा। ॐ बगलामुखि स्वाहा। ॐ पीताम्बरे स्वाहा। ॐ त्रिपुरभैरिव स्वाहा। ॐ विजयाये स्वाहा। ॐ जयाये स्वाहा। ॐ शारदाये स्वाहा। ॐ सुरेश्वर्ये स्वाहा। ॐ क्र्राण्ये स्वाहा। ॐ विन्ध्यवासिन्ये स्वाहा। ॐ त्रिपुरसुन्दर्ये स्वाहा। ॐ दुर्गायें स्वाहा। ॐ भवान्ये स्वाहा। ॐ भवनेश्वर्ये स्वाहा। ॐ महामायाये स्वाहा। ॐ कमललोचनाये स्वाहा। ॐ ताराये स्वाहा। ॐ योगिन्ये स्वाहा। ॐ कौमार्ये स्वाहा। ॐ शिवाये स्वाहा ॐ इन्द्राण्ये स्वाहा। ॐ हीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्हीं शिवतत्वव्यापिनि बगलामुखि स्वाहा। ॐ ह्हीं मायातत्वव्यापिनि बगलामुखि हृदयाय स्वाहा। ॐ ह्हीं विद्यातत्वव्यापिनि बगलामुखि शिरसे स्वाहा। ॐ ह्हीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लां ह्लीं हूं हैं ह्लीं ह्लः शिरो रक्षतु बगलामुखि रक्ष रक्ष स्वाहा। 🕉 ह्नां ह्नीं हूं हैं ह्नौं ह्नः भालं रक्षतु पीताम्बरे रक्ष रक्ष स्वाहा। HEEL YES A ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रीं ह्रः नेत्रे रक्षतु नका होका रहत महाभैरवि रक्ष रक्ष स्वाहा। हैं ह्रों ह्रः कर्णों रक्षतु विजये रक्ष रक्ष स्वाहा। ह्नः नासौ रक्षतु ह्रौं ॐ ह्रां हीं जये रक्ष रक्ष स्वाहा। ह्रौं ह्नः वदनं रक्षतु शारदे रक्ष रक्ष खाहा। हैं ह्रौं ह्रः कण्ठं रुद्राणि रक्ष रक्ष खाहा। ॐ ह्वां ह्वीं हूं हैं ह्वौं ह्वः स्कन्धौ रक्षतु विन्ध्यवासिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्रः बाहू रक्षतु त्रिपुरसुन्दरि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्वां ह्वीं हूं हैं ह्वौं ह्वः करौ रक्षतु हुर्गे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं हूं हैं ह्लीं हुः हदयं रक्षतु भवानि रक्ष रक्ष स्वाहा। ह्नां ह्नीं ह्नं हैं ह्नीं ह्नः उदरं रक्षतु भुवनेश्वरि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लं हैं ह्लीं ह्लः नाभिं रक्षतु महामाये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं हूं हैं ह्लीं ह्लः किंट रक्षतु कमललोचने रक्ष रक्ष स्वाहा। हैं ह्रौं ह्नः उदरं रक्षतु ह् तारे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्नां ह्नीं हूं हैं हों हः सर्वाङ्गं रक्षतु महातारे रक्ष रक्ष स्वाहा। हैं ह्रौं ह्नः अग्रे रक्षतु ज्ञ. ह्रीं योगिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। हूं हैं ही हू: १० कौमारि रक्ष रक्ष स्वाहा। हैं ह्रौं ह्रः पृष्ठे रक्षतु हैं ह्रौं ह्नः दक्षिणपार्श्वे रक्षतु भूजा. शिवे रक्ष रक्ष स्वाहा। हैं ह्रौं ह्नः वामपार्श्वे रक्षतु ॐ ह्नां इन्द्राणि रक्ष रक्ष स्वाहा।

THE PHENT

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये सर्वजनमुखस्तम्भनाय आगच्छ आगच्छ मम विघ्नान् नाशय नाशय दुष्टं खादय खादय दुष्टस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय अकालमृत्युं हन हन भो गणाधिपते ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

अष्टी ब्राह्मणान् ग्राहियत्वा सिद्धिर्भवित नान्यथा।
भूयुग्मं तु पठेत् नात्र कार्यं संख्याविचारणम्।।
यन्त्रिणां बगला राज्ञी सुराणां बगलामुखी।
शूराणां बगलेश्वरी ज्ञानिनां मोक्षदायिनी।।
एतत् स्तोत्रं पठेन् नित्यं त्रिसन्ध्यं बगलामुखी।
विना जाप्येन सिध्येत् साधकस्य न संशयः।।
निशायां पायसितलाज्यहोमं नित्यं तु कारयेत्।
सिध्यान्ति सर्वकार्याणि देवी तुष्ट सदा भवेत्।।
मासमेकं पठेत् नित्यं त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति, देव्या लोकं स गच्छित।।

इति श्रीबगलामुखीकल्पे वीरतन्त्रे बगलासिद्धिप्रयोगः सम्पूर्णः

# श्रीबगला- रहस्यम्

।।श्रीबगलायै नमः।।

## अथ वेदोक्तं बगला-रहस्यम्

अस्य श्रीबगलामुखीशत्रुनिवारिणीस्तोत्रमन्त्रस्य आदिसृष्टिकर्ता दारुण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पीताम्बरा देवता, ह्वीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम शत्रुविध्वंसनार्थे जपे विनियोगः। ॐ ह्वीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्वीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्वीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्वीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्वीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्वीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादिन्यासान् विधाय, आदिसृष्टिकर्त्रे दारुणऋषये नमः पादयोः, अनुष्टुपछन्दसे नमो नाभौ, पीताम्बरादेवतायै नमो मुखे, ह्वीं शक्तये नमः शिरसि, श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। कि हिन् हिन् कि हिन् ध्यानम् व व कामकाम् वि ६६

ध्यायेत् प्रेतासनां देवीं द्विभुजां च चतुर्भुजाम्। मणिग्रीवां सहस्रार्कसमद्युतिम्। पीतवासां ॐ ह्लीं हंकारिणी प्रोक्ता श्रीं श्रीं त्र्यम्बकतोषिणी। बिम्बारकरालवदना ह्यस्मद्वैरिनिवारिणी। स्नं स्नं दुकूललम्बोष्ठी फं फं स्वराग्रनासिका।
खं खं खड्गप्रहारेण दुष्टवाणनिकृन्तिनी।
ठं ठं विध्वंसिनी देवी बं बं बुद्धिस्तम्भनमुत्तमा।
रं रं राज्यादिकं देवी बुद्धिव्यतिक्रमी। लं लं लम्बोदरीध्यानात् सं सं सिद्धिप्रदा सदा। ह्रीं ह्रीं जय शत्रुलक्ष्मीं हं हं रुद्धयते सदा।

🕉 ह्रीं ह्रीं पीताम्बरे अस्मत्शत्रूणां जिह्नां कीलय कीलय वाणीं स्तम्भय स्तम्भय मर्दय मर्दय ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा।

संग्रामे विद्यावादविवादयोः। राजद्वारे च ब्रह्मास्त्रमन्त्रस्मरणात् सर्वदा विजयी भवेत्। अथ वेदोक्तं अगला-रहस्यम् लिल

#### विधानं यथा

अश्वचर्मासनं कृत्वा वीरासनमुपस्थितः। दक्षिणाभिमुखो भूत्वा घोरकर्म समारभेत्। हरिद्रामालया घृत्वा ह्यथवा वज्रमालया। अष्टद्रव्याष्ट्रगन्धेन हरितालं च पेषयेत्। तण्डुलचूर्णमादाय विदध्यात् हार्धरात्रके।

यन्त्रं सम्पूज्य प्रथमं तत तत् कर्म समाचरेत्। मारणं प्रथमं कर्म द्वितीयं स्तम्भनं भवेत्। गुरुभक्ताय दातव्यं, न दातव्यं कदाचन। गोप्यं गोप्यं पुनर्गोप्यं गोप्यं गोप्यं पुनः पुनः।

#### मारणप्रयोगे यथा

श्मशानमृत्तिकामादाय तदुपरि कुशासने स्थित्वा मन्त्रं जपेत्। एकविंशतिदिनेन षष्टिदिनेन वा लक्षमेकं जपेत्। प्रतिमाग्रे वा, श्मशाने वा, नदीतटे वा, एकान्ते वा, स्वगृहे वा दृढ़चित्तो भिक्तसिहतो निर्भयं जपेत्। यथा –

the its there depends, see that the

ॐ नमो भगवित भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे ऊर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्रि मानुषाणां वसारुधिरभोजने अमुकस्य मृत्युपदे लं फट् हन हन दह दह मांसं रुधिरं पिव पिव पच पच हुं फट् स्वाहा।

अमुं मन्त्रं जपेद् रात्रौ रोषचित्तो रिपुं स्मरन्।
अर्धरात्रौ तु हस्ताभ्यां मार्जयेत् लिङ्गमस्तके।।
भ्रष्टः स कथयेन् मन्त्रं तत्क्षणान् म्रियते रिपुः।
दृष्टप्रत्यय एवायं सिद्धियोग उदाहृतः।।
रात्रौ कृष्णचतुर्दश्याममुं प्रयोगं कुर्यात्॥

#### अथ बलिदानम्

ॐ नमो हीं अष्टभैरवाधिपतये सर्वकार्यप्रवृत्यर्थं सर्वशत्रुनिवृत्यर्थं विलं गृहाण गृहाण दीपं गृहाण गृहाण मे कार्यं कुरु कुरु बटुकाय हीं फट् स्वाहा। सप्तवारं जपेत्।

इति श्री अथर्ववेदोक्तबगलारहस्ये सावरतन्त्रे पीताम्बराविधानं सम्पूर्णम्।

#### श्री पीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रः

#### ।। श्रीगणेशाय नमः।।

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा-बगलामुखी-खड्गमालामन्त्रस्य नारायण ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्वीं बीजं, स्वाहा, शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः। नारायणऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः हृदये, ह्वीं बीजाय नमो गुह्ये; स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ ह्वीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय किनिष्ठकाभ्यां नमः, बुद्धि विनाशय ह्वीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि।

#### ध्यानम्

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डिरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवस्त्राम्। भ्राम्यद्गदां करनिपीडितवैरिजिह्नां पीताम्बरां कनकमाल्यवतीं नमामि।

मानसोपचारै: सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

ॐ ह्लीं सर्विनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपरबुद्धिं कुरु कुरु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो-ललाट-मुख-नेत्र-कर्ण-नासिका-दन्तोष्ठजिह्वा-तालुकण्ठ-बाहूदर-कुक्षि-नाभि-पार्श्वद्वय-गुद्ध-गुदाण्ड-त्रिकजानुपादसर्वाङ्गेषु पादादिकेश-पर्यन्तं कशादिपादपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्राणि छेदय छेदय आत्ममन्त्र-यन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष सर्वग्रहान् निवारय निवारय सर्वम् अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हन हन दारिद्रयं निवारय

निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोगस्वरूपिणि दुष्टग्रहचण्डग्रह-भूतग्रहा-ऽऽकाशग्रह-चौरग्रह-पाषाणग्रह-चाण्डालग्रह-यक्षगन्धर्वकिन्नरग्रह -ब्रह्मराक्षसग्रह-भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी-ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय वाराहि बगलामुखि मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय स्वप्नवाराहि मां रक्ष रक्ष उत्तरदिशं बन्धय बन्धय धूम्रवाराहि मां रक्ष रक्ष सर्वदिशो बन्धय बन्धय कुक्कुटवाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरु करु ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाक्प्रदानाय क्लीं जगत्त्रयवशीकरणाय सौ: सर्वमन: क्षोभणाय श्रीं महासम्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्यप्रदानाय दां चिरंजीवने। हां हीं हूं क्लां क्लीं क्लूं सौ: ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजनसंमोहिनि सभास्तम्भिनि स्रां स्रीं सर्वमुखरिञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि। जिह्नां बन्धयामि सकलजनसर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व-मृग-सर्प-विहङ्गमवृश्चिकादि-महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरु कुरु ॐ ह्रीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

> मूलमन्त्रवता कुर्याद् विद्यां न दर्शयेत् क्वचित्। विपत्तौ स्वप्नकाले च विद्यां स्तम्भिनीं दर्शयेत्। गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः। प्रकाशनात् सिद्धिहानिः स्याद् वश्यं मरणं भवेत्।

दद्यात् शान्ताय शान्ताय कौलाचारपरायणः।
दुर्गाभक्ताय शैवाय मृत्युअयरताय च।
तस्मै दद्याद् इमं खड्गम् स शिवो नात्र संशयः।
अशाक्ताय च नो दद्याद् दीक्षाहीनाय वै तथा।
न दर्शयेद् इमं खड्गम् इत्याज्ञा शङ्करस्य च।

इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः।

इति श्रीबगलारहस्ये पञ्चाङ्गप्रकरणाद्यात्मकः हितीयो भागः समाप्तः।

द्विसहस्रमिते वर्षे वैक्रमे सिंहगे रवौ। शुक्लपक्षे दिने चन्द्रे भाद्रे शिवतिथौ तथा।।१।। रहस्यं बगलामुख्याः कृत्वा तस्यै समर्पितम्। तुष्यतां परया प्रीत्या तेनाम्बा बगलामुखी।

इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः निगमागमतन्त्रपारीणैः परमहंसपरिव्राजकाचार्यैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरैः

श्री अनन्त श्री स्वामिभिः विरचितम् श्रीबगलामुखी रहस्यम् समाप्तम्।

्राह्मीहरू ह्याहरू है अवस्थि होस्सू तहरू <del>मानुस्</del>

The state of the s

THE THE PART OF THE PART OF THE PARTY OF THE

# निग्रह-दारुण-सप्तकम्

मध्यमानम् । व्यक्तिका अवसी अवस्था अन्तरस्य व्यक्तिकार्थी

कार्यक्षिणावस्थात्रकी सम्बद्धान्त्रम् । तत्त्वात्रात्रम् । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः । वर्षाः

a tribulation of stimuling another acknowledge of

मार्क काल अपनामानको प्राप्तकानाम अस्तिकारिक

THE PERSON OF TH

विकार काम मायस कुल माणहापका निकार किला काम क

का अपने तेवां निवते, अवस्थात्वात् के प्राप्त । अनः सुराविधातः हार्यने ।

्रांच्याच्या निवास्त्रकारमा अनुनिवस्ताः नामभू

मधीतान में दिर्गहर्म अर्थनामार्थ विकास क

वार्य स्थान का वार्य के विकास के वित्र के विकास के विकास

वाजिकेत्विभाषाकावीचा विनिश्तसम् अर्द

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः निगमागमतन्त्रपारीणैः परमहंसपरिव्राजकाचार्यैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरैः श्री अनंत श्रीस्वामिभिः विरचितेन भाष्येण समलङ्कृतम्

करते तमी व देना है एस्टार्ग केली पालपाना

# अवस्था मुक्ति । श्रीः। ए नहिं वस्य

तान्त्रिकैर्दारुणमारणकर्मणि विनियुक्तम् इदं निग्रहदारुणसप्तकं नाम दिव्यं स्तोत्रं दिव्याचारपरत्वेन व्याख्याय श्रीमद्भिःतन्त्रागमरहस्यविज्ञैः पदवाक्य-प्रमाणपारीणैः परमहंसपरिव्राजकाचार्यैः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरैः श्री अनंत श्रीस्वामिभिः साधकवर्गस्य क्रियानुपकारः कृतः इति वक्तुमसमर्थेयं मे भारती। अत्र हि शत्रुपदेन कामक्रोधादीनां वास्तविकशत्रूणाम् एव ग्रहणम्, यतः सित तेषां निग्रहे, अजातशत्रुत्वं जायते। अतः सुगमिममं सभाष्यं निग्रहदारुणसप्तकम् अनुतिष्ठन्तः साधकाः समृद्धिमहतीं सिद्धिम्, अर्थगाम्भीर्यं विवेचयन्तो विद्वांसः सहदयाश्य ब्रह्मानन्दसहोदरां मधुमतीं भूमिकां च अधिगमिष्यन्तीति मे दृढो विश्वासः।

भी मेहारियां में स्थाप के जीन और मोनाप हिस्सितेन पालेण अमलहरूतम्

— आचार्य सदाशिव दीक्षित

# TERMS PER NAS BIER & PERSON

#### निग्रह-दारुण-सप्तकम्

जिल्लाम किन्द्रकार जिल्ला श्री गणेशाय नमः हेरी जिल्लामा प्राचीत जिल्लामा जिल्लामा जिल्लामा अधिकार कार्यामा

#### भाष्यम्

'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते इत्यादि श्रृत्या उत्पत्तिस्थितिसंहारा ब्रह्मण एव धर्माः श्रूयन्ते। उत्पत्तिम् आश्रित्य कर्मकाण्डप्रवृत्तिः, स्थितिम् आश्रित्य उपासनामागों भिक्तमागों वा, संहारम् आश्रित्य ज्ञानकाण्ड इति च त्रिदेवनिर्णये व्याख्यातम्। इदम् एवं आश्रित्य तस्य च ब्रह्म - विष्णुरुद्रादिसंज्ञा च क्रमेण भवति। अत्र च दारुणसप्तकनामानि- निग्रहदारुणसप्तकम् इति च पूर्णनाम्नि स्तोत्रे संहारर्थकं भगविच्छवपरं तत्त्वं निर्णीतम्, तच्च ज्ञानमार्गप्रधानं योगसाधनकम्, ज्ञानम् अग्नित्वेन च स्वीकृतं, गीतायां यथा— 'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जन।' अविद्यारूपध्वान्तावस्थायां कामक्रोधलोभात्मकान्येव 'सर्वकर्माणि' कार्यकारणभावमाश्रित्योक्तानि। प्रतिकूलकारित्वेन च यथा इम एव शत्रुपदवाच्या उच्यन्ते, तथाऽन्तिमे पद्ये दर्शियष्याम। एतेषामेव मारणार्थं पलायनार्थं वा स्तोत्रविनियोगः। नच शत्रुपदेनाऽत्र लौकिकशत्रूणां ग्रहणमिति वाच्य चतुर्थश्लोकविपरीतत्वात्। 'नमस्ते रुद्र मन्यवे' इति भाष्ये अग्निरूपेण रुद्रः स्तुतः। ऋग्वेदे अग्ने रुद्धत्वमतिवशदम्। अत एव संहारभावसिद्धः। मन्योराग्नेयभावस्य प्रसिद्धत्वम्।

मूलम् अवस्त असेना अस्त वर्षे

ध्यानम् — वर्षः वर्षान्यति । कार्याः वर्षाः वर्षाः

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चश्चलोऽत्युग्रजिहः, काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवी वाडवाग्नि। ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवातातिवेगः, संहर्ता सर्वशत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।।

## भाष्यम्

चन्द्रार्काग्निः त्रिदृष्टिः विधुसूर्याग्निनेत्रवान् विराट्रूपी भगवान्। कुलिशवरनखः वज्रसदृशनखः इत्यनेन भोगसम्पादने क्षमत्वं सूचितम्। चञ्चलः प्रतिक्षणं क्रियाशीलः अत्युग्रजिहः अत्युगाः प्रचण्डाः सप्त जिह्ना यस्याऽसौ कर्मिणां फलप्रदानसाधनत्वेन मुण्डके प्रसिद्धाः काली दुर्गा च पक्षौ। काली कालस्य सर्ववस्तुनियामिका शक्तिः। दुर्गा दुःखेन गन्तुं योग्या सर्वदेवमयी परा शक्ति:। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च' 'अहोरात्रे पार्श्वे' इतिवत् पक्षौ। इमे द्वे शक्ती भगवतः पक्षस्थानीये जगद्रूपकार्यकरणे आश्रयभूते। हृदयजठरगः हृदयगतं जठरं वैश्वानरं गच्छतीति हृदयस्थानीयो वैश्वानररूपः वाडवाग्निः, जलेऽपि तस्य ज्वलनस्वभावः सर्वदा विद्यमानत्वात्। भैरवो नित्योद्यमशील:। 'उद्यमो भैरव' इत्युक्तत्वात् शैवसूत्रे। ऊरूस्थौ व्याधिमृत्यू व्याधिश्च मृत्युश्च तौ पापिनां कृते कामक्रोधरतानां मूढानां कृते आवश्यकत्वात्। शरभवरखगः श्रृणातीत शरभः मूलाज्ञाननिवर्तकः स चासौ वरश्च। खगः खे गच्छतीति आकाशवद् व्यापनशीलः, खं बीजं, तेन गम्यते लक्ष्यते इति वा खग:। खं बीजं भगवत: शरभस्य प्रसिद्धम्। चण्डवाताऽतिवेगः चण्डवायुरिव अतिवेगः भक्तानां रक्षणे शीघ्रगामी सर्वातिशायित्वात्। 'तदेजदिति' मन्त्रानुसारं सर्वशत्रून् कामक्रोधादीन् संहरतीति संहर्ता विनाशक:। पक्षिराज: पक्षिणां जीवानां राजा पक्षिराज: समासान्तः टच्। 'वैनतेयश्च पक्षिणाम्' इत्युक्तत्वात्। शालुवःशालते शोभते इति शालुवः। उणादित्वात्। साधुः सर्वशोभासम्पन्नः क्वचिद् दन्त्यादिः। सारं दौर्बर्ल्ये रलयोर्न भेदः' इत्यनेन निष्पत्तिः। सारयति शत्रूणां दौर्बल्यं सम्पादयतीति सालुवः। षल् गतावित्यनेन वा। चण्डवातातिवेग इत्यनेन गतिशीलत्वस्य प्रतिपादनाच्च। क्वचित् साल्व इत्यपि पाठो दृश्यते। शरभः जयित सर्वीत्कर्षेण वर्ततेतराम् इत्यर्थः।

आध्यात्मतत्त्वसाक्षात्कारलब्धये कामस्य प्रधानं शत्रुत्विम्भिलक्ष्य स्तोतुमुपक्रमन्नाह कोपोद्रेकेति। यतः रुद्ररूपिणः शिवस्यैव कामदाहे प्रसिद्धः। समाधिविघ्नविधायिनं काममेवाह हन्तुं भगवान् श्रीकृष्ण।

'जिह शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्' इति।

#### मूलम्

कोपोद्रेकातिनिर्यन्-निखलपरिचरत्-ताम्रभारप्रभूतम्, ज्वालामालाग्रदग्धरमरतनुसकलं त्वामहं शालुवेश। याचे त्वत्पादपद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः, तस्य प्राणप्रयाणं परिशव भवतः शूलिभन्नस्य तूर्णम्।।१।।

#### भाष्यम्

कोपस्य क्रोधात्मकाग्नेयरूपस्य उद्रेकः बृद्धिःतया अतिनिर्यत् निर्गच्छत्। निखलेषु कामजन्यपदार्थेषु परिचरत् परितः प्रसरणं कुर्वत्। ताप्रभारवत् प्रभूतं रक्तवर्णवद् राशिभूतम् आग्नेयस्य रक्तवर्णत्वात्। ज्वालामालाग्रदग्धम् ज्वालाया माला अग्निरूपस्य ज्ञानस्य माला अविच्छित्रप्रवाहरूपा वृत्तिर्गृह्यते। तदग्रेण प्रधानेन दग्धं भस्मीकृतं स्मरतनुसकलं कामशरीरसाकल्यं येन तं दग्धकामदेहं त्वाम, हे शालुवेश अहं याचे प्रार्थये। यथा त्वमकार्षीः तथाऽहमपि कुर्यामिति भावनया त्वत्पादपद्मप्रणिहितमनसं त्वच्चरणारिवन्दार्पितिचत्तं मां यः कामः क्रियाभिः स्वव्यापारैः द्वेष्टि अप्रीति जनयति। परिशव भवतः तव शूलिभन्नस्य शूलेन भिन्नस्य न्निवधतापद्वैधीभावमापन्नस्य तस्य कामस्य प्राणप्रयाणं विनाशं तूर्णं शीघ्रं याचे इति पूर्वेण सम्बन्धः॥१॥

सर्वाऽनर्थस्य काममूलकत्वात् तन्निवृत्तौ सामर्थ्यविशेषमाह शम्भो इति-

#### THE PARTY OF THE P

शम्भो त्यद्धस्तकुन्तक्षतिरपुहृदयात्रिः स्रवल्लोहितौघं, पीत्वा पीत्वाऽतिदीर्घा दिशि दिशि विचरास्त्यदगणाश्चण्डमुख्याः। गर्जन्तु क्षिप्रवेगा निखलजयकरा भीकराः खेललोलाः, संत्रस्ताब्रह्मदेवाः शरभ खगपते त्राहि नः शालुवेश।।२।।

#### भाष्यम्

शं कल्याणं भावयतीति शम्भुः शिवः सम्बोधने शम्भो। त्वद्हस्ते धृतः कुन्तः। कुं पृथिवीतत्त्वमुनत्तीति। उन्दी क्लेदने बाहुलकात् तः शकन्ध्वादिः। तस्मात् क्षतं विदीणं यद् रिपुहृदयं तस्मात् निःस्रवन्तं निस्सरन्तं लोहितौधं रक्तप्रवाहं षट्चक्रभेदमापाद्य रक्तवर्णममृतप्रवाहं पीत्वा पीत्वा मुहुर्मुहुः पानं विधाय अतिदीर्घा बलिष्ठाः अमृतस्य रक्तवर्णत्वात्। पादुकापञ्चके स्वीकृतमेतत्। त्वद्गणाश्चण्डमुख्याः चण्डभावप्रधाना दश प्राणाः। 'सहचरा. प्राणाः' इति भगवत्पादाचार्याः। दिशि दिशि विचराः सर्वत्र गतिमन्तः क्षिप्रवेगाः प्रसरणशीलाः प्राणिनरोधे श्रमराहित्यम् अनेन गम्यते। अत एव निखिलजयकराः निखिलेषु इन्द्रियगणेषु जयकराः विजयप्रदाः। भीकराः भियं कुर्वन्तीति कामगणानां त्रासकारिणः। खेललोलाः खेलेन लोलाः श्वासप्रश्वासिक्रयया चञ्चलाः। सन्त्रस्ताब्रह्मदेवाः सन्त्रस्ता आब्रह्मदेवाबुद्धीन्द्रयाणि यैस्ते योगिनः गर्जन्तु विजयिनो भवन्तु। प्रश्नोपनिषद्युक्तप्राणकथाऽनुसर्तव्या। हे शरभ खगपते शालुवेश नः अस्मान् त्राहि रक्षा कामस्याऽनङ्गत्वादिप अङ्गारोपवत् कथन सुलभेन बोधाय। यथा मनु :– नीरूपस्याऽपि दण्डस्य रूपम्॥२॥

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा। प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधु पश्यति।।

(अ. ७३५।२०)

# सर्वव्यापित्वगुणैः स्तुवन् स्वाभिलिषतमाह सर्वाद्यमिति। र्ग का विकास का के मूलम् विकास का कार्या के कार्या के कि

सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं, याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः। श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थितकुलिशकराघातवक्षःस्थलस्य, प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयान्तु।।३।। कर्म क्वीन्त- शास्त्रशृहस्य

### भाष्यम्

हे प्रेतेशदूत, प्रेतेशो भगवान् शिवः तस्य दूतः वार्ताहरः प्रापकः सम्बोधने रूपमिदम्। गुरुरूपेण तत्तत्तत्त्वोपदेष्टा। सर्वाद्यं सर्वप्रमुखं सर्वनिष्ठं सर्विस्मिन् नितरां तिष्ठतीति सर्वव्यापी। कलया सहितं सकलं भयकरं पापिनां त्वत्स्वरूपं कम्पनाद् इत्यधिकरणोक्तम्। महद् भयमुद्यतिमत्यादि। हिरण्यं हिरण्यवर्णं परिकरसहितं सर्वसाध्यसाधनैकनीडम् अमोघं सफलं सत्यस्वरूम्। श्रीशम्भो श्रिया सहितः शम्भुः सम्बोधने श्रीशम्भो। यः कामः क्रोधो लोभो वा क्रियाभिः स्वस्वव्यापारैः मां द्वेष्टि प्रीत्यभावमुत्पादयित। अतः अहं त्वां भवन्तं याचे प्रार्थये यत् त्वत्कराब्जस्थितेन कुलिशेन शासनात्मकदण्डभूतेन कराघातेन वक्षःस्थले हृदये यस्य तस्य प्राणाः प्रकर्षेण चेष्टन्ते इति प्राणव्यापाराः ग्रहगणपरिखा ग्रहगणेन स्वानुकूलग्रहैः रक्षिता अपि क्रोशपूर्वं प्रयान्तु दूरीभवन्तु। ते स्वव्यापारकरणे निष्फलाः सन्तु इत्यभिप्राय:॥३॥

'यो मां द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' 'शरभं ते शुगृच्छन्तु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छन्तु (य. १३) इति मन्त्राभ्यां यदुक्तं, तत् कथयित द्विष्म इति।

nersign said where Hot best best the contract द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पदकमलध्याननिर्धूतपापाः, कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहगकुलपते खेलया बद्धमूर्ते।

# तूर्णं वत्त्पादपद्मप्रधृतपरशुना तुण्डखण्डीकृताङ्गः, सद्द्धेषी यातु याम्यं पुरमतिकलुषं कालपाशाग्रबद्धः।।४।।

#### भाष्यम्

द्विष्मः अप्रीति कुर्मः संसारविषयं वैराग्यार्थम्। हे विहगकुलपते पिक्षराज, खेलया लीलया बद्धमूर्ते गृहीतिवग्रह, क्षोण्यां पृथिव्यां हि निश्चयेन तव पदकमलध्यानिर्धृतपापाः तव पदकमलध्यानेन चिन्तनेन निर्धृतपापाः सर्वदोषरिहताः शुद्धाः। 'योगिनः कर्म कुर्वन्ति— आत्मशुद्धये' इति गीता। कृत्याकृत्यैर्विमुक्ताः कृत्यायाः कृत्यानि मारणोच्चाटनादीनि कर्माणि तैर्विमुक्ता रिहताः सन्तः। एतेन मारणोच्चाटनादिषु अयं स्तवो विनियुज्यते इत्यज्ञानमूलकमेव सिध्यति तद्राहित्याविधानात् प्रमाणाभावाच्च। अथ च कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता इत्यनेन कृत्यानि विधिज्ञाप्यकर्माणि अकृत्यानि निषेधकर्माणि तैर्विमुक्ता इत्यर्थो गृह्यते चेत् तिर्हि सर्वथा कर्ममार्गप्रतिषेधेन ज्ञानमार्गस्य सिद्धिः। एवं सित मारणादिकृत्यस्य कथा दूरादेवाऽपास्ता वेदितव्या भवति। अत एव शत्रुपदेन लौकिकशत्रुग्रहणं सर्वथा विप्रतिषिद्धमेव। मारणाद्यर्थे कृती छेदने तथा कर्माद्यर्थे डुकृञ् करणे च इत्युभयेषां प्रयोगः। आंग्लमराठीकोषे कृत्यापदमेवं व्याख्यातम्—

कृत्या a female deity to whom sacrifices are offered for destruction of magical purposes.

कृत्याकृत्य right and wrong doings, proper and improper actions (Page 107)

वयं तव भक्ता विमुक्ता भवाम इति संबन्धः। आत्मशुद्धस्य मुक्तावधिकारात्। त्वत्पादपद्मप्रधृतपरशुना अज्ञानिनां कृते परशुरूपत्वात् तेषां छेदने समर्थत्वादित्यर्थः। तुण्डखण्डीकृताङ्गः तुण्डेन खण्डीकृताङ्गः। "प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानमिति" तृतीया। ध्वस्तमुखो विदग्धशाकल्यवत्। सदद्वेषी विषयादिषु प्रवृत्तत्वात् दृढाहङ्ककारत्वाच्च। अत एव अतिकलुषं मिलनं कालपाशाग्रबद्धः कालस्य यमस्य पाशः 'विततो मृत्युपाशः' इति श्रुतेः। तस्याग्रेण वद्धः सन् याम्यं पुरं यातु यातुमिच्छतीत्यर्थः। 'इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने' पा. ३।३।१६०। 'पुनः पुनर्वशमापद्यते मे' इति श्रुतेः। परमात्मज्ञानरिहतस्य संसारे पच्यमानत्वं श्रुतिप्रसिद्धमिति परमार्थः॥४॥

रागद्वेषादिकामवर्गस्य निवृत्तिमाह. भीम इति।

#### मूलम्

भीम श्रीशालुवेश प्रणतभयहर प्राणिजिद् दुर्मदानां, याचेऽहं चास्य वर्गप्रशमनिमह ते स्वच्छया बद्धमूर्ते। त्वामेवाशु त्वदङ्घ्यष्टकनखिवलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य, प्राणा यान्तु प्रयाणं प्रकटितहृदयस्यायुरल्पायतेश।।५।।

#### मिनामा इस नाइ कि उस माध्यम्

हे प्रणतभयहर शरणागतरक्षक श्रीशालुवेश, हे अल्पायतेश दीनरक्षक, दुर्मदानां राक्षसानां प्राणजिद् नाशकः अत एव भीमः। इह संसारे स्वैच्छया बद्धमूर्ते स्वेच्छया गृहीतदेह, कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तु समर्थत्वात्। अस्य रागद्वेषादिकामवर्गस्य प्रशमनम्, अस्य संसारस्य वा इदमासंनिधापित्वात् वर्गप्रशमनं निवृतिं ते तव शकाशात् अहं त्वामेवाशु शीघ्रं याचे द्विकर्मत्वात्। प्रकटितहृदयस्य सवृत्तिकस्य प्रकटितबृहिर्भावस्य त्वदङ्घ्यष्टकनखैः विदलद्ग्रीवजिह्वोदरस्य तव चरणाष्टकैः अष्टभैरवैः नष्टसामर्थ्यस्य द्वेषवर्गस्य संसारस्य आयुः जीवनकालः प्राणाः सामर्थ्य प्रयाणं यान्तु स्वरूपे विलीनतां गच्छन्तु इत्यर्थः रागद्वेषमयसंसारस्य निवृत्तौ सत्यां सम्यक् तत्त्वज्ञानं भवतीति भावः॥५॥

यज्ञरूपकेणाऽऽह श्रीशूलिमिति—

#### मुन्तकोत्तर । वार् मिन्निक मूलम् । वार्कानिक में विकास

श्रीशूलं ते कराग्रस्थितमुसलगदावृत्तवात्याभिघातात्, यातायातारियूथं त्रिदशविघटनोद्धृतरक्तच्छटार्द्रम्। सद् दृष्ट्वाऽऽयोधने ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नन्दन्तु नानाभूता वेतालपूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः।।६।।

#### भाष्यम्

हे शरभ खगपते ते तव कराग्रस्थितमुसलगदावृत्तवात्या तव कराग्रस्थित मुसलगदे सामर्थ्यविशेषे तयोर्वृत्तेन भ्रमणजातचक्राकारेण वात्या वातसमूहरूपेण अतिवेगसामर्थ्येन अभिघाताद् यातायातारियूथं चराचरारिमण्डलं त्रिदशानां देवानाम् इन्द्रियाणामित्यर्थः विघटनम् अस्वास्थ्यीकरणम्, तेन उद्धूतोद्रिक्तं रक्तच्छटार्द्रं रुधिरधारया कर्दमीभूतं रक्तान्यधातुभिः मिश्रीकरणं सद् आयोधनेज्यां युद्धरूपं यज्ञम् युद्धमायोधनं जन्यमित्यमरः। अखिलसुरगणा इन्द्रियाधिदेवा भूताश्च प्राणिनः पञ्चभूतानि च। लिङ्गव्यत्यय आर्षत्वात्। दृष्ट्वा नन्दन्तु प्रसन्ना भवन्तु उभयेषां हितत्वात् प्रीतिचत्तः प्रसन्नो वेतालपूगः प्राणविशेषसमुदायः तदिखलं पिवतु। बेतालपूगस्य आग्नेयभावविशेषत्वात् समुचितमेव युद्धक्षेत्रं यज्ञं कृत्वा निर्दिष्टवान्। अनेन आध्यात्मिक एव यज्ञोऽत्राभिप्रेतः देवासुर-भावयोर्विरुद्धत्वेन प्रतिक्षणं युद्धकारित्वेन च प्रसिद्धत्वात्। त्रिदशबिघटनमिहेन्द्रियाणां वैचित्यरूपं, मुसलगदारूपं सामर्थ्यविशेषं, वृत्तवात्येति प्राणानां वृत्याकारेण प्रवर्तनमिहेति प्राह्यम्।।६।।

साधकः साधनालब्धं सामर्थ्यमवाप्य हर्षितो गर्जितोः सन् प्राहाऽल्पमिति–

अल्पं दोर्दण्डबाहुप्रकटितविनमच्चण्डकोदण्डमुक्तै-र्वाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य। तस्य प्राणावसानं पर शरभ विभोऽहं त्वदिज्याप्रभावैः तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यान्तहेतो।।७।।

#### भाष्यम्

हे पर शरभ विभो आदिमध्यान्तहेतो उत्पत्तिस्थितिसंहारकारण त्वदिज्याप्रभावै: तव सङ्गतीकरणरूपै: प्रभावै तूर्णं शीघ्रं पश्यामि। यस्त् सदा मां परिहसति इन्द्रियगणः, त्वत्कृपया वशीभूते तस्मिन, परिहासः कीदृश इति पश्यामि इति साभिमानोक्ति:। उक्तं च तुलसीदासेन -

# 'परवस देखि हँस्यौ इन इन्द्रिन स्ववश होय न हँसैहौं।'

अल्पं निम्नं दोर्दण्डो भुजदण्डश्चासौ बाहुश्च तेन प्रकटितो विनमच्चण्डकोदण्डः प्रहरणसामर्थ्यविशेषः। 'प्रणबोधनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते', इति श्रुति:। तेन मुक्तैरनेकै: दिव्यै: साधनरूपसामर्थै: शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य प्राणावसानं सामर्थ्यसमाप्तिं पश्यामीति पूर्वेण सम्बन्ध:॥७॥

सप्तकसाधने विशेषनियमानाहेति।

इति निशि प्रयतस्तु निरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन्। प्रतिदिनं दशवार-दिनत्रयं जपति निग्रहदारुणसप्तकम्।।८।।

(३६-६/ क्रि. हणाह) कि कि कि इति पूर्वोक्तक्रमेण प्रयतः संयतः सन्। तु अवधारणे अर्थात् प्रयत एवात्र विनियुज्यते। निरासनः आस्यते अस्मित्रिति आसनं शय्या, तित्रर्गतः जितनिद्र इत्यर्थ:। यममुखः यमनियमप्रधानः यमनियमयोर्यो – गाङ्गत्वात्। यमपदेन उभयोर्ग्रहणम् प्रयत इति वचनात्। निशि रात्रौ 'या निशा सर्वभूताना' मिति गीतावचनात्। शिवभावं कल्याणभावनात्मकं परमात्मानं

शिवं शरभमनुस्मरन् मुहुर्मुहु: आवर्तयन् प्रतिदिनं प्रत्यहं दशवारं दशवृत्यात्मकं तद्युक्तं दिनानां सप्तानां त्रयम् एकविंशतिदिनपर्यन्तमित्यर्थः। निग्रहदारुणसप्तकं निग्रहकारकं दारुणसप्तकं सप्तश्लोकात्मकम्, मध्यमपदलोपित्वात्। 'मनोदुर्निग्रहं परम्'। दारुणं भीष्मं भयानकम् इन्द्रियाणां निम्रहे दारुणसप्तकम्। इन्द्रियाणां प्रमथनशीलत्वात्। 'इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः' इति प्रमाणात्। अत एव दशवारेति ग्रहणम्। ननु मनसोऽपीन्द्रियत्वात् कथं दशवारेति चेन्न मनसो निरुद्धत्वात्, इन्द्रियस्य 'इन्द्रियेभ्यः परा ह्मर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः' इति पृथङ् निर्देशात्। एकविंशतिदु:खध्वंसो मोक्ष इति न्यायविदां समय:, तस्मादेकविंशतिग्रहणम्।।८॥

## किंद्र इनिवार हिर्माति । अ मूलम् अकारकार क्यारिकार्यक्रमावि

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम्। भानुवारं समारभ्य मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः।।९।।

> इति श्रीआकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे नरसिंहकृता शरभस्तुतिः समाप्ता।

क्षाच्या भाष्यम् इति गुह्यं गुहायां भवं महाबीजं कारणं सर्वेषां स्तोत्राणां परमं श्रेष्ठं रिपुनाशनं कामक्रोधनिवारकम् 'जिह शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्', जिह शत्रुं रपमृधो नुदस्वाभयं कृणुहि विश्वतो नः।' (काण्व. सं. ७-३८) 'शत्रूणां ग्रीवाः कृन्तामि (का. सं.)॥९॥

'काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभः तस्मादेतत्रयं त्यजेत्। भानुवारं द्वादशवारं द्वादशधा विभक्तम् ज्योतिर्मयरूपेण इति हेतोद्विदशग्रहणम्। समारभ्य मङ्गलान्तं ब्रह्मप्राप्तिपर्यन्तम्। (मङ्गलं श्रेयसि श्वेत इति विश्वः। 'स्वरूपप्रान्तयोरन्तमन्तिकेऽिपप्रयुज्यते' इति शाश्वतः। 'कल्याणं मङ्गलं शिवम' – इत्यमर।) जपेत् स्मरेत्। सुधीः सुष्ठु धीर्यस्यासौ सुधीः 'सन् सुधीः कोविदो बुधः' इत्यमरः। सुधीः ब्रह्मवित् 'एतद् बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात्' इति गीता। इत्यनेन मारणादिषु एततस्तोत्रपाठकः प्रवर्तते इति कुधियां कथनं परास्तं वेदितव्यम्। प्रथमं पद्यं मनोनिग्रहात्मकम् इन्द्रियनिग्रहात्मकं च द्वितीयं ब्रह्मप्राप्तिफलप्रदर्शनार्थमिति स्तोत्र-प्रतिपाद्यक्रमःप्रदर्शित्ः श्लोकद्वयेनेति॥९॥

> इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः निगमागमतन्त्रपारीणैः परमहंसपरिव्राजकाचार्यैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरैः श्री अनन्त श्रीस्वामिभिः प्रणीतं दारुणसप्तकभाष्यम् समाप्तम्

श्रीपीताम्बरापीठ दतिया (म. प्र.)

चैत्रकृष्णाष्टम्याम् संवत् २००५

षरमहामाने वाजका वार्षः श्रीवीता बरामी अशीक्षाः श्री अनन्त श्रीस्वामितिः

155.28

# श्रीपीताम्बरार्चन-पद्धतिः

ELTONO INTERPRET IS

CHARLE HIS BESTEEN SECURITIES IN THE REST OF THE

मान श्रीत शावनन्त्रस्वत्या विव्यवस्थान स्थापम्

अभिवानवर्याठार्थाचीः साम्भमन शास्त्राभिकः

होते एका भारतस्य कार्याच्याका स्त्रीण स्त्रीय प्रकार है है है है जिस्सी

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः निगमागमतन्त्रपारीणैः परमहंसपरिब्राजकाचार्यैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरंः श्री अनन्त श्रीस्वामिभिः विरचिता

क्रमा क्रमांक राज्या विकास आसिव्यक्ति होते.

# की प्रतिम्बराहम - पद्मित कि

केल्प्स्मान केल्प्सानियों केल्प्सानियों केल्प्सानियों केल्प्सानियों केल्प्सानियों केल्प्सानियों केल्प्सानियों

भेगन साहाकेन्द्रः जादी पूर्व देखाय, प्राप्त बन्ध विद्याप, प्राप्त बन्ध विद्याप, प्राप्त विद्याप, प्राप्त विद्याप, प्राप्त विद्याप, प्राप्त विद्याप, प्राप्त विद्याप, प्राप्त विद्याप विद्याप

दृशा द्राधीयस्या दरदिलतनीलोत्पलरुचा दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामिप शिवे। अनेनाऽयं धन्यो भवति नच ते हानिरियता वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः।।१।।

होता है हो अख्यतहाब खाता, हैं हो विद्यातहाब स्वाहा । है हो जिल्लाचाय स्वाहा, हैं हो लगतस्थान स्वाहा ।

्यात्रकाति स्वति । शास्त्र व्याप्त । त्राणामानायाम् । त्यात चारत चारत व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त अवस्ति । स्वति स्वाप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त कृति व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्य

# श्री पीताम्बरार्चन-पद्धतिः

गुं गुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीपीताम्बरायै नमः।

श्रीमान् साधकेन्द्रः ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय, प्रातः कृत्यं विधाय, शौचमुखमार्जनादि कृत्वा, शुद्धे वाससी परिधाय, शुभासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य, मूलेनाचम्य, प्राणानायम्य, वामे हस्ते विभूतिं गृहीत्वा, जलेन मिश्रितां कृत्वा-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य, 'त्र्यायुषं' इति ललाटादिस्थानेषु धारयित्वा, रुद्राक्षमालां धारयेत्। आचमनं कुर्यात्।

ॐ ह्वीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ॐ ह्वीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा। ॐ ह्वीं शिवतत्त्वाय स्वाहा, ॐ ह्वीं सर्वतत्त्वाय स्वाहा।

मूलेन शिखां बध्वा, मूलेन त्रिःप्राणानायम्य, हस्ते जलं गृहीत्वा अद्येत्यादि ममाशेषदुरितक्षयपूर्वकमभीष्टफलप्राप्त्यर्थं श्रीपीताम्बराप्रीतये प्रातः (सायं) सन्ध्यां करिप्ये। ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासं कृत्वा, दक्षिणकरे जलमादाय, वामेनाच्छाद्य, मूलेन सप्तवारमिभमन्त्र्य, तज्जलं वामहस्ते गृहीत्वा, दक्षिणहस्ततत्त्वमुद्रया मूलमन्त्रसहितसिवन्दुनमोन्तैः मातृकाक्षरैः स्विशारिस प्रोक्षयेत्। अवशिष्टजलं मूलेन त्रिवारमिभमन्त्र्य, दक्षकरे निधाय, मूलमुच्चरन् वामतत्त्वमुद्रया शिरिस त्रिः प्रोक्षयेत्। तेजोरूपं तज्जलं इडयाऽऽकृष्य, स्वदेहान्तस्थसकलकल्मषक्षालनेन कृष्णतामापत्रं विभाव्य,

स्ववामभागे किल्पतवज्रशिलायां 'ॐ श्लीं पशु हुं फट्'' इति पाशुपतास्त्रमन्त्रेण भूमौ आस्फालयेत्। हस्तौ प्रक्षाल्य, आचम्य, पुनर्जलं दक्षहस्ते गृहीत्वा, तत्त्वमुद्रया 'अमृतमालिनी स्वाहा'' इति त्रिः शिरिस प्रोक्षयेत्। पूर्ववदाचम्य, सूर्यमण्डले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा, अर्घ्यपात्रे फलपुष्पगन्धाक्षतैः सह जलं गृहीत्वा, उत्थाय–

## ॐ ह्लीं बगलामुखीं विद्यहे दुष्टस्तम्भनीं धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

उद्यदादित्यवर्तिन्यै, शिवचैतन्यमय्यै श्रीबगलामुख्यै इदमर्घ्यं स्वाहा। इति अर्घ्यत्रयं दत्त्वा, उपविश्य, आचम्य, प्रणवादिमूलमन्त्रबीजेन षडङ्ग विधाय, देवीं ध्यात्वा, गायत्रीं यथाशक्ति प्रजप्य-

## गुह्यातिगुह्यगोष्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। विके सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि।।

एवं सन्ध्यां विधाय योन्या प्रणमेत्: ततः शुद्धजलेन-

ॐ हीं हं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय श्रीसूर्याय इदमर्घ्यं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

इति अर्घ्यत्रयं दद्यात्। शुद्धजले तीर्थमावाद्य, 'वं' इति धेन्वाऽमृतीकृत्य, मूलेन अष्टवारमिभमन्त्र्य, तत्र श्रीचक्रं विभाव्य स्वहृदयात्, 'सपिरवारां सायुधां श्रीबगलामुखीं तर्पयामि नमः' इति दशधा सन्तर्प्य 'ॐ ऐं हीं श्रीं' श्रीगुरुपादुकामन्त्रमुच्चार्य स्वगुरुश्री अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः', एवं परं गुरुं परमेष्ठिगुरुं च तर्पयेत्। ततः दिव्यौध-सिद्धौधमानवौध-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ततः तीर्थं विसृज्य अनेन तर्पणाख्येन कर्मणा श्रीपीताम्बरा प्रीयताम्।

# अथ पूजाविधि: - विक्रिकेट विकास क्षेत्र विकास विकास

पूजागृहद्वारदेशं गत्वा 'ॐ ऐं हीं श्रीं द्वाराधिष्ठितगणेशादिदेवताभ्यो नमः' इति सम्पूज्य, आत्मानं तेजोरूपं ध्यात्वा, द्वारदेवताज्ञां गृहीत्वा, वामाङ्गसङ्कोचेन दक्षिणपादपुरःसरं गृहान्तः प्रविश्य-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः। सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

इति पठित्वा 'हुं फट् स्वाहा' इति भूतानि नि:सारयेत्। पूजागृहे एभिर्मन्त्रैस्तिलसर्षपाक्षतान् विकिरेत्। नैर्ऋत्यकोणेवास्तुपुरुषाय नमः। ईशाने त्रिकोणं कृत्वा, तत्र साधारं दीपं संस्थाप्य, 'ॐ रक्तवर्ण-द्वादशशक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः' इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

इति नत्वा, 'वेदिकायै नमः' इति गन्धपुष्पैः पीठं सम्पूज्य, ''ॐ जय ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा।'' इति घण्टां वादयेत्। भैरवाज्ञां प्रार्थयेत्।

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुम्बयम्, अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

ततः आसनं संशोधयेत्। 'ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा', इति मन्त्रेण भूमिं सम्प्रोक्ष्य, आसनाऽधः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा, तत्र मायाबीजं विलिख्य, "ॐ हीं आधारशक्त्यै नमः" इति सम्पूज्य, अस्त्रेण संरक्ष्य, तत्रासनमास्तीर्य आसनात् त्रिकोणे– "गं गणपतये नमः"। "सं सरस्वत्यै नमः।" वायव्ये – "दुं दुर्गायै नमः" ईशाने – "क्षं क्षेत्रपालाय नमः"। इति सम्पूज्य, आसनं स्पृष्ट्वा–

## पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इति सम्प्रार्थ्य, प्राङ्मुख वा पद्मासनाद्यासनेनोपविश्य, मूलेनाचम्य, "ॐ मणिधारिणि विज्ञिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" इति शिखां बध्नीयात्। ततो देव्या दक्षिण वामपार्श्वयोः घृततैलदीपौ प्रज्वाल्य, "ॐ ऐं हीं श्रीं रक्तवर्ण द्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः" इति पूजियत्वा –

# भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

इति प्रार्थयेत्। अस्त्रमन्त्रेण दिग्बन्धनं विधाय, अङ्गुछतर्जनीयोगेन 'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्', इति वहिप्राकारं विचिन्त्य, आचम्य, प्राणायामत्रयं कुर्यात्।

# HERVIER BEST THE WAR CHEEN THE THE THE THE THE

ॐ तत् सदद्य परमात्मन आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुकसंवत्सरस्य श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुकप्रदेशे अमुकस्थाने अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माऽहं श्रीभगवत्याः पीताम्बरायाः प्रसादसिद्धिद्वारा मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थ यथाशक्ति यथाज्ञानेन यथासम्भावितोपचारद्रव्यैः साङ्गावरणैः श्रीभगवतीपीताम्बरासपर्यां करिष्ये। तथा च पूजाधिकार सिद्ध्यर्थं शरीर शुद्ध्यर्थं च भूत शुद्ध्यादि मूलमन्त्रन्यासादिकं करिष्ये।

ततः स्ववामभागे गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुं, दक्षिणभागे गणपतिमन्त्रेण गणपतिं च प्रणम्य, सुमुख-चतुरस्र-गोक्षुर-योनिमुद्राः प्रदर्श्य, गुरुं नत्वा, स्वशिरसि सङ्घट्टमुद्रां बध्वा-

श्रीनाथदिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्। सिद्धौधं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीत्रयं मण्डलम्।। वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम्।
श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।
वन्दे गुरुपद्द्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतकर्यं त्रैपुरं महः।।

इति पठित्वा ऋष्यादिन्यासपूर्वकं श्रीगुरुपादुकामन्त्रं दशधा जपेत्। ततः स्वयं रक्तगन्धाक्षतरक्ताम्बरस्रगाभरणैरलङ्कृतः ताम्बूल-पूरितानः शिवोऽहमिति भावयन् स्ववामभागे वर्धनीकलशं स्थापयेत्। तद् यथा-

त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं विधाय, 'ॐ मण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य, 'ॐ ऐं हीं श्रीं आधारं प्रक्षाल्य, मण्डले निधाय, 'ॐ धर्मप्रद-दशकलात्मने विह्नमण्डलाय नमः' इति आधारं सम्पूज्य, ॐ अर्थ, द्वादशकलात्मने सूर्य मण्डलाय नमः इति पात्रं सम्पूज्य मूलेन जलमापूर्य, तत्र 'क्रों' इत्यङ्कुशमुद्रया रात्रौ चन्द्रमण्डलात् दिवसे सूर्यमण्डलात्, तीर्थान्यावाह्य –

# गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इति सम्प्रार्थ्य, 'ॐ कामप्रदषोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य, 'सहस्रार हुं फट्' इति मन्त्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य, गरुडमुद्रया निर्विषीकृत्य, 'हुम्' इति अवगुण्ठ्य, 'क्रों' इति अङ्कुशमुद्रया 'ॐ ऐं हीं श्रीं नमो भगवत्यशेषतीर्थालवाले शिवजटाधिरूढे गङ्गे गङ्गाम्बिके स्वाहा' इति पठित्वा, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, 'वं' इति धेन्वाऽमृतीकृत्य मूलमन्त्रेण सप्तधाऽभिमन्त्र्य, गन्धाक्षतैः सम्पूज्य प्रणमेत्।

#### इति वर्धनीकलशार्चनम्।

ततो मूलेन श्रीचक्राय पुष्पाञ्जलि दत्त्वा, भूतशुद्ध्यादिन्यासान् कुर्यात्। तद् यथा- मूलाधारस्थितां स्वेष्टदेवतारूपां विसतन्तुनिभां विद्युत्प्रभापुञ्जभासुरां कुण्डलिनीं ध्यात्वा, उत्थाय हत्कमले सङ्गतां सुषुम्नावर्त्मना, प्रदीपकिलिकाकारां जीवकलामादाय, ब्रह्मरम्थ्रगतां स्मरेत्। 'ॐ हंसः सोऽहम्' इति मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोज्य तत्स्थानस्थितभूतानि प्रविलापयेत्। ॐ भुवं जले प्रविलापयामि, जलम् अग्नौ, अग्नि वायौ, वायुम् आकाशो, आकाशम् अहङ्कारे, अहङ्कारं महत्तत्वं, महत्तत्वं प्रकृतौ, प्रकृतिम् आत्मिन। आत्मानं च शुद्धसिच्चदानन्दरूपोऽहमिति भावयेत्। ततः पापपुरुषं विचिन्त्य, वामनासया 'यं' बीजेन षोडशवारमापूर्य, 'रं' बीजेन चतुःषष्टिवारं कुम्भयित्वा, पुनः 'यं' बीजेन द्वात्रिंशद्वारं रेचकेन भस्मीभूतं पापपुरुषं बहिर्निस्सार्य, पुनः षोडशवारं वायुमापूर्य, तद्धस्म अमृतधारयाऽऽप्लाव्य, 'लं' बीजेन चतुःषष्टिवारं कुम्भकेन घनीकृत्य, पुनः 'ईं'' बीजेन द्वात्रिंशद्वारं रेचकेन प्राणाद् उत्पाद्य कुण्डलिनीशिक्तं, 'सोऽहम्' इति मन्त्रेण परमात्मनः सकाशाद् अमृतमयजीवमादाय हत्कमले समागतां, तत्र जीवं संस्थाप्य सुषुम्नामार्गेण मूलाधारगतां चिन्तयेत्।

# इति भूतशुद्धिः।

हृदि हस्तं दत्वा, 'आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि स्थितानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।'

# विकास के अपने के समामिक इति प्राणप्रतिष्ठा। जन्म का निर्माण कि

# अथ मातृकान्यास — कि कि अधिकिमार किए अविकार कार के

STORY PURPLE

अथान्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकम्, मातृकान्यासे विनियोगः।

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं डं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्ली उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्ली एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्ली ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्ली अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

## अथ हृदयादिन्यास –

ॐ ह्वीं अं कं खं गं घं डं आं हृदयाय नमः।

ॐ ह्वीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्वीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्।

ॐ ह्वीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्।

ॐ ह्वीं ओं पं फ बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्वीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः अस्त्राय फट्।

### इति षडङ्ग विधाय -

आधारे लिङ्नाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे, द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दश-दले द्वादशार्द्धे चतुष्के। वासान्ते बालमध्ये ड फ-क ठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्, हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं, सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः 'लं' पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। 'हं' आकाशात्मक पुष्पं समर्पयामि। 'य' वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। 'रं' वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि। 'वं' अमृतात्मकं नैवद्यं समर्पयामि। 'सं' सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। इति सम्पूज्य –

कण्ठे विशुद्धिचक्रे – अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अ:।

हृदये अनाहतचक्रे - कं खंगं घं ङ.चं छं जं झं ञं टं ठं।

नाभौ मणिपूरे - डं ढं णं त थं दं धं नं प फं। स्वाधिष्ठाने - बं भं मं यं र लं। मूलाधारे वं शं षं सं। विन्यस्य, ततो भ्रूमध्ये आज्ञाचक्रे - हं क्षं विन्यसेत्।

# । चीनाम्बर्क प्राप्त इत्यन्तर्मातृकान्यासः। जन्मक प्राप्त हे हि है

ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषि:, गायत्रीछन्दः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, न्यासे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासं पूर्ववत् कृत्वा अकारादिक्षकारान्तमातृकावर्णैः स्वदेहे व्यापकं कुर्यात्। क्षित्रमार अस्ति स्थानम् । सामार सम् र हि

अर्द्धोन्मुक्त शशांक कोटि सदृशीमापीन तुंगस्तनीं, चन्द्रार्धांकित शेखरां मधुदलैरालोल नेत्र त्रयाम्। बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैराद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये।।

#### श्रीक्रमोक्तरीत्या यथा - क्रिन्डाम्बर्डाम्बर्डाम्बर्डा

🕉 ह्लीं अं नमः शिरसि। 🕉 ह्लीं आं नमः मुखे। ॐ ह्लीं इं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्लीं ईं नमः वामनेत्रे। 🕉 ह्लीं उं नमः दक्षकर्णे। 🕉 ह्लीं ऊं नमः वामकर्णे। ॐ ह्लीं ऋं नमः दक्षनासापुटे। ॐ ह्लीं ऋं नमः वामनासापुटे। ॐ ह्लीं लृं नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्लीं लृं नमः वामगण्डे। ॐ ह्लीं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्लीं ऐं नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्लीं ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्ती। ॐ ह्लीं औं नमः अधोदन्तपंक्ती। 🕉 ह्लीं अं नमः मुखवृत्ते। 🕉 ह्लीं अः नमः कण्ठे। ॐ ह्लीं कं नमः दक्षिणबाहुमूले। ॐ ह्लीं खं नमः दक्षकूपरि। ॐ ह्लीं गं नमः दक्षिणमणिबन्धे।ॐ ह्लीं घं नमः दक्षाङ्गुलिमूले। 🕉 ह्वीं डं नमः दक्षाङ्गुलिपद्में। 🕉 ह्वीं चं नमः वामबाहुमूले। 🕉 ह्लीं छं नमः वामकूपरि। 🕉 ह्लीं जं नमः वाममणिबन्धे। 🕉 ह्लीं झं नमः वामाऽडगुलिमूले।ॐ ह्लीं ञं नमः वामाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्लीं टं नमः दक्षपादमूले। ॐ ह्लीं ठं नमः दक्षजानुनि। 🕉 ह्लीं डं नमः दक्षगुल्फे। 👸 ह्लीं ढं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले 🕉 ह्लीं णं नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे। 🕉 ह्लीं तं नमः वामपादमूले। ॐ ह्लीं थं नमः वामजानुनि। ॐ ह्लीं दं नमः वामगुल्फे। ॐ ह्लीं धं नमः वामपादाङ्गुलिमूले।ॐ ह्लीं नं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्वी फं नमः वामपार्श्वे। ॐ ह्वीं वं नमः पृष्ठे। ॐ ह्वीं भं नमः नाभौ। ॐ ह्वीं मं नमः जठरे। ॐ ह्वीं यं नमः हृदये। ॐ ह्लीं मं नमः जठरे। ॐ ह्लीं यं नमः हृदये। ॐ ह्लीं रं नमः दक्षांसे। ॐ ह्लीं लं नमः ककुदि। 🕉 ह्लीं वं नमः वामांसे। 🕉 ह्लीं शं नमः हृदयादिदक्षकरान्तम्। ॐ ह्लीं षं नमः हृदयादिवामकरान्तम्। ॐ ह्लीं सं नमः हृदयादिदक्षपादान्तम्। । व्यव प्रवर्गे कामिकां ॐ ह्वीं हं नमः हृदयादिवामपादान्तम्। ॐ ह्लीं ळं नमः मस्तकादिपादान्तम्। ॐ ह्वीं क्षं नमः पादादिशिरोन्तम्।

# । इति बहिर्मातृकान्यासः। अविके अस्ति कि सि

अस्य श्रीब्रह्मास्त्रविद्याबगलामुखीषड्त्रिंशदक्षरात्मकमन्त्रस्य नारद ऋषि:, पङ्कति छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्वीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकम्, श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थं न्यासे विनियोगः। 🕉 ह्वीं बगलामुखी अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां तर्जनीभ्यां भागम् नमः। वाचं मुखं पदं स्तम्भय मध्यमाभ्यां नमः। जिह्नां कीलय अनामिकाभ्या नमः। बुद्धि विनाशय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रीं ॐ स्वाहा, करतलकरपृष्ठाभ्यां

#### अथ हृदयादिन्यास :- हिन्दि हिन्दि हो ।

ॐ ह्लीं बगलामुखी हृदयाय नमः। सर्वदुष्टानां शिरसे स्वाहा। वाचं मुखं पदं स्तम्भय शिखायै वषट्। जिह्नां कीलय कवचाय हुम्। बुद्धि विनाशय नेत्रत्रयाय वौषट् ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्। इति न्यासान् विधाय, ॐ भूर्भुवः स्वरोम्। विकास के कि विधाय के कि विष्युनिहार में सार पे स्टेंस्ट्रिय होते दिग्बन्धः। सम् अ स्वयवाहाय नाम हो संस्थानात नामः। इति दश बहिमालाः

#### अथ तत्त्वन्यास :-

🕉 ह्लीं बगलामुखी आत्मतत्त्वाय नमः मूलाधारे। 🦠 सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय विद्यातत्त्वाय नमः हदये।

जिह्नां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्वीं ॐ स्वाहा शिवतत्त्वाय नमः भ्रूमध्ये। सर्वतत्त्वाय नमः ब्रह्मरन्ध्रे। समग्र मूलेन इति विन्यस्य, स्वात्मानं कामकलारूपं विभाव्य हृदये देवीं ध्यायेत्। HIS, HETRINE PHENERS

#### अथ ध्यानम्

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्याविभूषिताङ्गीं देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्नाम्।। इति ध्यात्वा, मानसोपचारै: सम्पूज्य, यथाशक्ति मूलमन्त्रं प्रजप्य, देव्यै निवेद्य योन्या प्रणमेत्। ततः पीठे यथोक्तं यन्त्रं स्थापयेत्।

### अथ यन्त्रोद्धार :-

त्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलचतुर्द्वारात्मकं यन्त्रं स्थापयेत्। यन्त्रात्मनोर्मध्ये हस्तपरिमितेऽन्तराले पात्रासादनं कुर्यात्। स्ववामभागे त्रिकोणषट्कोणचतुरस्रं कृत्वा शङ्खमुद्रया दक्षाङ्गुष्ठेन स्पृशेत्। तत्र मण्डले अग्नीशासुरवायव्यकोणेषु मध्ये चतुर्दिक्षु च, षडङ्गमन्त्रैः पूजयित्वा शङ्खाधारं मण्डले स्थापयेत्। तत्राग्निकलाः यजेत्।

'ॐ ऐं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने सामान्यार्घ्य-पात्राधाराय नमः'। इति आधारं सम्पूज्य, तत्र— 'ऐं हीं श्रीं यं धूमार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं किपलायै नमः, ळं हळ्यवाहायै नमः, क्षं कळ्यवाहायै नमः।' इति दश विह्नकलाः पूजनम्।

तत :-। गानानम् अस् मानामार्थः विमानिक

#### 'ॐ पाञ्चजन्याय विद्यहे, पावमानाय धीमहि। तन्नः शङ्घः प्रचोदयात्।'

इति शङ्खं प्रक्षाल्य, आधारोपरि संस्थाप्य, 'ॐ ऐं हीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने सामान्यार्घ्यपात्राय नमः।' इति शङ्ख सम्पूज्य।

'कं भं तिपन्यै नमः, खं बं तिपन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, डं. नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्णायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः' इति द्वादशकलाः सम्पूज्य – ततः वर्धनीजलेन शङ्खमापूर्य, तत्र 'ॐ ऐं हीं श्रीं सौः सोममण्डलाय नमः' इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य, तत्र ऐं 'हीं श्रीं अं अमृतायै नमः', आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ऋं शशिन्यै नमः, लृं चन्द्रिकायै नमः, लृं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्दायैं नमः, अं पूर्णीयै नमः, अः पूर्णीमृतायै नमः।'

### इति षोडश कलाः पूजयेत्।

तत्र हेतुलवं प्रक्षिप्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, मूलं त्रिः जपेत्। 'ॐ ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं सौः' इति मन्त्रेण शङ्खोदकेन आत्मानं पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्। तदर्घ्यात् किञ्चिद् वर्धन्यां क्षिपेत्

# इति सामान्याऽर्घ्याविधिः।

# अथ विशेषार्घ्यस्थापनम् का सार्वे विशेषार्थस्थापनम्

देवीचक्रात्मनोर्मध्ये जलेन स्थलं सम्प्रोक्ष्य, तत्र त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं विधाय, खण्डत्रयेण, मूलेन, त्रिकोणेषु, मध्ये, पूजयेत्।

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। इति मूलमन्त्र:।

षट्कोणेषु षडङ्गमन्त्रैः पूजयेत्। ततः-

हां हृदयदेवीश्रीपादुकां पूजयामि, हीं शिरोदेवीश्रीपादुकां पूजयामि, हूं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि, हैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि, हौं नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि, हः अस्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

इति सम्पूज्य, चतुरस्रे विकास विकास विकास

कामरूपपीठाय नमः। जालन्धरपीठाय नमः। पूर्णगिरिपीठाय नमः। ओड्यानपीठाय नमः।

इति पीठचतुष्टयं पूजयेत्। तत्र अस्त्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य, 'ॐ ऐं हीं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः'। इति सम्पूज्य, 'यं धूमार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं किपलायै नमः, ळं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः' इति दशाग्निकलाः पूजयेत्।

'ॐ ऐं ही श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने विशेषार्ध्यपात्राय नमः।' इति अस्रक्षालितं पात्रं संस्थाप्य, सम्पूज्य— ऐं हीं श्रीं कं भं तिपन्यै नमः, ऐं हीं श्रीं खं बं तािपन्यै नमः, ऐं हीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः, ऐं हीं श्रीं गं पं मरीच्यै नमः, ऐं हीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः, ऐं हीं श्रीं गं धं कच्यै नमः, ऐं हीं श्रीं गं धं भोगदायै नमः, ऐं हीं श्रीं गं थं भोगदायै नमः, ऐं हीं श्रीं गं थं भोगदायै नमः, ऐं हीं श्रीं गं गं बोधिन्यै नमः,

इति द्वादश सूर्यकलाः तस्मिन् पूजयेत्। ततो विलोममातृकया मूलेन च क्षीरमापूर्य-

क्षं ळंहं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं जं छं चं डं घं गं खं कं अ: अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्लां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। तत्र 'ऐं ह्रीं श्रीं सौ: सोममण्डलाय कामप्रद्षोडशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्रामृताय नमः, इति सम्पूज्य, तत्र 'अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ऋं शिशन्यै नमः, लृं चिन्द्रकायै नमः, लृं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, ओं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः' इति षोडश सोमकलाः पूजयेत्।

ततः त्रिकोणं विलिख्य पश्चिमकोणादारभ्य 'अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः' पर्यन्तम् ईशानादारभ्य— 'कं खं गं घं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं' पर्यन्तम्, अग्निकोणादारभ्य — 'थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं' पर्यन्तम्, कोणेषु — 'हं ळं क्षं' मध्ये-ईं, द्वयोः पार्श्वयोः 'हं सः इति विलिख्य, पञ्चरत्नानि पूजयेत्। ॐ ऐं हीं श्रीं ग्लूं गगनरत्नाय नमः 'ॐ ऐं हीं श्रीं प्लूं पातालरत्नाय नमः, ॐ ऐं हीं श्रीं स्लूं स्वर्गरत्नाय नमः, ॐ ऐं हीं श्रीं म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः, ॐ ऐं हीं श्रीं न्लूं नागरत्नाय नमः, इति रत्नपञ्चकं सम्पूज्य, ततो मध्ये — त्रिकोण—षट्कोण—वृत्ता—ष्टार—चतुरस्रं विभावयेत्। चतुरस्रे — आनन्दभैरवानन्दभैरव्यौ पूजयेत्।

ऐं हीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं, आनन्दभैरवाय वषट्। आनन्दभैरवश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ऐ हीं श्रीं स ह क्ष म ल व र यीं सुधादेव्यै वौषट्। आनन्दभैरवीसुधादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ततः त्रिकोणे कूटत्रयेण, मध्ये च मूलेन सम्पूज्यः, षट्कोणे षडङ्गानि पूजयेत्।

ऐं हीं श्रीं ऐं अग्निचक्रे ब्रह्मात्मकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ऐं हीं श्रीं क्लीं सूर्यचक्रे विष्ण्वात्मकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ऐं हीं श्रीं सौ: सोमचक्रे रुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हां हृदयदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हीं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हूं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हौं नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ऐं हीं श्रीं हः अस्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

#### अष्टारे -

असिताङ्गभैरवसहित-श्रीं अं हीं पूजयामि ब्राह्मीदेवीश्रीपादुकां नमः। रुरुभैरवसहित-हीं श्रीं Ť पूजयामि नमः। माहेश्वरीदेवीश्रीपादुकां चण्डभैरवसहित-Ì श्रीं हीं पूजयामि नमः। कौमारीदेवीश्रीपादुकां ऊं क्रोधभैरवसहित-Ì हीं श्रीं 莱 पूजयामि ऋं वैष्णवीदेवीश्रीपादुकां नमः। रें च् उन्मत्तभैरवसहित-चृं हीं श्रीं पूजयामि नमः। वाराहीदेवीश्रीपादुकां कपालभैरवसहित-एं श्रीं पूजयामि नमः। Ť माहेन्द्रीदेवीश्रीपादुकां हीं श्रीं ओं भीषणभैरवसहित-Ť पूजयामि चामुण्डादेवीश्रीपादुकां नमः। औं ऐं हीं श्रीं अं संहारभैरवसहित-अः महालक्ष्मीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

#### दश ब्रह्मकलाः

कं सृष्टि कलायै नमः।। खं ऋद्धि कलायै नमः
गं स्मृति कलायै नमः।। घं मेधा कलायै नमः
डं. कान्ति कलायै नमः।। चं लक्ष्मी कलायै नमः
छं द्युति कलायै नमः।। जं स्थिरा कलायै नमः
इं स्थिति कलायै नमः।। ञं सिद्धि कलायै नमः

### कार के किया के जिल्हा विष्णुकलाः कार्य कार्याच्या कि

टं जरा कलायै नमः।। ठं पालिनी कलायै नमः डं शान्ति कलायै नमः।। ढं ईश्वरी कलायै नमः णं रित कलायै नमः।। तं कामिनी कलायै नमः थं वरदा कलायै नमः।। दं आह्लादिनी कलायै नमः धं प्रीति कलायै नमः।। नं दीर्घा कलायै नमः

### दश रुद्रकलाः

पं तीक्ष्णा कलायै नमः।। फं रौद्रा कलायै नमः
बं भया कलायै नमः।। भं निद्रा कलायै नमः
मं तन्द्री कलायै नमः।। यं क्षुत कलायै नमः
रं क्रोधिनीकलायै नमः।। लं क्रिया कलायै नमः
वं उद्गारं कलायै नमः।। शं मृत्यु कलायै नमः

#### चतुः ईश्वरकलाः

षं पीता कलायै नमः।। सं श्वेता कलायै नमः हं अरुणा कलायै नमः।। ळं असिता कलायै नमः

#### षोडश सदाशिवकलाः

अं निवृत्ति कलायै नमः।। आं प्रतिष्ठा कलायै नमः इं विद्या कलायै नमः।। ईं शान्ति कलायै नमः उं इन्धिका कलायै नमः।। ऊं दीपिका कलायै नमः ऋं रेचिका कलायै नमः।। ऋं मोचिका कलायै नमः सूक्ष्मा कलायै नमः कलायै नमः।। लृं लुं परा एं सूक्ष्मामृता कलायै नमः।। ऐं ज्ञाना कलायै नमः ओं ज्ञानामृता कलायै नमः।। औं आप्यायिनी कलायै नमः कलायै नमः अं व्यापिनी कलायै नमः।। अः व्योमरूपा ॐ ऐं हीं श्रीं हं सः शुचिषद् वसुरन्तिरक्षसद् होता वेदिषद् तिथिर्दुरोणसद् नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद् अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋते बृहत्। 🕉 ऐं हीं श्रीं अं ब्रह्मदशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ॐ ऐं हीं श्रीं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् बिसीमत:सुरुचो बेन आव: सुबुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः। 🕉 ऐं हीं श्रीं उं विष्णुदशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 🕉 प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। 🕉 ऐं हीं श्रीं मं रुद्रदशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः। 3ँ ऐं हीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। 3% ऐं हीं श्रीं विन्द्रीश्वरपञ्चकलाश्रीपादुकां पूजयामि नम:। 🕉 ऐं हीं श्रीं तद् विष्णोः 'परमं पद 😯 सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।

🕉 ऐं ह्रीं श्रीं तद् विप्रासो विपन्यवो जागृना 🕏 स: सिमन्धते। विष्णोर्यत् परमं पदम्।

🕉 ऐं हीं श्रीं विन्दुनादसदाशिवषोडशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नम:।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुयोंनि कल्पयंतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।

आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु मे। मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न: सन्त्वोषधी:॥

गर्भ धेहि सिनीवाली गर्भ धेहि सरस्वती। ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

ऊ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: श्रीपीताम्बराकलायै नम:। इति सम्पूज्य-

ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हां हं स: हां विशेषार्घ्याऽमृतस्य प्राणा इह प्राणा:। ॐ आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हां हं स: हां जीव इह स्थित:। ॐ आं हीं क्रों यं र लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ह्रां हं स: ह्रां विशेषार्घ्याऽमृतस्य सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा हीं ॐ हं स:। इति त्रि:। एवं प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अ: कं खं ग घं डं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं।

इति मातृकावर्णेन अनुलोमेन त्रिरावृत्य-

हीं श्रीं ऐं अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि। निधेहि कुलनायिके।। खच्छन्दस्फुरणामत्र ऐं ही श्रीं क्लीं अकुलस्थाऽमृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे। क्लिन्नरूपिणि। अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि

ऐं हीं श्रीं सौ: त्यद्रूपिण्यैकरस्यं त्यं कृत्वा होतत् स्वरूपिणि। भूत्वा पराऽमृताकारा मिय विस्फुरणं कुरु।। 'ॐ ऐं हीं श्रीं ऐं प्लूं ह् सौ: जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्नावय स्नावय स्वाहा।'

#### इति मन्त्रं पठेत्।

'ऐं हीं श्रीं ॐ वद वद वाग्वदिनि ऐं क्लिन्ने क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौं मोक्षं कुरु कुरु ह सौ:।' इति दीपिनीमन्त्रम् अष्टवारं जपेत्। ततो मूलं नववारं पठेत्। धेन्वाऽमृतीकृत्य, महायोनिमुद्रया अस्त्रेण संरक्ष्य, कवचेन अवगुण्ठ्य, धेनुं योनिं प्रदर्शयेत्।

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: स्वाहा' इति विशेषार्घ्यामृतं देवीरूपं विभाव्य, 'श्रीपीताम्बरायै नमः' गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यान्तं सम्पूज्य प्रणमेत्।

#### ततः आत्मपात्रस्थापनम्।

तत्रादौ स्वशिरिस 'श्रीं ह्रीं क्लीं' इत्यनेन गन्धाक्षतपुष्पैः गुरुपादुकां सम्पूज्य, स्वयमिप गन्धिदिनाऽलङ्कृत्य, स्वपुरतः त्रिकोणवृत्तचतुरस्र-मण्डलं कृत्वा, ॐ ह्रीं हं सः सोऽहं स्वाहा' इति मन्त्रेण आत्मश्रीपात्रयोर्मध्ये साधारं पात्रं संस्थाप्य, सुधयाऽऽपूर्य, ततः स्विशिरिस-

ॐ ऐं हीं श्रीं दिव्यौधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं सिद्धौधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं मानवौधश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं हीं श्रीं परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
इति सम्पूज्य, सन्तर्प्य, हृदये मूलेन श्रीपीताम्बरां सन्तर्प्य। मूलाधारे

गणपति, नाभौ आत्मपादुकामन्त्रेण 'ॐ हीं हं सः सोऽहं स्वाहा'। त्रिः सन्तर्प्य, आर्दं ज्वलित ज्योर्तिहमस्मि ज्योतिर्ज्वलित ब्रह्माऽहमस्मि, अहमिस्म, ब्रह्माऽहमस्मि, अहमेवाऽहं मां जुहोमि स्वाहा' इति मन्त्रेण 'आत्मा मे शुद्ध्यताम्' इति मन्त्रान्ते स्वीकृत्य, तत्त्वचतुष्टयेन आनन्दमयो भूत्वा देवीं यजेत्।

मूलेन प्राणानायम्य, मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं ध्यानादिकं कृत्वा, मानसोपचारै: सम्पूज्य, किञ्चिन्मूलमन्त्रं प्रजप्य, हस्ते पुष्पाञ्चलिमादाय मूलमुच्चार्य, 'श्रीबगलामुखीं पूजयामि नमः।' इति पुष्पाणि समर्प्य, यन्त्रराजमध्ये ध्यानोक्तां देवीं विचिन्त्य, पीठपूजां कुर्यात्।

| 30 | ही  | श्री  | मण्डूकाय नमः।       | 30     | हीं      | श्रीं | आधाराय          | नमः।        |
|----|-----|-------|---------------------|--------|----------|-------|-----------------|-------------|
| 30 | हीं | श्री  | मूलप्रकृत्यै नमः।   | 100000 |          |       | आधारशक्त्यै     | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | कूर्माय नमः।        | 2500.0 |          |       | अनन्ताय         | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | वराहाय नमः।         |        |          |       | पृथिव्यै        |             |
| 30 | हीं | श्रीं | सुधार्णवाय नमः।     | 30     | हीं      | श्रीं | रत्नद्वीपाय     | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | नन्दनोद्यानाय नमः।  |        |          |       | स्वर्णप्राकाराय |             |
|    |     |       | कल्पवृक्षाय नमः।    |        |          |       | मणिमण्डपाय      |             |
|    |     |       | स्वणविदिकायै नमः।   | 30     | हीं      | श्रीं | रत्नसिंहासनाय   | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | धर्माय नमः।         | 30     | हीं      | श्रीं | ज्ञानाय         | नमः।        |
|    |     |       | ऐश्वर्याय नमः।      |        |          |       | वैराग्याय       | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | अधर्माय नमः।        | 30     | हीं      | श्रीं | अज्ञानाय        | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | अनैश्वर्याय नमः।    |        | CONTRACT |       | अवैराग्याय      | नमः।        |
| 30 | हीं | श्रीं | मायायै नमः।         |        |          |       |                 | नमः।        |
| 30 | ही  | श्रीं | अविद्यायै नमः।      |        |          |       | अनन्ताय         | नमः।        |
| 30 | ही  | श्रीं | पद्माय नमः।         |        |          |       | आनन्दकन्दाय     |             |
| 30 | हीं | श्रीं | संवित्रालाय नमः।    |        |          |       | कृतिमयपत्रेभ्यो |             |
|    |     |       | विकारमयकेशरेभ्यो नम |        |          |       |                 |             |
|    |     |       |                     |        |          |       |                 | Carlo Carlo |

ॐ हीं श्रीं सं सोममण्डलाय नमः। ॐ हीं श्रीं रं यिह्मण्डलाय नमः। ॐ हीं श्रीं रं प्रविधात्मने सत्वाय नमः। ॐ हीं श्रीं रं प्रवृत्यात्मने रजसे नमः। ॐ हीं श्रीं तं मोहात्मने तमसे नमः। ॐ हीं श्रीं आं आत्मने नमः। ॐ हीं श्रीं पं परमात्मने नमः। ॐ हीं श्रीं अज्ञानात्मने नमः। ॐ हीं श्रीं जां ज्ञानतत्त्वात्मने नमः। ॐ हीं श्रीं कां कलातत्त्वात्मने नमः। ॐ हीं श्रीं कां अपराजितायै नमः। ॐ हीं श्रीं कां अधोरायै नमः। ॐ हीं श्रीं सं सर्वमङ्गलायै नमः।

#### ततो मध्ये -

35 हीं श्रीं ऐं परायै नम:। 35 हीं श्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नम:। इति पीठपूजां कृत्वा, गन्धपुष्पैः सम्पूज्य, यन्त्रराजे मूर्ति कल्पयित्वा, त्रिखण्डया मुद्रया पुष्पाण्यादाय, मूलं पठित्वा –

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्याविभूषिताङ्गी देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।

इति ध्यात्वा, स्वहृदयकमले परिशववेनैक्यं विभाव्य, वहन्नासाद्वारेण स्वान्तस्थतेजः अञ्जलौ आनीय-

ॐ हस्रैं ह स क ल ह्वीं ह सौ:

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि। ऐं एहि एहि देवेशि बगले सूरपूजिते।
परामृतपरे शीघ्रं सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे।
देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत् त्वां पूजियष्यामि, तावत् त्वं सुस्थिरा भव।

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। सः ह्लीं भगवित आगच्छ आगच्छ अस्मिन् मण्डले सान्निध्यं कुरु कुरु मम सुप्रसन्नं कुरु कुरु स्वाहा।'

इति मन्त्रेण ब्रह्मरन्ध्रस्थानात्विद्युत्कोटिविडम्बिनीं सर्वाभरणसंच्छत्रां साङ्गां सपरिवारां सवाहनां सशक्तिकां, वहन्नासापुटद्वारेण चक्रे मध्यबिन्दौ आवाह्य, पुष्पाणि समर्प्य चिन्तयेत्। तत्र बिन्दुमध्यनिवासिनीं देवीम् आवाहनादिस्थापनादिमुद्राः सम्यक्प्रदर्शयेत्। 'आवाहिता भवेत्यादि' मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य मूलं दशधा जपेत्।

ततः आं ह्री क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः हीं ॐ हं सः श्रीपीताम्बरायाः प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों जीव इह जीव, आं ह्रीं क्रों सर्वेन्द्रियाणि स्थितानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु।

इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय, गन्धपुष्पाणि समर्प्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, मूलषडङ्गेन सकलीकृत्य, किरीटमुद्रां प्रदर्शयेत्। ततः सामान्याघ्योदकेन षोडशोपचारैः पूजयेत्। यथा –

श्रीबगलाया आसनं समर्पयामि। एवम् पाद्यम् अर्घ्यम्। आचमनीयम्। मधुपर्कम्। पुनराचमनीयम् पृथक्। पञ्चामृतस्नानम्। पुनः शुद्धोदकस्नानम्। सुगन्धतैलमर्दनम्। उद्वर्तनम्। उष्णोदकम्। शुद्धोदकस्नानम्। अभिषेकस्नानम्। पुनः शुद्धोदकम्। शुद्धवस्त्रेण प्रोक्षणम्। पीठे निवेशनम्। वस्त्रार्पणम्। आभरणार्पणम्। चन्दनम्। ऋतुकालोद्धवपुष्पाणि। हरिद्राकुङकुमादिसौभाग्यद्रव्याणि। धूपम्। दीपम्। आधारोपरि देवीपुरतः नैवेद्यं संस्थाप्य, मूलेन संप्रोक्ष्य, गन्धपुष्यैः सम्पूज्य, मूलेनाभिमन्त्र्य,

धेन्वाऽमृतीकृत्य, वामाङ्गुष्ठेन पात्र स्मृशन्, दक्षिणेन विशेषाध्योदकमादाय –

हेमपात्रगतं दिव्यं परमात्रं सुसंस्कृतम्। पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।

इति पठित्वा 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा', इति देव्यै जलमर्पयेत्। वामकरे पद्ममुद्रां बध्वा, दक्षिणकरेण प्राणादिपञ्चमुद्राभिरर्पयेत्।

यथा – प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा।

ब्रह्मेशाद्यैः सरसमितः सूपिवष्टैः समन्ताद्। दिव्याकल्पैर्लितरमणी वीज्यमाना सखीभिः।। नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान् भुङ्के पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री।।

इति पठित्वा, किञ्चिन्मूलं प्रजप्य, मध्ये पानीयं दत्वा, पुनः क्षणं विलम्ब्य, 'अमृताऽपिधानमसि स्वाहा' इति जलं दत्त्वा –

प्रथमखण्डेन – "ॐ ह्रीं बगलामुखि" आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

द्वितीयखण्डेन – ''सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय'' विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

तृतीयखण्डेन – ''जिह्नां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्नीं ॐ स्वाहा'' शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

समग्रमूलेन - "ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहां" सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

ततः हस्तप्रक्षालनं पादप्रक्षालनं गण्डूषान् कारियत्वा, ताम्बूलं दत्त्वा, आरार्तिकं कुर्यात्।

# अथाऽऽवरणपूजनम् -गाइमार्थीय स्वत

# पुष्पाञ्चलिमादाय — असे अवस्थिति ए कि के कि कि

संविन्मये परे देवि पराऽमृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे।

इति सम्प्रार्थ्य, चक्रे पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, मूलेन बिन्दौ त्रिः सन्तर्प्य, षडङ्गार्चनं कुर्यात्।

तद् यथा-विन्दौ, अग्नीशासुरवायुकोणेषु, मध्ये, दिक्षु च

🕉 ह्लां हृदयेदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

ॐ ह्लीं शिरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

ॐ हूं शिखादेवीश्रीपादुका पूजयामि नमः तर्पयामि।

🕉 हैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

ॐ ह्लौं नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

🕉 ह्नः अस्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

मूलम्, श्रीबगलामुखीचतुरस्ररेखायै नमः। इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा-

## पूर्वद्वारे-

ॐ श्रीं हीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। श्रीगणपति श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

A STATE OF THE PERSON OF THE PARTY OF THE PA

# ततः दक्षिणद्वारे – काल्यां काला स्वान निर्माण कि विश्व

ॐ हीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय हीं श्रीवटुकश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

#### ततः पश्चिमद्वारे- भूकाश्वाग्राम् वर्षा

यां यीं यूं यैं यौं य: योगिनीभ्य: फट् स्वाहा। श्रीयोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि नम: तर्पयामि।

## ततः उत्तरद्वारे-

क्षं क्षेत्रपालाय नमः। श्रीक्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः। ततः ईशानादि उत्तरान्तं रेखात्रयं पूजयेत्। यथा-

तं तमोरेखायं नमः, रं रजोरेखायै नमः, सं सत्वरेखायै नमः। ततः पङ्क्तयाकारेणोपविष्टान् दिव्यौघादिगुरून् नत्त्वा पुष्पाञ्जलि दत्त्वा –

ॐ ह्लीं श्रीं परमिशवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं पराशक्तव्याम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं पराधिकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं कुलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं शुक्लादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं कामेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ हीं श्रीं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।
ॐ हीं श्रीं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि।

इति दिव्यौघा।

सिद्धौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः।

#### इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा-

ॐ ह्लीं श्रीं भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं क्लिन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इति सिद्धौघा:।

# मानवौघेभ्यः पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः।

# इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा—

| 38 | ह्यां | श्रीं | गगनानन्दनाथश्रीपादुकां  | पूजयामि तर्पयामि।  |
|----|-------|-------|---|--------------------|
| 38 |       | श्रीं | विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां  | पूजयामि तर्पयामि।  |
| 38 | ह्यीं | श्रीं | विमलानन्दनाथश्रीपादुकां   | पूजयामि तर्पयामि।  |
| 38 | हीं   | श्रीं | भुवनानन्दनाथश्रीपादुकां   | पूजयामि तर्पंयामि। |
| 30 | ह्रीं | श्रीं | HI MINERAL TO THE PARTY OF THE | पूजयामि तर्पयामि।  |
| 30 | ह्रीं | श्रीं | लीलानन्दनाथश्रीपादुकां  | पूजयामि तर्पयामि।  |
| 30 | ह्यीं |       | स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां  | पूजयामि तर्पयामि।  |
| 30 | ह्यीं | श्रीं | प्रियानन्दनाथश्रीपादुकां  | पूजयामि तर्पयामि।  |
|    |       |       |   |                    |

# इति मानवौधाः।

ततः परमेष्ठिगुरुं परमगुरुं स्वगुरुं च तर्पयेत्। तत – अभीष्टिसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं गुरुपङ्क्तिप्रपूजनम्।

# इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्।

ॐ ह्लीं श्रीं अं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं आं स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ई मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ई जृम्भिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं उं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऊं चञ्चलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऋं भूधराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऋं भूधराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऋं कलुष श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऋं कलुष श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं लृं धात्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं लृं करुणाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं एं कालाकर्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ऐं भ्रामिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं ओं मन्दगमनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं औं भोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं अं भाविकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं अं भाविकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं अः शान्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

#### पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्। ॐ ह्लीं श्रीं अं कं खं गं घं इं आं असिताङ्गभैरवसहित-तर्पयामि। ब्राह्मीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि 🕉 ह्वीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं रुरुभैरवसहित -माहेश्वरीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं चण्डभैरवसहित -कौमारीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। 🕉 ह्वीं श्रीं ऋं तं थं दं धं नं ऋं क्रोधभैरवसहित -वैष्णवीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं हुं पं फं बं भं मं लूं उन्मत्तभैरवसहित -वाराहीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं एं यं रं लं वं ऐं कपालभैरवसहित -इन्द्राणीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ओं शं षं सं हं औं भीषणभैरवसहित -चामुण्डादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्वीं श्रीं अं ळं क्षं अः संहारभैरवसहित -महालक्ष्मीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

# पुष्पाञ्चलिमादाय — महाव्यापादा अवस्त्र विकास विकास

अभीष्टिसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्तवा समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।

पुनः शङ्खोदकेन एकवारं, विशेषाध्योंदकेन त्रिवारंच तर्पयेत्। अथ षट्कोणेषु वामावर्तेन –

ॐ ह्लीं श्रीं डां डीं डूं हैं डौं डः रसधातुस्थ-डािकनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः असृग्धातुस्थ-राकिनीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं लां लीं लूं लैं लौं लः मांसधातुस्थ-लाकिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं कां कीं कूं कैं कौं कः मेदोधातुस्थ-काकिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं शां शीं शूं शै शौं शः अस्थिधातुस्थ-शाकिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं हां हीं हूं हैं हौं ह; मज्जाधातुस्थ-हाकिनीदेवी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

# इति सम्पूज्य, तदग्रेषु-

ॐ ह्लीं श्रीं सुभगाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगसर्पिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगावहाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

#### अभीष्टिसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।

पुनः शङ्खोदकेन एकवारं, विशेषाध्योंदकेन त्रिःवारं विन्दौ तर्पयेत। अग्निकोणे - ॐ ह्लीं श्रीं क्रोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ईशानकोणे - ॐ ह्लीं श्रीं जृम्भिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। अग्निकोणे - ॐ ह्लीं श्रीं चामरधारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति सन्तर्प्य—

अभीष्टिसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्तचा समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।

पुनः शङ्खोदकेन एकवारं, विशेषाध्योंदकेन त्रिवारं, मूलेन विन्दौ देवीं तर्पयेत्।

#### ततो मध्ये देव्यग्रे-

ॐ ह्लीं श्रीं ह्लों ॐ नमः शिवाय हों त्रिनेत्राय त्रिनेत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। विन्दौ-मूलेन, श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। इति त्रिवारं सन्तर्प्य—

अभीष्टिसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्टावरणार्चनम्। शङ्खोदकेन एकवारं, विशेषार्घ्योदकेन त्रिवारं पूजयेत् तर्पयेच्च।

#### ।।षडाम्नायपूजनम्।।

ॐ ह्लीं श्रीं गं गणपतये नमः गणपते श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ॐ नमःशिवाय शिव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ॐ हीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय हीं बटुक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं श्रीं हीं क्लीं नमो भगवित माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा अन्नपूर्णे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं हीं भुवनेश्वरि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ऐं क्लीं सौ: बाले श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

# इति पूर्वाम्नायः।

ॐ ह्लीं श्रीं ॐ हीं जूं सः मृत्युंजय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्लीं श्रीं ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाच मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा बगलामुखि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

#### इति दक्षिणाम्नायः।

ॐ ह्लीं श्रीं ॐ हीं रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा रक्त चामुण्डे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चण्डि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं ॐ ह्लीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

35 ह्वीं श्रीं हस्रैं हसकल्लीं हस्रौं: भैरवि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

## इति पश्चिमाम्नायः

3ॐ ह्लीं श्रीं क्रीं कालि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। 3ॐ ह्लीं श्रीं त्रीं तारे श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ि స్తాయం हीं श्रीं हूं छिन्नमस्ते श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं धूं धूं धूमावित स्वाहा धूमावित श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं मातङ्गि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

🕉 ह्रीं श्रीं श्रीं कमले श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

#### इति उत्तराम्नायः।

ॐ ह्वीं श्रीं क्रीं क्रीं ह्वं हूं हीं हीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं स्वाहा महाविद्ये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं बगलामुखि इत्यादि बगलामुखि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

#### इति ऊर्ध्वाम्नाय:।

ॐ ह्रीं श्रीं हसौ: स्हौ: परा प्रासाद विद्ये श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

## इति अनुत्तराम्नायः।

ततो गन्धपुष्पधूपदीपसोपस्करं महानैवेद्यं पूर्ववत् आधोरोपरिदेव्यग्रे निधाय, पूर्ववत् सम्पूज्य, धेन्वाऽमृतीकृत्य, ''अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'' इति विशेषार्घ्यजलं दत्त्वा-

हेमपात्रगतं दिव्यं परमात्रं सुसंस्कृतम्। पञ्चधा षड्सोपेतं गृहाण परमेश्वरि।।

'नैवेद्यं समर्पयामि' प्राणादिपञ्चमुद्राभिरर्पयेत्। प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा। ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद्, दिव्याकल्पैर्लिलतरमणी वीज्यमाना सखीभिः। नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्, भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते, षड्रसान् लोकधात्री।।

किञ्चिन्मूलं प्रजप्य, मध्ये पानीयं दत्त्वा, पुनःक्षणं विलम्ब्य, 'अमृतापिधानमसि स्वाहा' इति जलं दत्त्वा।

प्रथमखण्डेन – 'ॐ हीं बगलामुखि' आत्मतत्वव्यापिनी बगलामुखी तृप्यतु।

द्वितीयखण्डेन – 'सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय' विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

तृतीयखण्डेन – 'जिह्नां कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा' शिवत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

समग्रमूलेन - 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदृष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्नां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु।

ततः हस्तप्रक्षालनम्। गण्डूषान् कारियत्वा, ताम्बूलं दत्त्वा, छत्रं, चामरं, पादुकां, व्यजनं, राजोपचारान् मूलेन अर्पयेत्। आरार्तिकं कुर्यात्। देववन्दनम्, आत्मवन्दनं व कृत्वा, हस्तप्रक्षालनान्ते पुष्पाञ्जलि दत्त्वा, क्षमाप्य पूजाङ्गहोमं कुर्यात्।

#### अथ होम:

अथेत्यादि श्रीपीताम्बरापूजाङ्गत्वेन विहितहवनं करिष्ये– इति सङ्कल्प्य, कुण्डे स्थण्डिले वा 'ॐ ह्लीं श्रीं' मूलेन सम्प्रोक्ष्य, मूलेनाग्नि समानीय, 'अग्नये नमः' इति गन्धाक्षतेः सम्पूज्य, हस्ताभ्यां विह्नपात्रमादाय, आत्माभिमुखम् अग्नि स्थापयेत्। 'ॐ ह्लीं श्रीं' मूलेन काष्ठादिकं सम्प्रोक्ष्य, अग्नौ निक्षिप्य, ज्वालां कृत्वा ध्यायेत्।

#### अग्नि प्रज्ज्वितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।

पुष्पाञ्चित गृहीत्वा, 'ॐ ह्वीं श्रीं मूलेन अग्नौ देवीचैतन्यमावाह्य, गन्धपुष्पै: सम्पूज्य, मूलेन पञ्चिवंशत्याहुती: दत्त्वा, देवीं गन्धपुष्पै: सम्पूज्य, स्वस्थानगतां विभाव्य, पुन: अग्नि सम्पूज्य, भस्मं गृहीत्वा, ललाटादिस्थानेषु धारियत्वा–

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन।।
गच्छ त्वं भगवत्रग्ने स्वस्थानं कुण्डमध्यत।
हव्यमादाय, देवेभ्यः शीघ्रं देहि, प्रसीद मे।।

इत्यग्नि विसृज्य, होमं देव्यै अर्पयेत्। अनेन पूजाङगहोमाख्यकर्मणा श्रीबगलामुखी प्रीयताम्।

## ततो बलिदानम्

ईशान-वायु-नैऋत्याऽग्निकोणेषु क्रमेण बटुक-योगिनी-क्षेत्रपाल गणपतिभ्यो बलि दद्यात्—

#### ईशाने -

एहि एहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा, बटुकाय एष बलिर्न मम।

# वायव्ये - ह्यांका नेतन कि कि रहे के लिखान करने

'यां योगिनीभ्यो नमः' इति योगिनीः पूजियत्वा सामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा- 'ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा, दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा। पाताले वा, तले वा, सिललपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन। प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः।।

''सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा, योगिनीभ्यः एष बर्लिन मम।'' इति जलं दत्त्वा प्रणमेत्।

#### नैऋत्ये -

'क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालबलिमण्डलाय नमः, क्षेत्रपालबलिद्रव्याय नमः' इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य, सामान्याघ्योंदकं गृहीत्वा, ''ॐ क्षां क्षीं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा; क्षेत्रपालाय एष बलिर्न मम।''

#### आग्नेये -

'गं गणपतये नमः, गणपति बलिमण्डलाय नमः' इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य, सामान्यार्घ्योदकमादाय, 'ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः, गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा गृह्ण गृह्ण स्वाहा, गणपतये एष बलिर्न मम' इति जलं दत्त्वा प्रणमेत्।

## उत्तरे -

पूर्ववत् मण्डलं विधाय, सम्पूज्य, साधारं बलिं निधाय, तत्र सर्वदेवताः सम्पूज्य, 'ह्लीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो बलिं दद्यात्।

### इति बलिदानम्।

हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य, योन्या प्रणम्य, महानीराजनं कुर्यात्। तदन्ते देव्यै मन्त्रपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा, प्रदक्षिणीकृत्य, स्तुवीत- समस्तमुनि - यक्ष - किंपुरुष - सिद्ध-विद्याधर-महासुर-सुराप्सरोगणमुखैः गणेः सेविते। निवृत्ततिलकाम्बर - प्रकृति - शान्ति - विद्या - कला-कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः। तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदम्.......।

ततः सुवासिनीं बटुकं कुमारिकां च यथाविधि सम्पूज्य, सन्तोष्य, विसृज्य अष्टोत्तरशतं मूलमन्त्रं जपेत्।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि।।

#### इति निवेदयेत्।

ततः उद्वासनं कुर्यात् सामान्यार्घ्यपात्रमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिवारं भ्रामयित्वा-

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया। तत् सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परम्।।

इति पठित्वा, 'इतः पूर्वं मां मदीयञ्च श्रीबगलामुखीदेवतायै समर्पयामि नमः।' ततः अवशिष्टसामानार्ध्यजलेन स्वशिरसि सम्मार्ज्य, सामयिकान् संप्रोक्ष्य, देव्युपरितनं पुष्पं संहारमुद्रया गृहीत्वा, स्वयमाघ्राय, देवीचैतन्यं स्वहृदि स्थापयित्वा, मानसैः सम्पूज्य, हस्ताभ्यामर्घ्यपात्रमादाय शिरसि धृत्वा –

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक। त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।

इति सम्प्रार्थ्य, तद् द्रव्यं पात्रान्तरे गृहीत्वा, विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य, पुष्पाक्षतान् निक्षिप्य, देवताये स्थापयित्वा उच्छिष्टबलि दद्यात्। यथा – गदात्रिशूलडमरुपाशहस्तं त्रिलोचनम्। कृष्णाभं भैरवं देवं ध्यायेदुच्छिष्टभैरवम्।।

इति ध्यात्वा – 'ॐ उच्छिष्टभैरव एहि एहि बलि गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा' इति दत्त्वा तद्वलिम् उत्थाप्य पूजागृहबहिर्भूमौ चतुरस्रमण्डलं कृत्वा, कृष्णसारमेयं समाहूय, बलि दद्यात् 'बटुकवाहन इमां पूजां बलि च गृह्ण गृह्ण स्वाहा।' इति जलमुत्सृज्य, हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य, गृहान्तः प्रविश्य, आसनमुपविश्य, आचम्य, शान्तिस्तवं पठेत्।

पुनः उच्छिष्टचाण्डालिनीं ध्यात्वा, 'ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालिनि मातिङ्ग सर्वजनवशङ्करि इमां पूजां बलिं च गृह्ण गृह्ण स्वाहा।' इति निर्माल्यसिहतं नैवेद्योच्छिष्टबलिं दद्यात्।

हस्तौ प्रक्षाल्य, ततः पात्रामृतं मूलेन स्वयं गृहीत्वा, अन्यान् सामयिकानिप दद्यात्। प्रार्थयेत् –

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्। शिवशासनतः। शिवशासनतः।'

ततो देव्यै पूजां वर्द्धनीजलेन अर्पयेत्।

'अनेन यथाज्ञानेन यथासम्भावितोपचारद्रव्यैः श्रीबगलामुखी-सपर्याख्येन कर्मणा भगवती श्रीपीताम्बरा प्रीयताम्। ॐ तत् सत्।'

ततः प्रसादं चरणोदकं च गृहीत्वा, शिष्टैः सह भुञ्जीत। यथासुखं विहरेत्।

> इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतन्त्रैः निगमागमतन्त्रपारीणैः परमहंसपरिव्राजकाचार्यैः श्रीपीताम्बरापीठाधीश्वरैः श्री अनन्त श्रीस्वामिभिः विरचिता

श्रीपीताम्बरार्चन-पद्धतिः पूर्णतां गता।

# THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH शुद्ध बगला गुरुक्रमः

- १. श्री उन्मन्यानन्दनाथ, उन्मन्यम्बा श्री
- २. श्री उन्मन्याकाशानन्द,
- ३. श्री परमानन्दनाथ
  - ४. श्री सहजानन्दनाथ
  - श्री परमानन्दनाथ
- श्री उन्मान्याकाशानन्दनाथ मिक्स क्रिका है.

#### इति दिव्यौघाः

- १. श्री महेशानन्दनाथ
  - २. श्री परेशानन्दनाथ
    - ३. श्री सच्चिदानन्दनाथ
- ४. श्री चिदानन्दनाथ

# इति सिद्धौधाः

- १. श्री ईश्वरानन्दनाथ
  - श्री रुद्रानन्दनाथ, 2.
- ३. श्री विश्वानन्दनाथ, ४. श्री ब्रह्मानन्दनाथ,
  - माडि जारिड मिन्स श्री नारदानन्दनाथ,

# इति मानवौधाः

# अर्थानिक स्थित आरती

कि निर्मात के माना में के लिए के माना में किया माने हैं है जिए माने के लिए माने किया माने के लिए माने माने किया

party formers for

जय पीताम्बरधारिणि जय सुखदे वरदे, मातर्जय सुखदे वरदे। भक्तजनानां क्लेशं भक्तजनानां क्लेशं सततं दूर करे।। जय देवि जय देवि।।१।।

असुरैः पीडितदेवास्तव शरणं प्राप्ताः मातस्तवशरणं प्राप्ताः। धृत्वा कौर्मशरीरं धृत्वा कौर्मशरीरं दूरीकृतदुखम्।। जय देवि जय देवि।।२।।

मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले। संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीतिं नित्यं शान्तकरे।। जय देवि जय देवि।।३।।

नारदसनकमुनीन्द्रैर्ध्यातं पदकमलं मातर्ध्यातं पदकमलम्। हरिहरद्वुहिणसुरेन्द्रैः हरिहरद्वुहिणसुरेन्द्रैः सेवितपदयुगलम्।। जय देवि जय देवि।।४।।

काञ्चनपीठिनविष्टे मुद्गरपाशयुते मातर्मुद्गरपाशयुते। जिह्वावज्रसुशोभित जिह्वावज्रसुशोभित पीतांशुकलिसते।। जय देवि जय देवि।।५।। बिन्दुत्रिकोणषडस्रैरष्टदलोपरि ते, मातरष्टदलोपरि ते। षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूपूरवृत्तयुतम्।। जय देवि जय देवि।।६।।

इत्थं साधकवृन्दैश्चिन्तयते रूपं मातश्चिन्तयतेरूपं। शत्रुविनाशकबीजं शत्रुविनाशकबीजं धृत्वा हत्कमले।। जय देवि जय देवि।।७।।

अणिमादिकबहुसिद्धिं लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुताम्। भोगान् भुक्त्वा सर्वान् भोगान् भुक्त्वा सर्वान् गच्छति विष्णुपदम्।। जय देवि जय देवि।।८।।

पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते। धनधान्यादिसमृद्धो धनधान्यादिसमृद्धः सान्निध्यं लभते।। जय देवि जय देवि।।९।।

1) माराम्हरमाराष्ट्रिक केर्नुसार्थाहर होते व केर्नुसार्थाहर ।

sid the all

।। अधिकार कर की कि हा सरकारताय कर न

11 利用物本种 对4 对5

Transport the are March the first transport

#### ।। श्री गणेशाय नमः।।

# राष्ट्रगुरु श्री अनन्त श्री स्वामी जी महाराज द्वारा रचित एवं श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ

(प्रस्तुत ग्रन्थसूचि वर्णमालाक्रमानुसार बनाई है)

| क्र. | नाम                            | Make my migrati    | मूल्य     |
|------|--------------------------------|--------------------|-----------|
| 9.   | अथर्ववेदीय ज्योतिषम्           | हिन्दी टीका सहित   | 4.00      |
| 7.   |                                | T/75               | 20.00     |
| n.   | ईशावास्योपनिषद्                | संस्कृत हिन्दी     | 0.00      |
| 8.   | कठोपनिषद्                      | संस्कृत हिन्दी     | 94.00     |
| 4.   | कामकला विलासः                  | संस्कृत टीका सहित  | 94.00     |
| ξ.   | केनोपनिषद्                     | संस्कृत हिन्दी     | 4.00      |
| 9.   | गुरुतत्त्व एवं गुरुपादुका पंचक | हिन्दी संस्कृत     | 20.00     |
| ۷.   | घेरण्ड-संहिता                  | भाष्यानुवाद        | 94.00     |
| 9.   | छिन्नमस्ता नित्यार्चन          | संस्कृत हिन्दी     | 94.00     |
| 90.  | ज्योतिष तत्त्व विवेक           | हिन्दी             | यन्त्रस्थ |
| 99.  | ताराकर्पूर राजस्तोत्रम्        | संस्कृत            | 4.0       |
| 9 2. | तान्त्रिक पंचांग               | C PRINCE           | 94.0      |
| 9 3. | तीर्थ भारतम्                   | पद्य               | 20.0      |
| 98.  |                                |                    | 20.0      |
| 94.  | देवी सहस्रनाम संग्रह भाग २     |                    | HARAGE!   |
| 9 ६. | धूमावती सपर्यार्णव             |                    | 20.0      |
| 90.  | ~ ~                            | संस्कृत टीका सहित  | 6.0       |
| 96.  |                                | हिन्दी             | 20.0      |
| 99.  |                                | संस्कृत भाष्य सहित | 94.0      |
|      | पंचस्तवी कुल्ला हिल्ली         | संस्कृत            | 4.0       |
|      | . पराप्रवेशिका                 | संस्कृत हिन्दी     | 2.0       |
|      | . पुरश्चरण (पद्धति)            | हिन्दी             | 0.0       |

| क्र.                                   | 明。即以政治             | मूल्य      |
|--|--------------------|------------|
| २३. परश्चरण (पद्य में)                 | हिन्दी             | 4.00       |
| २४. प्रश्नोपनिषद्                      | ांस्कृत भाष्य सहित | 4.00       |
| २५. प्रश्नोपनिषद्                      | हिन्दी             | 90.00      |
| २६. प्रश्नोपनिषद्                      | अंग्रेजी           | 90.00      |
| २७. प्रत्यभिज्ञाहृदय                   |                    | 6.00       |
| २८. श्री बगलामुखी रहस्यम्              | संस्कृत            | €0.00      |
| २.९. वहबृचोपनिषद्                      |                    | 9.00       |
| ३०. भैरव विज्ञान                       |                    | 24.00      |
| ३ १. भैरव सर्वस्व                      |                    | HE TENER ( |
| ३२. महाविद्या चतुष्टयम्                | संस्कृत            | 94.00      |
| ३३. श्री महात्रिपुरसुन्दरी पूजा पद्धति | संस्कृत            | 20.00      |
| ३४. महागणपति तर्पण विधानम् (श्री गणे   | श तर्पणम्)         | 4.00       |
| ३५. त्रिपुरा महिम्न स्तोत्रम्          | हिन्दी             | 99.00      |
| ३६. माण्डूक्योपनिषद्                   | संस्कृत हिन्दी     | 4.00       |
| ३७. श्री मातृकाचक्र विवेकः             | संस्कृत            | 84.00      |
| ३८. मुण्डकोपनिषद्                      | संस्कृत हिन्दी     | 90.00      |
| ३९. योग-विज्ञान भाग १                  | हिन्दी             | ₹0.00      |
| ४०. योग-विज्ञान भाग २                  | हिन्दी             | यन्त्रस्थ  |
| ४ १. योग दर्शन                         | संस्कृत            | 4.00       |
| ४२. योगदर्शनम्                         | संस्कृत, अंग्रेजी  | 90.00      |
| ४३. रेणुकातन्त्रम्                     | संस्कृत            | 94.00      |
| ४४. ललिता सहस्रनाम स्तोत्रम्           | ALIBER             | IF WITH    |
| (सौभाग्य भास्कर भाष्य)                 | संस्कृत            | 80.00      |
| ४ ५. लघुस्तवराजः                       | हिन्दी संस्कृत     | 92.00      |
| ४६. लेख-संग्रह                         | हिन्दी             | 94.00      |
| ४७. लेख संग्रह                         | (अंग्रेजी अनुवाद)  | ₹0.00      |
| ४८. वातूलनाथ सूत्र                     | अनु. सं.           | 4.00       |
| ४९. श्री विद्यारत्न सूत्रम्            | संस्कृत            | 4.00       |

| क्र.        | नाम                          | पृष्ठ               | मूल्य     |
|-------------|------------------------------|---------------------|-----------|
| 40.         | श्रीविद्यारहस्य (चिद् विलास) | हिन्दी अ.सं. ५.०    | 00/90.00  |
|             | वेदान्त प्रबोध               | संस्कृत हिन्दी      | 90.00     |
|             | वैदिक उपदेश                  | हिन्दी              | यन्त्रस्थ |
| 43.         | 30 3                         |                     |           |
| 2 (3)()     |                              | ग्रेजी अनुवाद सहित) | २५.००     |
| 48.         | शरभ तन्त्रम्                 | संस्कृत             | 93.00     |
| 44.         | 3                            | हिन्दी              |           |
| 4 4.        |                              | हिन्दी              |           |
| 8           | शाक्त तन्त्र साधना           |                     | 40.00     |
| 46.         |                              | हिन्दी अनु. सं.     | ٥.00      |
| 49.         |                              | संस्कृत             | 4.00      |
|             | सप्तविंशति रहस्य             | संस्कृत हिन्दी      | 20.00     |
| ξ9.         |                              | हिन्दी              | 94.00     |
| <b>E</b> ?. |                              |                     | 909.00    |
| € ₹.        |                              | हिन्दी              |           |
| €8.         |                              | हिन्दी              | 40.00     |
|             | सिद्धान्त रहस्य              | संस्कृत             | 90.00     |
| MAG         | सिद्धान्त रहस्य              | मराठी               | 90.00     |
| €0.         | • •                          | हिन्दी              | 92.00     |
| ٤٤.         |                              | अंग्रेजी            | 90.00     |
| 1000        | . सौन्दर्य लहरी              | संस्कृत             | 96.00     |
|             | . सौन्दर्य लहरी              | हिन्दी टीका         |           |
|             | . हनुमंत उपासना              | हिन्दी संस्कृत      | 96.00     |

सूचना : आवश्यकता होने पर मूल्य बढ़ाये जा सकते हैं।

शिवशक्ती प्रेस प्रा. लि., ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९

